भैरव साधनायें

आशिर्वाद

डा॰ नारायणदत्त श्रीमाली
(परमपूज्य गुरुदेव)

संकलन व पी.डी.एफ.
अजय कुमार उत्तम
१०-२-२०२०

बटुक भैरव जयन्ती के अवसर पर

बटुक भैरव प्रयोग

ज्येष्ठ शुक्ल दसमी अर्थात १३-६-८९ को 'बटुक भैरव जयन्ती' है यह गृहस्थ व्यक्तियों के लिए सर्वाधिक उपयुक्त अवसर है, क्योंकि भैरव, गृहस्थ जीवन को पूर्णता देने में श्रेष्ठतम शक्ति हैं, इस साधना से तीन महत्वपूर्ण उपलब्धियां प्राप्त होती है।

१– मानसिक तनाव से मुक्ति
२– अटूट परिवार की सफलता
३– अपनी छिपी हुई शक्तियों को पहिचानने की क्षमता

और इन तीनों ही जीवन की श्रेष्ठ उपलब्धियों को प्राप्त करने का सर्वोत्तम प्रयोग है, ''बटुक भैरव जयन्ती प्रयोग'' ।

पूरे संसार में ९० प्रतिशत हृदय रोगों, का कारण मानसिक तनाव है, संसार में ९८ प्रतिशत आत्महत्याओं का कारण मानसिक तनाव और मानसिक दबाव है। तथा अल्सर, हृदय रोग, पेट से सबंधित बीमारियां, अनिद्रा आदि घातक और भयंकर रोगों का कारण भी मानसिक तनाव ही है।

पर दुर्भाग्य से रोगों की श्रेणी में हमने मानसिक

तनाव को सबसे कम महत्व दिया है। हम यह भूल कर बैठे है, कि मानसिक तनाव कोई रोग है ही नहीं, या मानसिक तनावों से किसी प्रकार की हानि नहीं हो सकती जब कि पूरे विश्व के चिकित्सकों और विशेषज्ञों की राय यह है कि जीवन की प्रसन्नता, जीवन की हंसी, माधुर्य, और स्वास्थ्य को चौपट करने का एक मात्र कारण मानसिक तनाव है, यह यमराज की सगी बहिन है, जिसे अपना लेने से, व्यक्ति शीघ्र ही अल्प समय में मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।

क्यों होता है मानसिक तनाव

मुझे कई परिवारों से निरन्तर मिलने और उनकी पारिवारिक समस्याओं को जानने का अवसर मिलता रहता है, मेरी राय में मानसिक तनाव होने का कारण वे कार्य है, जिसे हम चाह कर के भी अपने ढंग से पूरा नहीं कर पाते। उदाहरण के लिए यदि हम चाह कर भी पत्नी के विचारों को अपने अनुकूल नहीं बना सकते, तो परस्पर मतभेद से तनाव बढ़ना स्वाभाविक है, यदि हम परिश्रम और प्रयत्न करने के बावजूद भी अपनी आर्थिक उन्नति नहीं कर पाते तो मानसिक तनाव बढ़ जाता है, इसके अलावा इसके अन्तर्गत वे छोटे-छोटे सैकड़ों कार्य है, जो हम भली प्रकार से समय पर सम्पन्न नहीं कर पाते, हमारी सारी मेहनत व्यर्थ हो जाती है। हमारी सारी बुद्धि, सारा कौशल और सारा चातुर्य व्यर्थ हो जाता है, और इस प्रकार से हम मन ही मन कुढ़ते रहते है, घुन की तरह यह मानसिक तनाव हमारे जीवन को खोखला करता रहता है और हम एक के बाद एक नित्य नयी बीमारियो से ग्रस्त होते रहते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति के अलग अलग कारणों से मानसिक तनाव होते हैं, कोई व्यक्ति परीक्षा में असफल होने के बावजूद भी, मानसिक तनाव से ग्रस्त नहीं होता, और दुगने उत्साह से प्रयत्न कर परीक्षा में सफलता प्राप्त कर लेता है, पर वही व्यक्ति प्रेमिका की बेवफाई से निराश हो कर टूट जाता है, और जीवन में असफल हो जाता है। कोई

इस साधना को सम्पन्न करने पर जहां एक तरफ आप सभी प्रकार के मानसिक तनावों से मुक्त हो सकेगे, आपके जीवन में प्रफुल्लता, आनन्द और उमंग का स्रोत प्रवहित हो सकेगा, आप जीवन का असली आनन्द ले सकेगे, अपने घर को व्यवस्थित कर सकेगे, टूटते हुए परिवार को बचा सकेगे, बिगड़ते हुए और परस्पर लड़ते हुए बेटों में मधुरता स्थापित कर सकेगे, और साथ ही साथ अपनी छिपी हुई शक्तियों को जान सकेगे, उसका विकास कर सकेगे, और उसमें पूर्णता एवं सफलता प्राप्त कर सकेगे, और यह सब बटुक भैरव साधना के द्वारा ही संभव है।

व्यक्ति अपने परिवार की समस्याओं को पूरे जोश के साथ झूझ कर सामना कर लेता है, पर समाज की बदनामी से वह पूरी तरह से टूट जाता है और मानसिक तनाव से ग्रस्त हो जाता है कुछ लोग मानसिक तनाव को हल्के फुल्के ढंग से लेते है, और जीवन में आगे बढ़ जाते है पर कुछ लोग अत्यधिक संवेदनशील होते है, उनको छोटी सी बात भी बहुत अधिक मानसिक दबाव दे देती है और ऐसे व्यक्ति बाहर भले ही कुछ भी न कहे, अन्दर ही अन्दर कुढ़ते रहते है।

क्या कुछ उपाय है इसका

मैंने इस विषय में और इससे संबंधित सैकड़ों पुस्तकें पढ़ी है, डाक्टरों और चिकित्सकों से मिला हूं और सबका एक ही उत्तर है. मानसिक तनाव को समाप्त करने से संबंधित कोई औषधि नहीं है। जब व्यक्ति मेन्टल टेन्शन या मानसिक तनाव से ग्रस्त होता है, तो डाक्टर उसे

॥ राज राजेश्वरी मन्त्र ॥
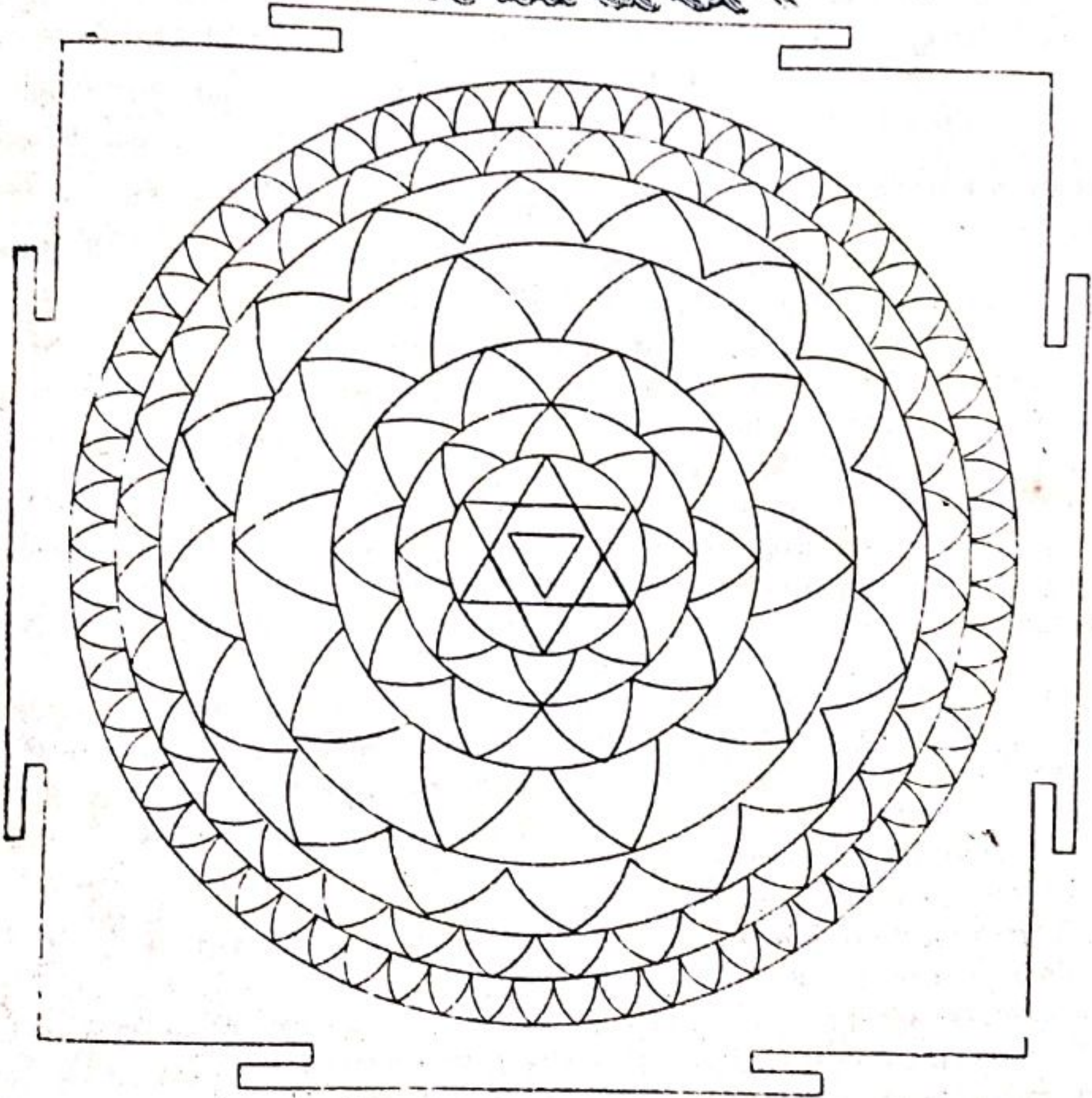
(जो बटुक साधना का आधार है)

नीद की गोली दे देते है, और उसके फलस्वरूप कुछ समय के लिए उसे नींद अवश्य आ जाती है, परन्तु उससे मानसिक तनाव से छुटकारा नहीं मिलता और यह रोग व्यक्ति के शरीर में उसकी नस-नाड़ियों में घुस कर उसके शरीर को खोखला बना देता है, असमय में ही उसकी आंखें धंस जाती है, गाल पिचक जाते है, सिर के बाल सफेद होने लग जाते है, उसके जीवन से हंसी और मुस्कराहट लुप्त हो जाती है, और एक प्रकार से वह अपने

जीवन को बोझ की तरह ढोता हुआ जीवित रहता है।

पर जो उपाय, जो औषधि, जो युक्ति संसार के चिकित्सकों के पास नहीं है वह उपाय और औषधि साधना ग्रन्थों में है, और इसका एक मात्र प्रामाणिक हल और उपाय है — बटुक भैरव साधना ।

अटूट परिवार का अंग

क्या आधुनिक सभ्यता में भी अटूट परिवार जैसा कोई शब्द अस्तित्व में रहा है, दो या तीन पीढ़ियों का साथ रहना, अब एक स्वप्न सा बन गया है या दो या तीन भाई और उसका परिवार एक साथ रहे, ऐसा वर्तमान युग में संभव नहीं दिखाई देता, इसका कारण हम चाहे-अनचाहे टूटते हुए परिवार में विश्वास करने लगे है, हमारे सोचने का दायरा बहुत छोटा सा हो गया है, हमारी बुद्धि एक सीमित घेरे में आबद्ध हो कर रह गई है, और सामूहिक परिवार का जो आनन्द होता है, उस आनन्द से हम वंचित हो गये है।

मैं जानता हूं कि आज की इस मंहगाई में बहुत बड़ा परिवार बोझ सा बन जाता है, परन्तु परिवार का परस्पर प्रेम और संबंध बोझ नहीं होता, हम चाहे. अलग अलग रहे यदि हम तीन भाई हो, और तीनों परिवार अलग अलग मकानों में रहे, अलग अलग भोजन बनाये और कमाये, इसमें कोई दोष नहीं है, पर इसके बावजूद भी हम तीनों परिवारों में मधुरता हो, परस्पर आत्मीय संबंध हो, घनिष्ठता हो, एक दूसरे के सुख दुख में भागीदार हो, ऐसा नहीं हो पाता, हम परस्पर लड़ाई झगड़ों में, मन मुटावों में और मीन मेख निकालने में लगे रहते है। हम अपने ही घेरे में कैद हो जाते है। न तो हम दूसरे के सुख दुख की चिन्ता करते हैं, न परस्पर मधुरता ही व्याप्त रहती है , यदि मिलते भी है, तो औपचारिक ढंग से, मुस्कराते भी है तो कृत्रिम ढंग से और यह हमारे जीवन की न्यूनता है। इससे और हानि भले ही हो या न हो, हमारा परस्पर विश्वास टूट जाता है, हमारी परस्पर आत्मियता खत्म हो जाती है और इस

मेरे जीवन की सफलता प्रसिद्धि और सम्मान का एक मात्र कारण बटुक भैरव साधना है। मेरे जीवन की उमंग मेरे जीवन का जोश और उत्साह का कारण बटुक भैरव साधना है, और मैं भले ही अन्य साधनाएं सम्पन्न करूं या न करूं इस दिन का तो उपयोग करताही हूं, और इस साधना को पूर्णता के साथ सम्पन्न करता ही हूं।

प्रकार से सम्पूर्ण परिवार का जो आनन्द होता है, वह हम प्राप्त नहीं कर पाते, यह एक बहुत बड़ा आनन्द है जिससे हम वंचित हो जाते है।

क्या हम कल्पना कर सकते है, कि दादी मां बैठी हुई हो, और पोते पोतियों को गोद में बैठा कर कहानी सुना रही हो, बहू परिवार के ज्येष्ठ सदस्यों को मधुरता और आनन्द के साथ भोजन करा रही हो, और छोटे बडे एक साथ आनन्द के साथ बातचीत में मग्न भोजन कर रहे हो, क्या ऐसा दृश्य देखने को मिल सकता है, मेरी राय में लगभग नही के बराबर है, और यह अपने आप मे एक अद्वितीय आनन्द है, जिसे हम प्राप्त नहीं कर पाते।

क्या रहस्य है अटूट परिवार का

और यहां पर यही प्रश्न उभर कर सामने आता है, कि हम टूटते हुए परिवार को कैसे बचा सकते है, किन युक्तियों से हम परिवार को परस्पर आबद्ध कर सकते है, कौन से तरीकों से टूटता हुआ परिवार रुक सकता है, या भाइयों में परस्पर प्रेम स्नेह और अपनत्व बना रह सकता है, वह कौनसी औषधि है, जिसके द्वारा एक स्वस्थ और आदर्श परिवार एक ही स्थान पर बना रह सकता है, परस्पर अद्वितीय प्रेम संबंध, माधुर्य सुख और एक दूसरे का हित चिन्तन संभव हो सकता है।

और इसका उत्तर है, इसका उपाय है, इसकी प्रामाणिक औषधि है, और इसका पूर्ण सफलतादायक प्रयोग है — बटुक भैरव साधना।

अपनी छिपी हुई शक्तियों का उपयोग

हकीकत में देखा जाय तो हमें आस पड़ौस का, मोहल्ले का और पूरी दुनिया का तो ज्ञान है, पर हमें अपने आपका ही ज्ञान नहीं है हमें यही पता नहीं है, कि भगवान ने हमें किस वजह से जन्म दिया है। क्या जीवन भर क्लर्की करने के लिए ही हमारा निर्माण हुआ है, क्या जीवन भर दुकान पर बैठ कर झूठ कपट करने के लिए ही हमारे व्यक्तित्व का निर्माण हुआ है, क्या जीवन भर मजदूरी करते रहने को ही हम जीवन कह सकते है, अफसरों की डांट खाना, छोटे मोटे कार्य कर बड़ी मुश्किल से जीविकोपार्जन करना ही हमारी नियति है।

नहीं, आप यह सब इसलिए कर रहे है, कि आपको अपने स्वयं के बारे में ज्ञान नहीं है, आपको इस बात का पता नहीं है, कि आपका निर्माण क्यों हुआ है, आप में कौन कौन सी अलौकिक शक्तियां छिपी हुई है, जिसे उजागर कर आप प्रसिद्धि और सम्मान के उच्च शिखर पर पहुंच सकते है। आप कल्पना करें, कि यदि सुनील गावस्कर को दुकान पर बिठा दिया जाता, तो क्या वह पूरे भारत में प्रसिद्ध हो पाता, क्या बिड़ला जी को क्रिकेट सीखने के लिए प्रेरित करते और बचपन से ही क्रिकेट की ओर उनका अभ्यास कराया जाता तो क्या वे पूर्णतः सफल हो पाते। इन सभी प्रश्नों का उत्तर 'ना' है, इसका कारण यह है, कि व्यक्ति अपने किसी विशेष क्षेत्र में ही पूर्णता प्राप्त कर सकता है और आज के युग में कोई भी क्षेत्र सफलता और समृद्धि देने में समर्थ है, एक व्यक्ति केवल दौड़ कर भी पूरी दुनियां में नाम कमा सकता है, धन और यश का अम्बार लगा सकता है, इसी प्रकार मुक्केबाजी में, राजनीति में, व्यापार में और साइकल के करतब दिखा कर के भी पूरे देश में प्रसिद्धि और सम्मान प्राप्त कर सकता है, क्योंकि आज का युग स्पेसियललाइजेशन का है। विशिष्टता का है, किसी एक छोटे से छोटे क्षेत्र में भी यदि व्यक्ति अद्वितीय है तो वह रातों रात प्रसिद्धि और सम्मान प्राप्त कर सकता है।

और यह सब संभव होता है, जब आपको इस बात का ज्ञान हो, कि आप के लिए कौन सा क्षेत्र सर्वाधिक उपयुक्त है, आप किस क्षेत्र में सफलता पा सकते हैं, प्रभु ने आप में कौन कौन से अलौकिक गुण दिये है, और इसे जानने के लिए दुनियां में कोई यंत्र नहीं बना है, इसे जानने का विश्व में कोई उपाय या युक्ति नहीं है, इसके बारे में तो पूरी जानकारी प्राप्त करने का एक मात्र साधन है — बटुक भैरव साधना।

बटुक भैरव साधना

अब परम्परा ढंग से बटुक भैरव साधना करने की आवश्यकता नही है, अब भैरव पर सिन्दूर लगाने से उसकी पूजा करने से या उसके सामने तेल का दीपक लगाने से सफलता नही मिल सकती। अब आवश्यकता है पूर्णता के साथ शास्त्र सम्मत बटुक भैरव साधना या प्रयोग करने की; और यह दिन १३-६-८९ बटुक भैरव दिवस ही है जो कि पूरे वर्ष में, एक बार आता है, और यह केवल एक दिन की साधना है, इस साधना को सम्पन्न करने पर जहां एक तरफ आप सभी प्रकार के मानसिक तनावों से मुक्त हो सकेंगे, आपके जीवन में प्रफुल्लता, आनन्द और उमंग का स्रोत प्रवहित हो सकेगा, आप जीवन का असली आनन्द ले सकेंगे, अपने घर को व्यवस्थित कर सकेंगे, टूटते हुए परिवार को बचा सकेंगे, बिगड़ते हुए और परस्पर लड़ते हुए बेटों में मधुरता स्थापित कर सकेंगे, और साथ ही साथ अपनी छिपी हुई शक्तियों को जान सकेंगे, उसका विकास कर सकेंगे, और उसमें पूर्णता एवं सफलता प्राप्त कर सकेंगे, और यह सब बटुक भैरव साधना के द्वारा ही संभव है।

मेरे जीवन की सफलता प्रसिद्धि और सम्मान का एक मात्र कारण बटुक भैरव साधना है। मेरे जीवन की उमंग मेरे जीवन का जोश और उत्साह का कारण बटुक

भैरव साधना है, और मैं और भले ही अन्य साधनाएं सम्पन्न करूं या न करूं इस दिन का तो उपयोग करता ही हूं, और इस साधना को पूर्णता के साथ सम्पन्न करता ही हूं।

बटुक भैरव प्रयोग

यह रात्रिकालीन साधना है, १३-६-८९ की रात्रि को स्नान कर काले आसन पर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर साधक बैठ जाय और सामने परम श्रेष्ठ बटुक भैरव महायंत्र (न्यौछावर १५०)रू. को स्थापित कर दे, यह यंत्र अत्यन्त पूर्णता के साथ बनाया हुआ होता है और इसके सामने पांच हकीक पत्थर (न्यौछावर ३०)रू. रख दे। पहले बटुक भैरव यंत्र की संक्षिप्त पूजा करे, यंत्र पर सिन्दूर लगावे, अक्षत पुष्प नैवेद्य समर्पित करे, और फिर सामने ग्यारह तेल के दीपक जलावे, तेल के दीपक का मुंह साधक की ओर होना चाहिए, इसमें किसी भी प्रकार के तेल का प्रयोग हो सकता है।

इसके बाद साधक बिना भय, या चिन्ता के विश्वामित्र प्रणीत गोपनीय और दुर्लभ बटुक भैरव मंत्र का जप मूंगे की माला से करे, ज्यादा अच्छा तो यह होगा कि यदि काले दाने की हकीक माला (न्यौछावर ८०)रू.) मिल जाय तो उसी का प्रयोग करे, इस माला से इस रात्रि को निम्न दुर्लभ मंत्र की इक्यावन माला मंत्र जप करे।

बटुक भैरव गोपनीय मंत्र

॥ ॐ ह्रीं ह्लीं ह्रूं ह्लीं हुं ॐ ॥

मंत्र जप सम्पन्न होने पर वह माला और बटुक भैरव यंत्र को घर में सुरक्षित स्थान पर रख दें। आप स्वयं इस अदभुत प्रयोग और चमत्कार को देखें, अगले कुछ ही दिनों में आप स्वयं, स्वयं में और परिवार में होते हुए परिवर्तन को अनुभव करे, और आप देखेंगे कि आप पहले की अपेक्षा मानसिक तनावों से पूर्णतः मुक्त हो कर अत्यधिक सुखी, सफल, सानन्द, दीर्घजीवी रोग रहित और लोकप्रिय होने के साथ साथ उन्नति की ओर अग्रसर है, और आपके सारे रुके हुए कार्य स्वतः हो होने लग गये है।

शिष्य के सात सूत्र

भगवत्पाद शङ्कराचार्य ने "शिष्य" - कसौटी पर खरे उतरने वाले शिष्य — के सात सूत्र बताये हैं, जो निम्न हैं। आप मनन कर निर्णय करें, कि आपके जीवन में कितने सूत्र संग्रहित हैं।

- **अन्तेश्रियै वः**

जो आत्मा से प्राणों से हृदय से अपने गुरुदेव से जुड़ा हो, जो गुरू से अलग होने की कल्पना करके ही भाव विह्वल हो जाता हो।

- **कर्तव्य श्रियै नः**

जो अपनी मर्यादा जानता हो, गुरू के सामने अभद्रता, अशिष्टता का प्रदर्शन न कर पूर्ण विनीत नम्र एवं आदर्श रूप में उपस्थित होता हो।

- **सेव्यं सतै दिवौं च**

जिसने गुरू सेवा को ही अपने जीवन का आदर्श मान लिया हो, और प्राण प्रण से गुरू की तन-मन-धन से सेवा करना ही जीवन का उद्देश्य रखता हो।

- **ज्ञानं मृते वै श्रियं**

जो ज्ञान रूपी अमृत का नित्य पान करता रहता है और अपने गुरू से निरन्तर ज्ञान प्राप्त करता ही रहता है।

- **हितं वै हृदं**

जो साधनाओं को सिद्ध कर लोगों का हित करता हो और विश्व का कल्याण करने की भावना रखता हो।

- **गुरूर्वै गति**

गुरू ही जिसकी गति, मति हो, गुरुदेव जो आज्ञा दें, बिना विचार किये उसका पालन करना ही अपना कर्तव्य समझता हो।

- **इष्टो गुरूर्वै गुरू**

जिस शिष्य का इष्ट ही गुरू हो, जो अपना सर्वस्व गुरू को ही समझता हो।

भैरव के प्रत्यक्ष दर्शन सम्भव है

कलियुग में भैरव की साधना अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी गयी है, क्योंकि इससे कार्य सिद्धि तुरन्त होती हैं, और बहुत ही कम प्रयास में भैरव के प्रत्यक्ष दर्शन हो सकते है।

यों तो भैरव से संबंधित कई साधनाएं प्रचलित है, परन्तु एक महत्वपूर्ण और गोपनीय साधना आगे के पृष्ठों में दे रहा हूं, जिससे कि भैरव तुरन्त प्रसन्न होकर साधक को मनोवांछित वरदान देने में समर्थ हो पाते है।

यह साधना कृष्ण पक्ष की पंचमी से प्रारम्भ की जाती है, साधक किसी भी महीने में इस-साधना को प्रारम्भ कर सकता है, प्रातः काल उठकर साधक पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करता हुआ मन में यह विचार करे, कि मैं भैरव की साधना करने जा रहा हूं, मैं भैरव के प्रत्यक्ष दर्शन करना चाहता हूं।

साधक पूरे साधना काल में काले वस्त्रों का ही प्रयोग करे, काली धोती और ऊपर काला कुरता पहन सकता है, साधना के बाद भी वह दूसरे रंग के वस्त्रों का प्रयोग न करे।

यह साधना यदि जंगल में, शिवालय में, नदी तट पर या श्मशान में करे तो ज्यादा उचित रहता है, घर पर इस प्रकार की साधना का प्रयोग नहीं करना चाहिए, भैरव शीघ्र प्रसन्न होते है, तो जल्दी ही नाराज भी हो जाते हैं, अतः साधक को सावधानी के साथ इस प्रकार की साधना हाथ में लेनी चाहिए।

जिस दिन साधना प्रारम्भ करे, उस दिन प्रातः मसूर चने, मूंग और मौठ इन चारों धान्यों को बराबर मात्रा में लेकर पकावे और फिर इसके सोलह भाग कर सोलह पलास के पत्तों पर अपने सामने रख दें, प्रत्येक पत्ते पर तेल का दीपक लगावे और फिर इन सोलह पत्तों से पहले और अपने सामने भैरव की काल्पनिक मूर्ति या भैरव का यन्त्र स्थापित करें उसकी गंध, अक्षत्, पुष्प, धूप-दीप आदि से पूजा करे।

इसके बाद साधक हाथ में अक्षत लेकर उन्हें चारों तरफ बिखेरता हुआ आत्म रक्षा मन्त्र पढे।

आत्म रक्षा मन्त्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं नमः पूर्वे। ॐ ह्रीं ह्रूं ह्रौं नमः आग्नेये। ॐ ह्रीं श्रीं नमः दक्षिणे। ॐ ग्लूं ब्लूं नमः नैऋत्ये। ॐ प्रूं प्रूं सं सः नमः पश्चिमे। ॐ भ्रां भ्रां नमः वायव्ये। ॐ भ्रां व्रं भ्रं फट् नमः ऐशान्ये। ॐ ग्लौं ब्लूं नमः ऊर्ध्वे। ॐ घ्रां घ्रं घ्रः नमः अधोदेशे।

इसके बाद भैरव को हाथ जोड़कर नमस्कार करे।

ॐ करकलित कपालः कुण्डली दण्डपाणिम्
तरुण तिमिर नीलो व्यालयज्ञोपवीती।
ऋतुसमयसपर्य्या विघ्नविच्छेदहेतु
र्जयति बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्॥

ध्यान के बाद साधक ईशान दिशा की तरफ मुंह करके भैरव मन्त्र पढ़े, एक लाख मंत्र जप से यह सिद्ध हो जाता है, और भैरव प्रत्यक्ष दर्शन दे देते है।

मैंने ऊपर बताया कि भैरव का स्वरूप अत्यन्त विकराल और क्रूर होता है, अतः साहसी और दृढ़ निश्चयी व्यक्ति ही अपनी इन आंखों से उनके दर्शन करने में समर्थ हो पाते है, इसलिए स्त्रियां, वृद्ध, बालक या कमजोर एवं दुर्बल चित्त वाले व्यक्तियों को भैरव-साधना नहीं करनी चाहिए।

फिर निम्न मंत्र का जप करे, इसमें किसी भी प्रकार की माला का प्रयोग किया जा सकता है।

गृहस्थ की सुख-शांति के आठ उपाय

आये दिन गृहस्थ में लड़ाई झगड़े, मतभेद की वातें सुनने को मिलती है, पति-पत्नी में, पिता-पुत्र में या भाई-भाई मे मतभेद हो जाने से घर का वातावरण अशांत और कलहपूर्ण हो जाता है।

एक धुमक्कड़ साधु ने इसके लिए कुछ प्रयोग बताये है, जिनके करने से कहा जाता है कि पारिवारिक कलह समाप्त हो जाता है, और घर में सुख-शांति का वातावरण बना रहता है।

१— नित्य प्रातः उठकर बिना स्नान किये बिना दातुन किये, एक रोटी अपने हाथों से पकाकर तेल से चुपड़ कर काले कुत्ते को खिला देनी चाहिए, इसके बाद ही नित्य कर्म सम्पन्न करने चाहिए।

२— घर में दक्षिणावर्ती शंख स्थापित कर रात्रि को उसमें जल भर रख दें तथा प्रातः काल उस जल को पूरे घर में छिड़क दे।

३— प्रत्येक शनिवार को तेल में बड़े बनाकर आकाश में उड़ती हुई चीलों को खिलाने चाहिये। प्रत्येक शनिवार को लगभग एक किलो बड़े पकाकर खिलाने चाहिये और इस प्रकार सोलह शनिवार तक करना चाहिये।

४— जहां बन्दर ज्यादा हों, वहां प्रत्येक मंगलवार को पांच किलो चने ले जाकर उन्हें खिलाने चाहिये, उसके नीचे से निकलने और आने से घर में सुख शांति बनी रहती है।

५— घर में शूकर दन्त बांध देना चाहिए, यह शूकरदन्त मुख्य द्वार के ऊपर चौखट पर बांधना चाहिये, उसके नीचे से निकलने और आने से घर में सुख शांति बनी रहती है।

६— जब कसाई किसी बकरे को काटने हो वाला हो उसी क्षण कसाई को उस बकरे का मूल्य देकर उस बकरे को बचा लेना चाहिए और ऐसे स्थान पर छोड़ देना चाहिये जहां उस बकरे की हत्या न हो सके।

७— नित्य "राम रक्षा स्तोत्र" का पाठ होना चाहिए और नियमित रूप से ४० दिन तक पाठ करना चाहिये।

८— आपत्ति उद्धारक – ॐ आपत्ति उद्धारणाय बटुक भैरवाय नमः— मन्त्र का एक लाख जप करना चाहिये।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः । क्षां क्षीं क्षूं क्षः । ख्रां ख्रीं ख्रूं ख्रः । घ्रां घ्रीं घ्रूं घ्रः । म्रां म्रीं म्रूं म्रः । म्रों म्रों म्रों म्रों क्लों क्लों क्लों क्लों । श्रों श्रों श्रों श्रों ज्रों ज्रों ज्रों ज्रों । हुं हुं हुं हुं हुं हुं हुं हुं हूं फट् सर्वतों रक्ष रक्ष रक्ष रक्ष भैरव नाथ नाथ हुं फट् ।।

यह मन्त्र अत्यन्त शक्तिशाली है, और एक लाख मंत्र जप पूरा करते ही भैरव के दर्शन हो जाते है ।

यह साधना रात्रि को ही सम्पन्न की जाती है, और इसमें किसी प्रकार की अगरबत्ती या दीपक निरन्तर लगाने की आवश्यकता नहीं है, पहले दिन जो सोलह पलास के पत्तों पर भोग लगाया जाता है, उसे मन्त्र जप के बाद वहीं छोड़कर आ जाना चाहिए क्योंकि भैरव का वाहन श्वान है, और सही अर्थों में वह खाद्य पदार्थ श्वान को ही समर्पित होता है ।

यदि श्मशान में श्वान उपस्थित न हो तो उस पके हुए धान को एकत्र कर किसी श्वान के सामने रख दे ।

खोए बालक का पता लगाया जा सकता है

आजकल अखबारों में पढ़ने को मिलता है कि छोटी मोटी परेशानियों से त्रस्त होकर जवान लड़के या लड़कियां घर से भाग जाती है, और पीछे उनके माता-पिता बन्धु बांधव परेशान होकर उसे ढूढ़ते रहते है, पर उनका पता नहीं चलता ।

इस सम्बन्ध में टाट बाबा ने एक साधना बताई थी जो कि इस प्रकार है ।

मंगलवार के दिन साधक दक्षिण दिशा की तरफ मुंह करके बैठ जाय तथा अपने चारों तरफ एक हजार दीपक लगा ले, इन दीपकों में तेल भरा हुआ हो, तथा एक व्यक्ति को नियुक्त कर दे, कि वह बराबर उन दीपकों में तेल की पूर्ति करता रहे, तेल कोई भी हो सकता है ।

फिर व्यक्ति अपने सामने उस खोये हुए बालक या व्यक्ति का फोटो रखकर निम्न मन्त्र का जप करे, यह जप चार घंटे तक बराबर होना चाहिए और इस बीच साधक को उठना नहीं चाहिये ।

मन्त्र

ॐ लुप्त भैरवाय मम अमुकं अदृश्य दृष्टय फट् स्वाहा ।

इस प्रकार तीन दिन तक करना चाहिये, तीसरे दिन साधक को मन्त्र जप के बीच में ही वह खोया हुआ व्यक्ति और उसका स्थान तथा पूरा पता स्पष्ट दिखाई दे देता है, इस प्रकार तीसरे दिन यह साधना समाप्त कर उस खोये हुए बालक को वहां जाकर देखा जा सकता है ।

यदि यह मन्त्र जप चौदह दिन तक किया जाय तो वह खोया हुआ व्यक्ति कुछ ही समय में स्वतः ही घर आ जाता है टाट बाबा के कथनानुसार उन्होंने इस प्रयोग को कई बार किया हैं और वे हर बार इसमे सफल रहे है

इसके बाद नित्य इस प्रकार का विधान करने की आवश्यकता नहीं है।

यह मन्त्र जप चालीस दिन में या बीस दिन में पूरा हो जाना चाहिए, जब यह विधान या मन्त्र जप पूरा होने को होता है, तो उससे तीन दिन पहले भैरव के आने की अनुभुति स्पष्ट रूप से हो जाती है, साथ ही साथ उसके पैरों में बंधे हुए घुंघरू स्पष्ट सुनाई देते है, और भैरव की अस्पष्ट आकृति भी दिखाई देने लगनी है।

जिस दिन ऐसी आकृति दिखाई दे, उसके दूसरे दिन उस भैरव की मूर्ति या भैरव के यन्त्र को नीले रंग का वस्त्र समर्पित करे, तेल ओर सिन्दूर लगावे, धूप अगर-बत्ती के साथ गुग्गुल का धूप भी समर्पित करे, उसी दिन नेवेद्य के साथ तेल में पकाए हुए गुड, आटा द्वारा निर्मित पूआ, मीठे पकोडे, तेल से चुपड़ी हुई आटे की रोटी पर गुड़ रखकर और मोठ या उड़द की दाल भिगोकर उसे पीस कर मसाले मिलाकर बडे बनाकर नेवेद्य के साथ समर्पित करे।

यदि उस दिन भैरव प्रत्यक्ष न हो तो दूसरे दिन भी ऐसा ही करे, यदि किसी कारण वश दूसरे दिन भी भैरव के दर्शन न हो तो तीसरे दिन भी वैसा ही विधान करे, उस रात्रि को निश्चय हीं भैरव के दर्शन हो जाते है।

यह हो सकता है कि भैरव विकराल रूप [में अथवा सौम्य रूप में दर्शन दे पर किसी भी हालत में डरे नहीं और नम्रता से उनका मन्त्र जप करता रहे।

जब भैरव प्रसन्न होकर वरदान मांगने को कहे, तब साधक उनके सामने तेल का दीपक लगाकर जो प्रसाद बनाया हुआ है, वह उनके दाहिने हाथ में दे दे, ऐसा करने से भैरव अत्यन्त प्रसन्न होते है और मनोवांछित वरदान दे देते है।

यह साधना रात्रि को ही संपन्न की जाती है और यदि श्मशान में या नदी तट पर साधना की जाय तो ज्यादा उचित रहता है, इस बात का ध्यान रखे कि वह स्थान सामान्यतः निर्जन हो।

साधना के संबंध में जो भी अनुभव हों, वे किसी को बतावे नहीं और पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करे तथा काले वस्त्र धारण किए रहे।

भैरव प्रसन्न होने के बाद नित्य साधक को स्वर्ण प्रदान करते है, यही नहीं अपितु जब किसी प्रकार की कोई इच्छा भैरव के सामने रखते है तो भैरव उस इच्छा की पूर्ति अवश्य ही करते है।

देश के कई विशिष्ट योगी और साधक भैरव साधना संपन्न कर चुके है, और इसी प्रकार से उन्होंने जीवन की पूर्णता प्राप्त की है, इस बात का ध्यान रखे कि यह साधना किसी योग्य गुरु या साधक की देख रेख में ही संपन्न होनी चाहिए अन्यथा कुछ विपरीत होने की स्थिति में साधक ही पूर्ण रूप से जिम्मेवार होता है।

इस साधना की पूर्णता के बाद व्यक्ति शत्रुओं पर हावी रहता है, किसी भी घटना को जानने के लिए उसे एक बार मंत्र उच्चारण करना पड़ता है तो भैरव उसके कान में कह देते है, दूसरे के मन की बात भी भैरव साधक को उसके कान में कह देते है, दूर स्थित सामान को लाकर देने में सहायक होते हैं, हजारों मील दूर की घटनाओ को प्रत्यक्ष देखते है और किसी भी व्यक्ति के भूतकाल या भविष्यकाल को जाना जा सकता है, इसके साथ ही साथ जब साधक खाद्य पदार्थ की इच्छा करता है तो उसे तुरन्त खाद्य पदार्थ प्राप्त हो जाते है। इसी प्रकार धन धान्य स्वर्ण आदि की प्राप्ति भी भैरव के द्वारा संभव है।

वस्तुतः भैरव-साधना कलियुग में महत्वपूर्ण एवं शीघ्र फलदायक है।

महामृत्युञ्जय – विधान

" महामृत्युञ्जय-विधान " मन्त्रशास्त्र में क्रांतिकारी मन्त्र तथा आश्चर्य-जनक फलदायक प्रयोग है, बीमारियों, शिशुरोगों तथा बालघात जैसे रोगों से निराकरण पाने व पूर्ण आयु प्राप्त करने के लिए यह श्रेष्ठतम अनुष्ठान है।

भारत में ही नहीं, विदेशों में भी " महामृत्युञ्जय " की चर्चा रही है, प्रत्येक बालक रोगी या अकाल मृत्यु से भीत व्यक्ति को इस प्रकार का मन्त्रसिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त " महामृत्युञ्जय यन्त्र " धारण कर लेना चाहिए।

साधकों के लाभार्थ यह गोपनीय विधान आगे के पन्नों पर प्रस्तुत है—

महामृत्युञ्जय विधान या अनुष्ठान अत्यन्त ही महत्वपूर्ण और श्रेष्ठतम प्रयोग कहा गया है, इस अनुष्ठान में अकाल मृत्यु को समाप्त करने का श्रेष्ठ भाव है और जिस व्यक्ति के जीवन में अकाल मृत्यु या बाल-घात योग हो, उसके लिये महामृत्युन्जय विधान सर्वश्रेष्ठ है।

महामृत्युञ्जय अपने आप में अत्यन्त ही श्रेष्ठ और प्रभावयुक्त है, तथा उच्च स्तर के साधकों ने भी इस बात को स्वीकार किया है कि यह मन्त्र अपने आप में महत्वपूर्ण और काल पर विजय प्राप्त करने में सक्षम है।

नीचे मैं इस अनुष्ठान से सम्बिन्धित विधि प्रस्तुत कर रहा हूं जिससे कि पाठक इससे लाभ उठा सकें।

अनुष्ठान में कुछ तथ्यों का ध्यान रखना आवश्यक है, अनुष्ठान एक ऐसी साधना प्रक्रिया है, जो कठिन कार्यों को सरल बनाने के साथ साथ विशेष शक्ति का उपार्जन करती है।

अनुष्ठान तीन प्रकार के होते है, लघु अनुष्ठान, चौबीस हजार मन्त्र का होता है, और इसके बाद २४० आहुतियों का पुरश्चरण किया जाता है। मध्यम अनुष्ठान सवालाख मन्त्र जप का होता है जिसमें १२५० आहुतियां दी जाती हैं, तथा महापुरश्चरण चौबीस लाख मन्त्र जप का विधान होता है, और इसके दसवें हिस्से की आहुतियां दी जाती है।

लघु अनुष्ठान को नौ दिन में २७ माला प्रति दिन के हिसाब से, मध्यम अनुष्ठान ४० दिन में ३३ माला के हिसाब से तथा महाअनुष्ठान एक वर्ष में ६६ माला प्रति दिन के हिसाब से जप करके संपन्न किया जाता है।

साधना काल में निम्न तथ्यों का ध्यान रखना चाहिए—

१. अनुष्ठान शुभ दिन और शुभ मुहुर्त देख कर करना चाहिए।

२. इस अनुष्ठान को प्रारम्भ करते समय सामने भगवान शङ्कर का चित्र स्थापित करना चाहिए और साथ ही साथ शक्ति की भावना भी रखनी चाहिए।
३. जहां जप करे वहां का वातावरण सात्विक होना चाहिए, तथा नित्य पूर्व दिशा की ओर मुंह करके साधना या मंत्र जप प्रारंभ करना चाहिए।
४. जप करते समय लगातार घी का दीपक जलते रहना चाहिए।
५. इसमें चन्दन या रुद्राक्ष की माला का प्रयोग करना चाहिए तथा ऊन का आसन बिछाना चाहिए।
६. पूरे साधना काल में ब्रह्मचर्य का पूरा पूरा पालन करना चाहिए।
७. यथाशक्ति कम भोजन करना चाहिए और साधना काल में चेहरे के या सिर के बाल नहीं कटाने चाहिए।
८. अनुष्ठान करने से पूर्व मन्त्र को संस्कारित करके पुरश्चरण करना चाहिए।
९. नित्य निश्चित संख्या में मन्त्र जप करना चाहिए, कभी कम, कभी अधिक मन्त्र जप करना ठीक नहीं है।
१०. शास्त्रों के अनुसार भय से छुटकारा पाने के लिए इस मन्त्र का १,१०० जप, रोगों से छुटकारा पाने के लिए ११,००० मन्त्र जप तथा पुत्र प्राप्ति एवं उन्नति के लिए तथा अकाल मृत्यु से छुटकारा पाने के लिए १,००,००० मन्त्र जप का विधान हैं।

धर्म शास्त्र में मन्त्र शक्ति से रोग निवारण एवं मृत्यु भय को दूर करने तथा अकाल मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की जितनी भी साधनाएं उपलब्ध है उनमें महामृत्युञ्जय साधना का स्थान सर्वोच्च है, हजारों लाखों साधकों ने इस साधना से फल प्राप्त किया है, कोई भी साधक पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ इस साधना को करता है तो निश्चय ही वह सफलता प्राप्त करता है।

इसका सामान्य मन्त्र निम्नलिखित है पर साधक को बीज युक्त मन्त्र का ही जप करना चाहिए।

मन्त्र

त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥
(ऋ. ७-५९-१२, यजु. ३-६०)

अर्थात हम तीन नेत्रों वाले ईश्वर की उपासना करते हैं, मैं सुगन्धित और पुष्टि प्रदान करने वाले ",उर्वारुक" की तरह मृत्यु के बन्धन से मुक्त हो जाऊं, अमृत से नहीं।

विधि

साधक को शुभ मुहूर्त में प्रातः उठ कर स्नान आदि से निवृत्त हो कर गुरु-स्मरण, गणेश-स्मरण, शङ्कर-पूजन आदि के बाद निम्न प्रकार से संकल्प करना चाहिए।

संकल्प

ॐ मम आत्मन: श्रुति स्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं। अमुक यजमानस्य वा शरीरेऽमुकपोड़ा निराशद्वारा सद्यः आरोग्यप्राप्त्यर्थं श्री महामृत्युञ्जय देवता प्रीतये अमुक सख्या परिमित श्री महामृत्युञ्जयमन्त्रजपमह करिष्ये।

विनियोग

हाथ में जल ले कर इस प्रकार पाठ करें –

ॐ अस्य श्री महामृत्युञ्जयमन्त्रस्य वामदेव-कहोल वशिष्ठा ऋषयः पंक्तिगायत्र्युष्णिगनुष्टुप-छन्दांसि सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रो देवता ह्रीं शक्तिः श्रीं बीजं महामृत्युञ्जयप्रीतये ममाभीष्ट-सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

उच्चारण के बाद हाथ का जल छोड़ दें।

ऋष्यादिन्यास

निम्न मन्त्रों से सर, मुख, हृदय, लिंग और चरणों का स्पर्श करना चाहिए।

पुनः वामदेवकहालवशिष्ठऋषिभ्यो नमः मूर्ध्नि। पक्तिगायत्र्युष्टुप्छन्दोभ्यो नमः मुखे:, सदाशिव-महामृत्युञ्जयरुद्र देवतायै नमः हृदि:, ह्रीं शक्तये नमः लिंगे, श्रीं बीजाय नमः पादयो।

करन्यास

ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा–अंगुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवाय बद्ध तर्ज-निभ्यां नमः।

ॐ ह्रौं जूं स भूर्भवः स्वः सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम् ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपु-रान्तकाय ह्रीं ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुस्साममन्त्राय कनिष्ठि-काभ्यां नमः। ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास

ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकम् ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा-हृदयाय नमः।

ॐ ह्रौं जूं सः भुर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवाय शिरसे स्वाहा।

ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिपुष्टिवर्धनम् ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा शिखायै वषट्।

ॐ ह्रौ जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिव बन्ध-नात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रीं ह्रीं कवचाय हुं।

ॐ ह्रौं जुं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुस्साम-मन्त्राय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय अस्त्राय फट्।

पद न्यास

त्र्यम्बकं शिरसि। यजामहे भ्रुवौः। सुगन्धि-नेत्रयौः। पुष्टिवर्धनम् मुखे। उर्वारुक गण्डयोः। इव हृदये। बन्धनात् जठरे। मृत्या लिंगे। मुक्षीय ऊर्वो। मा जान्वोः। अमृतात् पादयोः।

ध्यानम्

फिर शङ्कर का ध्यान करें —

हस्ताम्भोजयुगस्यकुम्भयुगला दुद्धत्य तोयं शिरः,
सिञ्चन्तं करयोर्युगेन दधतं स्वांके सकुम्भो करो।
अक्षस्त्रङ्मृगहस्तमम्बुजगतं मूर्द्धस्थचन्द्रस्रवत्
पोयूषार्द्रतनुं भजे सगिरिजांत्र्यक्षं च मृत्युञ्जयम्॥

(सती ख. ३८-२४)

ध्यान का स्वरूप इस प्रकार से है कि मृत्युञ्जय के आठ हाथ दृष्टिगोचर हो रहे हैं, ऊपर के दो हाथों से दो कलश उठाये हुए हैं, और नीचे वाले दो हाथों से वे सर पर जल डाल रहे हैं, सबसे नीचे वाले दो हाथों में भी वे दो कलश लिये हुए है जिन्हें अपनी गोद में रखा हुआ है, सातवें हाथ में रुद्राक्ष और आठवें में मृग चर्म धारण

कर रखा है, उनका आसन कमल का है, उनके सिर पर स्थित चन्द्रमा निरन्तर अमृत वर्षा कर रहा है, जिससे शरीर भीग गया है, वे त्रिनेत्र युक्त हैं और उन्होंने मृत्यु पर विजय प्राप्त कर ली है, उनके बांयी ओर भगवती गिरिजा विराज रही है।

जप

ध्यान के बाद महामृत्युञ्जय का जप करना चाहिए, मन्त्र का स्वरूप इस प्रकार है —

ॐ ह्रौं जूं सः , ॐ भूर्भुवः स्वः त्र्यंवकम् यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुक मिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। स्वः भुवः भूः ॐ। सः जूं ह्रौं ॐ।

यह सम्पुट युक्त मन्त्र है, इसका अनुष्ठान सवा लाख मन्त्र जप का माना जाता है, जप का दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन और ब्राह्मण भोजन आदि करना चाहिए, जप रुद्राक्ष की माला से करना चाहिए।

यह रोग-निवारण का अचूक विधान माना जाता है, हजारों का अनुभूत है, कोई भी व्यक्ति श्रद्धापूर्वक इसे अपनाकर अपना अभीष्ट लाभ प्राप्त कर सकता है।

लघु मृत्युञ्जय

ॐ जूं सः (नाम जिसके लिए अनुष्ठान किया जा रहा है) पालय पालय सः जूं ॐ।

इसका पूर्ण अनुष्ठान ११ लाख मन्त्र जप का है, जिसका दशांश हवन करना चाहिए, शास्त्र ने इसे सर्व रोग निवारक घोषित किया है।

मृत्युञ्जय महारुद्र त्राहि मां शरणागतम्।
जन्ममृत्युजरारोगैः पीड़ितं कर्मबन्धनः॥

मन्त्र जप

यदि कोई साधक केवल मंत्र जप करना चाहे उनके लिए लघु मृत्युञ्जय मन्त्र इस प्रकार है—

ॐ जूं सः सः जूं ॐ

लघुत्तम मन्त्र

महामृत्युञ्जय का लघुत्तम मंत्र इस प्रकार है —

ॐ ह्रौं जूं सः

अनुष्ठान पूर्ण होने पर निम्न मंत्र से भगवान मृत्युञ्जय को जायफल समर्पित करना चाहिए —

बलिदान मन्त्र

"ॐ ह्रौं ह्रीं जूं सः नमः शिवाय प्रसन्न पारिजाताय स्वाहा।"

वस्तुतः महामृत्युञ्जय विधान मृत्यु पर विजय प्राप्त करने का अद्भुत उपाय है जो साधक स्वयं न कर सके, उसे चाहिए कि वह योग्य ब्राह्मण से यह अनुष्ठान संपन्न करावे, यों भी आज के घात प्रतिघात युग में प्रत्येक व्यक्ति को अग्रिम रक्षार्थ "महामृत्युञ्जय यन्त्र" धारण कर ही लेना चाहिए।

सिद्धाश्रम पंचांग : काल भैरव अष्टमी

शत्रु संहार की श्रेष्ठतम विधि

काल भैरव साधना प्रयोग

(२०-११-८६)

मार्ग शीर्ष कृष्ण ८ को काल भैरव अष्टमी दिवस है, और यह अपने आपमें अत्यन्त महत्वपूर्ण दिवस माना जाता है, क्योंकि प्रत्येक तांत्रिक ग्रन्थों में काल भैरव को जीवन की पूर्णता का पर्याय माना है।

उच्चकोटि के तांत्रिक ग्रन्थों में बताया गया है, कि चाहे किसी भी देवी या देवता की साधना की जाय सर्व प्रथम गणपति और काल भैरव की पूजा आवश्यक है। जिस प्रकार से गणपति समस्त विघ्नों का नाश करने वाले हैं, ठीक उसी प्रकार से भैरव समस्त प्रकार के शत्रुओं का नाश करने में पूर्ण रूप से सहायक है।

कलियुग में बगला मुखी, छिन्नमस्ता, या अन्य महा-देवियों की साधनाएं तो कठिन प्रतीत होने लगी है, यद्यपि ये साधनाएं शत्रु संहार के लिए पूर्ण रूप से समर्थ और बलशाली है, परन्तु 'काल भैरव साधना' कलि-युग में तुरन्त फलदायक और शीघ्र सफलता देने में सहा-यक है। अन्य साधनाओं में तो साधक को फल जल्दी या विलम्ब से प्राप्त हो सकता है, परन्तु इस साधना का फल तो हाथों हाथ मिलता है, इसीलिए कलियुग में गणपति, चण्डी और भैरव की साधना तुरन्त रूप से महत्वपूर्ण मानी गई है।

प्राचीन समय से शास्त्रों में यह प्रमाण बना रहा है, कि किसी भी प्रकार का यज्ञ कार्य हो तो यज्ञ की रक्षा के लिए भैरव की स्थापना और पूजा सर्व प्रथम आवश्यक है, किसी भी प्रकार की पूजा हो उसमें सबसे पहले गण-पति की स्थापना की जाती है, तो साथ ही साथ भैरव की उपस्थिति और भैरव की साधना भी जरूरी मानी गई है क्योंकि ऐसा करने से दसों दिशाएं आबद्ध हो जाती है, और उस साधना में साधक को किसी भी प्रकार का भय व्याप्त नहीं होता और न किसी प्रकार का उपद्रव या बाधाएं आती है, ऐसा करने पर साधक को निश्चय ही पूर्ण सफलता प्राप्त हो जाती है।

इसके अलावा भैरव की स्वयं साधना भी अत्यन्त महत्वपूर्ण और आवश्यक मानी गई है, आज का जीवन जरूरत से ज्यादा जटिल और दुर्बोध बन गया है, पग पग पर कठिनाइयां और बाधाएं आने लगी है, अकारण ही शत्रु पैदा होने लगे है, और उनका प्रयत्न यही रहता है कि येन-केन प्रकारेण लोगों को तकलीफ दी जाय या उन्हें परेशान किया जाय, इससे जीवन में जरूरत से ज्यादा तनाव बना रहता है।

इसीलिए आज के युग में अन्य सभी साधनाओं की अपेक्षा भैरव की साधना को ज्यादा महत्व दिया जाने लगा है।

'देव्योपनिषद' में भैरव साधना क्यों की जानी चाहिए, इसके बारे में विस्तार से विवरण है, उनका सारा मूल तथ्य निम्न प्रकार से है-

१– जीवन के समस्त प्रकार के उपद्रवों को समाप्त करने लिए।
२– जीवन की बाधाएं और परेशानियों को दूर करने के लिए।
३– जीवन के नित्य कष्टों और मानसिक तनावों को समाप्त करने के लिए।
४– शरीर स्थित रोगों को निश्चित रूप से दूर करने लिए।
५– आने वाली बाधाओं और विपत्तियों को पहले से ही हटाने के लिए।
६– जीवन के और समाज के शत्रुओं को समाप्त करने और उनसे बचाव के लिए।
७– शत्रुओं की बुद्धि भ्रष्ट करने के लिए और शत्रुओं को परेशानी में डालने के लिए।
८– जीवन में समस्त प्रकार के ऋण और कर्जों की समाप्ति के लिए।
९– राज्य से आने वाली बाधाओं या अकारण भय से मुक्ति के लिए।
१०– जेल से छूटने के लिए और मुकदमों में शत्रुओं को, पूर्ण रूप से परास्त करने के लिए।
११– चोर भय, दुष्ट भय, और वृद्धावस्था से बचने के लिए।
१२– समस्त प्रकार के उपद्रवों से रक्षा के लिए।

इसके अलावा हमारी अकाल मृत्यु न हो, या किसी प्रकार का एक्सीडेन्ट न हो अथवा हमारे बालकों की अल्प आयु में मृत्यु न हो, आदि के लिए भी "काल भैरव साधना" अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी गई है। इसीलिए तो शास्त्रों में कहा गया हैं, कि जो चतुर और बुद्धिमान व्यक्ति होते है, वे अपने जीवन में काल भैरव साधना अवश्य ही करते है. जो वास्तव में ही जीवन में बिना बाधाओं के निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर होना चाहते है, वे काल भैरव साधना अवश्य करते है। जो अपने जीवन में यह चाहते है, कि किसी भी प्रकार से राज्य की कोई बाधा या परेशानी न आवे वे निश्चय ही भैरव साधना सम्पन्न करते है। जिन्हे अपने बच्चे प्रिय है, जो अपने जीवन में रोग नहीं चाहते, जो अपने पास बुढ़ापा फट-कने नहीं देना चाहते, वे अवश्य ही काल भैरव साधना सम्पन्न करते है।

उच्च कोटि के योगी, सन्यासी तो काल भैरव साधना करते ही है, जो श्रेष्ठ बिजनेस मेन या व्यापारी है, वे भी अपने पण्डितों से काल भैरव साधना सम्पन्न करवाते है। जो राजनीति में रुचि रखते है, और अपने शत्रुओं पर

विजय पाना चाहते है, वे भी अपने विश्वस्त तांत्रिकों से काल भैरव साधना सम्पन्न करवाते है। मेरा यह अनुभव रहा है, कि जीवन में सफलता और पूर्णता पाने के लिए काल भैरव साधना अत्यन्त आवश्यक और महत्वपूर्ण है।

सरल साधना

नाम भले ही डरावना और तीक्ष्ण हो, परन्तु काल भैरव अत्यन्त सौम्य और रक्षा करने वाले देवता है। जिस प्रकार से हमारे बॉड़ी गार्ड लम्बे डील डौल वाले भयानक और बन्दूक या शस्त्र साथ में रख कर चलने वाले होते है, पर उससे हमें भय नहीं लगता अपितु उनकी वजह से उलटे हम निश्चित हो जाते है, उसी प्रकार से काल भैरव भी हमारे जीवन के बॉडी गार्ड की तरह है, वे हमें किसी प्रकार से तकलीफ नहीं देते अपितु हमारी रक्षा करते है, है, और हमारे लिये अनुकूल स्थितियां पैदा करते हैं।

यह साधना सरल और सौम्य साधना है, किसी प्रकार की देवी देवता की साधना करने वाला, गायत्री साधना करने वाला, या देवी शिव या विष्णु की साधना करने वाला व्यक्ति भी काल भैरव साधना कर सकता है। दूसरे शब्दों में इस प्रकार के साधकों को भैरव साधना अवश्य ही करनी चाहिए। शास्त्रों में स्पष्ट रूप से बताया गया है. कि काल भैरव साधना अथवा भैरव साधना कोई भी पुरुष या स्त्री सम्पन्न कर सकती है, यदि कोई सुहागिन स्त्री इस भैरव साधना को करती है तो उसके सौभाग्य की तथा सुहाग की रक्षा होती है तथा उसके बालकों को किसी प्रकार की कोई तकलीफ नहीं होता, उन बालकों की अकाल मृत्यु नहीं होती और न घर में किसी प्रकार की परेशानी आती है।

इसके अतिरिक्त यह साधना आसान और सरल साधना है, यदि इस साधना में असफलता भी मिल जाती है, या यह साधना भली प्रकार से सम्पन्न न हो अथवा साधना में किसी प्रकार की त्रुटि रह जाय तब भी किसी प्रकार की बाधा नहीं आती और न किसी प्रकार का विपरीत प्रभाव देखने को मिलता है।

साधना प्रयोग

यों तो शास्त्रों में ५२ भैरव बताये गये है, और उन सब की साधनाएं अलग अलग तरीके से दी हुई है। मैं यहां पर उन ५२ भैरवों में प्रमुख काल भैरव साधना को स्पष्ट कर रहा हूं, जिसके सम्पन्न करने से जो फल प्राप्त होते हैं, उन्हें मैंने पीछे के पृष्ठों में स्पष्ट किया है।

साधक काल भैरव अष्टमी के दिन (जो कि इस वर्ष २०-११-८९ को आ रही है) स्नान कर लाल धोती धारण कर ले। यदि सर्दी की ऋतु हो तो कन्धों पर भी लाल धोती डाल सकते है, या लाल कम्बल ओढ़ सकते हैं, इसी प्रकार स्त्री साधिका लाल साड़ी धारण कर सकती है।

फिर साधक लाल आसन बिछा कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय, और सामने लकड़ी का एक बाजोट रख दें, उस पर लाल वस्त्र बिछा दें और उस बाजोट पर स्टील या लोहे की थाली रख दें, फिर इस थाली के मध्य में कुंकुम से या ज्यादा अच्छा यह हो कि सिन्दूर से अपनी उंगली या तिनके से "ॐ भं भैरवाय नमः" लिख दें, फिर इस थाली के मध्य में "काल-भैरव यन्त्र" को स्थापित कर दें।

"काल भैरव यन्त्र" अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण और दुर्लभ यन्त्र माना गया है, यह तांबे का या लोहे का बना होना चाहिए. इस यन्त्र का निर्माण स्टील पर भी किया जा सकता है, फिर इस यन्त्र में प्राण प्रतिष्ठा की हुई हो, और पूर्ण रूप से नीलकण्ठ प्रयोग, काल प्रयोग, विक्रम प्रयोग तथा मृत्युदर्पनाशन प्रयोग सम्पन्न कर इसे प्रभावयुक्त बनाना चाहिए।

देवी उपनिषद में बताया गया है, कि महत्वपूर्ण काल भैरव यन्त्र को बनाने के लिए उसका निर्माण पूर्ण विधि

के साथ सम्पन्न हो, फिर उस यन्त्र पर निम्न १२ प्रयोग संपन्न किये जांय, जिससे कि वह महायन्त्र घर में रखने से ही अनुकूलता एवं सुफल प्रदान कर सके, देवी उपनिषद के अनुसार उस यन्त्र पर निम्न १२ प्रयोग कर पूजन करना चाहिए —

१– काल भैरव प्रयोग
२– नील कण्ठ प्रयोग
३– तीक्ष्णदंष्ट्रकाल भैरव प्रयोग
४– दण्डपाण्य प्रयोग
५– विक्रम प्रयोग
६– स्वर्ण सिद्धि प्रयोग
७– मृत्यु दर्पनाशन प्रयोग
८– शत्रु स्तम्भन प्रयोग
९– कर्म पाश मोचक प्रयोग
१०– अष्ट सिद्धि प्रयोग
११– ऋण मोचक प्रयोग
१२– अकाल मृत्यु निवारक प्रयोग

उपरोक्त १२ प्रयोग किसी श्रेष्ठ पंडित से उस यंत्र पर सम्पन्न करा देने चाहिए , जिससे कि वह यंत्र अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावदायक बन सके ।

इस प्रकार के प्रयोग अत्यन्त जटिल और विधि विधान युक्त होते है, और इनमें से कई विधियां तो मेरी राय में अब तक सर्वथा गोपनीय रही है । फिर भी इस प्रकार की विधियों को ढूंढ़ कर इस यंत्र पर ये सारी विधियां सम्पन्न करने से वह यंत्र अपने आपमें शीघ्र एव पूर्ण सफलतादायक बनता है ।

इसके बाद उस यंत्र की प्राण प्रतिष्ठा होनी चाहिए और ऐसा प्राण प्रतिष्ठा युक्त 'कालभैरव महा यंत्र' अपने आप में ही दुर्लभ, महत्वपूर्ण तथा सोने की खान के समान हो जाता है, जिसके घर में इस 'शिष्य वर्ष' में इस प्रकार का महायंत्र होता है, वास्तव में ही वह व्यक्ति सौभाग्यशाली होता है, और वह अपने जीवन में बिना किसी अड़चनों या बाधाओं के अपनी मंजिल तक पहुंचने में सक्षम हो पाता है ।

साधकों के लिये पत्रिका कार्यालय में इस "शिष्य वर्ष" में ऐसे ही महायंत्र तैयार करवाये गये है, जो कि संख्या में कम ही तैयार हो पाये हैं, परन्तु हमने जो भी 'महायंत्र' तैयार करवाये हैं, वे अपने आप में ही पूर्ण प्रभाव दायक और उपरोक्त द्वादश प्रयोगो से सम्पन्न फलदायक है ।

ऐसा महायंत्र उस थाली में स्थापित कर के, उस यंत्र पर सिन्दूर की ५२ बिन्दियां लगावे, जो कि ५२ भैरव की प्रतीक होती है, फिर उस पर लाल पुष्प चढ़ावे, और चावलों को सिन्दूर में रंग कर भैरव पर चढ़ावे, इस प्रकार का पूजन कार्य करते समय "ॐ भं भैरवाय नमः" मन्त्र का उच्चारण करता रहे ।

इस प्रकार संक्षिप्त पूजा सम्पन्न करने के बाद भैरव के सामने एक कटोरी में घी और गुड़ मिला कर भोग लगावे और तेल का दीपक जला दे, फिर उसके सामने निम्न स्तोत्र मन्त्र का ५१ बार पाठ करे, यह अपने आप में स्तोत्र होते हुए भी मन्त्र के समान प्रभावदायक है, इसीलिए इसको स्तोत्र मन्त्र' कहा गया है, इसमें हकीक माला का या मूंगे की माला का प्रयोग किया जा सकताहै।

भैरव स्तोत्र

यं य यं यक्षरूपं दश दिशि विदितं भूमिकम्पायमानं ।
सं सं संहारमूर्ति शिर मुकुट जटाशेखरं चन्द्रबिम्बम् ।।
दं दं दं दीर्घकायं विकृत नख मुखं उर्ध्वरोयं करालं ।
पं पं पं पापनाशं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ।।

उपरोक्त स्तोत्र मन्त्र का ५१ बार पाठ करने के बाद साधक आसन से उठ जाय, पर भैरव के सामने जो भोग लगा हुआ है वह रहने दे और तेल का दीपक बराबर जलते रहना चाहिए ।

इसी दिन रात्रि को लगभग ९ बजे के बाद वह भोग जहां तीन रास्ते मिलते हो, वहां ले जाकर रख दे और वह दीपक भी वहीं पर रख दें. यदि दीपक ले जाते समय मार्ग में बुझ जाय तो वहां तीन रास्तों पर वह दीपक रख कर पुनः माचिस से जला सकते है और फिर लौट कर आ जाय, दीपक और भोग रखने के बाद पीछे मुड़ कर नहीं देखे और घर में आ कर स्नान कर कपड़े बदल ले ।

इस प्रकार यह प्रयोग सम्पन्न होता है, उस "काल भैरव महायंत्र" को घर में किसी भी स्थान पर रख सकते है, वह महायंत्र निश्चय ही घर की, व्यापार की, शरीर की, परिवार की और बाल बच्चों की सभी दृष्टियों से पूर्ण रक्षा करता हैं ।

शत्रुओं पर वज्र की तरह प्रहार किया जा सकता है

काल भैरव प्रयोग से

किसी भी शुभ कार्य हेतु भैरव स्थापना अवश्य की जाती है, क्योंकि भैरव रक्षाकारक देव हैं, जहां भैरव की स्थापना पूजा होती है, वहां कार्य में कोई विपत्ति, बाधा नहीं आ सकती, काल भैरवाष्टमी के अवसर पर किया जाने वाला एक अनूठा प्रयोग जिसे संस्कृत जानने वाला और न जानने वाला कोई भी साधक सम्पन्न कर सकता है।

जो अपने दम पर जिये दुनियां उसी की कहलाती है, जो अपने जीवन में जोखिम उठा कर कार्य हाथ में लेता है, भाग्य उसी का साथ देता है, और वही अपने जीवन में सफल होता है, आप जी रहे हैं और मोहल्ले के बाहर आपको कोई पहिचानता ही नहीं है, फिर ऐसा जीवन किस काम का, नये-नये कार्य करने का, नये जोखिम उठाने का उत्साह हर समय होना चाहिए तभी सड़े-गले जीवन से नये जीवन का निर्माण किया जा सकता है।

यहां यह बात ध्यान देने योग्य है कि जो व्यक्ति आगे बढ़ने का प्रयास करते हैं, उनके ही मार्ग में रुकावटें आती हैं, शत्रु उत्पन्न होते हैं, जो अपने जीवन को एक निश्चित गति पर कोल्हू के बैल की तरह चलने देते हैं, उसके शत्रु कैसे होंगे? जो जीवन से भाग कर छुप जाता है, वहां साधना का नाटक करता है, उसके भी शत्रु कैसे होंगे इसलिए शत्रु तो जीवन का अंग है, इनसे घबरा कर पैर पीछे हटा लिये तो उन्नति नहीं हो सकती।

इतिहास उठा कर देखें तो हमें यह स्पष्ट मालूम पड़ेगा कि हमने केवल उन्हीं की पूजा की है, जो अपने शत्रुओं से लड़े हैं, और जिन्होंने शत्रुओं पर विजय प्राप्त की है, चाहे वह राम हों अथवा श्रीकृष्ण, हनुमान हों अथवा महाकाली, इनमें से प्रत्येक का जीवन आख्यान

राक्षस विजय से जुड़ा है, अतः आवश्यकता है, कि अपने आपको प्रबल बनाया जाय, शत्रु बाधा का वीरता से सामना किया जाय, और शत्रुओं पर विजय प्राप्त की जाय, संघर्ष कर जीवन में कुछ प्राप्त करने का आनन्द ही अनोखा होता है।

काल भैरव

शिव के अंश, शिव स्वरूप, शक्ति सम्पन्न, शक्ति स्वरूप महाकाली सेवक के रूप में भैरव की मान्यता विख्यात है, भैरव जन-जन के देव हैं, जो साधक विशेष मन्त्रों को नहीं जानता, पूजा का विशेष विधान नहीं जानता, वह भी भैरव पूजा कर सकता है, और ऐसे एक दो नहीं हजारों-लाखों उदाहरण हैं जहां सामान्य साधक को भैरव कृपा से विशेष सफलता मिली है।

रक्षाकारक देव

भैरव की मान्यता मूल रूप से रक्षाकारक देव के रूप में ही है, बड़े से बड़े यज्ञ में पहले भैरव स्थापना की जाती है, जिससे कि भैरव अपने शक्ति से दसों दिशाओं को आबद्ध कर देते हैं फिर सम्पूर्ण कार्य में कोई विघ्न उपस्थित नहीं हो सकता है, भूत, पिशाच, प्रेत, तांत्रिक प्रयोग कैसा भी प्रबल प्रहार किया जाय तो जहां भैरव की उपस्थिति है, वहां से यह प्रहार उलटे लौट आते हैं और इस प्रकार के गलत तांत्रिक प्रयोग को करने वालों का ही नाश कर देते हैं।

भैरव पूजा का विधान अत्यन्त सरल है, और आज पाठकों हेतु काल भैरव के कुछ सरल प्रयोग स्पष्ट किये जा रहे हैं जिनमें सरलता से ही, इनकी सिद्धि और उपयोगिता है।

काल भैरवाष्टमी

दिनांक २८-११-९१ गुरुवार मार्गशीर्ष कृष्ण अष्टमी को काल भैरवाष्टमी दिवस है, और इस दिवस की मान्यता के सम्बन्ध में विख्यात है, कि इस दिन जो साधक भक्तिपूर्वक भैरव साधना सम्पन्न कर लेता है, भैरव साक्षात् उस साधक में विराजमान हो जाते हैं।

भैरव साधना के स्वरूप को मूलरूप से तांत्रिक स्वरूप दे दिया गया है, जो कि गलत है, यह तो एक सात्विक जीवन की आवश्यक साधना है, आप अपनी ओर से किसी का बुरा नहीं चाहते हैं, लेकिन क्या आप पर कोई प्रहार करेगा तो उसका जबाव नहीं देंगे ? क्या आपको व्यर्थ के मुकदमों की बाधाओं का सामना करना पड़ेगा, तो मुकदमे नहीं लड़ेंगे ? क्या आपके विरुद्ध तांत्रिक प्रयोग होंगे और घर में तांत्रिक प्रयोगों के कारण जरा, पीड़ा, बीमारी, मृत्यु, शोक, रोग, दुःख रहेगा तो इसे दूर करने का उपाय नहीं करेंगे ?

जीवन को श्रेष्ठ रूप से जीने के लिए इन सब बाधाओं को हटाना आवश्यक है, और इसके लिए सरल से सरल अचूक से अचूक प्रयोग काल भैरव प्रयोग ही है, जो आपके हाथ में शक्ति का, उत्साह का वह वज्र थमा सकते हैं, जिसके बलबूते पर आप अपना जीवन अपनी इच्छानुसार जी सकते हैं, अपने व्यक्तित्व को पराक्रमी बना सकते हैं, अपनी श्रेष्ठता स्थापित कर सकते हैं।

मूल रूप से चार बाधाएं व्यक्ति के जीवन को दीमक की तरह खा जाती हैं, ये हैं—

१-शत्रु बाधा, २-रोग, बीमारी ३-मुकदमेबाजी ४-तांत्रिक बाधा, भय आदि हैं।

इनमें से कोई भी एक बाधा रहने पर व्यक्ति अपना जीवन सही ढंग से नहीं जी सकता, इसके चक्र में उलझता हुआ अपनी शक्ति क्षीण करता रहता है, काल भैरवाष्टमी पर इन्हीं चार बाधाओं के निवारण हेतु किया जाने वाले विशेष सावर प्रयोग पाठकों के लिए प्रस्तुत किये जा रहे हैं, इन महत्वपूर्ण प्रयोगों को निष्ठा से सम्पन्न कर तत्काल प्रभाव का लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

इन में से प्रत्येक प्रयोग के लिए अलग-अलग मन्त्र विधान है, कुछ विशेष सामग्री हैं, साधक जिस बाधा विशेष का निवारण करना चाहता है, उससे सम्बन्धित प्रयोग काल भैरवाष्टमी को विशेष रूप से सम्पन्न करें, अन्य प्रयोग वह किसी भी रविवार को सम्पन्न कर सकता है, प्रति रविवार भैरव साबर मन्त्र प्रयोग सम्पन्न करने से ही उसे जीवन में भैरव रक्षा का पूर्ण वर निश्चित रूप से प्राप्त हो जाता है।

१- शत्रु बाधा निवारण प्रयोग

भैरवाष्टमी के दिन प्रातः साधक स्नान कर लाल वस्त्र धारण करें सिन्दूर का तिलक लगाएं, अपने सामने एक मिट्टी की ढेरी बना कर उस पर पानी छिड़कें फिर सिन्दूर छिड़कें और उस पर "काल भैरव गुटिका" स्थापित करें, ढेरी के चारों ओर "पांच आक्रान्त चक्र" तिल की ढेरियां बना कर रखें, प्रत्येक चक्र पर सिन्दूर छिड़कें, अब अपने पूजा स्थान में दीप और गुग्गुल का धूप तथा अगरबत्ती इत्यादि जला दें, अपने हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि मैं अपनी अमुक शत्रु बाधा के निवारण हेतु काल भैरव प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूं।

अब एक पात्र में सरसों, काले तिल मिलाएं, उसमें थोड़ा तेल डालें, थोड़ा सिन्दूर डाल कर उसे मिला दें, इस मिश्रण को निम्न भैरव मन्त्र का जप करते हुए काल भैरव गुटिका के समक्ष अर्पित करते रहें—

मन्त्र

विभूति-भूति-नाशाय, दुष्ट-क्षय-कारकं, महा-भैरवे नमः। सर्व-दुष्ट-विनाशनं सेवकं सर्व-सिद्धि कुरु। ॐ काल-भैरो, बटुक-भैरो, भूत-भैरो! महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता। सर्व सिद्धि-र्भवेत्।

ॐ काल भैरव, श्मशान-भैरव, काल रूप-काल भैरव! मेरो बैरी तेरो आहार रे। काढ़ि करेजा चखन करो कट-कट। ॐ काल-भैरो, बटुक-भैरो, भूत-भैरो! महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्।

इस प्रकार ५१ बार इस मन्त्र का जप कर पूजा में रखें, धूप और दीप से भैरव आरती सम्पन्न करें, अब भैरव गुटिका को छोड़ कर बाकी सब सामग्री काले कपड़े में बांध कर जमीन में गाड़ दें, और उस पर भारी पत्थर रख दें।

आगे दो रविवार तक भैरव गुटिका के समक्ष इस मन्त्र का जप करते रहें।

यह प्रयोग इतना प्रबल है, कि प्रबल से प्रबल शत्रु भी तीस दिन के भीतर-भीतर शान्त हो जाता है, उसकी शक्ति क्षीण हो जाती है, इसमें कोई संदेह नहीं। ★

२- काल भैरव : रोग नाश प्रयोग

यह प्रयोग भी प्रातः ही सम्पन्न किया जाता है, इसमें यदि स्वयं की बीमारी नाश हेतु प्रयोग करना है, तो अपने नाम का संकल्प लें और यदि दूसरे के नाम से प्रयोग करना है, तो उसके नाम से संकल्प लें।

संकल्प

ॐ अस्य श्री बटुक भैरव-स्त्रोतस्य सप्त ऋषि: ऋषय:, मातृका छन्दः, श्री बटुकः भैरवो देवता, ममेप्सित-सिद्धयर्थं जपे विनियोगः।

अपने सामने एक पात्र में "काल भैरव महायन्त्र" स्थापित कर उस पर सिन्दूर चढ़ाएं तथा एक दीपक

जलाएं जिसमें चार बत्तियां हों, तथा दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठें, भैरव यन्त्र के सामने पुष्प, लड्डू, सिन्दूर, लौंग तथा पुष्प माला, काला डोरा रखें तथा मन्त्र जप प्रारम्भ करें, मन्त्र जप के पहले जल से भरे हुए पात्र का मुंह लाल कपड़े से बांध दें।

अब एक पात्र में तिल लें उसमें सात सुपारी रखें, तथा निम्न मन्त्र का जप करते हुए यह तिल दक्षिण दिशा की ओर फेंकते रहें—

मन्त्र

ॐ काल-भैरो, बटुक-भैरो, भूत-भैरो ! महा-भय-विनाशनं देवता-सर्व-सिद्धिर्भवेत्। शोक-दुःख-क्षयकरं निरंजनं, निराकारं नारायणं, भक्ति-पूर्णं त्वं महेशं। सर्व-काम-सिद्धिर्भवेत्। काल-भैरव, भूषण-वाहनं काल हन्ता रूपं च, भैरव गुनी। महात्मनः योगिनां महा-देव-स्वरूपं। सर्व सिद्धयेत्। ॐ काल-भैरो, बटुक-भैरो, भूत-भैरो ! महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्।

इस प्रकार १०८ बार मन्त्र जप के पश्चात् सातों सुपारी सभी दिशाओं में फेंक दें, भैरव यन्त्र को पूजा में प्रयोग लाये काले डोरे से रोगी की भुजा पर बांध दें अथवा गले में पहना दें, पूजा का पवित्र जल भी पिलाएं, पुराने से पुराने रोग इस प्रयोग से दूर होते देखे गये हैं। ★

३- मुकदमा-वादविवाद में विजय का प्रयोग

इस प्रयोग हेतु साधक सायंकाल इस विशेष दिन को प्रयोग सम्पन्न करें, पूजा स्थान में पूर्ण रूप से शान्ति होनी चाहिए तथा जिस विशेष कार्य के सम्बन्ध में प्रयोग करना है, वह कार्य एक कागज पर सिन्दूर से लिख लें।

अब अपने सामने **"काल भैरव महा शंख"** स्थापित करें, शंख के चारों ओर सिन्दूर से घेरा बना दें, सामने **"एक नागचक्र"** स्थापित करें, भैरव शंख के दोनों ओर तीन-तीन तेल के दीपक जला दें।

इसके पहले वाले प्रयोग के अनुसार संकल्प कर जल छोड़ें तथा वह कागज जिसमें कार्य लिखा है, भैरव शंख के नीचे रख दें, वीर मुद्रा में बैठ कर मुट्ठी ऊपर कर मन्त्र जप प्रारम्भ करें —

मन्त्र

ॐ आं ह्रीं ह्रीं ह्रीं। (अमुक) मारय मारय, उच्चाटय उच्चाटय, मोहय मोहय, वशं कुरु कुरु। सर्वार्थिकस्य सिद्धि-रूपं त्वं महा-काल ! काल-भक्षणं महा-देव-स्वरूप त्वं। सर्व सिद्धयेत् ! ॐ काल भैरो, बटुक-भैरो, भूत-भैरो ! महा-भैरव महा-भय -विनाशनं देवता। सर्व सिद्धिर्भवेत् !

५१ बार मन्त्र जप करने के पश्चात् इस महा भैरव शंख को काले कपड़े में बांध कर अपने बैग, ब्रीफकेस, में रख दें और किसी भी मुकदमे के लिए जाते समय बैग अपने पास रखें, प्रबल से प्रबल विरोधी भी वशीभूत हो कर संधि करने को उत्सुक हो जाता है, मुकदमे में विजय प्राप्त होती है, मन्त्र जप नियमित रूप से अवश्य सम्पन्न करना है।

भैरव से सम्बन्धित उपरोक्त तीनों प्रयोगों की प्रामाणिकता साधक स्वयं प्रयोग सम्पन्न कर ही जान सकते हैं कि इन प्रयोगों में कितना अधिक प्रभाव है, काल भैरव प्रसन्न होने पर साधक को हर प्रकार का वरदान प्रदान कर देते हैं, उसकी रक्षा करते हैं और अपनी शरण में पूर्ण अभय प्रदान करते हैं, साधक की शक्ति में वृद्धि हो कर स्वयं भैरव समान श्रेष्ठ हो जाता है।

भैरवाष्टमी को यह प्रयोग सम्पन्न कर जब तक पूर्ण सफलता न मिले आगे आने वाले सात रविवार तक मन्त्र अनुष्ठान अवश्य ही सम्पन्न करते रहना चाहिए। ●

आपत्ति उद्धारक

बटुक भैरव प्रयोग

एक बार क्यों ?

बार-बार आजमाइये

हर बार

तत्काल प्रत्यक्ष फल प्राप्ति निश्चित है

लौकिक और पारलौकिक शक्तियों के द्वारा मानव जीवन में सफलताएं पाई जा सकती हैं, लौकिक शक्ति जहां अस्थिर रहती है, वहीं पारलौकिक शक्ति हर पल हर क्षरण मनुष्य के साथ रहती है ।

पारलौकिक शक्ति प्राप्त करने का स्रोत देवताओं की साधना ही है, इसमें भी दुर्गा या भैरव साधना तुरन्त तत्क्षरण फल देने वाली मानी गई है, भैरव भगवान शिव के अवतार हैं, विष्णु के अंश हैं, शक्ति के आद्य हैं, अतः शाक्त, वैष्णव, शैव कोई भी मतावलम्बी इस साधना को कर सकता है ।

गृहस्थ साधकों के लिए पहली बार प्रामाणिक अचूक, गोपनीय सरल एवं शीघ्र सिद्धिप्रद साधना का स्पष्ट बिवरण—

जीवन में सुख और दुःख आते ही रहते हैं, जहां आदमी सुख प्राप्त होने पर प्रसन्न होता है वहीं दुःख आने पर वह घोर चिन्ता और परेशानियों से घिर जाता है, परन्तु धैर्यवान व्यक्ति ऐसे क्षणों में भी शान्त चित्त होकर उस समस्या का निराकरण कर लेते हैं ।

कलियुग में पग-पग पर मनुष्य को बाधाओं, परेशानियों और शत्रुओं से सामना करना पड़ता है, ऐसी स्थिति में उसके लिए मन्त्र साधना ही एक ऐसा मार्ग रह जाता है जिसके द्वारा वह शत्रुओं और समस्याओं पर पूर्ण विजय प्राप्त कर सकता है, इस प्रकार की साधनाओं में

"आपत्ति उद्धारक बटुक भैरव साधना" अत्यन्त ही सरल, उपयोगी और अचूक फलप्रद मानी गई है, कहा जाता है कि भैरव साधना का फल हाथों-हाथ प्राप्त होता है।

भैरव को भगवान शंकर का ही अवतार माना गया है, शिव महापुराण में बताया गया है—

भैरवः पूर्णरूपो हि शंकरः परात्मनः।
मूढास्ते वै न जानन्ति मोहिता शिवमायया॥

देवताओं ने भैरव की उपासना करते हुए बताया है कि काल की भांति रौद्र होने के कारण ही आप **'कालराज'** हैं, भीषण होने से ही आप **'भैरव'** हैं, मृत्यु भी आप से भयभीत रहती है, अतः आप काल भैरव हैं, दुष्टात्माओं का मर्दन करने में आप सक्षम हैं, इसलिए आपको **'आमर्दक'** कहा गया है, आप समर्थ हैं और शीघ्र ही प्रसन्न होने वाले हैं।

आपद-उद्धारक बटुक भैरव

'शक्ति संगम तन्त्र' के **'काली खण्ड'** में भैरव की उत्पत्ति के बारे में बताया गया है कि **'आपद'** नामक राक्षस कठोर तपस्या कर अजेय बन गया था, जिसके कारण सभी देवता त्रस्त हो गये, और वे सभी एकत्र होकर इस आपत्ति से बचने के बारे में उपाय सोचने लगे, अकस्मात् उन सभी के देह से एक-एक तेजो धारा निकली और उसका युग्म रूप पंचवर्षीय बटुक का प्रादुर्भाव हुआ, इस बटुक ने **'आपद'** नामक राक्षस को मारकर देवताओं को संकट मुक्त किया, इसी कारण इन्हें 'आपदुद्धारक बटुक भैरव' कहा गया है।

'तन्त्रालोक' में भैरव शब्द की उत्पत्ति **भैभीमादिभिः अवतीति भैरेव** अर्थात् भीमादि भीषण साधनों से रक्षा करने वाला भैरव है, **'रुद्रयामल तन्त्र'** में दस महा-विद्याओं के साथ दस भैरव के रूपों का वर्णन है, और कहा गया है कि कोई भी महाविद्या तब तक सिद्ध नहीं होती जब तक उनसे सम्बन्धित भैरव की सिद्धि न कर ली जाय।

'रुद्रयामल तन्त्र' के अनुसार दस महाविद्याएं और सम्बन्धित भैरव नाम इस प्रकार हैं—

१-	कालिका	महाकाल भैरव
२-	त्रिपुर सुन्दरी	ललितेश्वर भैरव
३-	तारा	अक्षभ्य भैरव
४-	छिन्नमस्ता	विकराल भैरव
५-	भुवनेश्वरी	महादेव भैरव
६-	धूमावती	काल भैरव
७-	कमला	नारायण भैरव
८-	भैरवी	बटुक भैरव
९-	मातंगी	मतंग भैरव
१०-	बगलामुखी	मृत्युंजय भैरव

भैरव से सम्बन्धित कई साधनाएं प्राचीन तान्त्रिक ग्रन्थों में वर्णित हैं, जैन ग्रन्थों में भी भैरव के विशिष्ट प्रयोग दिये हैं, प्राचीनकाल से अब तक लगभग सभी ग्रन्थों में एक स्वर से यह कहा गया है कि जब तक साधक भैरव साधना सम्पन्न नहीं कर लेता, तब तक उसे अन्य साधनाओं में प्रवेश करने का अधिकार ही नहीं प्राप्त होता।

'शिव पुराण' में भैरव को शिव का ही अवतार माना है तो **'विष्णु पुराण'** में बताया गया है कि विष्णु का अंश ही भैरव के रूप में विश्व विख्यात है, दुर्गा सप्तशती के पाठ के प्रारम्भ और अन्त में भी भैरव की उपासना आवश्यक और महत्वपूर्ण मानी जाती है।

भैरव साधना के बारे में लोगों के मानस में काफी भ्रम और भय है परन्तु यह साधना अत्यन्त ही सरल, सौम्य और सुखदायक है, इस प्रकार की साधना को कोई भी साधक कर सकता है।

भैरव साधना के बारे में कुछ मूलभूत तथ्य साधक को जान लेना चाहिये—

१- भैरव साधना सकाम्य साधना है अतः कामना के साथ ही इस प्रकार की साधना की जानी चाहिए ।

२- भैरव साधना रात्रि में ही की जानी चाहिए, दिन में साधना करने का निषेध है ।

३- भैरव को सुरा पान कराना आवश्यक है ।

४- भैरव की पूजा में दैनिक नैवेद्य बदलता रहता है । रविवार को दूध की खीर, सोमवार को मोदक (लड्डू), मंगलवार को घी-गुड़ एवं घी से बनी हुई लपसी, बुधवार को दही भूरा, गुरुवार को बेसन के लड्डू, शुक्रवार को भुने हुये चने तथा शनिवार को उड़द के बने हुए पकौड़े का नैवेद्य लगाते हैं, इसके अतिरिक्त जलेबी, सेव तले हुए पापड़ आदि ।

साधना के लिए आवश्यक

ऊपर लिखे गये नियमों के अलावा कुछ अन्य नियमों की जानकारी साधक के लिए आवश्यक है, जिनका पालन किये बिना भैरव साधना पूरी नहीं हो पाती ।

१- भैरव की पूजा में अर्पित नैवेद्य प्रसाद को उसी स्थान पर पूजा के कुछ समय बाद ग्रहण करना चाहिए, इसे पूजा स्थान से बाहर नहीं ले जाया जा सकता, सम्पूर्ण प्रसाद उसी समय पूर्ण कर देना चाहिए ।

२- भैरव साधना में केवल तेल के दीपक का ही प्रयोग किया जाता है, इसके अतिरिक्त गुंगल, धूप-अगरबत्ती जलाई जाती है ।

३- इस महत्वपूर्ण साधना हेतु मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त **"बटुक भैरव यन्त्र"** तथा **'चित्र'** आवश्यक है, इस ताम्र यन्त्र तथा चित्र को स्थापित कर साधना क्रम प्रारम्भ करना चाहिए ।

४- भैरव साधना में केवल **'काली हकीक माला'** का ही प्रयोग किया जाता है ।

साधना विधान

साधक रात्रि को स्नान कर दक्षिण की तरफ मुंह कर बैठ जाय, सामने तेल का दीपक लगा लें और भैरव के चित्र, मूर्ति तथा यन्त्र के सामने निम्न ध्यान करें—

बटुक भैरव ध्यान

भक्त्या नमामि बटुकं तरुणं त्रिनेत्रं
कामप्रदान् नरकपालत्रिशूलदण्डान् ।
भक्तार्तिनाशकरणे दधतं करेषु
तं कौस्तुभामरणभूषितदिव्यदेहम् ।।

फिर इस प्रकार ध्यान कर भैरव से मन्त्र साधना या मन्त्र जप की आज्ञा मांगें ।

बटुक भैरव मन्त्र

।। ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु
बटुकाय ह्रीं ॐ स्वाहा ।।

यह इक्कीस अक्षरों का मन्त्र अत्यन्त ही महत्वपूर्ण माना गया है, और केवल मात्र नित्य एक माला जपने से ही एक महीने में साधक की इच्छा पूर्ति हो जाती है ।

इसके अलावा भी बटुक भैरव के कई प्रयोग हैं—

१- रक्षा प्राप्ति के लिए मन्त्र

किसी भी मंगलवार को रात्रि के एक प्रहर बाद निम्न मन्त्र की ग्यारह माला जप करें ।

मन्त्र

।। ॐ ह्रीं भैरव भैरव भयकरहर मां रक्ष रक्ष
हुं फट् स्वाहा ।।

२- वशीकरण प्रयोग मन्त्र

साधक यदि गुरुवार को प्रातःकाल या सूर्यास्त के समय नदी के किनारे या जंगल में जाकर निम्न मन्त्र का दस हजार जप करे तो वह जिसको भी चाहे वश में कर सकता है—

मन्त्र

ॐ नमो बटुक भैरवाय कामदेवाय यस्य यस्य दृश्यो भवामि यश्च यश्च मम सुखं तं तं मोहयतु स्वाहा ।।

३- मारण प्रयोग

मंगलवार को अर्धरात्रि के समय चौराहे पर जाकर उपरोक्त मन्त्र का दस हजार जप करें, तथा घी, खीर, लाल चन्दन मिला कर दशांश हवन करें, तो निश्चय ही शत्रु का नाश होता है ।

मन्त्र

ॐ नमः कालरूपाय बटुक भैरवाय अमुकं भस्म कुरु कुरु स्वाहा ।।

४- दरिद्रता नाश प्रयोग

यह मन्त्र महत्वपूर्ण और "स्वर्णाकर्षण भैरव मन्त्र" कहा गया है, रात्रि को दक्षिण की तरफ मुंह कर तेल का दीपक लगाकर निम्न मन्त्र का दस हजार जप करें तो निश्चय ही घर में दरिद्रता का नाश हो जाता है ।

स्वर्णाकर्षण भैरव मन्त्र

ॐ ऐं क्लीं क्लीं क्लूं ह्रां ह्रीं ह्रूं सः वं आपदुद्धरणाय अजामलवद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षण भैरवाय मम दारिद्रय विद्वेषणाय ॐ ह्रीं महाभैरवाय नमः ।

वस्तुतः भैरव प्रयोग अत्यन्त सरल और सौम्य है तथा कलियुग में भैरव प्रयोग शीघ्र ही सफलतादायक माना गया है, कोई भी साधक भैरव प्रयोग करके अपनी कामनाओं की पूर्ति कर सकता है । ●

अष्ट भैरव मंगलम्

आद्यो भैरव भीषणो निगदितः श्री कालराजः क्रमाद् श्री संहारक भैरवोऽप्यथ रू रूश्चोन्मत्तको भैरवः ।
क्रोधश्चण्ड-कपालग्भैरववरः श्री भूतनाथस्ततो हृष्टो भैरव मूर्तयः प्रतिदिनं दद्यु: सदा मंगलम् ।।

—श्री शंकराचार्य

प्रथम भीषण भैरव, दूसरा कालराज भैरव, तीसरा संहारक भैरव, रूरू भैरव, उन्मत्तक भैरव, क्रोधदण्ड कपाल धारक भैरव, भूतनाथ भैरव, तथा हृष्ट भैरव, भैरव की ये अष्ट मूर्तियां हमारी सदैव मंगल करें ।

दीर्घायु, आरोग्य विधान

भगवान् महामृत्युंजय अनुष्ठान

जो शिव साधना का श्रेष्ठतम स्वरूप है

भगवान शंकर के जितने विविध रूप हैं, उतने विश्व में किसी देवता के नहीं मिलेगे, यजुर्वेद में वे उग्र रुद्र रूप में हैं तो उपनिषद्-काल में कल्याणकारी आशुतोष शिव और शंकर के रूप में, पुराणों में उन्हें गिरिजापति बना कर शृंगार का देवता माना है तो वहीं वे विष-पान कर नीलकंठ के रूप में भी प्रचलित हुए, कहीं वे नटराज हैं तो कभी शृंगारी नायक ईश्वर।

इससे भी महत्वपूर्ण और श्रेष्ठतम रूप है अमृतवर्षी महामृत्युंजय का, शंकर के चिन्तन, मनन, पूजन और साधना से मृत्युभय को हमेशा के लिए समाप्त किया जा सकता है, इसीलिए मार्कण्डेय ऋषि ने कहा है "**चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः**" अर्थात् जब मैं चन्द्रशेखर के आश्रित हूं तो यम मेरा क्या बिगाड़ सकता है ?

दीर्घायु एवं स्थायी आरोग्य प्रत्येक मानव के लिए परम आवश्यक है, इसके लिए वह प्रतिदिन प्रतिक्षण चिन्तित रहता है और विविध औषधियों तथा उपायों का सहारा लेता है, महामृत्युंजय साधना इस दृष्टि से सर्वोपरि है, जिससे साधक निरोग एवं दीर्घायु बना रहता है और उसका सारा जीवन हंसते-हंसते व्यतीत हो जाता है।

अथर्ववेद के अनुसार परम ब्रह्म का आविर्भाव हुआ ब्रह्मा ने सृष्टि का निर्माण किया, जब समस्त लोक प्राणियों की अधिकता से भर गये और श्वास लेने में भी बाधा उपस्थित होने लगी तो ब्रह्मा जी के नेत्रों से प्रचण्ड अग्नि उत्पन्न हुई और वह प्राणियों को जलाने लगी, ऐसी स्थिती में भगवान् शिव ने ब्रह्मा जी से उस अग्नि के संवरण की प्रार्थना की जिसके परिणाम स्वरूप उन्होंने क्रोधाग्नि को अन्तरात्मा में लीन कर लिया, उस समय प्राणियों के जन्म-मरण की व्यवस्था के लिए मृत्यु को जन्म दिया, मृत्यु के द्वारा कार्य करने का आदेश मांगने

पर उसे समय-समय पर प्राणियों के संहार का आदेश मिला, इससे मृत्यु चिन्तित होकर रो पड़ी, उसने अपने आंसू दोनों हाथों में ले लिये, आगे चल कर वे आंसू ही रोग बन और जब प्राणियों की मृत्यु आती है, वह रोगों से प्रेरित होकर मर जाता है।

मृत्यु तो एक दिन सब की होती ही है, क्योंकि "जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः" के अनुसार जो पैदा होता है उसकी मृत्यु निश्चित है; किन्तु मृत्यु असमय में न हो, इसके लिए ऋषि मुनियों ने सिद्धि प्राप्त कर कुछ ऐसे उपाय ढूंढ़ निकाले हैं, जिसके द्वारा अकाल मृत्यु को टाला जा सकता है, इन उपायों में सर्वश्रेष्ठ उपाय महा-मृत्युंजय साधना मानी गई है।

अमृत दाता महामृत्युंजय

भगवान् शंकर विष को पचाकर अमृत को प्रदान करने वाले हैं, उनके विविधि रूपों में महामृत्युंजय रूप सर्वश्रेष्ठ एवं प्रभावकारी कहा गया है—

मृत्युंजय जपं नित्यं यः करोति दिने दिने।
तस्य रोगाः प्रणश्यन्ति दीर्घायुस्च प्रजायते ।।

अर्थात् जो प्रतिदिन महामृत्युंजय मन्त्र का जप करता है, उसके सभी रोग नष्ट हो जाते हैं, और अकाल मृत्यु को हटाकर दीर्घायु प्राप्त करता है।

इसीलिए **रुद्रयामल** ग्रन्थ में कहा गया है—

मृत्युंजयस्य मन्त्रं वै जपते यदि मानुषः।
कोटि वर्ष शतं स्थित्वा लीनो भवति ब्रह्मणि ।।

अर्थात् जो मनुष्य महामृत्युंजय का एक बार भी जप नित्य करता है, वह पूर्ण आयु प्राप्ति करके अन्त में भगवान शिव में ही विलीन हो जाता है।

पारद शिवलिंग स्थापना

महामृत्युंजय भगवान शिव का साक्षात् स्वरूप पारद शिवलिंग में स्थित है, और जिसके घर में, पूजा स्थान में पारद शिवलिंग स्थापित नहीं है, वे दुर्भाग्यशाली ही कहे जा सकते हैं, इस विशेष साधना में **पारद शिवलिंग** तथा तीन मधुरूपेण रुद्राक्ष आवश्यक हैं इसके अतिरिक्त साधना में साधक पूर्ण भक्ति से साधना प्रारम्भ करें, अपने सामने पारद शिवलिंग स्थापित कर, तीनों मधुरूपेण रुद्राक्ष सामने रखें और फिर दोनों हाथों की अंजलि में पुष्प लेकर भगवान शिव का ध्यान करें।

हस्ताभ्यां कलशद्वयामृतरसैराप्लावयन्तं शिरो,
द्वाभ्यां तौ दधतं मृगाक्षवलये द्वाभ्यां वहन्तं परम्।
अंकन्यस्तकरद्वयामृतघटं कैलाशकान्तं शिवं,
स्वच्छाम्भोजगतं नवेन्दुमुकुटं देवं त्रिनेत्रं भजे ।।

अर्थात् दो हाथों से दो अमृत घटों द्वारा अपने सिर पर अभिषेक करते हुए अन्य दो हाथों से मृग चर्म तथा अक्ष माला को धारण किये हुए और अन्य दो हाथों में अमृत से परिपूर्ण दो कुम्भ अपनी गोद में रखे हुए कैलाश पर्वत के समान गौर वर्ण, स्वच्छ कमल पर विराजमान नवीन चन्द्रमायुक्त मुकुट वाले, त्रिनेत्र, भगवान मृत्युंजय शिव का मैं स्मरण करता हूं।

इसके बाद हाथ में जल ले कर विनियोग करें—

विनियोग

अस्य श्री त्र्यम्बक मन्त्रस्य वशिष्ठ ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः त्र्यम्बक पार्वति पतिर्देवता त्रं बीजं बं शक्तिः कं कीलकं मम सर्व रोग निवृत्तये सर्व कार्य सिद्धये अकालं मृत्यु निवृत्तये महामृत्युंजय त्र्यम्बक मन्त्रं जपे विनियोगः ।।

तत्पश्चात् हाथ का जल भूमि पर छोड़ दें।

ऋष्यादिन्यास

ॐ वशिष्ठ ऋषये नमः (शिरसि)
ॐ अनुष्टुप् छन्दसे नमः (मुखे)
ॐ त्र्यम्बकं देवतायै नमः (हृदये)
ॐ त्रं बीजाय नमः (गुह्ये)
ॐ बं शक्तये नमः (पादयोः)
ॐ कं कीलकाय नमः (नाभौ)
ॐ विनियोगाय नमः (सर्वांगे) ।।

करन्यास

ॐ त्र्यम्बकं (अंगुष्ठाभ्यां नमः)
ॐ यजामहे (तर्जनीभ्यां नमः)
ॐ सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् (मध्यमाभ्यां नमः)
ॐ उर्वारुकमिव बन्धनात् (अनामिकाभ्यां नमः)
ॐ मृत्योर्मुक्षीय (कनिष्ठिकाभ्यां नमः)
ॐ मामृतात् (करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः)

हृदयन्यास

ॐ त्र्यम्बकं (हृदयाय नमः)
ॐ यजामहे (शिरसे स्वाहा)
ॐ सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् (शिखायै वषट्)
ॐ उर्वारुकमिव बन्धनात् (कवचाय हुं)
ॐ मृत्योर्मुक्षीय (नेत्र त्रयाय वौषट्)
ॐ मातृतात् (अस्त्राय फट्)

जप के लिए मूल मन्त्र

महर्षि वशिष्ठ ने महामृत्युंजय मन्त्र को ३३ अक्षर का बताया है, जो उनके अनुसार ३३ देवताओं और दिव्य शक्तियों के द्योतक हैं, इन ३३ देवताओं में हैं—

आठ वसु, ग्यारह रुद्र, बारह आदित्य, एक प्रजापति एवं एक वषट्कार।

ये तैंतीस देवता प्रणियों के शरीर के भिन्न-भिन्न अंगों में स्थित हैं, इस मन्त्र के जप से ये सभी शक्तियां शरीर में चैतन्य होकर प्राणी की रक्षा करती हैं और शरीरगत निर्बलता, मृत्यु तथा रोगों को समाप्त करती हैं।

महामृत्युंजय मन्त्र

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

इस मन्त्र का एक लाख जप होना आवश्यक है, जप पूरा होने के बाद दशांश हवन करना चाहिए, जिनमें १-बिल्व, २-खैर, ३-वट, ४-तिल, ५-सरसों, ६-खीर, ७-दूध, ८-दही, ९-पलास और १०-दूर्वा, इन दस द्रव्यों को घी में डुबो कर मूल मन्त्र बोलकर आहुति दी जानी चाहिए और अन्त में जिस रोगी के लिए जप किया जाय, उस पर इसी मन्त्र से हवन का दसवां अंश अभिषेक करना चाहिए।

जब प्राण अत्यन्त संकट में हो

जीवन में अचानक दुर्घटना आ सकती है, या कोई विशेष आपत्ति, परेशानी, बाधा, राजभय, बीमारी या कष्ट अनुभव हो तब शुक्राचार्य प्रणीत मृतसंजीवनी विद्या से प्रेरित महामृत्युंजय मन्त्र का जप करना चाहिए, यह **"मृतसंजीवनी महामृत्युंजय मन्त्र"** कहा जाता है—

मृतसंजीवनी महामृत्युंजय मन्त्र

ॐ ह्रौं ॐ जूं ॐ सः ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्विवर्धनम् उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः ॐ सः ॐ जूं ॐ ह्रौं ॐ।

यह ६२ अक्षरों का शुक्राराधित महामृत्युंजय मन्त्र संसार का अमोघ मृत्युभय नाश करने वाला मन्त्र कहा गया है।

मृतसंजीवनी विद्या

पुराणों में प्रसिद्ध है, कि महर्षि शुक्राचार्य को अमृत सिद्धि प्राप्त थी, यह मृतसंजीवनी विद्या मृत्युंजय मन्त्र एवं गायत्री मन्त्र के योग से बना है, इसका स्वरूप इस प्रकार है—

मृतसंजीवनी मन्त्र

ॐ ह्रौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्य त्र्यम्बकं यजामहे भर्गो देवस्य धीमहि सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् धियो योनः प्रचोदयात् उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं ह्रौं ॐ॥

किसी भी मन्त्र की साधना में विनियोग करन्यास, ध्यान आदि पूर्ववत् ही होंगे। ●

क्या प्रत्यक्ष भैरव सिद्धि सम्भव है ?

हां

काल विकराल बल भैरव साधना से

भैरव साधना को तीव्र साधना माना गया है और जब संकट में, भय में साधक भैरव को पुकारता है तो भैरव तत्काल उस साधक की रक्षा करते हैं, भैरव सिद्धि बिना न तो कोई शुभ कार्य पूर्ण होता है और न ही कोई यज्ञ अनुष्ठान, अतः यह साधना गृहस्थ साधकों को अवश्य करना चाहिए।

कलियुग में भैरव की साधना अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी गई है, क्योंकि इससे कार्यसिद्धि तुरन्त मिलती है और बहुत ही कम प्रयास में प्रत्यक्ष दर्शन हो सकते हैं।

यों तो भैरव से सम्बन्धित कई साधनाएं प्रचलित हैं, परन्तु एक महत्वपूर्ण और गोपनीय साधना आगे के पृष्ठों में दे रहा हूं जिससे कि भैरव तुरन्त प्रसन्न होकर साधक को मनोवांछित वरदान देने में समर्थ हो पाते हैं।

यह साधना कृष्ण पक्ष की पंचमी से प्रारम्भ की जाती है, साधक किसी भी महीने में इस साधना को प्रारम्भ कर सकता है, प्रातःकाल उठ कर साधक पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करता हुआ मन में यह विचार करे, कि मैं भैरव की साधना करने जा रहा हूं, मैं भैरव के प्रत्यक्ष दर्शन करना चाहता हूं।

साधक पूरे साधना काल में काले वस्त्रों का ही प्रयोग करे, काली धोती और ऊपर काला कुरता पहन सकता है, साधना के बाद भी वह दूसरे रंग के वस्त्रों का प्रयोग न करे।

यह साधना यदि जंगल में, शिवालय में, नदी तट पर या श्मशान में करें तो ज्यादा उचित रहता है, घर पर इस प्रकार की साधना का प्रयोग नहीं

करना चाहिए, भैरव शीघ्र प्रसन्न होते हैं तो जल्दी ही नाराज भी हो जाते हैं, अतः साधक को सावधानी के साथ इस प्रकार की साधना हाथ में लेनी चाहिए।

जिस दिन साधना प्रारम्भ करें, उस दिन प्रातः मसूर, चने, मूंग और मोठ इन चारों धान्यों को बराबर मात्रा में लेकर पकावें और फिर इसके सोलह भाग कर सोलह पलास के पत्तों पर अपने सामने रख दें, प्रत्येक पत्ते पर तेल का दीपक लगावें और फिर इन सोलह पत्तों से पहले और अपने सामने भैरव की काल्पनिक मूर्ति या **भैरव यन्त्र** स्थापित करें उसका गन्ध, पुष्प, अक्षत, धूप-दीप आदि से पूजन करें।

इसके बाद साधक हाथ में अक्षत लेकर उन्हें चारों तरफ बिखेरता हुआ आत्म रक्षा मन्त्र पढ़े—

आत्मरक्षा मन्त्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं नमः पूर्वे। ॐ ह्रीं ह्रूं ह्रीं नमः आग्नेये ॐ ह्रीं श्रीं नमः दक्षिणे। ॐ ग्लूं ब्लूं नमः नैर्ऋत्ये ॐ पूं पूं सं सं नमः पश्चिमे। ॐ भ्रां भ्रां नमः वायव्ये। ॐ भ्रां ब्रं भ्रं फट् नमः ऐशान्ये। ॐ ग्लौं ब्लूं नमः ऊर्ध्वे। ॐ घ्रां घ्रं घ्रः नमः अधोदेशे।

इसके बाद भैरव को हाथ जोड़ कर नमस्कार करें।

ॐ करकलित कपालः कुण्डली दण्डपाणिः।
तरुण तिमिर नीलो व्यालयज्ञोपवीती ।।
ऋतुसमयसपर्या विघ्नविच्छेदहेतु
जंयति बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम् ।।

ध्यान के बाद साधक ईशान दिशा की तरफ मुंह करके भैरव मन्त्र पढ़ें, एक लाख मन्त्र जप से यह सिद्ध हो जाता है और भैरव प्रत्यक्ष दर्शन दे देते हैं।

मैंने ऊपर बताया कि भैरव का स्वरूप अत्यन्त विकराल और क्रूर होता है, अतः साहसी और दृढ़ निश्चयी व्यक्ति ही अपनी इन आंखों से उनके दर्शन करने में समर्थ हो पाते हैं, इसीलिए स्त्रियां, वृद्ध, बालक तथा कमजोर व दुर्लभ चित्त वाले व्यक्तियों को भैरव साधना नहीं करनी चाहिए।

फिर निम्न मन्त्र का जप करें, इसमें किसी भी प्रकार की माला का प्रयोग किया जा सकता है।

भैरव मन्त्र

ॐ ब्रां ह्रीं ह्रूं हः। क्षां क्षीं क्षूं क्षः। खां खीं खूं खः। घ्रां घ्रीं घ्रूं घ्रः। भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रः। भ्रों भ्रों भ्रों भ्रों क्लों क्लों क्लों क्लों। श्रों श्रों श्रों श्रों ज्रों ज्रों ज्रों ज्रों हुं हुं हुं हुं हुं हुं हुं हुं हुं फट् सर्वतो रक्ष रक्ष रक्ष रक्ष भैरव नाथ नाथ हुं फट् ।।

यह मन्त्र अत्यन्त शक्तिशाली है और एक लाख मन्त्र जप पूरा करते ही भैरव के दर्शन हो जाते हैं।

यह साधना रात्रि को ही सम्पन्न की जाती है और इसमें किसी प्रकार की अगरबत्ती या दीपक निरन्तर लगाने की आवश्यकता नहीं है, पहले दिन जो सोलह पलास के पत्तों पर भोग लगाया जाता है. उसे मन्त्र जप के बाद वहीं छोड़ कर आ जाना चाहिए, क्योंकि भैरव का वाहन श्वान है और सही अर्थों मे वह खाद्य पदार्थ श्वान को ही समर्पित होता है।

यदि श्मशान में श्वान उपस्थित न हो तो उस पके हुए धान्य को एकत्र कर किसी श्वान के सामने रख दें।

इसके बाद नित्य इस प्रकार का विधान करने की आवश्यकता नहीं है।

यह मन्त्र जप चालीस दिन में या बीस दिन में पूरा हो जाना चाहिए. जब यह विधान या मन्त्र जप पूरा होने को होता है तो उससे तीन दिन पहले भैरव के आने की अनुभूति स्पष्ट रूप से हो जाती है. साथ ही साथ उनके पैरों में बंधे घुंघरू स्पष्ट सुनाई देते हैं और भैरव की अस्पष्ट आकृति भी दिखाई देने लगती है।

जिस दिन ऐसी आकृति दिखाई दे, उसके दूसरे दिन उस भैरव को मूर्ति या भैरव के यन्त्र को नीले रंग का वस्त्र समर्पित करें, तेल और सिन्दूर लगावे, धूप अगरबत्ती के साथ गुग्गुल का धूप भी समर्पित करें, उसी दिन नैवेद्य के साथ तेल चुपड़ी हुई आटे की रोटी पर गुड़ रख कर और मोठ या उड़द की दाल भिगो कर उसे पीस कर मसाले मिला कर बड़े बना कर नैवेद्य के साथ समर्पित करें।

यदि उस दिन भैरव प्रत्यक्ष न हों तो दूसरे दिन भी ऐसा ही करें, यदि किसी कारण वश दूसरे दिन भी भैरव के दर्शन न हों तो तीसरे दिन भी वैसा ही विधान करें, उस रात्रि को निश्चय ही भैरव के दर्शन हो जाते हैं।

यह हो सकता है कि भैरव विकराल रूप में अथवा सौम्य रूप में दर्शन दें, पर किसी भी हालत में डरें नहीं और नम्रता से उनका मन्त्र जप करता रहे।

जब भैरव प्रसन्न होकर वरदान मांगने को कहें, तब साधक उसके सामने तेल का दीपक लगा कर जो प्रसाद बनाया हुआ है, वह उनके दाहिने हाथ में दे दें, ऐसा करने से भैरव अत्यन्त प्रसन्न होते हैं और मनोवांछित वरदान दे देते हैं।

यह साधना रात्रि को ही सम्पन्न की जाती है और यदि श्मशान में या नदी तट पर साधना की जाय तो ज्यादा उचित रहता है, इस बात का ध्यान रहे कि वह स्थान सामान्यतः निर्जन हो।

साधना के सम्बन्ध में जो भी अनुभव हो वे किसी को बतावे नहीं और पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करें तथा काले वस्त्र धारण किये रहें।

भैरव प्रसन्न होने के बाद नित्य साधक को स्वर्ण प्रदान करते हैं, यही नहीं अपितु जब किसी प्रकार की कोई इच्छा भैरव के सामने रखते हैं, तो भैरव उस इच्छा की पूर्ति अवश्य ही करते हैं।

देश के कई विशिष्ट योगी और साधक भैरव साधना सम्पन्न कर चुके हैं, और इसी प्रकार से उन्होंने जीवन में पूर्णता प्राप्त की है, इस बात का ध्यान रखें कि यह साधन किसी योग्य गुरु या साधक की देख रेख में ही सम्पन्न होनी चाहिए अन्यथा कुछ विपरीत होने की स्थिति में साधक ही पूर्ण रूप से जिम्मेवार होता है।

इस साधना की पूर्णता के बाद व्यक्ति शत्रुओं पर हावी रहता है. किसी भी घटना को जानने के लिए उसे एक बार मन्त्र उच्चारण करना पड़ता है, तो भैरव उसके कान में कह देते हैं, दूसरे के मन की बात भी भैरव साधक को उसके कान में कह देते हैं, दूर स्थित सामान को लाकर देने में सहायक होते हैं, हजारों मील दूर की घटनाओं को प्रत्यक्ष

दिखाते हैं और किसी भी व्यक्ति के भूतकाल या भविष्यकाल को जाना जा सकता है, इसके साथ ही साथ जब साधक खाद्य पदार्थ की इच्छा करता है तो उसे तुरन्त खाद्य पदार्थ प्राप्त हो जाते हैं, इसी प्रकार धन धान्य स्वर्ण आदि की प्राप्ति भी भैरव के द्वारा सम्भव है।

वस्तुतः भैरव साधना कलियुग में महत्वपूर्ण एवं शीघ्र फलदायक है।

जीवन में मिटाना है, कष्ट-रोग-पीड़ा-शत्रु

तो कीजिए

भैरव पूजा–साधना–आराधना

किसी भी प्रकार के यज्ञ में, साधना में, गृह प्रवेश में, भूमि पूजन में भैरव की पूजा अवश्य ही की जाती है, जब तक भैरव पूजन नहीं हो जाता तब तक मूल यज्ञ भी प्ररम्भ नहीं होता, क्योंकि भैरव रक्षा कारक देव हैं और विश्व के अश स्वयं शिव स्वरूप और महाशक्ति काली के सेवक हैं। इसीलिए इन्हें काल भैरव का नाम दिया गया है। किसी भी गांव में चले जाइये कोई मन्दिर अथवा पूजा स्थान होगा या नहीं लेकिन भैरव का मन्दिर अवश्य ही होगा। जन-जन के देवता के रूप में भैरव की ख्याति है, करोड़ों-करोड़ों लोगों की आस्था जुड़ी है, और यह आस्था तभी बन सकती है, जब प्रत्यक्ष प्रमाण प्राप्त होते रहे हैं, लोगों के कार्य सिद्ध होते रहे हैं।

मार्गशीर्ष कृष्ण अष्टमी को काल भैरवाष्टमी दिवस है, और यह अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता है, क्योंकि प्रत्येक तांत्रिक ग्रन्थों में काल भैरव को जीवन की पूर्णता का पर्याय माना है।

उच्चकोटि के तांत्रिक ग्रन्थों में बताया गया है, कि चाहे किसी भी देवी या देवता की साधना की जाय सर्व-प्रथम गणपति और काल भैरव की पूजा आवश्यक है। जिस प्रकार से गणपति समस्त विघ्नों का नाश करने वाले हैं, ठीक उसी प्रकार से भैरव समस्त प्रकार के शत्रुओं का नाश करने में पूर्ण रूप से सहायक हैं।

कलियुग में बगलामुखी, छिन्नमस्ता या अन्य महा-देवियों की साधनाएं तो कठिन प्रतीत होने लगी हैं, यद्यपि ये साधनाएं शत्रु संहार के लिए पूर्ण रूप से समर्थ और बलशाली हैं, परन्तु "काल भैरव साधना" कलियुग में तुरन्त फलदायक और शीघ्र सफलता देने में सहायक है। अन्य साधनाओं में तो साधक को फल जल्दी या विलम्ब से प्राप्त हो सकता है, परन्तु इस साधना का फल तो हाथो हाथ मिलता है, इसलिए कलियुग में गणपति, चण्डी

और भैरव की साधना पूर्ण रूप से महत्वपूर्ण मानी गयी हैं।

प्राचीन समय से शास्त्रों में यह प्रमाण बना रहा है कि किसी भी प्रकार का यज्ञ कार्य हो तो यज्ञ की रक्षा के लिए भैरव की स्थापना और पूजा सर्वप्रथम आवश्यक है, किसी भी प्रकार की पूजा हो उसमें सबसे पहले गणपति की स्थापना की जाती है, तो साथ ही साथ भैरव की उपस्थिति और भैरव की साधना भी जरूरी मानी गयी है, क्योंकि ऐसा करने से दसों दिशाओं का आबद्ध हो जाता है और उस साधना में साधक को किसी प्रकार का भय व्याप्त नहीं होता और न किसी प्रकार का उपद्रव या बाधाएं आती हैं, ऐसा करने पर साधक को निश्चय ही पूर्ण सफलता प्राप्त हो जाती है।

इसके अलावा भैरव की स्वयं की साधना भी अत्यन्त महत्वपूर्ण और आवश्यक मानी गई है, आज का जीवन जरूरत से ज्यादा जटिल और दुर्बोध बन गया है, पग-पग पर कठिनाइयां और बाधाएं आने लगी हैं, अकारण ही शत्रु पैदा होने लगे हैं, और उनका प्रयत्न यही रहता है कि येन-केन प्रकारेण लोगों को तकलीफ दी जाय या उन्हें परेशान किया जाय, इससे जीवन में जरूरत से ज्यादा तनाव बना रहता है।

इसलिए आज के युग में अन्य साधनाओं की अपेक्षा भैरव की साधना को ज्यादा महत्व दिया जाने लगा है।

'देव्योपनिषद' में भैरव साधना क्यों की जानी चाहिए, इसके बारे में विस्तार से विवरण है, उनका मूल तथ्य निम्न प्रकार से है—

१-जीवन के समस्त प्रकार के उपद्रवों को समाप्त करने के लिए।

२-जीवन की बाधाओं और परेशानियों को दूर करने के लिए।

३-जीवन के नित्य कष्टों और मानसिक तनावों को समाप्त करने के लिए।

४-शरीर स्थित रोगों को निश्चित रूप से दूर करने के लिए।

५-आने वाली बाधाओं और विपत्तियों को पहले से ही हटाने के लिए।

६-जीवन के और समाज के शत्रुओं को समाप्त करने और उनसे बचाव के लिए।

७-शत्रुओं की बुद्धि भ्रष्ट करने के लिए और शत्रुओं को परेशानी में डालने के लिए।

८-जीवन में समस्त प्रकार के ऋण और कर्जों की समाप्ति के लिए।

९-राज्य से आने वाली बाधाओं के अकारण भय से मुक्ति के लिए।

१०-जेल से छूटने के लिए और मुकदमों में शत्रुओं को पूर्ण रूप से परास्त करने के लिए।

११-चोर भय, दुष्ट भय, और वृद्धावस्था से बचने के लिए।

१२-समस्त प्रकार के उपद्रवों से रक्षा के लिए।

इसके अलावा हमारी अकाल मृत्यु न हो या किसी प्रकार का एक्सीडेन्ट न हो अथवा हमारे बालकों की अल्प आयु में मृत्यु न हो आदि के लिए भी 'काल भैरव साधना' अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी गई है। इसलिए तो शास्त्रों में कहा गया है कि जो चतुर और बुद्धिमान व्यक्ति होते हैं, वे अपने जीवन में काल भैरव साधना अवश्य करते हैं, जो वास्तव में जीवन में बिना बाधाओं के निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर होना चाहते हैं, वे काल भैरव साधना अवश्य करते हैं। जो अपने जीवन में चाहते हैं कि किसी भी प्रकार से राज्य की कोई बाधा या परेशानी न आवे वे निश्चय ही भैरव साधना सम्पन्न करते हैं। जिन्हें अपने बच्चे प्रिय हैं, जो अपने जीवन में रोग नहीं चाहते, जो अपने पास बुढ़ापा फटकने नहीं देना चाहते वे अवश्य ही

काल भैरव साधना सम्पन्न करते हैं। उच्चकोटि के योगी, संन्यासी काल भैरव साधना तो करते ही हैं, जो श्रेष्ठ व्यापारी हैं वे भी अपने पण्डितों से काल भैरव साधना सम्पन्न करवाते हैं। जो राजनीति में रुचि रखते हैं और अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करना चाहते हैं, वे भी अपने विश्वस्त तांत्रिकों से काल भैरव साधना सम्पन्न करवाते हैं। मेरा यह अनुभव रहा है, कि जीवन में सफलता और पूर्णता पाने के लिए काल भैरव साधना अत्यन्त आवश्यक और महत्वपूर्ण है।

दिनांक १७ ११-९२ मंगलवार मार्गशीर्ष शुक्ल अष्टमी कालाष्टमी, महाकाल भैरवाष्टमी तथा महाकाल जयन्ती है और भैरव साधना हेतु उस दिन का सबसे अधिक महत्व है। भैरव के अलग-अलग स्वरूपों की साधना अलग-अलग कार्यों हेतु की जाती है, वास्तव में भैरव की तांत्रोक्त साधना प्रत्येक गृहस्थ के लिए आवश्यक है।

आगे तीन प्रयोग विशेष रूप से दिये जा रहे हैं, जिन्हें साधक अपनी बाधा के अनुसार अवश्य सम्पन्न करें। भैरव-अष्टमी को प्रारम्भ कर आगे प्रति रविवार को भी भैरव मन्त्र का एक माला मन्त्र जप अवश्य करना चाहिए। तो सर्वोच्च सिद्धि प्राप्त होती है—

१-शत्रु बाधा निवारण प्रयोग

भैरवाष्टमी के दिन प्रातः साधक स्नान कर लाल वस्त्र धारण करें सिन्दूर का तिलक लगाएं अपने सामने एक मिट्टी की ढेरी बना कर उस पर पानी छिड़कें फिर सिन्दूर छिड़के और उस पर **'काल भैरव गुटिका'** स्थापित करें ढेरी के चारों ओर तिल की ढेरियां बना कर उन पर **'पांच आक्रान्त चक्र'** रखें, प्रत्येक चक्र पर सिन्दूर छिड़कें, अब अपने पूजा स्थान में दीप और गुग्गल का धूप तथा अगरबत्ती जला दें, अपने हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि मैं अपनी अमुक शत्रु बाधा के निवारण हेतु काल भैरव प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूं।

अब एक पात्र में सरसों, काले तिल मिलाएं, उसमें थोड़ा तेल डालें, थोड़ा सिन्दूर डाल कर उसे मिला दें, इस मिश्रण को निम्न भैरव मन्त्र का जप करते हुए काल भैरव गुटिका के समक्ष अर्पित करते रहें—

मन्त्र

विभूमि-भूमि-नाशाय, दुष्ट-क्षय-कारकं, महा-भैरवाय नमः। सर्व-दुष्ट-विनाशनं सेवकं सर्व-सिद्धि कुरु। ॐ काल-भैरव, बटुक-भैरव, भूत-भैरव! महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता। सर्व सिद्धि-र्भवेत्।

ॐ काल भैरव, श्मशान भैरव, काल रूप-काल भैरव! मेरो बैरी तेरो आहार रे। काढ़ि करेजा चखन करो कट कट। ॐ काल भैरव, बटुक भैरव, भूत भैरव! महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्

इस प्रकार ५१ बार इस मन्त्र का जप कर, धूप-दीप से भैरव की आरती सम्पन्न करें, अब भैरव गुटिका को छोड़ कर बाकी सब सामग्री काले कपड़े में बांध कर जमीन में गाड़ दें और उस पर भारी पत्थर रख दें।

आगे दो रविवार तक भैरव गुटिका के समक्ष इस मन्त्र का जप करते रहें।

यह प्रयोग इतना प्रबल है, कि प्रबल से प्रबल शत्रु भी तीस दिन के भीतर-भीतर शान्त हो जाता है, उसकी शक्ति क्षीण हो जाती है, इसमें कोई सन्देह नहीं।

२-काल भैरव : रोग नाश प्रयोग

यह प्रयोग भी प्रातः ही सम्पन्न किया जाता है, इसमें यदि स्वयं की बीमारी के नाश हेतु करना है, तो अपने नाम का संकल्प लें और यदि दूसरे के लिए प्रयोग करना है तो उसके नाम से संकल्प लें।

संकल्प

ॐ अस्य श्री बटुक भैरव स्तोत्रस्य सप्त ऋषिः, मातृका छन्दः, श्री बटुकः भैरवो देवता, ममेप्सित-सिद्धयर्थ जपे विनियोगः।

अपने सामने एक पात्र में **'काल भैरव महायन्त्र'** स्थापित कर उस पर सिन्दूर चढ़ाएं तथा एक दीपक जलाएं जिसमें चार बत्तियां हों, तथा दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठें, भैरव यन्त्र के सामने पुष्प, लड्डू, सिन्दूर, लौंग तथा पुष्प माला, काला डोरा रखें तथा मन्त्र जप के पहले जल से भरे हुए पात्र का मुंह लाल कपड़े से बांध दें।

अब एक पात्र में तिल लें उसमें सात सुपारी रखें तथा निम्न मन्त्र का जप करते हुए यह तिल दक्षिण दिशा की ओर फेंकते रहें—

मन्त्र

ॐ काल भैरव, बटुक भैरव, भूत भैरव! महा-भय विनाशनं देवता-सर्वसिद्धिर्भवेत् । शोकदुःख-क्षयकरं निरंजनं, निराकारं नारायणं, भक्ति-पूर्णत्वं महेशं । सर्व-काम-सिद्धिर्भवेत् । काल भैरव, भूषण वाहनं काल हन्ता रूपं च, भैरव गुनी । महात्मनः योगिनां महा-देव-स्वरूपं । सर्वं सिद्धयेत् । ॐ काल भैरव, बटुक भैरव, भूत भैरव ! महा-भैरव महा-भय-विनाशन देवता । सर्व-सिद्धिर्भवेत्

इस प्रकार १०८ बार मन्त्र जप के पश्चात् सातों सुपारी सभी दिशाओं में फेंक दें, भैरव यन्त्र को पूजा में प्रयोग लाये काले डोरे से रोगी की भुजा में बांध दें अथवा गले में पहना दें, पूजा का पवित्र जल भी पिलाएं पुराने से पुराने रोग इस प्रयोग से दूर होते देखे गये हैं।

३-मुकदमा, वाद-विवाद में विजय का प्रयोग

इस प्रयोग हेतु साधक सायंकाल इस विशेष दिन को प्रयोग सम्पन्न करें, पूजा स्थान में पूर्ण रूप से शान्ति होनी चाहिए तथा जिस विशेष कार्य के सम्बन्ध में प्रयोग करना है, वह कार्य एक कागज पर सिन्दूर से लिख लें।

अब अपने सामने **'काल भैरव महाशंख'** स्थापित करें, शंख के चारों ओर सिन्दूर से एक घेरा बना दे, सामने **'एक नागचक्र'** स्थापित करें भैरव शंख के दोनों ओर तीन-तीन तेल के दीपक जला दें।

इसके पहले वाले प्रयोग के अनुसार संकल्प कर जल छोड़ें तथा वह कागज जिसमें कार्य लिखा है, भैरव शंख के नीचे रख दें, वीर मुद्रा में बैठ कर मुट्ठी ऊपर कर मन्त्र जप प्रारम्भ करें।

मन्त्र

ॐ आं ह्लीं ह्लीं ह्लीं। (अमुक) मारय मारय, उच्चाटय उच्चाटय, मोहय मोहय, वशं कुरु कुरु। सर्वार्थकस्य सिद्धि रूपं त्व महाकाल ! काल भक्षण महा-देव स्वरूप त्वं। सर्व सिद्धयेत् ! ॐ काल भैरव बटुक भैरव, भूत भैरव ! महा भैरव महा-भय-विनाशनं देवता । सर्व सिद्धिर्भवेत् ।

५१ बार मन्त्र जप करने के पश्चात् इस महा भैरव शंख को काले कपड़े में बांध कर अपने बैग, ब्रीफकेस में रख दें और किसी भी मुकदमे के लिए जाते समय बैग अपने पास रखें, प्रबल मे प्रबल विरोधी भी वशीभूत होकर सन्धि करने को उत्सुक हो जाता है, मुकदमे में विजय प्राप्त होती है, मन्त्र जप नियमित रूप से अवश्य सम्पन्न करना है।

भैरव से सम्बन्धित उपरोक्त तीनों प्रयोगों की प्रामाणिकता साधक स्वयं प्रयोग सम्पन्न कर ही जान सकता है कि इन प्रयोगों में कितना अधिक प्रभाव है। काल भैरव प्रसन्न होने पर साधक को हर प्रकार का वरदान प्रदान कर देते हैं, उसकी रक्षा करते हैं और अपनी शरण में पूर्ण अभय प्रदान करते हैं, साधक की शक्ति में वृद्धि होकर स्वयं भैरव समान श्रेष्ठ हो जाता है।

भैरवाष्टमी को यह प्रयोग सम्पन्न कर जब तक पूर्ण सफलता न मिले आगे वाले सात रविवार तक मन्त्र अनुष्ठान अवश्य ही सम्पन्न करते रहना चाहिए। ●

कलियुग में सर्वाधिक प्रभावशाली तन्त्र

महामृत्युंजय विधान

महामृत्युंजय विधान शिव का क्रान्तिकारी, आश्वर्यजनक, अमोघ और अद्वितीय मन्त्र प्रयोग है. जिसके माध्यम से बीमारियों, शिशु रोगों तथा बालघात जैसे रोगों से निराकरण पाने व पूर्ण आयु प्राप्त करने के लिए श्रेष्ठतम अनुष्ठान है।

भारत में ही नहीं विदेशों में भी महामृत्युंजय की चर्चा रही है, प्रत्येक बालक, रोगी या अकाल मृत्यु से भयभीत व्यक्ति को इस प्रकार का मन्त्रसिद्ध प्राणप्रतिष्ठा युक्त **महामृत्युंजय यन्त्र** धारण कर लेना चाहिए।

साधकों के लाभार्थ यह गोपनीय विधान आगे के पन्नों पर प्रस्तुत है —

महामृत्युंजय विधान या अनुष्ठान अत्यन्त ही महत्वपूर्ण और श्रेष्ठतम कहा गया है, जिसके जीवन में अकाल मृत्यु या बालघात योग हो, उसके लिए महामृत्युंजय प्रयोग सर्वश्रेष्ठ है।

महामृत्युंजय मन्त्र अपने आप में अत्यन्त ही श्रेष्ठ और प्रभावयुक्त है, उच्च स्तर के साधकों ने भी इस बात को स्वीकार किया है कि यह मन्त्र अपने आप में महत्वपूर्ण और काल पर विजय प्राप्त करने में सक्षम है।

नीचे मैं इस अनुष्ठान से सम्बन्धित विधि प्रस्तुत कर रहा हूं, जिससे कि पाठक इससे लाभ उठा सकें। अनुष्ठान में कुछ तथ्यों का ध्यान आवश्यक है, अनुष्ठान एक ऐसी साधना प्रक्रिया है जो कठिन कार्यों को सरल बनाने के साथ-साथ विशेष शक्ति का उपार्जन करती है।

अनुष्ठान तीन प्रकार के होते हैं-लघु अनुष्ठान, चौबीस हजार मन्त्र जप का होता है, और इसके बाद २४० आहुतियों का पुरश्चरण किया जाता है, मध्यम अनुष्ठान सवा लाख मन्त्र जप का होता है, जिसमें १२५० आहुतियां दी जाती हैं, तथा महा पुरश्चरण या महाअनुष्ठान चौबीस लाख मन्त्र जप का होता है और इसके दसवें हिस्से की आहुतियां दी जाती हैं।

लघु अनुष्ठान को नौ दिन २७ माला प्रतिदिन के हिसाब से, मध्यम अनुष्ठान ४० दिन में ३३ माला प्रतिदिन के हिसाब से तथा महाअनुष्ठान एक वर्ष में ६६ माला प्रतिदिन के हिसाब से जप करके सम्पन्न किया जाता है।

साधना काल में निम्न तथ्यों का ध्यान रखना चाहिए-

१-अनुष्ठान शुभ दिन और शुभ मुहूर्त देख कर प्रारम्भ करना चाहिए।

२–अनुष्ठान को प्रारम्भ करते समय सामने भगवान शिव का चित्र स्थापित करना चाहिए और साथ ही साथ शक्ति की भी स्थापना करनी चाहिए।

३-जहां जप करें वहां का वातावरण सात्विक हो तथा नित्य पूर्व दिशा की ओर मुंह करके साधना या मन्त्र जप करना चाहिए।

४–जप करते समय लगातार घी का दीपक जलते रहना चाहिए।

५–इसमें चन्दन या रुद्राक्ष की माला का प्रयोग करना चाहिए तथा ऊन का आसन बिछाना चाहिए।

६–शास्त्रों के अनुसार भय से छुटकारा पाने के लिए इस मन्त्र का ११०० जप, रोगों से छुटकारा पाने के लिए ११००० मन्त्र जप तथा पुत्र प्राप्ति उन्नति एवं अकाल मृत्यु से छुटकारा पाने के लिए एक लाख मन्त्र जप का विधान है।

धर्म शास्त्रों में मन्त्र शक्ति और अनुष्ठान से रोग निवारण तथा मृत्यु भय को दूर करने, अकाल मृत्यु पर विजय प्राप्त करने तथा रोगों को शमन करने की जितनी साधनाएं उपलब्ध हैं, उनमें महामृत्युंजय साधना का स्थान सर्वोच्च है, हजारों लाखों साधकों ने इस साधना से फल प्राप्त किया है, कोई भी साधक पूर्ण श्रद्धा और विश्वास से इस साधना को करे तो निश्चय ही वह सफलता प्राप्त करता है।

इस साधना में मूल मन्त्र का जप करना ही महत्वपूर्ण है, अन्य विधि-विधानों में जाने की जरूरत नहीं होती।

प्रयोग विधि

किसी भी सोमवार को प्रातः स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर सामने **"त्र्यम्बक पूजा यन्त्र"** स्थापित कर दें, पास में ही भगवान शिव का चित्र या मूर्ति स्थापित कर दें, दोनों की संक्षिप्त पूजा करें, तत्पश्चात् विनियोग करें-

विनियोग

हाथ में जल लेकर इस प्रकार बोलें—

ॐ अस्य श्री महामृत्युंजय मन्त्रस्य वामदेव कहोल वशिष्ठ ऋषयः पंक्तिगायत्र्युष्णगनुष्टुप्-छन्दांसि सदाशिवमहामृत्युंजयरुद्रो देवता ह्रीं शक्तिः श्रीं बीज महामृत्युंजयप्रीतये ममाभीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ध्यान

फिर दोनों हाथ जोड़ कर भगवान् शंकर का ध्यान करें—

हस्ताभ्यां कलशद्वयैमृतसैराप्लावयन्तं शिरो,
द्वाभ्यां तौ दधतं मृगाक्षवलये द्वाभ्यां वहन्तं परम्।
अंकन्यस्तकरद्वयामृतघटै कैलाशकान्तं शिवं,
स्वैच्छाभ्यौजगतं नरेन्दुमुकुटं देवं त्रिनेत्रं भजे॥

मन्त्र जप

ध्यान के बाद महामृत्युंजय मन्त्र का जप करना चाहिए, मन्त्र का स्वरूप इस प्रकार से है—

ॐ ह्रौं जूं सः, ॐ भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। स्वः भुवः भूः ॐ। सः जूं ह्रौं ॐ॥

इस प्रकार निश्चित परिणाम के अनुसार मन्त्र जप करने पर साधक को अवश्य ही सफलता एवं सिद्धि प्राप्त होती है, कलियुग में यह विशेष प्रभावयुक्त मन्त्र है, जिसका उपयोग प्रत्येक साधक को करना चाहिए। ●

प्रलयंकर जिसका आविर्भाव भगवान शिव की जटा से हुआ

भगवान शिव की कथा- जब उनके श्वसुर दक्ष प्रजापति ने उनको जानबूझ कर यज्ञ में आमंत्रित नहीं किया, किसको ज्ञात नहीं, किन्तु वह कथा अपूर्ण है क्योंकि उसमें भगवान शिव के ही अंश से ही उत्पन्न अनेक प्रमुख वीरों की उत्पत्ति का वर्णन पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं होता। **प्रयलंकर ऐसा ही "वीर योनि" का प्रमुख गण था, क्रोध का अवतार। जिसका भगवान शिव के अंश से उन्हीं की एक तपः रश्मि से हुआ था, लोक कथाओं के अनुसार उनकी जटा के एक भाग से . . .**

. . . इसी का भय था देवगण और ऋषियों को और वे दक्ष प्रजापति से याचना कर करके थक चुके थे कि अब वे और आहुतियां न दे, शक्तियों का आह्वान न करें क्योंकि जो उनके समक्ष खड़े हैं, जिनसे उनका विरोध ठन गया है, वे साक्षात् देवाधिदेव भूतपति त्रैलोक्येश्वर भगवान शिव हैं और उनका आमंत्रण न कर उनके प्रति सम्मान व्यक्त न कर उनको आहुतियां न प्रदान कर वे पहले ही उनका घोर अपमान कर चुके हैं, फिर भी उन्होंने केवल चेतावनी ही तो दी। अब उनसे और विरोध करना साक्षात अपने विध्वंस को आमंत्रण देना है।

किन्तु दक्ष प्रजापति अपने मद में सभी मर्यादाएं भुला बैठे थे। न तो उन्हें याद रहा कि जो उनके समक्ष खड़े हैं वे पदवी व स्वरूप में कौन हैं और न यह कि वे सम्बन्धों में उनके क्या लगते हैं। यज्ञकर्त्ता उनकी आज्ञा से बद्ध थे और निरन्तर आहुतियां देते हुए शक्तियों का आह्वान कर रहे थे, उग्र और विध्वंसकारी किन्तु. . .

. . . हवन कुण्ड के बगल में ही एक और दहकता हवन कुण्ड उपस्थित हो गया था। जीवित और कहीं ज्यादा लपटों से भरा हुआ। क्रूर आकृति, विशालकाय, सारे यज्ञ मण्डप में फैली विध्वंस की कालिख मिलकर ही जैसे उसके शरीर के रंग में उतर गई थी। हवन कुण्ड के सामने जो कुछ शेष रह गया था उसे निगल जाने के लिए प्रयलंकर के विशाल बाहु बढ़ चले। उसकी आकृति के आगे तो यज्ञ मण्डप खिलौनों का ढेर लग रहा था और यज्ञ मण्डपों के साथ - साथ राज भवन के स्तम्भों, गुम्बदों को अपनी बाहों में समेटता हुआ प्रलयंकर प्रलय का ही मूर्त रूप दिखाई पड़ रहा था। शरीर से उपजती क्रोध की लपटें सारे वातावरण को जलाकर राख कर दे रही थीं। सामान्य जन की कौन कहे देव गण भी सहम कर भगवान शिव के मुख को देखने लग गए थे।

अन्य सभी गणों के पराजित हो जाने की स्थिति में अत्यन्त उग्र होकर भगवान शिव ने अपनी विशाल जटा में से केवल एक अंश धरा पर पटका था और उस उत्पत्ति में उनका पूरा तेज और

भगवान शिव के गणों में सर्वाधिक उग्र, साक्षात् क्रोध और विनाश का अवतार. . . जिसके आविर्भाव से ही दक्ष का यज्ञ पूर्ण रूप से विध्वंस को प्राप्त हुआ

क्रोध आकर समा गया था . . . अपनी अर्धांगिनी के वियोग का शोक, अपमान का क्षोभ और उससे भी अधिक निरन्तर दक्ष द्वारा अमर्यादा के कारण ही भगवान शिव ने ऐसे कदम उठाने के लिए, स्थिति को नियन्त्रित करने के लिए प्रलयंकर का निर्माण किया, **जो कालांतर में उसका सबसे प्रिय गण बना। देवताओं की अत्यन्त अनुयय- विनय के बाद ही स्थिति शांत रूप ले सकी।**

क्रोध का ताण्डव इस प्रकार मूर्त रूप लेकर भी उपस्थित हो सकता है इसकी कल्पना देवताओं को भी नहीं थी। उन्होंने भगवान शिव के क्रोध को देखा था उसे कई- कई बार परखा और समझा भी लेकिन उनके कण्ठ में समुद्र मन्थन के समय समाया विष यदि छलक जाए तो उसके छींटें भी कितने घातक हो सकते हैं, इसकी कल्पना भी उन्हें नहीं थी **और प्रलयं कर . . . वह उसी विष का एक छींटा ही लग रहा था,** जिस पर पल भर के लिए भी दृष्टि टिक नहीं पा रही थी। क्रोध, उत्तेजना और तेजस्विता के उस साकार पुंज के सामने सभी की वाणी स्तम्भित हो गयी थी। देवता अपनी शक्तियां भूल गए थे और होतागण अपने - अपने मंत्र। प्रलयंकर की हुंकार ही सारे वातावरण में व्याप्त होकर उसके शांत हो जाने के बाद भी वातावरण को सहमा कर छोड़ गयी थी।

क्रोध भी जीवन का सौन्दर्य होता है। पुरुष के जीवन का आवश्यक अंग होता है और यथार्थ में बिना क्रोध के कोई निर्माण सम्भव भी नहीं। क्रोध से ही व्यक्ति के अन्दर पौरुष की चमक आती है। क्रोधवान ही फिर क्षमावान भी हो सकता है। वही तेजस्वी और हृदयवान भी होता है। जो भक् से एक पल में जलने की और विध्वंस करने की क्षमता रखता है वही अगले क्षण असीम प्रेम व क्षमा में भी डूब सकता है।

यह तो एक ढोंग है कि जीवन में क्रोध नहीं होना चाहिए। जीवन में क्रोध अवश्य होना चाहिए, किन्तु उसका प्रयोग करते समय विवेक का नियन्त्रण भी होना चाहिए और जीवन का ऐसा सन्तुलन साध लेना ही वास्तविक साधना है।

प्रलयंकर की कथा जिस प्रकार एक वास्तविक घटना है उसी प्रकार जीवन की एक अति महत्वपूर्ण स्थिति की ओर संकेत करने का प्रतीक भी। भगवान शिव जब अपमान की ज्वाला में दग्ध हुए तब भी वे आशुतोष और शिव ही थे किन्तु वह अवसर एक बहाना बन गया, जब उन्होंने अपने क्रोध को साकार रूप दिया, जिससे साधक के जीवन में क्रोध की आराधना करने के लिए एक साकार स्वरूप हो। **'क्रोध की आराधना' शब्द से चौंकने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि देवी की स्तुति भी "क्रोध रूपिण्यै" कहकर की गई है।** भगवान शिव देवाधिदेव के रूप में जीवन की सम्पूर्णता को प्रदर्शित करते हैं जिनमें प्रेम भी है, क्रोध भी है जिनमें करुणा, विध्वंस, वैराग्य, ऐश्वर्य , श्रृंगार प्रियता, श्मशान वास, गृहस्थ और वीतराग योगी सभी के दर्शन होते हैं।

प्रलयंकर की साधना यथार्थ में एक ऐसी तेजस्विता की साधना है जिसे प्रत्येक साधक को करना कभी न कभी अनिवार्य प्रतीत होगा ही। विशेष रूप से जो साधक तंत्र के क्षेत्र में जाना चाहते हैं तीव्रता से बढ़ना चाहते हैं, समाजोपयोगी और प्रखर बनना चाहते हैं, उन्हें भगवान शिव के अंश की इस साधना को अपने जीवन में स्थान देना ही पड़ेगा अर्थात् शिवत्व से युक्त क्रोध युक्त बनना ही पड़ेगा। जिस प्रकार एक पवित्र स्थान के चारों ओर कांटों की बाढ़ लगाई जाती है कि उसे कोई अपवित्र न कर दे उसी प्रकार अपने जीवन के श्रेष्ठ चिन्तन को, अपने पारिवारिक जीवन को सुरक्षित रखने के लिए इस प्रकार की साधना और क्रोध की बाढ़ अवश्य लगानी चाहिए, जिससे पशु रूपी व्यक्ति उसे अपवित्र न कर सकें।

यह साधना मूल रूप में भगवान शिव की ही साधना है क्योंकि प्रलंयकर का निर्माण उन्हीं की एक किरण से हुआ है अन्तर केवल इतना है कि जहां भगवान शिव की साधना सौम्य रूप में की जाती है वहीं इस साधना को उग्र रूप से तामसिक ढंग से सम्पन्न किया जाता है। तामसिक केवल भावनाओं की दृष्टि से आचरण की दृष्टि से नहीं । इस पूरी साधना में क्रोध मुद्रा और मन में तीक्ष्णता का होना आवश्यक है। किसी भी कृष्ण पक्ष के रविवार की रात्रि में ११ बजे के उपरान्त काले वस्त्र पहन कर ऊनी आसन पर बैठें। तेल का अखण्ड दीपक लगा लें, और **तांत्रोक्त शिव यंत्र** का संक्षिप्त पूजन करें। शिव यन्त्र के सामने एक **महाप्रय** स्थापित करें जो प्रलंयकर की शक्तियों का तांत्रोक्त रूप है। इसका पूजन **ईख के रस** एवं लाल फूलों से कर **रुद्राक्ष माला** से निम्न मंत्र की एक माला मन्त्र जप करना पर्याप्त होता है। नैवेद्य में गुड़ की बनी वस्तु चढ़ाएं।

मंत्र -

भं भैरव स्वरूपाय प्रचण्ड क्रोधिन्यै नमः।।

प्रलयंकर का स्वरूप अत्यन्त भयास्पद होता है अतः प्रथम बार में इसके स्पष्ट दर्शन नहीं प्राप्त होते। जब साधक धीमे - धीमे साधना करते हुए प्रलयंकर की धूमिल छवि देखते क्रमशः भयमुक्त होने लगता है तभी प्रलयंकर अपना सम्पूर्ण रूप प्रकट करते हैं अतः साधक को अपने मन में कोई शंका नहीं लानी चाहिए। प्रथम दिवस से ही साधक को अपने आस - पास एक ऐसी अनुभूति होने लगती है जिससे वह कहीं भी बिना भय के आ जा सकता है तथा आत्मविश्वास से भरा रहने लगता है।

जो साधक मानसिक दौर्बल्य से पीड़ित हो या जिन्हें शत्रुभय अथवा अकारण भय बना रहता हो उन्हें यह साधना सहयोगी सिद्ध होती है किन्तु साधना करने से पूर्व पूज्य गुरुदेव से दीक्षा प्राप्त कर उनकी अनुमति से ही साधना सम्पन्न करनी चाहिए।

कर सकता है। प्रत्येक महाविद्या के एक विशिष्ट भैरव होते हैं और उनकी साधना सम्पन्न करने के पश्चात् ही व्यक्ति महाविद्या साधना में प्रवेश का अधिकारी समझा जाता है।

उच्चकोटि की साधनाओं में व्यक्ति तभी प्रवेश कर सकता है, उच्चकोटि की अनुभूतियां पाने का संकल्प व्यक्ति के मन में तभी पनप सकता है जब वह दिन प्रतिदिन की कठिनाइयों, भय, इत्यादि से मुक्त हो जाए। सामान्य जीवन-चक्र में उलझा व्यक्ति उच्चकोटि की चैतन्यता चाह कर भी अनुभव नहीं कर पाता और इसी से उसका जीवन सामान्य बन कर रह जाता है। भैरव साधना सम्पन्न कर जहां व्यक्ति अपना दैनिक जीवन संवारता है वहीं उच्चकोटि की साधनाएं सम्पन्न

भैरवः भीषणो निगदितः श्री कालराजः

भगवान शिव के ही अंश, उन्हीं की तीक्ष्णता का एक रूप 'भैरव' अपने स्वरूप और प्रभाव में साक्षात् शिव ही हैं। भगवान शिव के गण होने के कारण कोई भी साधना भैरव आज्ञा के बिना प्रारम्भ करनी निष्फल होती है। **भगवान शिव की ही भांति अल्प से ही सन्तुष्ट होने वाले भैरव का बाल स्वरूप बटुक भैरव स्वरूप तो और भी अधिक फलदायक व सिद्धि प्रद है।** आज के युग में जबकि बाधाएं पग-पग पर बिना बुलाए चली आ रही हों। तामसिकता और व्यभिचार की प्रवृत्तियां सिर चढ़कर बोलने लगी हों तब भैरव साधना का प्रभाव स्वतः ही सबसे अधिक महत्वपूर्ण सिद्ध हो गया है।

उच्चकोटि की साधनाओं में सिद्धि की बात हो या सामान्य जीवन के पक्ष— भैरव साधना को सम्पन्न किए बिना व्यक्ति न तो सामान्य जीवन में भय व बाधा रहित हो सकता है और न दस महाविद्या या इसी प्रकार की उच्चकोटि की साधनाएं सम्पन्न

"भैरव साधना के अभाव में कोई भी साधनापूर्ण समझी ही नहीं जाती, विघ्न-विनाश की स्थिति हो या शत्रु-बाधा निवारण, भैरव पूजन करना अत्यावश्यक माना गया है।

भैरव का स्वरूप उग्र और भीषण होता है किन्तु बटुक भैरव का स्वरूप तो सर्वथा शान्त और फलप्रद माना गया है जिसकी साधना सामान्य गृहस्थ साधक भी सहजता से सम्पन्न कर सकते हैं।"

कर ऐसा व्यक्तित्व और तेज प्राप्त करता है जिससे समाज में उसकी प्रतिष्ठा बनती ही है, जीवन में सन्तोष व सुख का आगमन भी होता है।

भैरव के बावन स्वरूप वर्णित किए गए हैं और इनकी साधनाएं अत्यन्त कठिन हैं। क्रोध भैरव, उन्मत्त भैरव, कपाल भैरव, चण्ड भैरव, रूरू भैरव, इन सभी की साधनाएं केवल और केवल श्मशान में ही सम्पन्न की जा सकती हैं। **जबकि बटुक भैरव समान प्रभाव रखते हुए भी सौम्य स्वरूप है, विशेष रूप से गृहस्थ साधक के लिए ही उपयोगी है और इसमें किसी भी तामसिक पदार्थ अथवा तीक्ष्ण क्रियाकलाप की आवश्यकता नहीं पड़ती।** जिस प्रकार व्यक्ति आनन्दपूर्वक स्वगृह में भगवान शिव का पूजन करता है उसी प्रकार बटुक भैरव का पूजन भी घर पर ही सम्पन्न कर सकता है। दैनिक पूजन में प्रयोग आने वाली साधना-सामग्रियों से ही पूजन-अर्चन कर उन सभी लाभों को प्राप्त कर सकता है, जिसके लिए अन्यथा श्मशान के उग्र वातावरण में बैठ कर साधनाएं सम्पन्न करनी पड़ती हैं।

घर में पितृ दोष हो, अनायास लड़ाई-झगड़े और कलह होते रहते हों कोई विशेष कारण न होने पर भी **मतभेद की स्थितियां बनती रहती हों, जायदाद के बंटवारे की समस्या आकर खड़ी हो गई हो, हत्या आदि की धमकी मिल रही हो, मानसिक सुख-सन्तोष चला गया हो,** भय और तनाव व्याप्त रहता हो या दैनिक जीवन की कोई भी समस्या होक्योंकि गृहस्थ जीवन में तो अनेक प्रकार की समस्याएं आती रहती हैं। अलग-अलग व्यक्ति के साथ अलग-अलग समस्या रहती है और **जिस पर जो बीतती है उसको वही जानता है। प्रत्येक समस्या को लिख कर नहीं वर्णित किया जा सकता,** किन्तु तात्पर्य यही है कि जीवन में जैसी भी बाधा आ गई हो, व्यक्ति यदि बटुक भैरव प्रयोग सम्पन्न कर लेता है तो उसे उसी क्षण से आराम मिलना प्रारम्भ हो जाता है।

बटुक भैरव की साधना अन्य भैरव साधनाओं के समान ही विधि-विधान से युक्त है किन्तु अनुभव से यह भी देखने में आया है कि यदि साधक बटुक भैरव के शत अष्टोत्तर नामों का उच्चारण कर लेता है, तो उसे बिना किसी लम्बे विधि-विधान के भी अनुकूल फल मिलने की क्रिया प्रारम्भ हो जाती है। ये विशिष्ट नाम इस प्रकार से संगुफित हैं कि बटुक भैरव के १०८ नामों का उच्चारण करने से और ऐसे विशिष्ट यंत्र पर जिसमें बटुक भैरव की समस्त १०८ शक्तियां आबद्ध हों नैवेद्य चढ़ाने से भगवान शिव के समान ही बटुक भैरव भी शीघ्र प्रसन्न होकर अपने भक्त साधक को तुरन्त अभय प्रदान कर देते हैं। संकटकारी परिस्थितियों में तो यह लघु प्रयोग अत्यधिक तीव्र प्रभाव देता देखा गया है।

क्रोध भैरव, उन्मत्त भैरव, कपाल भैरव, चण्ड भैरव, रुरु भैरव. . . इन सभी उग्र भैरव साधनाओं को केवल और केवल श्मशान में ही तो सम्पन्न कर सकते हैं. . . जबकि बटुक भैरव विशुद्ध व सौम्य रूप से सात्विक साधना है।

बटुक भैरव साधना का दिवस यद्यपि मंगलवार है किन्तु आकस्मिक परिस्थितियों में किसी भी रात्रि में सम्पन्न की जा सकती है। **इस साधना में ताम्र पत्र पर अंकित एक विशिष्ट यंत्र की आवश्यकता पड़ती है जिसमें बटुक भैरव के समस्त १०८ स्वरूपों को पूर्णता से आबद्ध किया गया हो।** ऐसे यंत्र की यह भी विशेषता होती है कि वह आवरण पूजा की अनिवार्यता से मुक्त होता है, तथा इस पूजन में बलि आदि की भी आवश्यकता नहीं रहती।

साधक गण पूर्ण शुद्ध सात्विक भाव से भगवान भैरव के पूर्ण सात्विक स्वरूप का स्मरण कर उनके आवाहन की प्रार्थना कर पूजन प्रारम्भ करें। लाल पुष्प यंत्र पर अर्पित कर सिंदूर का तिलक करें तथा निम्न ध्यान उच्चरित करें –

ध्यान -

**उद्यद् - भास्कर - सन्निभं त्रिनयनं रक्तांग - राग स्रजम स्मेरास्यं वरदं कपालमभयं शूलं दधानं करैः।
नील - ग्रीवमुदार - भूषण - शतं शीतांशु - चूडोज्ज्वल् बन्धूकारुण - वाससं भय - हरं देवं सदा भावये।।**

इसके पश्चात मूल साधना क्रम प्रारम्भ होता है। पहले से किसी एक बड़े पात्र में घृत, मधु, शर्करा, गुड़ व काले तिल को मिश्रित करके रख लें तथा बटुक भैरव की १०८ शक्तियों के प्रतीक रूप में उनके विशेषणों का उच्चारण करते हुए प्रत्येक उच्चारण के साथ यह मिश्रण (नैवेद्य) यंत्र के सामने रखे किसी खुले मुंह के पात्र में डालते जाएं।

श्री बटुक भैरवनाथ के ये १०८ नाम इस प्रकार हैं–

१. भैरवः, २. भूतनाथः, ३. भूतात्मा, ४. भूतभावन, ५. क्षेत्रज्ञः, ६. क्षेत्रपाल, ७. क्षेत्रदः, ८. क्षत्रियः, ६. विराट्, १०. श्मशानवासी, ११. मांसाशी, १२. खर्पराशी-स्मरान्तकः, १३. रक्तपः, १४. सिद्धः, १५. सिद्धिदः १६. सिद्धिसेवितः, १७. कंकालः, १८. कालशमनः, १६. कलाकाष्ठतनु, २०. कविः, २१. त्रिनेत्री, २२. बहुनेत्रः, २३. पिंगललोचनः, २४. शूलपाणिः, २५. खड्गपाणि, २६. कंकाली, २७. धूम्रलोचनः, २८. अणभीरु, २६. भैरवीनाथः, ३०. भूतपः ३१. योगिनीपतिः, ३२. धनदः, ३३. धनहारी, ३४. धनवान, ३५. प्रतिभावान ३६. नागहारो, ३७. नागपाशः, ३८. व्योमकेशः, ३६. कपालभृत, ४०. कालः, ४१. कपालगाली, ४२. कमनीयः, ४३. कलानिधिः, ४४. त्रिलोचनः, ४५. ज्वलनेत्रः ४६. त्रिशिखा, ४७. त्रिलोकयः, ४८. त्रिनेत्रतनयः, ४६. डिम्बा, ५०. शान्तः ५१. शान्तजनप्रियः, ५२. बटुकः, ५३. बहुवेषः, ५४. खट्वांगवरधारकः, ५५. भूताध्यक्षः, ५६. पशुपतिः, ५७. भिक्षुकः, ५८. परिचारकः, ५६. धूर्तः, ६०. दिगम्बरः, ६१. शूरः, ६२. हरिणः, ६३. पांडुलोचनः, ६४. प्रशांतः ६५. शन्तिदः, ६६. शंकरः, ६७. प्रियबान्धवः, ६८. अष्टमूर्ति, ६६. निधीशः, ७०. ज्ञानचक्षुः, ७१, तपोमयः, ७२. अष्टाधारः, ७३. षडाधारः ७४. सर्पयुक्तः ७५ शिखिसखः ७६. भूधरः ७७. भूधराधिशः ७८. भूपतिः, ७६. भूधरात्तजः, ८०. कंकालधारी, ८१. मुण्डः, ८२. नागयज्ञोपवीतिकः, ८३. जृम्भणः, ८४. मोहनः, ८५. स्तम्भयः, ८६. मारणः, ८७. क्षोभणः, ८८. शुद्ध नीलांजनः, ८६. दैत्यः, ६०. दैत्यहा, ६१. मुण्डभूषितः, ६२. बलिभुक्, ६३. बलिभंगा, ६४. पनवीर, ६५. नाथः, ६६. पराक्रमः, ६७. सर्वापत्तारणः, ६८. दुर्गाः, ६६. दुष्टः-भूतनिवेदितः, १००. कामी, १०१. कलानिधि, १०२. कान्तः, १०३. कमनीयवशः, १०४. कृद्वशी, १०५. सर्वसिद्धिप्रदः, १०६. वैद्यः, १०७. प्रभुः, १०८. विष्णु।

इस पूजन क्रम की सम्पूर्णता हो जाने पर एक बार पुनः हाथ जोड़ कर भगवान बटुक को प्रणाम करें और प्रार्थना करें कि वे जीवन में सदैव सहायक तथा रक्षक बने रहें। चढ़े हुए नैवेद्य को किसी पवित्र स्थान पर अथवा किसी वृक्ष के मूल में डाल दें अथवा श्वान को खिला दें। यंत्र को पूजा स्थान में स्थापित कर दें।

तीव्र व उग्र साधनाओं में रुचि रखने वाले तथा भैरव साधना के लाभ प्राप्त करने के इच्छुक साधकों को चाहिए कि वे इन १०८ विशिष्ट नामों का उच्चारण नित्य प्रातः एक बार अवश्य कर लें जिससे वह पूरा दिन बाधा रहित व तनाव मुक्त बीत सके। विशेष अवसरों पर, मुकदमे में पेशी की तारीख पड़ने पर, व्यापारिक समझौतों के पूर्व भी इसी प्रयोग को दोहरा लेना किसी भी अचानक आने वाली बाधा से मुक्ति दिलाने में सहायक सिद्ध होता ही है।

२४.०५.६४ नृसिंह जयन्ती

भूत-प्रेत बाधा निवारणार्थ नृसिंह प्रयोग

जिस प्रकार बटुक भैरव अथवा महाभैरव किसी भी रूप में उचित साधना के द्वारा साधक के समस्त विघ्न शांत करने में परम सहायक होते हैं उसी प्रकार भगवान विष्णु का नृसिंहावतार भी उनके अन्य अवतरणों की अपेक्षा तीव्रतम और विघ्न विनाशक माना गया है। अर्धरूप से सिंह एवं अर्ध रूप से मानव - इस अवतरण का अर्थ ही यही है कि व्यक्ति के अन्दर निहित सिंहत्व स्पष्ट हो सके, और तब भूत -प्रेत बाधा, ग्रह दोष, अनिष्ट भय, शत्रु संकट यों भाग जाता है जिस प्रकार सिंह गर्जन से हिरण भय से पीले पड़ मूर्छित हो जाते हैं। कैसी भी प्रबल भूत - प्रेत बाधा आदि क्यों न हो यदि साधक **काली हकीक माला** धारण कर निम्न नृसिंह मंत्र का २१ बार उच्चारण कर ले तो उसके ऐसे समस्त विघ्न शांत होते ही हैं।

मंत्र -

ॐ नमो नृसिंहाय हिरण्यकशिपुवक्षःस्थल विदारणाय त्रिभुवनव्यापकाय भूत प्रेत पिशाच चंडाकिनी कुलोन्मूलनाय स्तम्भोद्भवाय समस्तदोषान हर हर विसर विसर पच पच हन हन कम्पय कम्पय मथ मथ ह्रीं ह्रीं ह्रीं फट् फट् ठः ठः एह्येहि रुद्र आज्ञापयामि स्वाहा।

यदि किसी दूसरे के लिए इस प्रयोग को करें तो एक काली हकीक माला पीड़ित व्यक्ति को भी धारण करा दें तथा उपरोक्त मंत्रोच्चार के साथ निरन्तर पीली सरसों का प्रहार पीड़ित व्यक्ति पर करते रहें। काली हकीक माला धारण करने कराने से यह योनियां पलट कर आक्रमण नहीं कर पाती।
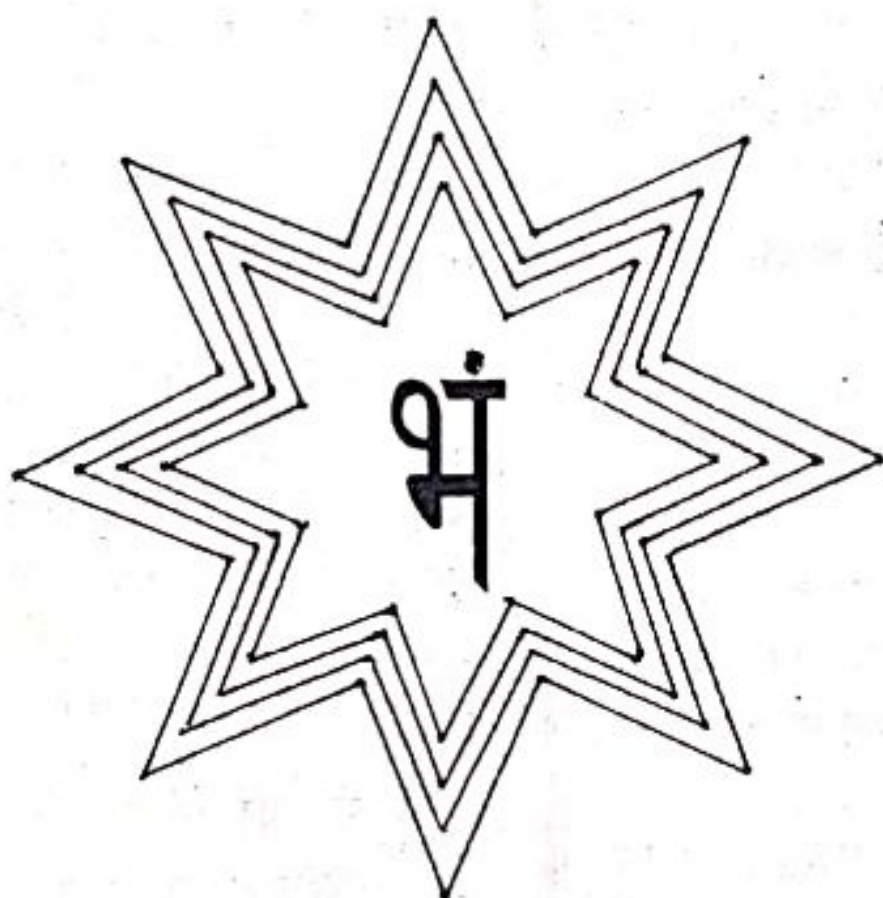
साधना के उन्नत स्वरूपों में महाभैरव की साधना एक विशिष्ट स्थान रखती ही है और विशेष रूप से गुरु भक्त एवं शिव भक्त साधकों के जीवन में तो इसका महत्वपूर्ण स्थान है।

भैरव साधना का सम्पूर्ण क्रम महाभैरव साधना! गुरु साधना एवं शिव साधना के पक्षों को समाहित करते हुए

भैरव साधना एक उग्रसाधना मात्र नहीं है। भैरव साधना के अनेक पक्ष हैं। भैरव प्रचण्ड, उग्र स्वरूप में होते हुए भी विशेष साधनाओं के द्वारा सौम्य स्वरूप में भी सिद्ध किए जा सकते हैं। भगवान शिव के हीं अंश, उन्हीं के गण होने के कारण वे शिव स्वरूप में अर्थात् शांत स्वरूप में वरदायक भी हैं। कुछ साधना ग्रंथों में भैरव की साधना के तीन प्रकार बताये गए हैं— पुरुष रूप में, स्त्री के रूप में एवं बाल रूप में। इसका भी यही अर्थ है कि भैरव सौम्य, कोमल एवं देशकाल की स्थिति के अनुकूल वरदायक अथवा उग्र स्वरूप में प्रकट होने वाले देव हैं। **भैरव की साधना करने के इच्छुक साधक को प्रारम्भ में ही यह बात स्पष्ट कर लेनी लाभदायक रहती है क्योंकि तब वह बिना किसी हिचक के ऐसी श्रेष्ठ साधना में बैठ पाता है** अन्यथा भैरव साधना को लेकर साधकों के मन कई उहापोह हैं ही। प्रायः साधक इन्हीं उहापोहों के कारण ऐसी फलप्रद साधना कर लाभ नहीं ले पाते। वे किसी विपरीत प्रभाव के भय से सहमे रहते है और पूरे मनोयोग से मंत्र-जप नहीं कर पाते। यद्यपि भैरव साधना में नियम-संयम, आचार-विचार आदि का विशेष महत्व है, साधना के मध्य भय भी उत्पन्न होता है और अनेक विपरीत स्थितियां जैसे इतर योनियों का आगमन, श्मशान की दुर्गन्ध, वीभत्स दृश्य आदि भी उपस्थित होते ही हैं, किन्तु साधक जब इसी भैरव साधना को कुछ विशेष विधियों से व सौम्य ढंग से करते हैं, उन्हें सिद्ध करने की अपेक्षा उनके वरदायक

प्रभाव और उनके सुरक्षा-आवरण का प्रार्थी बनकर साधना सम्पन्न करते हैं तो उन्हें न तो साधना काल में कोई विपरीत स्थिति व्याप्त होती है और न भैरव, साधक के समक्ष उग्रस्वरूप में उपस्थित होते हैं। **शास्त्रों में ५२ भैरवों का वर्णन है, जिनकी अपेक्षा महाभैरव की साधना अर्थात् भैरव की मूल साधना करना ही लाभदायक रहता है** और इस साधना को सम्पन्न कर लेने के बाद ही फिर साधक भविष्य में भैरव के एक-एक विशेष स्वरूप की साधना कर सकते हैं।

भैरव भय के विनाशक हैं, सुरक्षा प्रदान करने वाले हैं और साथ ही साथ पूर्णरूप से अमृतमय होते हुए साधक के बलवीर्य का वर्द्धन करने वाले उसकी पापराशि को समाप्त करने वाले भी हैं।

महाभैरव की साधना के लिए अन्य भैरव साधनाओं की अपेक्षा प्रस्तुत विधान सरल है और इसे जब भगवान शिव एवं अपने गुरु की उपस्थिति में किया जाए तब तो वे अत्यन्त आह्लादित होकर साधक के साथ आजीवन छाया की भांति बने रहते हैं।

महाभैरव का प्रकट स्वरूप **'भैरव लिंग'** माना गया है जो अत्यन्त दुर्लभ है और फिर इसके अभाव में उनकी शाक्तियों का अंकन, उनका स्थापन यंत्र के माध्यम से ताम्रपत्र पर किया जाता है। साथ में भगवान शिव की उपस्थिति के रूप में **'लघु शिवयंत्र'** एवं पूज्यपाद गुरुदेव की उपस्थिति के रूप में **'लघु गुरु यंत्र'** की स्थापना भी निश्चय ही फलदायक सिद्ध होती है। किसी भी रविवार अथवा मंगलवार की रात्रि को यह साधना सम्पन्न की जा सकती है। यदि कृष्ण पक्ष में इस साधना को सम्पन्न किया जाय अथवा अमावस्या की रात्रि में इस साधना को सम्पन्न किया जाए तो ये दिवस वे महाभैरव के प्रकट दिवस माने गए है। **इसके अतिरिक्त कुछ विशेष मुहूर्त भी होते है** जब इनकी साधना सफलता पूर्वक सम्पन्न की जा सकती है। **संयोग से ऐसा अवसर दिनांक १.६.९४ (कालाष्टमी) को पड़ रहा है। जो सर्व सिद्धि दिवस भी है।**

साधक काले अथवा भूरे वस्त्र पहन कर स्वयं को महाभैरव स्वरूप में मानते हुए अपने सामने तीनों यंत्र स्थापित कर सर्वप्रथम संक्षिप्त गुरु पूजन कर गुरु मंत्र की एक माला मंत्र जप करें, संक्षिप्त शिव पूजन करें व भगवान शिव के पंचाक्षरी मंत्र की एक माला मंत्र जप करें, तत्पश्चात् महाभैरव यंत्र पर सिन्दूर का तिलक कर सिन्दूर की ही बावन बिन्दियां **"भं"** बीज मंत्र का उच्चारण करते हुए अंकित करें जिससे उनके सभी ५२ स्वरूपों का आह्वान व स्थापन हो सके। तेल का एक बड़ा दीपक लगा लें, लाल फूल समर्पित करें एवं **रुद्राक्ष की माला** से निम्न मंत्र की एक अथवा ११ माला मंत्र जप सम्पन्न करें।

मंत्र

ॐ ऐं श्रीं ऐं फट्।।

उपरोक्त मंत्र महाभैरव का विशिष्ट मंत्र है जिसमें भैरव को सम्पूर्ण रूप से वरदायक, सौम्य स्वरूप मानते हुए उनकी विशिष्ट शक्तियों को अपने शरीर में समाहित करने की याचना के साथ प्रार्थना की गयी है और जिससे साधक के जन्म-जन्म की पापराशि दूर होने के साथ-साथ बल, वीर्य व तेज में वृद्धि होती ही है।

साधना के उपरान्त तीनों यंत्रों, रुद्राक्ष माला को किसी शिवमंदिर में भेंट चढ़ा दें।

ॐ नमस्तेऽमृतसम्भूते बलवीर्यवर्द्धिनि। बलमायुश्च मे देहि पापान्मे त्राहि दूरतः।।

हे अमृत सम्भूते! मुझे बल, वीर्य और दीर्घ आयु प्रदान करें, मेरी पाप- राशि को ध्वस्त करें, मैं महाभैरव साधक आपको बार-बार प्रणाम करता हूं।

विवाहित स्त्रियों के लिए अचूक प्रयोग

दूरादागत्य कामार्ता बलादालिंगयन्ति कम्।

"दूर रहने वाला पुरुष किस प्रकार से अपनी स्त्री से आकर्षित होकर दूर स्थान से भी आकर बल पूर्वक उसका संग करे?"

जिन स्त्रियों के पति का मन बदल गया हो अथवा वे किसी परस्त्री में रूचि लेने गए हों उन स्त्रियों के लिए यही साधना कुछ परिवर्तनों के साथ अत्यन्त अनुकूल सिद्ध हो सकती है। ऐसी पीड़ित स्त्री को चाहिए कि वह इन पृष्ठों पर प्रस्तुत **महाभैरव साधना करने के पश्चात् प्रतिदिन एक लघु प्रयोग भी सम्पन्न कर लें।**

प्रतिदिन मूल महाभैरव साधना करने के पश्चात अपने पति के चित्र पर **मनमोहिनी मुद्रिका** रख कर निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप कर लें। मंत्र जप केवल **हकीक माला** से ही किया जा सकता है।

मंत्र -

ॐ ऐं ऐं मम् प्रिय वश्य करि करि नमः

रात्रि में सोते समय, रजस्वला काल में उपरोक्त मुद्रिका धारण न करें तथा साधना भी स्थगित रखें। ऋतु - स्नान के उपरान्त छठें दिन से यह साधना पुनः आरम्भ की जा सकती है। जब तक मनोवांछित रूप से सफलता न मिलने लगे तब तक मंत्र जप करती रहे। साधना सफल हो जाने पर भी मुद्रिका धारण किए रहें।

❁ ❁ ❁

कलियुग में भैरव प्रयोग शीघ्र फलदायक माने गए हैं, कहा जाता है कि अन्य देवी-देवताओं की साधना या पूजा आदि सम्पन्न करने पर भी कभी-कभी सफलता में न्यूनता का आभास हो सकता है, परन्तु एक भी भैरव साधना व्यर्थ नहीं गई, क्योंकि तांत्रिक ग्रंथों में भैरव को आपत्ति उद्धारक माना गया है।

❁ ❁ ❁

आपत्ति उद्धारक भैरव प्रयोग

जीवन में सैकड़ों प्रकार की साधनाएं हैं, और प्रत्येक साधना अपने-आप में महत्वपूर्ण और सारगर्भित है। साधक अपनी रुचि के अनुसार साधना का चयन करता है और उसमें सफलता प्राप्त करता है। सफलता प्राप्ति के लिए आवश्यक और मूल तथ्य उसकी श्रद्धा है, श्रद्धा के बल पर ही वह अपने उद्देश्य में और अपनी साधना में सफल हो सकता है।

हमारा जीवन संघर्षमय जीवन है, जिसमें पग-पग पर विपत्तियों और बाधाओं का बोलबाला है, यदि हम शांतिपूर्वक जीवन विताना भी चाहें, तब भी चारों तरफ का वातावरण ऐसा नहीं करने देता।

जीवन में सफलता के लिए यह आवश्यक है कि हम मानसिक रूप से स्वस्थ हों, और किसी प्रकार की टेन्शन या तनाव हमारे मानस में नहीं हो, साथ ही साथ हम इस प्रकार की समस्याओं से दूर रहकर सही प्रकार से चिन्तन कर सकें।

ऐसी स्थिति में साधना पक्ष ही हमारे लिए सहायक हो सकता है, इन साधनाओं में भी आपत्ति दूर करने के लिए भैरव साधना सबसे अधिक सहायक है। **चाहे कोई मुकदमा चल रहा हो, शत्रु से परेशान हों, पति-पत्नी में मतभेद हो, व्यापार में बाधाएं आ रही हों, नौकरी में प्रमोशन नहीं हो या अधिकारियों से मतभेद हो, अथवा सही स्थान पर स्थानान्तरण नहीं हो रहा हो, घर में बीमारी हो, पुत्र सुख न हो, पुत्र की आदतें खराब हों, स्वयं बीमार हो, आर्थिक समस्या हो, या कोई इच्छा अधूरी हो अथवा ऐसी कोई भी आपत्ति हो, तो आपत्ति उद्धारक भैरव प्रयोग सफलतादायक माना गया है।**

इस साधना को कोई भी साधक कर सकता है, इसमें किसी प्रकार की बाधा, भय या समस्या नहीं आती या किसी प्रकार की कोई कठिनाई भी उसको देखनी नहीं पड़ती, यह एक प्रकार से सौम्य साधना है, और किसी भी वर्ण का गृहस्थ या संन्यासी इस साधना को सम्पन्न कर सकता है।

साथ ही साथ इस साधना की यह भी विशेषता है, कि इसमें कम-से-कम उपकरणों की जरूरत पड़ती है, और किसी प्रकार की कोई जटिल विधि नहीं है।

इस साधना को पुरुष या स्त्री कोई भी सम्पन्न कर सकता है, इस साधना के द्वारा पति को नियंत्रित किया जा सकता है, यदि उससे मतभेद हों तो दूर किए जा सकते हैं, और पति की दीर्घायु के लिए भी यही साधना सफलतादायक है।

नीचे मैं साधना से सम्बन्धित तथ्य स्पष्ट कर रहा हूं।

समय

इस साधना को किसी भी महीने से प्रारम्भ किया जा सकता है, परन्तु यह साधना शुक्ल पक्ष के पहले मंगलवार को ही प्रारम्भ की जा सकती है, यह साधना किस दिन समाप्त होती है, यह महत्वपूर्ण नहीं है, परन्तु शुल्क पक्ष के प्रथम मंगलवार से इस साधना को प्रारम्भ करना जरूरी है।

पूजन सामग्री

साधना प्रारम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित सामग्री पहले से ही मंगवाकर रख लेनी चाहिए -- एक किलो चावल, एक मीटर लाल वस्त्र, लकड़ी का एक तख्ता, थोड़ा सा गंधक, तांबे का एक लोटा और एक नारियल।

साधक इस प्रयोग को अपने घर में या अन्य किसी स्थान पर कर सकता है। सर्वप्रथम साधक अपने कमरे में एक लकड़ी का तख्ता जो एक फुट लम्बा और एक फुट चौड़ा हो रखकर उस पर लाल वस्त्र बिछाए तथा उस लाल वस्त्र के चारों कोनों पर चावल की चार ढेरियां तथा एक बीच में ढेरी बना देनी चाहिए।

बीच की ढेरी पर तेल का दीपक रख देना चाहिए, इसमें किसी भी प्रकार के तेल का प्रयोग किया जा सकता है, दीपक के सामने गंधक के पांच टुकड़े लाल वस्त्र पर रखे जाते हैं।

दीपक के पीछे तांबे का लोटा जल भर कर रख दें और उस पर नारियल रख दें।

गंधक के टुकडों के पास मन्त्र सिद्ध संजीवन क्रिया से युक्त **भैरव यन्त्र** स्थापित कर दें, यह यंत्र ताम्र-पत्र पर अंकित होता है, और विशेष संजीवन मुहूर्त में ही इस यन्त्र का निर्माण किया जाता है, इसके बाद विशेष मन्त्रों से इसे मन्त्र सिद्ध, प्राण-प्रतिष्ठा युक्त किया जाता है, जिससे कि यह यन्त्र पूर्ण सफलतादायक हो जाता है।

यन्त्र का निर्माण अत्यन्त सावधानी पूर्वक किया जाना आवश्यक होता है, इसीलिए पत्रिका पाठकों को सुविधा एवं संरक्षण देने के कारण यन्त्रों का निर्माण पूर्ण विधि-विधान के साथ पत्रिका कार्यालय द्वारा किया जाता है। साधक सम्पर्क स्थापित कर इस प्रकार का आश्चर्यजनक फलप्रदायक भैरव यन्त्र प्राप्त कर सकते हैं।

इसके बाद शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार को प्रातःकाल यह कार्य सम्पन्न कर साधक स्नान करके आसन पर बैठ जाए, साधक का मुंह दक्षिण दिशा की तरफ होना चाहिए और उसके सामने लकड़ी का तख्ता बिछा होना चाहिए, साधक को सूती या ऊनी आसन का प्रयोग करना चाहिए, पर यह आसन लाल रंग का होना आवश्यक है, अथवा आसन को पहले से ही रंगाकर तैयार कर लेना चाहिए।

यदि स्त्री साधक हो तो वह ऋतु धर्म से निवृत्त होने के बाद ही इस साधना को प्रारम्भ करे, इस बात का ध्यान रखे कि साधना काल में वह रजस्वला न हो, यदि ऐसा हो जाता है, तो वह साधना सम्पन्न नहीं मानी जानी चाहिए।

साधक धोती पहिन कर आसन पर बैठे और ऊपर किसी भी प्रकार का वस्त्र न पहिने। वह चाहे तो दूसरी धोती ओढ़ सकता है, या ऊनी कम्बल ओढ़ सकता है।

मंगलवार के दिन प्रातःकाल ७ से ९ बजे के बीच इस साधना को प्रारम्भ किया जा सकता है। यह साधना मात्र ७ दिन की है, और नित्य भैरव मन्त्र की ५१ मालाएं फेरनी आवश्यक हैं। इसमें **मूंगे की माला** का ही प्रयोग किया जाना चाहिए, पर यदि उसके पास **स्फटिक माला** हो तो उसका प्रयोग भी किया जा सकता है। इसके अलावा अन्य किसी भी प्रकार की माला का प्रयोग वर्जित है।

प्रयोग

साधक सर्वप्रथम अपने दोनों हाथों को धोकर दाहिने हाथ में जल लेकर तीन बार आचमन करे, अर्थात् उस जल को पीकर अन्तर को शुद्ध करे, इसके बाद दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प करे—

ॐ ह्रीं बटुकाय श्रीं आपत्ति उद्धारणाय भैरव देवता प्रीतये मम अमुकं कार्य सिद्धयर्थः भैरव प्रयोग महं करिष्ये।

ऐसा कहकर जल छोड़ दें उसके बाद विनियोग करें अर्थात् हाथ में जल लेकर निम्न पंक्ति पढ़ें --

ॐ अस्य श्री आपत्ति उद्धारक भैरव मंत्रस्य,
बृहदारण्य ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः,
श्री भैरव देवताः, ह्रीं बीजम्, श्रीं शक्तिः,
क्लीं कीलकम्, श्री आपत्ति उद्धारक भैरव प्रीतये जपे विनियोगः।

ऐसा कह कर के हाथ में लिया हुआ जल छोड़ दें।

इसके बाद यन्त्र के सामने हाथ जोड़कर निम्नलिखित ध्यान करें—

ध्यान

त्रिनेत्रं रक्त वर्णं च. वरद.भयहस्तकम्।
सव्ये त्रिशूलमभयं कपालं वरमेव च।।
रक्त वस्त्र परिधानं रक्तमाल्यानुलेपनम्।
नीलग्रीवं च सौम्यं च सर्वाभरण भूषितम्।।

इसके बाद दीपक लगाकर भैरव यंत्र के सामने हाथ में जल लेकर अपनी समस्या या आपत्ति का उल्लेख करें, कि

साधना समाप्त होते-होते मेरा 'अमुक' कार्य सिद्ध एवं सम्पन्न हो जाए।

इसके बाद भैरव यंत्र के सामने दूध का थोड़ा-सा प्रसाद भोग लगाए और लाल रंग के कुछ पुष्प समर्पित करें।

इसके बाद निम्नलिखित मूल मंत्र का जप करें --

ॐ ह्रीं भैरवाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु भैरवाय ह्रीं । ।

जब इक्यावन मालाएं पूरी हो जाएं तब आसन से उठे, और भैरव यन्त्र का जो भोग लगाया हुआ है वह भोग कुत्ते को खिला दें क्योंकि भैरव का वाहन श्वान ही होता है।

इसके बाद पुनः स्नान कर अपने नित्य कार्य में लगें।

यह साधना सात दिन की है, इन सात दिनों में साधक जमीन पर या लकड़ी के तख्ते पर गद्दा बिछाकर सोए। चारपाई का प्रयोग न करे। स्त्री संग वर्जित है। दिन में एक समय भोजन करे और मांस-मदिरा, आदि का सेवन न करे। यदि साधक धूम्रपान करता हो तो उसे चाहिए कि वह साधना काल में धूम्रपान का प्रयोग न करे।

इस प्रकार ७ दिन पूरे हो जाएं, तो आठवें दिन जब पुनः मंगलवार आए, तब इस मंत्र की एक माला फेरें और भैरव से प्रार्थना करें कि उसने साधना सम्पन्न की है अतः जल्दी से जल्दी उसका कार्य सम्पन्न हो।

इसके बाद किसी एक बालक को अपने घर में भोजन कराए और उसके बाद ही स्वयं भोजन करें।

इस प्रकार साधना सम्पन्न करने पर निश्चय ही साधक की कामना पूरी होती है, और जिस उद्देश्य के लिए उसने साधना प्रारम्भ की है, उसमें सफलता मिलती है।

साधना समाप्ति के बाद साधक लकड़ी के तख्ते पर बिछे हुए चावल, नारियल, लोटा एवं वह कपड़ा किसी गरीब ब्राह्मण को दान कर दे, गंधक दक्षिण दिशा में जाकर गड्ढा खोदकर उसमें दवा दे। लकड़ी के तख्ते का प्रयोग बाद में घर के कार्यों में किया जा सकता है, दीपक को भी दक्षिण दिशा की तरफ जाकर रख देना चाहिए।

यह प्रयोग सामान्य दिखाई देने पर भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है, और इस प्रयोग से साधक को पूर्ण सफलता एवं सिद्धि प्राप्त होती है, जिस भैरव यंत्र के सामने साधना की थी, उस यंत्र को अपने घर में किसी पवित्र स्थान पर रख आयें या नदी में विसर्जित कर दें।

वस्तुतः कलियुग में यह साधना गोपनीय, महत्वपूर्ण, श्रेष्ठ, शीघ्र एवं निश्चित रूप से सफलतादायक है। ◆

जीवन में मिटाना है कष्ट-रोग-पीड़ा-शत्रु तो कीजिए

भैरव पूजा साधना आराधना

किसी भी प्रकार के यज्ञ में, साधना में, गृह प्रवेश में, भूमि पूजन में भैरव की पूजा अवश्य ही की जाती है। जब तक **'भैरव पूजन'** नहीं हो जाता, तब तक मूल यज्ञ भी प्रारम्भ नहीं होता, क्योंकि भैरव रक्षा कारक देव हैं, और विश्व के संहारकर्त्ता शिव के स्वरूप तथा महाशक्ति काली के सेवक हैं, इसीलिए इन्हें 'काल भैरव' का नाम दिया गया है।

किसी भी गांव में चले जाइये, वहां कोई मन्दिर अथवा पूजा स्थान हो या नहीं, लेकिन भैरव का मन्दिर अवश्य ही होगा। जन-जन के देवता के रूप में भैरव की ख्याति है, उनसे करोड़ों-करोड़ों लोगों की आस्था जुड़ी है, और यह आस्था तभी बन सकती है, जब प्रत्यक्ष प्रमाण प्राप्त होते रहे हों, और लोगों के कार्य सिद्ध होते रहे हों।

''काल भैरवाष्टमी दिवस'' अपने-आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता है, क्योंकि प्रत्येक तांत्रिक ग्रन्थों में भैरव को जीवन की पूर्णता का पर्याय माना गया है।

उच्चकोटि के तांत्रिक ग्रन्थों में बताया गया है, कि चाहे किसी भी देवी या देवता की साधना की जाए, उसके लिए सर्वप्रथम 'गणपति' और 'भैरव' की पूजा आवश्यक है, जिस प्रकार से गणपति समस्त विघ्नों का नाश करने वाले हैं, ठीक उसी प्रकार से भैरव समस्त प्रकार के शत्रुओं का नाश करने में पूर्णरूप से सहायक हैं।

> **श्री भैरव देव, भगवान शिव के अंश से उद्भूत होने के कारण उन्हीं के समान सरल व सौम्य हैं और शीघ्र ही प्रसन्न होकर रक्षा करते हैं। ''भैरव की साधना'' जीवन में जहां एक ओर दरिद्रता का नाश, अभावों की पूर्ति करती है, वहीं जीवन की व्याधियां कष्ट, पीड़ा और शत्रुओं से हमारी रक्षा भी करती है. . .**

कलियुग में बगलामुखी, छिन्नमस्ता या अन्य महादेवियों की साधनाएं तो कठिन प्रतीत होने लगी हैं, यद्यपि ये साधनाएं शत्रु संहार के लिए पूर्णरूप से समर्थ और बलशाली हैं, परन्तु **''भैरव साधना''** कलियुग में तुरन्त फलदायक और शीघ्र सफलता देने में सहायक है।

अन्य साधनाओं में तो साधक को फल जल्दी या विलम्ब से प्राप्त हो सकता है, परन्तु इस साधना का फल तो हाथों-हाथ मिलता है, इसलिए कलियुग में गणपति, चण्डी और भैरव की साधना पूर्ण रूप से महत्वपूर्ण मानी गयी है।

प्राचीन समय से शास्त्रों में यह प्रमाण बना रहा है, कि किसी भी प्रकार का यज्ञ कार्य हो, तो यज्ञ की रक्षा के लिए भैरव की स्थापना और पूजा सर्वप्रथम आवश्यक है, चाहे किसी भी प्रकार की पूजा हो, उसमें सबसे पहले गणपति की स्थापना की जाती है, साथ ही साथ उसमें भैरव की उपस्थिति और भैरव की साधना भी जरूरी मानी गई है, क्योंकि ऐसा करने से दसों दिशाओं का आवद्धीकरण हो जाता है, और उस साधना में साधक को किसी भी प्रकार का भय व्याप्त नहीं होता, और न किसी प्रकार का उपद्रव या बाधाएं ही आती हैं, ऐसा करने पर साधक को निश्चय ही पूर्ण सफलता प्राप्त हो जाती है।

इसके अलावा भैरव की स्वयं की साधना भी अत्यन्त महत्वपूर्ण और आवश्यक मानी गई है। आज का जीवन जरूरत से ज्यादा जटिल और दुर्बोध बन गया है,

पग-पग पर कठिनाइयां और बाधाएं आने लगी हैं, अकारण ही शत्रु पैदा होने लगे हैं, और उनका प्रयत्न यही रहता है, कि येन-केन-प्रकारेण लोगों को तकलीफ दी जाए या उन्हें परेशान किया जाए, इससे जीवन में जरूरत से ज्यादा तनाव बना रहता है।

इसलिए आज के युग में अन्य साधनाओं की अपेक्षा "भैरव की साधना" को ज्यादा महत्व दिया जाने लगा है।

'देव्योपनिषद्' में भैरव साधना क्यों की जानी चाहिए, इसके बारे में विस्तार से विवरण है, उसका मूल तथ्य निम्न प्रकार से है—

१. जीवन के समस्त प्रकार के उपद्रवों को समाप्त करने के लिए।
२. जीवन की बाधाओं और परेशानियों को दूर करने के लिए।
३. जीवन के नित्य कष्टों और मानसिक तनावों को समाप्त करने के लिए।
४. शरीर स्थित रोगों को निश्चित रूप से दूर करने के लिए।

५. आने वाली बाधाओं और विपत्तियों को पहले से ही हटाने के लिए।
६. जीवन के और समाज के शत्रुओं को समाप्त करने और उनसे बचाव के लिए।
७. शत्रुओं की बुद्धि भ्रष्ट करने के लिए और शत्रुओं को परेशानी में डालने के लिए।
८. जीवन में समस्त प्रकार के ऋण और कर्जों की समाप्ति के लिए।
९. राज्य से आने वाली बाधाओं के अकारण भय से मुक्ति के लिए।
१०. जेल से छूटने के लिए और मुकदमों में शत्रुओं को पूर्ण रूप से परास्त करने के लिए।
११. चोर-भय, दुष्ट-भय और वृद्धावस्था से बचने के लिए।

इसके अलावा हमारी अकाल-मृत्यु न हो या किसी प्रकार का कोई ऐक्सिडेन्ट न हो अथवा हमारे बालकों की अल्पायु में ही मृत्यु न हो आदि के लिए भी काल भैरव साधना अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी गई है।

इसलिए शास्त्रों में कहा गया है, कि जो चतुर और बुद्धिमान व्यक्ति होते हैं, वे अपने जीवन में 'काल भैरव साधना' अवश्य ही करते हैं। जो वास्तव में जीवन में बिना बाधाओं के निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर होना चाहते हैं, वे 'काल भैरव साधना' अवश्य करते हैं। **जो अपने जीवन में चाहते हैं, कि किसी भी प्रकार से राज्य की कोई बाधा या परेशानी न आये, वे निश्चय ही 'काल भैरव साधना' सम्पन्न करते हैं। जिन्हें अपने बच्चे प्रिय हैं, जो अपने जीवन में रोग नहीं चाहते, जो अपने पास बुढ़ापा फटकने नहीं देना चाहते, वे अवश्य ही काल भैरव साधना सम्पन्न करते हैं।**

उच्चकोटि के योगी, संन्यासी काल भैरव साधना तो करते ही हैं, साथ ही जो श्रेष्ठ व्यापारी हैं, वे भी अपने पण्डितों से 'काल भैरव साधना' सम्पन्न करवाते हैं। जो राजनीति में रुचि रखते हैं और अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करना चाहते हैं, वे भी अपने विश्वस्त तांत्रिकों से काल भैरव साधना सम्पन्न करवाते हैं।

मेरा यह अनुभव रहा है, कि जीवन में सफलता और पूर्णता पाने के लिए काल भैरव साधना अत्यन्त ही आवश्यक और महत्वपूर्ण है।

दिनांक २५/१२/६४ रविवार पौष कृष्ण पक्ष को तथा २४/०१/६५ मंगलवार माघ कृष्ण पक्ष को कालाष्टमी, महाकाल भैरवाष्टमी तथा महाकाल जयन्ती है, और भैरव साधना हेतु इस दिन का सबसे अधिक महत्व है।

भैरव के अलग-अलग स्वरूपों की साधना अलग-अलग कार्यों हेतु की जाती है, वास्तव में भैरव की तांत्रोक्त साधना प्रत्येक गृहस्थ के लिए आवश्यक है।

आगे तीन प्रयोग विशेष रूप से दिये जा रहे हैं, जिन्हें साधक अपनी बाधा के अनुसार अवश्य सम्पन्न करें। भैरवाष्टमी को यह प्रयोग प्रारम्भ कर आगे प्रति रविवार को भी 'भैरव मंत्र' का एक माला मंत्र-जप अवश्य करना चाहिए, तभी सर्वोच्च सिद्धि प्राप्त होती है—

१. शत्रु बाधा निवारण प्रयोग

भैरवाष्टमी के दिन प्रातः साधक स्नान कर लाल वस्त्र धारण करें, सिन्दूर का तिलक लगाएं, अपने सामने एक मिट्टी की ढेरी बनाकर उस पर पानी छिड़कें, फिर सिन्दूर छिड़कें और उस पर **"काल भैरव गुटिका"** स्थापित करें, ढेरी के चारों ओर तिल की ढेरियां बना कर उन पर **"पांच आक्रान्त चक्र"** रखें, प्रत्येक चक्र पर सिन्दूर छिड़कें, अब अपने पूजा स्थान में दीप और गुग्गल का धूप तथा अगरबत्ती जला दें, अपने हाथ में जल लेकर संकल्प करें, कि मैं अपनी अमुक शत्रु बाधा के निवारण हेतु 'काल भैरव प्रयोग' सम्पन्न कर रहा हूं।

अब एक पात्र में सरसों, काले तिल मिलाएं, उसमें थोड़ा तेल डालें, थोड़ा सिन्दूर डाल कर उसे मिला दें, इस मिश्रण को निम्न भैरव मंत्र का जप करते हुए काल भैरव गुटिका के समक्ष अर्पित करते रहें—

मंत्र

विभूमि-भूमि-नाशाय, दुष्ट-क्षय-कारकं, महा-भैरवाय नमः। सर्व-दुष्ट-विनाशनं सेवकं सर्व-सिद्धिं कुरु। ॐ काल-भैरव, बटुक-भैरव, भूत-भैरव महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता सर्व सिद्धिर्भवेत्।

साबर मंत्र :

ॐ काल भैरव, श्मशान भैरव, काल रूप-काल भैरव! मेरो बैरी तेरो आहार रे। कादि करेजा चखन करो कट कट। ॐ काल भैरव, बटुक भैरव, भूत भैरव! महा-भैरव महा-भय -विनाशनं देवता, सर्व-सिद्धिर्भवेत्।

इस प्रकार ५१ बार इस मंत्र का जप कर, धूप-दीप से भैरव की आरती सम्पन्न करें, अब काल भैरव गुटिका को छोड़ कर, बाकी सामग्री काले कपड़े में बांध कर जमीन में गाड़ दें और उस पर एक भारी पत्थर रख दें।

आगे दो रविवार तक काल भैरव गुटिका के समक्ष इस मंत्र का जप करते रहें। यह प्रयोग इतना प्रबल है, कि प्रबल से प्रबल शत्रु भी तीस दिन के भीतर-भीतर शान्त हो जाता है, उसकी शक्ति क्षीण हो जाती है, इसमें कोई सन्देह नहीं।

२. काल भैरव रोग -नाशक प्रयोग

यह प्रयोग भी प्रातः ही सम्पन्न किया जाता है, इसे यदि स्वयं की बीमारी के नाश हेतु करना है, तो अपने नाम का संकल्प लें, और यदि दूसरे के लिए प्रयोग करना है, तो उसके नाम से संकल्प लें ।

संकल्प

ॐ अस्य श्री बटुक भैरव स्तोत्रस्य सप्त ऋषिः, मातृका छन्दः, श्री बटुक भैरवो देवता, ममेप्सितसिद्धयर्थ जपे विनियोगः।

अपने सामने एक पात्र में **"काल भैरव महायंत्र"** स्थापित कर उस पर सिन्दूर चढ़ाएं तथा एक दीपक जलाएं, जिसमें चार बत्तियां हों तथा दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठें, काल भैरव महायंत्र के सामने पुष्प, लड्डू, सिन्दूर, लौंग, पुष्पमाला और काला डोरा रखें तथा मंत्र-जप के पहले जल से भरे हुए पात्र का मुंह लाल कपड़े से बांध दें।

अब एक पात्र में तिल लें, उसमें सात सुपारी रखें तथा निम्न मंत्र का जप करते हुए यह तिल दक्षिण दिशा की ओर फेंकते रहें--

मंत्र

ॐ काल भैरव, बटुक भैरव, भूत भैरव महा-भय विनाशनं देवता-सर्वसिद्धिर्भवेत्। शोकदुःख-क्षयकरं निरंजनं, निराकारं नारायणं, भक्ति-पूर्णत्वं महेशं सर्व-काम-सिद्धिर्भवेत् काल भैरव, भूषण वाहनं काल हन्ता रूपं च, भैरव गुनी महात्मन् योगिनां महा-देव-स्वरूपं, सर्वसिद्धयेत्। ॐ काल भैरव, बटुक भैरव, भूत भैरव, महा-भैरव महा-भय-विनाशन देवता सर्व-सिद्धिर्भवेत्।

इस प्रकार २१ बार मंत्र-जप के पश्चात् सातों सुपारी सभी दिशाओं में फेंक दें, काल भैरव यंत्र को पूजा में प्रयोग लाये काले डोरे से रोगी की भुजा में बांध दें अथवा गले में पहिना दें तथा पूजा का पवित्र जल भी उसे पिलाएं, पुराने से पुराने रोग इस प्रयोग से दूर होते देखे गये हैं।

३. मुकदमा, वाद-विवाद में विजय का प्रयोग

इस प्रयोग हेतु साधक सायंकाल इस विशेष दिन को प्रयोग सम्पन्न करें, पूजा स्थान में पूर्णरूप से शान्ति होनी चाहिए तथा जिस विशेष कार्य के सम्बन्ध में प्रयोग करना है, वह कार्य एक कागज पर सिन्दूर से लिख लें।

अब अपने सामने **''काल भैरव महाशंख''** स्थापित करें, शंख के चारों ओर सिन्दूर से एक घेरा बना दें, सामने एक **''नाग चक्र''** स्थापित करें, भैरव शंख के दोनों ओर तीन-तीन तेल के दीपक जला दें।

इसके पहले वाले प्रयोग के अनुसार संकल्प कर जल छोड़ें तथा वह कागज, जिस पर कार्य लिखा है, भैरव शंख के नीचे रख दें, वीर मुद्रा में बैठ कर, मुट्ठी ऊपर कर मंत्र-जप प्रारम्भ करें।

मंत्र

ॐ आं ह्रीं ह्रीं क्रीं ''अमुकं'' उच्चाटय उच्चाटय, मोहय मोहय, वशं करु कुरु। सर्वार्थकस्य सिद्धि रूपं त्वं महाकाल! काल भक्षण महादेव-स्वरूप त्वं। सर्व सिद्धयेत् ॐ काल भैरव, बटुक भैरव, भूत भैरव, महा भैरव महा-भय-विनाशनं देवता, सर्व सिद्धिर्भवेत्।

५१ बार मंत्र-जप करने के पश्चात् इस काल भैरव महाशंख को काले कपड़े में बांध कर अपने बैग या ब्रीफकेस में रख दें, और किसी भी मुकदमे के लिए जाते समय बैग अपने पास ही रखें, ऐसा करने से प्रबल से प्रबल विरोधी भी वशीभूत होकर सन्धि करने को उत्सुक हो जाता है तथा मुकदमे में विजय प्राप्त होती है, मंत्र-जप नियमित रूप से अवश्य सम्पन्न करना है।

भैरव से सम्बन्धित उपरोक्त तीनों प्रयोगों की प्रमाणिकता साधक स्वयं प्रयोग सम्पन्न कर ही जान सकता है, कि इन प्रयोगों में कितना अधिक प्रभाव है।

काल भैरव प्रसन्न होने पर साधक को हर प्रकार का वरदान प्रदान कर देते हैं, उसकी रक्षा करते हैं और अपनी शरण में पूर्ण अभय प्रदान करते हैं, और तब साधक की शक्ति में वृद्धि होकर वह स्वयं भैरव के समान श्रेष्ठ हो जाता है।

भैरवाष्टमी को यह प्रयोग सम्पन्न कर जब तक पूर्ण सफलता न मिले, तब तक आगे के सात रविवार तक मंत्र-अनुष्ठान अवश्य ही सम्पन्न करते रहना चाहिए। ❋

पूज्य गुरुदेव डॉ० श्रीमाली जी ''वर्ल्ड पीस कान्फ्रेस'' में आमंत्रित

स्वागत

''पीस कमीशन (अमेरिका) वर्ल्ड पीस आर्गेनाइजेसन (जापान)'' के सहयोग से १५ दिसम्बर ६४ से २१ दिसम्बर ६४ के बीच विश्व प्रसिद्ध **''फिलिपीन्स वर्ल्ड कांग्रेस''** ने हमारे **पूज्य गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी** को आमंत्रित किया है, जिसमें सम्पूर्ण विश्व से मात्र ३० लोगों का ही चयन किया गया है, कई नोबल प्राइज व्यक्तित्व के साथ-साथ रॉबर्ट मूलर तथा दलाई लामा जैसे विश्व प्रसिद्ध व्यक्तित्व इसमें भाग ले रहे हैं।

पूज्य गुरुदेव **''कुण्डलिनी जागरण''** तथा **''विश्व शांति में ध्यान का योगदान''** जैसे दुरूह एवं गम्भीर विषयों पर दो सत्रों में दो भाषण देंगे।

इस संस्था के द्वारा पूरे भारत-वर्ष से मात्र पूज्य गुरुदेव का चयन हमारे लिए उपलब्धि एवं भारत के लिए गौरव की बात है।
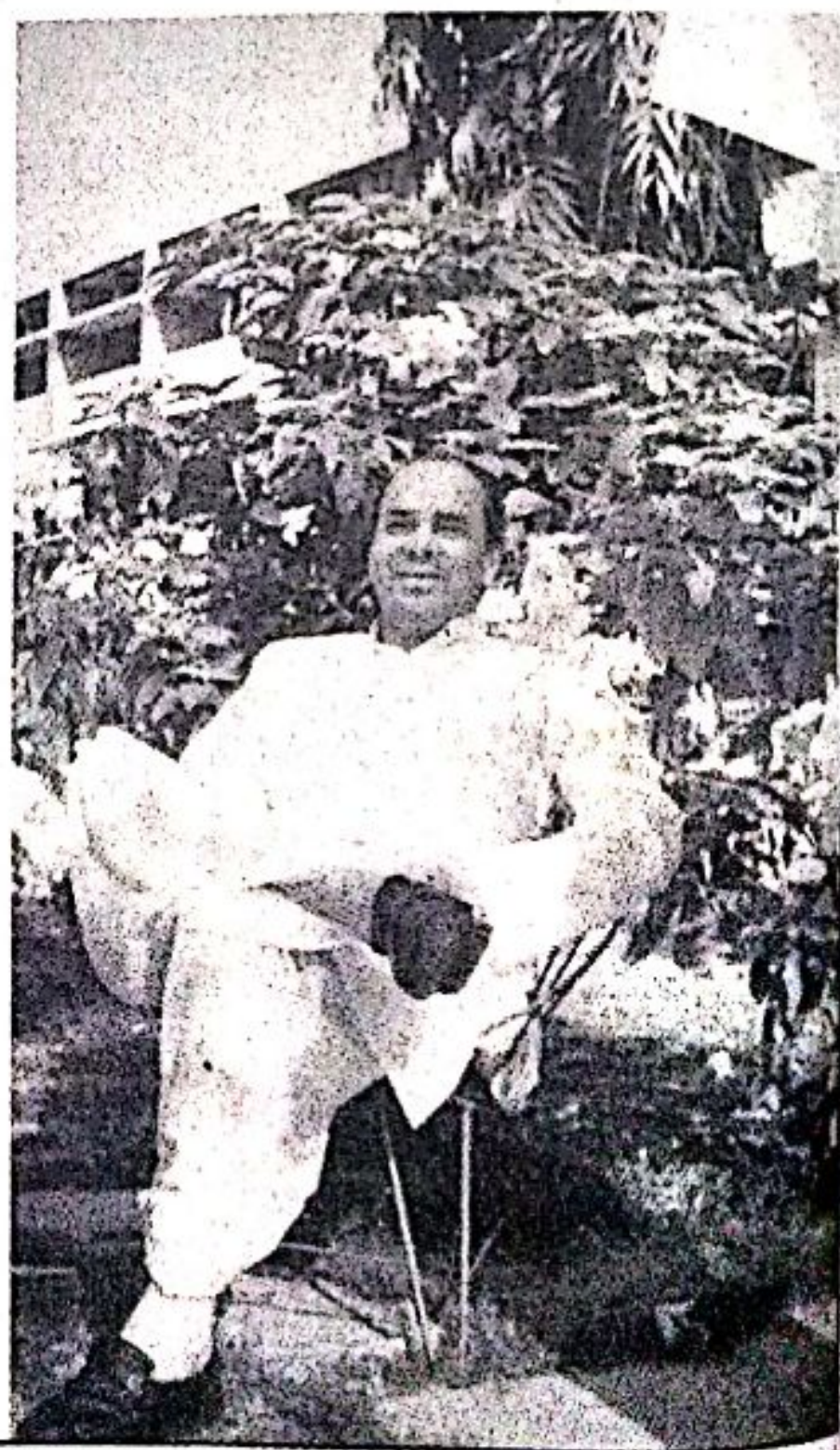
एक ऐसी साधना. . . एक ऐसा प्रयोग, जो शत्रुओं पर वज्र की तरह प्रहार करता है, और उन्हें नेस्तनाबूद कर देता है, एक अत्यधिक तीव्र, तेजस्वी एवं प्रत्येक साधक के लिये उपयोगी, आवश्यक एवं अनिवार्य लेख. . .

मानव अपने जीवन में विभिन्न प्रकार की समस्याओं, बाधाओं, परेशानियों, दुःखों से प्रतिपल संघर्षरत रहता ही है। व्यक्ति का पूरा जीवन इनको समाप्त करने, इन पर विजय प्राप्त करने में ही बीत जाता है। नित्य प्रति व्यक्ति इन्हें सुलझाने का प्रयास करता है, पर वह उतना ही ज्यादा उनमें उलझता जाता है, कोई उपाय जब उसकी बुद्धि के अनुसार सफल नहीं हो पाता, तब वह हार कर देवी-देवताओं की आराधना करने लगता है, क्योंकि जीवन में सफलता प्राप्ति के लिए आवश्यक है, कि मानव मानसिक रूप से पूर्ण स्वस्थ हो और किसी भी प्रकार का तनाव उसको नहीं हो, तभी वह निश्चिंतता पूर्वक सभी समस्याओं का हल प्राप्त कर सकता है।

इस प्रकार की स्थिति प्रदान करने में साधना पक्ष का सहारा लेना मनुष्य के लिए अत्यधिक हितकारी होता है, अब यहां प्रश्न यह उठता है, कि हमारे सामने तो सैकड़ों प्रकार की साधनाएं हैं, और प्रत्येक ही अपने-आप में महत्त्वपूर्ण और तेजस शक्तियों से युक्त है, ऐसी स्थिति में हम अपने जीवन में सफलता प्राप्ति के लिए, वह भी विशेष कर शत्रुओं पर पूर्ण विजय प्राप्त करने के लिए, अपने जीवन की समस्त विपत्तियों का नाश करने के लिए
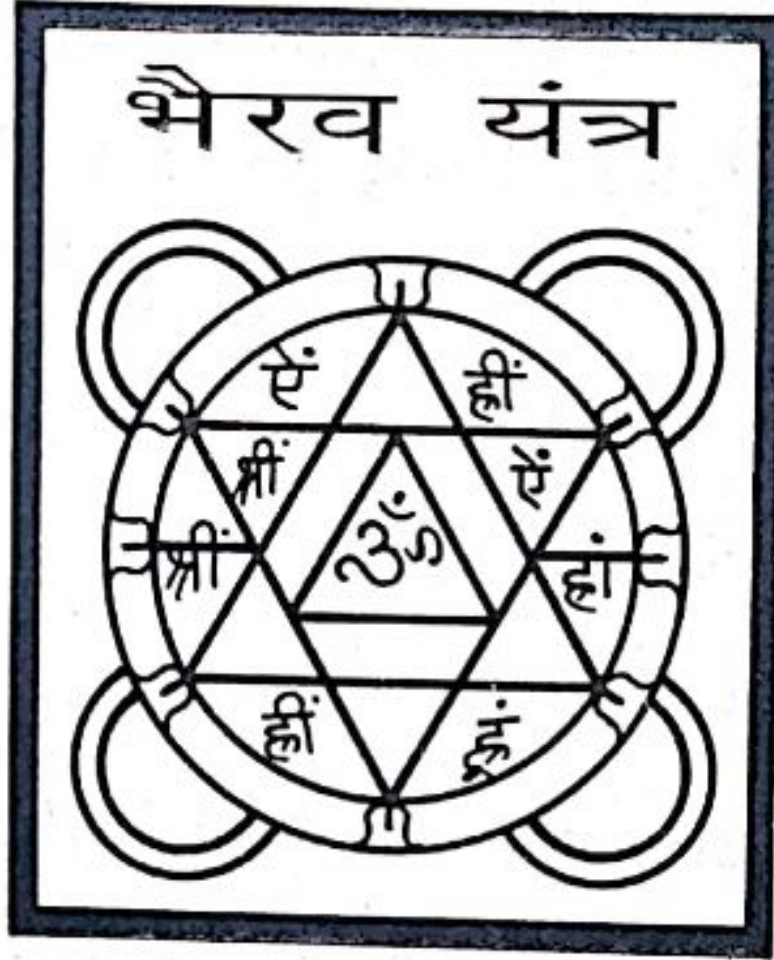
साथ ही अपने बालकों की सुरक्षा करने के लिए जो साधना अत्यधिक उपयुक्त हो, उसका चयन कैसे करें?

ऐसी स्थिति में व्यक्ति का ध्यान सर्वप्रथम **''महाभैरव साधना''** की ओर ही आकृष्ट होता है। वैसे भी देखा जाय तो एक भी ऐसा गांव नहीं है, जहां भैरव का मन्दिर न हो। जन-जन के देवता के रूप में भैरव के प्रति लोगों की आस्था जुड़ी हुई है।

विभिन्न तांत्रिक ग्रंथों में चाहे वह ''तंत्र चूड़ामणि'' हो अथवा किसी भी ऋषि-मुनि के द्वारा रचित साधना-विधान हो। प्रत्येक देवी-देवता के पूजन के पूर्व गुरु, गणपति एवं भैरव पूजन अनिवार्य होता ही है, क्योंकि भैरव समस्त प्रकार के शत्रुओं का नाश करने में पूर्ण सक्षम होते हैं। ''भैरव तंत्र'' के अनुसार– **भैरव साधना सम्पन्न करने से मनुष्य को अपने जीवन में निम्न लाभ प्राप्त होते हैं–**

१. मानसिक कष्ट एवं संताप का नाश।
२. समस्त प्रकार के उपद्रवों का नाश।
३. शरीर स्थित रोगों का नाश।
४. सामाजिक शत्रुओं का नाश।
५. समस्त प्रकार के कर्जों की समाप्ति।
६. शासन की ओर से आने वाली अकारण बाधाओं का नाश।
७. मुकदमे में विजय।
८. अकाल-मृत्यु निवारण।
९. वृद्धावस्था के समय व्याप्त होने वाले रोगों का नाश।
१०. बालकों की सर्वविधि रक्षा के लिए।
११. परिवार तथा स्वयं के ऊपर आने वाली बाधा या विपत्ति को पहले से ही समाप्त करने के लिये।
१२. किसी भी प्रकार का कोई एक्सिडेन्ट न हो, यदि एक्सिडेन्ट की स्थिति आ ही जाय, तो उस स्थिति से भी बिना हानि के बच सके।

— ऐसे अनेक लाभ महाभैरव साधना से साधक को प्राप्त होते ही हैं।

भैरव तंत्र में ही वर्णन आता है, कि जो व्यक्ति अपने-आप के प्रति सजग एवं चैतन्य होता है, वह निश्चित रूप से महाभैरव साधना सम्पन्न करता ही है, क्योंकि उसे अपना जीवन प्रिय होता है, अपने बच्चों का जीवन प्रिय होता है, पूरे परिवार का जीवन प्रिय होता है। यदि कोई शत्रु हो तो उसको सर्वविधि समाप्त करने के लिए भी भैरव साधना उपयुक्त है। इसके अलावा भैरव दिवस पर प्रत्येक उच्चकोटि के संन्यासी महाभैरव साधना सम्पन्न करते ही हैं, जिससे उन्हें अपने द्वारा की जा रही समस्त प्रकार की साधनाओं में किसी भी प्रकार की विपत्ति का सामना न करना पड़े।

समाज में पूर्ण सम्माननीय स्थान प्राप्त व्यक्ति भी निश्चित रूप से महाभैरव साधना सम्पन्न करता ही है। इस प्रकार समस्त व्यक्तियों का अनुभव यही है, कि कलियुग में महाभैरव साधना अतिशीघ्र लाभदायक होती है। महाभैरव साधना करने के लिये कोई विशेष विधि-विधान की आवश्यकता नहीं होती है।

साधना विधि–

१. **भैरव यंत्र, महाभैरव गुटिका, काली हकीक माला** इन तीनों सामग्रियों का प्रयोग इस साधना में किया जाता है। भैरव तंत्र में वर्णित विशिष्ट मंत्रों से अनुप्राणित इन सामग्रियों को आप पहले से ही प्राप्त कर लें।

२. स्नान आदि से निवृत्त होकर, साफ-स्वच्छ वस्त्र पहिन कर साधना में प्रवृत्त हों।

३. धोती आप पीली या काली इन दोनों में से किसी भी रंग की पहिनें, किन्तु गुरु चादर अवश्य ओढ़ें।

४. पश्चिम दिशा की ओर मुख करके बैठें।

५. अपने सामने किसी प्लेट में काले तिल की एक ढेरी निर्मित करें, और उस पर 'भैरव यंत्र' स्थापित करें। भैरव यंत्र के ऊपर ही 'महाभैरव गुटिका' स्थापित करें।

६. **काले रंग में रंगे हुए अक्षत** एवं **काली सरसों** चढ़ाकर यंत्र और गुटिका का पूजन करें।

७. गुड़ से बने नैवेद्य का भोग लगायें।

८. पूजन करने के पश्चात् निम्न महाभैरव मंत्र का 'काली हकीक माला' से ११, २१ या ५१ माला मंत्र-जप अपनी सामर्थ्य एवं कार्य की कठिनता को देखते हुए सम्पन्न करें।

९. मंत्र-जप सम्पन्न करते समय आपको हिलना-डुलना नहीं है।

१०. भैरव यंत्र की ओर अपलक देखते हुए इस मंत्र-जप को करना है।

मंत्र

ॐ भ्रं भैरवाय नमः

११. मंत्र-जप समाप्ति के पश्चात् महाभैरव से अपनी जिस इच्छा को, जिस कामना को लेकर आपने साधना सम्पन्न की है, उसे पूर्ण करने के लिये पुनः प्रार्थना करें।

१२. जिस दिन आप इस साधना को सम्पन्न करें, उसके ठीक तीसरे दिन गुटिका, यंत्र व माला को किसी काले वस्त्र में बांधकर किसी नदी या सरोवर में विसर्जित कर दें।

१३. यह साधना किसी भी **शनिवार** के दिन अथवा **किसी भी मास की कृष्ण पक्ष में पड़ने वाली अष्टमी को तथा १७-०९-९५ भैरव योग के दिन रात्रि ९ बजे** के पश्चात् तथा **सुबह ३ बजे** के बीच में सम्पन्न की जाती है।

पूर्ण श्रद्धा भावना के साथ इस साधना को सम्पन्न करने पर १५ दिन के अन्दर-अन्दर लाभ प्राप्त होने लगता है।

साधना में प्रयुक्त होने वाली सामग्री :
भैरव यंत्र - २४०/-, महाभैरव गुटिका - ६०/-
काली हकीक माला - १५०/-

आपकी पत्रिका . . . आपके सुझाव

प्रिय बन्धुओं! सदा ही हमें आपके सुझावों का इन्तजार रहता है. . . और हमने आप लोगों के उचित सुझावों का सदैव सम्मान किया है। आज **"मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान"** पत्रिका का १५ वां वर्ष चल रहा है, और दिनोंदिन इसकी मांग बढ़ती ही जा रही है. . . यह सब आप लोगों के सहयोग का ही परिणाम है।

हमें अनेकों बार यह सुझाव प्राप्त हुआ, कि पत्रिका की हेडिंग "मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान" की स्टाइल चेंज की जाय, और अधिक आकर्षक बनाया जाय। पिछले तीन माह से आप सभी पाठकों के इस सम्बन्ध में अत्यधिक पत्र प्राप्त हुए, अतः हम आपके सुझावों को ध्यान में रख कर ही **"मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान"** की हेडिंग स्टाइल चेंज कर रहे हैं–

अभी तक यह स्टाइल है–

और अब आगे से –

लेकिन इसका निर्णय आपके द्वारा प्राप्त पत्रों के आधार पर ही किया जायेगा। जिस स्टाइल के पक्ष में ज्यादा पत्र होंगे, उसे ही कवर पर दिया जायेगा। आपके पत्रों के इन्तजार में . . .

– उप सम्पादक

मैंने अपने सम्पूर्ण संन्यस्त जीवन में इतना अधिक चपल बालक नहीं देखा था, जितना कि सौम्यानंद को। किन्हीं पूर्वजन्म के सम्बन्धों के कारण उसे शैशव काल से ही पूज्यपाद गुरुदेव ने, उसके माता-पिता को सहमत कर, अपने सान्निध्य में ले लिया था और संन्यास धर्म की मर्यादा के ही अनुकूल "आनन्द" शब्द से युक्त कर सौम्यानंद कर दिया था। जबकि उसका पूर्व जीवन में नाम था— सौम्य चटर्जी। मैं उसकी बाल सुलभ हरकतों से जब हैरान और परेशान हो जाता, तो अपने-आप में ही बड़बड़ाने लगता, कि इसका नाम तो भूचालानंद या प्रलयानंद जैसे कुछ होना चाहिए था, यह गुरुदेव को भी क्या सूझा, कि उन्होंने इसे नाम भी दिया तो '''सौम्यानंद''!

एक ही पल में वह किसी वृक्ष की चोटी पर नजर आता, तो अगले ही पल किसी वेगवती पहाड़ी नदी में कूदने को उद्यत दिखता, कभी किसी पहाड़ी की चोटी की ओर दौड़ता दिखाई देता, तो कभी किसी आधी झूलती चट्टानों पर उसे घोड़ा बनाकर काल्पनिक सैर प्रारम्भ कर देता। इसके उपरांत भी उस बालक में एक अनोखा सा आकर्षण और चुम्बकत्व था। वह जब अत्यंत भोलेपन से मुझे बांह पकड़ कर झकझोरता और दादा कहता, तब मैं सारा क्रोध भुलाकर उसकी निश्छलता में स्निग्ध हो उठता था।

पूज्यपाद गुरुदेव उसे संन्यास धर्म में दीक्षित कर मेरी ही निगरानी में छोड़ किसी अज्ञात स्थल पर साधना हेतु चले गए थे। मेरी स्वयं की साधना तो उसकी देखभाल करने में, उस पर दृष्टि बनाए रखने में ही सिमट गयी थी। उसके लिए भोजन तैयार करना, उसके वस्त्रों आदि का ध्यान रखना और इन सब से बढ़कर उस पर निरंतर दृष्टि बनाए रखना। पता नहीं क्यों उसका मन दुस्साहसिक कार्यों में ही अधिक लगता था। कभी-कभी तो मुझे लगता है पूर्वजन्म का कोई हठी संन्यासी ही पुनर्जन्म लेकर उस रूप में आ गया है। मैं निरंतर चिंतातुर रहता था, कि कहीं पूज्यपाद गुरुदेव द्वारा सौंपी गयी जिम्मेदारी में कोई त्रुटि न आ जाय, अतः आवश्यकता से कुछ अधिक ही सचेत रहता था।

इन्हीं दिनों में एक दिन की बात थी, कि मैं दिन के तृतीय प्रहर कुछ आवश्यक जड़ी-बूटियों को एकत्र करने घने जंगलों की ओर गया, तो सामने का दृश्य देख जहां का तहां जम गया। मेरे सामने मुझ से कुछ ही दूरी पर एक

"पूत के पांव पालने में ही दिख जाते हैं" यह उक्ति पूरी तरह चरितार्थ होती है सौम्यानन्द पर . . . उसकी चपलता, उसकी हरकतें बाल सुलभ होते हुए भी अन्य सामान्य बालकों से सर्वथा विपरीत थीं . . . तभी तो एक दिन वह पेड़ पर बैठा हुआ तेंदुए को चुनौती देती हुई निगाहों से देखता रहा . . . और विवश हो कर तेंदुए को सौम्य के सामने से हट जाना पड़ा।

तेंदुआ डाल से चिपका आक्रमण की मुद्रा में तत्पर था और उसके ठीक सामने वाली डाली पर सौम्यानंद भी उसी मुद्रा में डाली से चिपका उस तेंदुए को उसी प्रकार से न केवल प्रत्युत्तर वरन चुनौती भी देता हुआ लग रहा था!

वह कब मेरे निकलने के बाद आश्रम से निकल कर यहां तक पहुंच गया था, इसका मुझे रहस्य पता ही नहीं चल सका। काटो तो खून नहीं वाली स्थिति हो गयी थी मेरी, लेकिन उसके लिए तो कोई नवीन क्रीड़ा सृजित हो गयी थी . . . न तो मैं उसे आवाज देकर सावधान कर सकता था, न ही उस हिंसक तेंदुए पर वार करके कोई खतरा मोल ले सकता था। मेरे पास गुरुदेव से प्रार्थना करने के अतिरिक्त कोई चारा ही नहीं रह गया था और मैं आंखें बंद कर प्रार्थना में लीन हो गया।

थोड़ी देर बाद मैंने पाया, कि वह अपनी उसी चिरपरिचित शैली में अपनी छोटी-छोटी हथेलियों से मुझे झकझोर रहा है। मैंने आनन्द के अतिरेक में भर उसे सीने में समा लिया। मेरे हर्ष का कोई ओर-छोर नहीं था। **मुझे उसी दिन समझ में आ गया, कि वह कोई सामान्य बालक नहीं है, विशिष्ट गुरु कृपा प्राप्त कोई पूर्वजन्म का विलक्षण साधक है और वास्तव में उसकी रक्षा तो पूज्यपाद गुरुदेव ही प्रतिक्षण सूक्ष्म रूप में उपस्थित रहकर कर रहे हैं, मैं तो निमित्त मात्र हूं।**

कुछ माह बीते और जैसी कि संन्यास धर्म की मर्यादा है, उसमें सम्बन्धों आदि को विशेष महत्ता नहीं दी जाती, उसके अनुरूप मुझे उससे विलग होना पड़ा। उसे पूज्यपाद गुरुदेव ने स्वयं अपने संरक्षण में ले

लिया और मुझे नवीन आज्ञा प्रदान कर दी। इसके बाद कई वर्ष व्यतीत हो गए। जीवन की कई स्मृतियां बनीं और विलीन हो गयीं, किंतु मुझे अनुजवत् प्रिय उस बालक की यदा-कदा स्मृति हो आती थी। एक दिन की बात है, कि मैं कहीं को प्रस्थान कर ही रहा था, कि उसी चिरपरिचित ध्वनि 'दादा' को सुना। मैंने पलट कर देखा, तो सामने सौम्यानंद उपस्थित था।

अब वह पूर्ण पुरुषोचित सौन्दर्य से युक्त एक व्यस्क हो गया था, किंतु उसके नेत्रों में वही भोलापन खेल रहा था। **निरंतर प्रकृति के ही सम्पर्क में रहने के कारण उसकी भुजाएं, वक्षस्थल, जंघाएं किसी ठोस चट्टान की ही भांति दृढ़ हो गयी थीं। बेतरतीब बढ़े बाल और दाढ़ी उसके अत्यंत तीक्ष्ण गौर वर्णीय शरीर पर घटाओं की भांति लहरा रही थीं और स्वभाव में बेफिक्री पहले से भी कहीं अधिक बढ़ गयी थी।** अंतर केवल इतना हो गया था, कि उसकी बाल सुलभ चपलताओं का स्थान कुछ गम्भीरता ने ले लिया था।

हम दोनों एक-दूसरे का हाथ पकड़ कर भावनाओं में भीग गए। मैं उसके रोम-रोम में बसे कामदेव के सौन्दर्य को देखकर विस्मित हो रहा था, कि मेरी ही गोद में खेलने वाला वह छोटा-सा बालक कितने सुन्दर पुरुष के रूप में परिवर्तित हो गया है। वह शायद यह देख रहा होगा, कि किस प्रकार एक दृढ़ व्यक्तित्व काल चक्र में बद्ध होकर वृद्ध भी हो सकता है।

साधनाओं के जगत से जुड़े दो व्यक्ति मिलें और अपने-अपने अनुभवों की चर्चा न करें– यह सम्भव ही नहीं। जैसा कि मेरा अनुमान था, वह भैरव साधना की ही ओर बढ़ गया था। इस बात के लक्षण तो उसके

बचपन से ही तो भैरव साधना के लक्षण उसके व्यक्तित्व से झलकने लगा था . . . यौवन की आभा से दीप्त होने के बाद भी उसके चेहरे पर वही भोलापन, आंखों में वही सौम्यता झलक रही थी . . . मैंने अपने जीवन में सर्वथा पहली बार इतना सौम्य भैरव साधक देखा। शायद तभी सौम्यता का विस्तार करने के लिए ही तो पूज्य गुरुदेव ने इसे नाम दिया– "सौम्यानन्द"

बचपन से ही प्राप्त होने लग गये थे। साधना की चर्चा के मध्य उसकी अत्यंत आकर्षक काली आंखें बाल सुलभ कौतूहल से चमक उठीं और वह मुझे अपनी साधना स्थली तक ले चलने को उतावला हो बैठा। जैसे किसी बालक को कोई नयी वस्तु मिल जाती है और वह उसे दिखाए बिना नहीं रह पाता— वही निश्छल भाव उसकी बातों, नेत्रों की चमक, उसी पुराने ढंग से मेरा हाथ पकड़ कर खींचने की आदत और हड़बड़ी से झलक रहा था।

मुझे भी उसके साथ चलने में प्रसन्नता ही होती, किंतु उसकी साधना स्थली, सामने तेज प्रवाह से गतिशील गंगा के उस पार कहीं किसी दुर्गम पहाड़ी के पीछे गोपनीय स्थान पर थी। **वर्षा की ऋतु होने के कारण नदी में प्रवाह सामान्य से कई गुना अधिक बढ़ गया था। उसकी भयावहता का अनुमान तो इसी से लग रहा था, कि तेज प्रवाह के कारण उसमें सम्पूर्ण वृक्ष के वृक्ष ही बहते चले जा रहे थे।** साथ ही पहाड़ी स्थान होने के कारण भीतर कितनी चट्टानें छिपी थीं, उसका तो अनुमान ही नहीं लगा सकते थे। मैंने उसका ध्यान इसी बात पर जब दिलाया, तो एकाएक उसके मुख पर वही पुराना चुनौती वाला भाव खेल गया।

गंगा की ओर देखकर वह उसी हठ पूर्वक स्वर में बोल पड़ा— ''गंगा! गंगा से मुझे क्या भय? यह तो मेरी मां है, यह मुझे कोई हानि पहुंचा ही नहीं सकती।''

मैं उसके स्वर में जो विचित्र उन्माद भरा था, उससे कांप उठा, कि पता नहीं अब इसके भीतर कौन-सा दुराग्रह खेल गया है और जब तक मैं संभलूं-संभलूं, तब तक उसने उस उफनती, वर्षा के अतिरिक्त प्रवाह से भरी गरजती नदी में छलांग लगा दी। मैं उसको जब पुकारते-पुकारते कुछ रुआंसा हो गया, तब वह पता नहीं किस कोने से यों निकल आया, जैसे कोई लुका-छिपी का खेल खेल रहा हो।

मैं क्रोध और उसके पुनः निकल आने की प्रसन्नता के मिले-जुले भावों में इस प्रकार उलझ गया, कि मुंह से कोई बोल ही न फूट सका। **जल में भीग कर उसके बलिष्ठ शरीर पर असंख्य जल बिंदु इस प्रकार जगमगा रहे थे मानो मां भगवती गंगा ने अपने इस उदण्ड किंतु निश्छल शिशु को असंख्य चुम्बनों से सिक्त कर समझा-बुझा कर वापिस आने को मना किया हो। सचमुच गंगा उसकी मां ही थी, अन्यथा इस प्रकार से कौन बच सकता था?**

अंत में हम दोनों की सहमति इस बात पर हुई, कि गंगा नदी के तट पर चला जाए और जहां प्रवाह कुछ कम दिखेगा अथवा मोड़ के कारण वेग कम पड़ गया होगा, वहां किसी वृक्ष के तले को पुल सा बना कर नदी को पार कर लिया जायेगा। यद्यपि उसके वेग और हौसले की मन ही मन में प्रशंसा भी कर रहा था। एक प्रकार से उसके क्रियाकलापों में मुझे अपना ही यौवन याद आ रहा था,
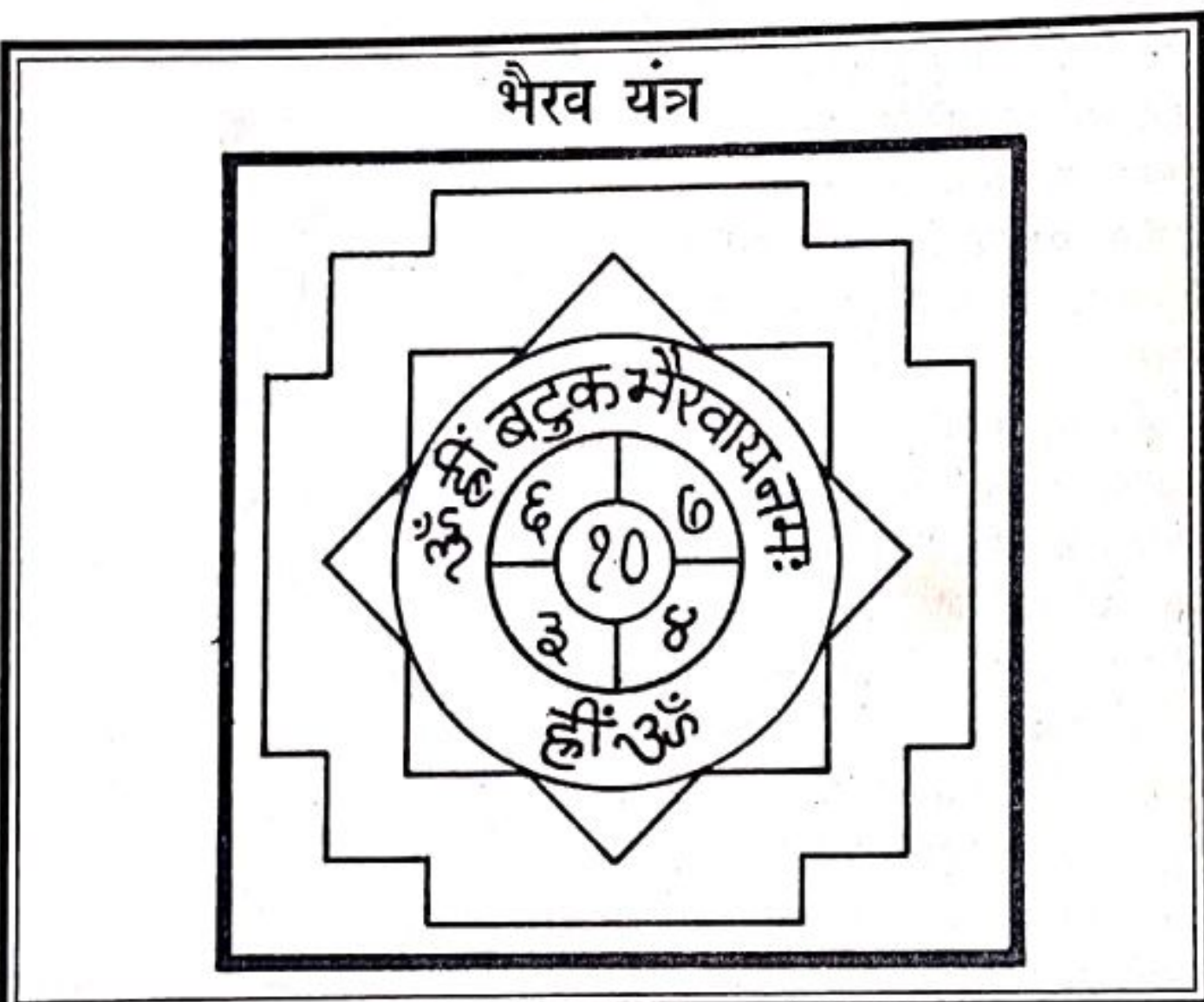
किंतु आयु अधिक हो जाने के कारण अब मैं इस प्रकार के दुस्साहस करने का जोखिम मोल नहीं ले सकता था।

हम लोगों को शीघ्र ही ऐसा स्थान मिल गया, जहां मोड़ के कारण नदी का प्रवाह कुछ मंद भी पड़ता था और किसी प्रकार उसे पार भी कर लिया गया। नदी की दूसरी ओर निर्जन पर्वत स्थान था, वनस्पति की भी बहुलता नहीं थी और वातावरण शुष्क व नीरस था, किंतु पुनः घाटी की ओर उतरते ही घने वन और सरसता का ही साम्राज्य था। पर्वत शिखर पार कर लेने के कारण यद्यपि गंगा का दिखाई देना तो बंद हो गया था, किंतु उसके प्रवाह की ध्वनि उस गहन वन में भी जीवन का संचार कर रही थी। सारा वातावरण विभिन्न पक्षियों, कीटों की ध्वनियों एवं झंकारों से भरा था और कुछ सीमा तक रहस्यमय भी लग रहा था।

पता नहीं क्यों मुझे लग रहा था, कि अभी-अभी यहां से कोई उठकर गया है और उसकी तरंगें वातावरण में शेष रह गयी हैं।

इन्हीं दुविधाओं और प्रकृति की मोहकताओं में डूबते-तैरते अचानक सौम्यानंद की आवाज से मुझे चेतना आयी।

वह कह रहा था— "बस यहीं!"

मैंने अचकचा कर चारों ओर देखा कहीं कोई मंदिर, प्राचीन भवन या कोई कुटिया तक नहीं, फिर यहीं कहां?

उसने तर्जनी से एक ओर संकेत किया, जहां कुछ अनगढ़ ढंग से एक चबूतरा सा बनाकर उसके ऊपर एक मुखाकृति स्थापित थी तथा उसके ऊपर उसी अनगढ़ ढंग से एक छतरी सी भी बना दी गयी थी।

मैंने समीप जाकर देखा, तो वह अष्ट धातु की बनी एक अत्यंत उत्कृष्ट शैली की मुखाकृति मात्र थी, जिसका स्वरूप प्राचीन शैली में निर्मित भगवान सूर्य की मुखाकृतियों से मेल कर रहा था। अंतर केवल इतना था, कि उस मुखाकृति में नेत्र अत्यन्त विशाल थे और चेहरे पर मुच्छिका गुच्छ पूर्ण भव्यता से अंकित था। युगों पुरानी शैली होने के उपरांत भी वह मुखाकृति न तो खंडित थी, न ही उसकी चमक में कोई अंतर पड़ा था।

मैंने सौम्यानंद की ओर प्रश्न भरी दृष्टि से देखा। उसने उत्तर में मुझे बताया, कि यह भगवान श्री भैरव की मूर्ति है; वही मूर्ति, जिसको स्थापित कर प्रखर योद्धा एवं दानवीर कर्ण ने "भैरव साधना" सम्पन्न की थी। उसके अनुसार वह महाभारत कालीन मूर्ति थी और जहां पर स्थापित थी, वहीं पर दानवीर कर्ण ने भैरव साधना भी सम्पन्न की थी।

मुझे यह तो ज्ञात था, कि दानवीर कर्ण ने अपने युद्ध कौशल एवं जीवन को संवारने के लिए अनेक साधनाएं सम्पन्न की थीं। पिंडार गंगा एवं अलकनंदा के संगम पर स्थापित कर्ण प्रयाग नगर इस बात का प्रमाण भी है, जहां उन्होंने भगवान सूर्य की तपस्या कर अमोघ कवच प्राप्त किए थे; किंतु उनके द्वारा भैरव साधना सम्पन्न करने के विषय में न ही मैंने किसी संन्यासी से सुना था, न ही इसके कोई ऐतिहासिक अथवा पौराणिक सांख्यों के विषय में कुछ जाना था। इसके उपरांत भी मुझे यह विश्वास था, कि यह बालक सत्य ही कह रहा है, क्योंकि सौम्यानंद कोई हल्के स्तर का साधक नहीं था। इसके अतिरिक्त यदि परम योद्धा की उपाधि से विभूषित उस अद्वितीय इतिहास पुरुष को भैरव साधना ने अपनी ओर आकृष्ट भी कर लिया हो, तो इसमें आश्चर्य ही कैसा?

यदि दानवीर कर्ण के जीवन चरित्र का गहनता से अध्ययन करें, तो उसके सम्पूर्ण जीवन में उदारता ही उदारता का निर्मल प्रवाह गतिशील मिलता है। उन्होंने किन आग्रहों के वशीभूत होकर महाभारत में पांडवों का साथ न देकर दुर्योधन का ही साथ दिया, वह एक पृथक विचार की बात है, किंतु **गाम्भीर्य, साहस, सौन्दर्य, प्रखरता, उदारता, वचन दृढ़ता ऐसे अनेक गुणों का संगम जिस एक व्यक्तित्व में मिलता है, उसका नाम ही कर्ण है— क्या यही भैरव साधक के भी लक्षण नहीं हैं?**

सौम्यानंद की इस बात से मुझे मूर्ति अर्थात् मुखाकृति के निर्माण का रहस्य भी समझ में आ गया, क्योंकि दानवीर कर्ण स्वयं भगवान सूर्य के ही परम उपासक थे, अतः यह स्वाभाविक ही था, कि जब वे भैरव साधना में प्रवृत्त हों, तब भी उनके द्वारा निर्मित भैरव मुखाकृति सूर्य मुखाकृति के समान ही हो।

फिर भी मेरे मन में उठने वाली जिज्ञासाओं का अंत नहीं हो रहा था। विश्वास-अविश्वास के मध्य झूलते हुए मैंने पूछ ही लिया— "किंतु इस प्रकार खुले में स्थापित यह मूर्ति? इसकी रक्षा, देखभाल कैसे सम्भव हो पाती है?"

उत्तर में सौम्यानंद एक स्मित के साथ मौन ही रहा। शीघ्र ही मुझे अपने ही प्रश्न को लेकर खीझ होने लगी। जो भगवान भैरव सभी की रक्षा में समर्थ हैं, उनकी सुरक्षा की चिंता मुझे क्यों?

उस मूर्ति में कोई अलग सी चैतन्यता थी अवश्य, क्योंकि मेरी दृष्टि उस पर से हट नहीं रही थी। उसे देखने के साथ ही साथ मन में श्रद्धा और वीरता के मिले-जुले भाव उमड़ने लग गए थे और मैं अपने मन ही मन में भैरव स्तुति का पाठ करने लग गया था। अभी तक मैंने जो भी भैरव साधनाएं की थीं, उनमें भैरव मूर्ति को कृष्ण वर्णीय सिंदूर से युक्त ही पाया था, किंतु इस मूर्ति में तो सात्विकता के साथ ही साथ रजोगुण का भी प्रभाव स्पष्ट दिख रहा था। स्वयं दानवीर कर्ण के प्राणों से जिस मूर्ति का संबंध स्थापित हुआ हो, उसको इस प्रकार विलक्षण तो होना ही था। मैं इसे पूज्य गुरुदेव की ही कृपा कहूंगा, जो इस प्रकार से मुझे सहसा एक दिव्य मूर्ति एवं स्थान के दर्शन हो सके।

मुझे यह स्वीकार करने में भी कोई संकोच नहीं है, कि उस समय तक सौम्यानंद इस क्षेत्र में अर्थात् भैरव साधना के विषय में इतनी अधिक पारंगतता प्राप्त कर चुका था, कि मैं उसके सामने छोटा ही पड़ रहा था।

सौम्यानंद से ही मुझे प्रथम बार ज्ञात हो सका, कि भैरव साधना का अर्थ प्रत्येक दशा में केवल तामसिक ही नहीं है वरन इस साधना के राजसिक एवं सात्विक पक्ष भी हैं। वह जिस प्रकार गुरु गम्भीर भाव से मुझे सूक्ष्म भेद समझा रहा था, उसे देख मुझे "ज्ञान वृद्धोऽपि वृद्धः" की बात ही प्रकट रूप में दिखाई दे रही थी। तभी मुझे यह भी समझ में आ सका, कि क्यों पूज्यपाद गुरुदेव ने सौम्य चटर्जी का नाम सौम्यानंद ही रखा। कदाचित उसी के माध्यम से सौम्यता का विस्तार करने की उनकी कोई इच्छा रही होगी और मैंने अपने सुदीर्घ संन्यस्त जीवन में पहली बार ऐसा भैरव साधक देखा, जो न तो किसी प्रकार से वीभत्स था, न उग्र, न ओछा और न ही बात-बात पर अधभरे घड़े की तरह छलक पड़ने वाला।

उसमें चुनौती का भाव, निर्भयता का भाव, अपने पुरुषोचित सौन्दर्य का दर्प अवश्य था, किंतु इसे घमंड की श्रेणी में नहीं लाया जा सकता, ये लक्षण तो भैरव साधक में होंगे, ही।

सौम्यानंद ने ही मुझे स्पष्ट किया, कि भैरव वास्तव में कोई तामसिक देव हैं ही नहीं वरन निरंतर तमस से संघर्षशील रहने के कारण ही उनकी स्वयं की भी कल्पना तामसिक रूप में कर ली गयी है। देव वर्ग में होने के कारण वे भी उन सभी दिव्यताओं, सौम्यताओं और आह्लाद से युक्त हैं, जो कि किसी भी देव वर्ग के व्यक्तित्व का अंग हो सकती है।

आगे मैं सौम्यानंद द्वारा प्राप्त उस साधना पद्धति का उल्लेख कर रहा हूं, जो भैरव साधना की राजसी पद्धति है अर्थात् रजोगुण प्रधान है तथा जिसे सम्पन्न कर दानवीर कर्ण ने अपने-आप को एक विलक्षण योद्धा, उदारमना एवं दानवीर रूप में सुस्थापित किया।

कोई भी साधक इस विशेष पद्धति के द्वारा साधना सम्पन्न कर अपने जीवन में राज्य पक्ष से सम्बन्धित सभी लाभों को तो प्राप्त कर ही सकता है, साथ ही यदि किसी कारणवश राज्य बाधा से पीड़ित हो, तो उसका समाधान भी प्राप्त कर सकता है।

इस पद्धति में आवश्यक उपकरण है— ताम्र पत्र पर अंकित **"भैरव यंत्र"**, **"भैरव गुटिका"** एवं **"भैरव माला"**। तेल के दीपक का तथा नीले रंग का इस पद्धति में विशेष महत्त्व है। साधक स्वयं सफेद धोती ही धारण करें, जबकि आसन आदि नीला रहे। तेल का दीपक इतना बड़ा हो, जो साधना के अंत तक जलता रहे। इस साधना के लिए अनुकूल दिवस है— **१५-१२-९५ (कालाष्टमी) अथवा किसी भी मास की अष्टमी**। सर्वप्रथम आसन ग्रहण कर, आत्मशुद्धि एवं आसन शुद्धि करें (इसका विस्तृत विवरण "दैनिक साधना विधि" नामक पुस्तक से प्राप्त करें) तदुपरांत तेल का दीपक प्रज्वलित करें। यंत्र, गुटिका एवं माला का संक्षिप्त पूजन कुंकुम, अक्षत, पुष्प से कर निम्न ध्यान का गम्भीरता पूर्वक उच्चारण करें। इस साधना में ध्यान का महत्त्व ही सर्वाधिक है—

ध्यान

प्रणवं कामदं वियाल्लज्जावीजं च सिद्धिदम्।
बटुकामेति विज्ञेयं महापातक नाशनम्।।
उद्यद्भास्कर सन्निभं त्रिनयनं रक्तांगरागस्रजं।
स्मेरास्यं वरदं कपालमभयंशूलं दधानं करैः।।
नीलग्रीव मुदार कौस्तुभधरं शीतांशुचूडोज्ज्वलं।
बंधूकारुणवाससं भयहरं देवं सदा भावयेत्।।
नमो भैरव रूपाय भैरवाय नमो नमः।
नमो भद्रस्वरूपाय जगदाधार हेतवे।।
वन्दे बालं स्फटिक सदृशं कुण्डलोद्भासितांगं।
दिव्याकल्पैर्नवमणिमयैः किंकिणी नुपूराढ्यैः।।
दीप्ताकारं विशदवदनं सुप्रसन्नं त्रिनेत्रं।
हस्ताग्राभ्यां बटुक सदृशं शूल दंडौपधानम्।।
करकलित कपालं कुंडली दंड पाणिः।
तदरुणतिमिर नीलो व्याल यज्ञोपवीति।।
क्रतु समय सपर्या विघ्न विच्छेद हेतु।
र्जयति बटुकनाथः सिद्धिः साधकानाम्।।

इसके उपरांत भैरव गुटिका के समक्ष गुड़ का भोग लगाकर भैरव माला से निम्न मंत्र की पांच माला मंत्र जप करें—

मंत्र

।। ॐ भ्रं भ्रं भ्रं क्रीं भ्रं भ्रं भ्रं फट्।।

यदि मंत्र-जप के मध्य में अथवा अंत में भगवान श्री भैरव के सौम्य रूप में स्पष्ट दर्शन हो जायें, तो विना किसी भय के दीपक उनके हाथ में देकर साष्टांग प्रणाम कर लें तथा जीवन पर्यन्त अभय की याचना कर लें।

साधना की समाप्ति के पश्चात् सभी सामग्रियां माला, यंत्र, गुटिका घर से दूर किसी तिराहे पर या चौराहे पर रख दें।

जीवन में श्रेय व सम्मान की प्राप्ति हेतु यह अनुभव सिद्ध उपयोगी साधना पद्धति है।

साधना-सामग्री न्यौछावर— २५० रु.

जीवन अनेक प्रकार के संयोगों से भरा हुआ है, अनेक प्रकार की विषमताओं से युक्त है वर्तमान युग में पग-पग पर इतनी बाधाएं हैं, इतनी परेशानियां हैं, इतने शत्रु हैं, कि ऐसी स्थिति में व्यक्ति के लिये एक ही मार्ग रह जाता है, जिसके द्वारा वह पूर्ण रूप से विजयी हो सकता है और अपने जीवन की प्रत्येक समस्या पर विजय प्राप्त कर सकता है, वह मार्ग है— 'साधना'।

प्राचीन काल से अब तक साधनाओं का आश्रय लेकर अनेकों . . . या यो कहें, कि सभी कार्य सफलता पूर्वक सम्पन्न होते रहे हैं — होते भी हैं।

साधनाओं के अनुसंधान कर्ताओं ने कुछ ऐसी साधनाओं का अनुसंधान किया, जो कि व्यक्ति के दैनिकचर्या के संकट और छोटी-मोटी परेशानियों का सहज निदान बन सकें। इस प्रकार की साधनाओं में 'बटुक भैरव' की साधना श्रेष्ठतम साधना मानी गई है, जिसका फल तत्क्षण मिलता है।

शास्त्रों में भी वटुक भैरव की महिमा वर्णित है। शास्त्रानुसार भैरव को रुद्र, विष्णु व ब्रह्मा का स्वरूप माना गया है। इस प्रकार से भैरव के अनेक रूप वर्णित हैं— **'ब्रह्म रूप', 'परब्रह्म रूप', 'पूर्ण रूप', 'निष्कल रूप'** में— वाङ्मनसागोचर, विश्वातीत, स्वप्रकाश, पूर्णाहंभाव; एवं 'सकल रूप' में — क्षोभण, मन्यु, तत्पुरुष आदि।

भैरव की उत्पत्ति

रुद्र के भैरवावतार की विवेचना शिवपुराण में इस प्रकार वर्णित है—

"एक बार समस्त ऋषिगणों में परमतत्त्व को जानने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई, वे परब्रह्म को जानकर उसकी तपस्या करना चाहते थे। यह जिज्ञासा लेकर वे समस्त ऋषिगण देवलोक पहुंचे, वहां उन्होंने ब्रह्मा से विनम्र स्वर से निवेदन किया, कि हम सब ऋषिगण उस परमतत्त्व को जानने की जिज्ञासा से आपके पास आये हैं, कृपा करके हमें बताइये, कि वह कौन है, जिसकी तपस्या कर सकें?"

इस पर ब्रह्मा ने स्वयं को ही इंगित करते हुए कहा— "मैं ही वह परमतत्त्व हूं।"

ऋषिगण उनके इस उत्तर से सन्तुष्ट न हो सके, तब यही प्रश्न लेकर वे क्षीरसागर में विष्णु के पास गये, परन्तु उन्होंने भी कहा, कि वे ही परमतत्त्व हैं, अतः उनकी आराधना

करना श्रेष्ठ है; किन्तु उनके भी उत्तर से ऋषि समूह सन्तुष्ट न हो सका; अंत में उन्होंने वेदों के पास जाने का निश्चय किया। वेदों के समक्ष जा कर उन्होंने यही जिज्ञासा प्रकट की, कि हमें परमतत्त्व के बारे में ज्ञान दीजिये!

इस पर वेदों ने उत्तर दिया–

"शिव ही परमतत्त्व हैं, वे ही सर्वश्रेष्ठ और पूजन के योग्य हैं।"

परन्तु यह उत्तर सुन कर ब्रह्मा और विष्णु ने वेदों की बात को अस्वीकार कर दिया। उसी समय वहां एक तेजपुञ्ज प्रकट हुआ और धीरे-धीरे एक पुरुषाकृति को धारण कर लिया। यह देख ब्रह्मा का पञ्चम सिर क्रोधोन्मत्त

फणिवर–फणिनाथो देवदेवाधिनाथः
क्षितिपतिवरनाथो वीर–वेतालनाथः
निधिपति–निधिनाथो योगिनी–योगनाथो।
जयति बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्।।

हो उठा और उस आकृति से बोला– "पूर्वकाल में मेरे भाल से ही तुम उत्पन्न हुए हो, मैंने ही तुम्हारा नाम 'रुद्र' रखा था, तुम मेरे पुत्र हो, मेरी शरण में आओ।"

ब्रह्मा की इस गर्वोक्ति से वह तेजपुञ्ज कुपित हो गया और उन्होंने एक अत्यन्त भीषण पुरुष को उत्पन्न कर उसे आशीर्वाद देते हुए कहा – "आप 'कालराज' हैं, क्योंकि काल की भांति शोभित हैं। आप 'भैरव' हैं, क्योंकि आप अत्यन्त भीषण हैं, आप 'काल भैरव' हैं, क्योंकि काल भी आप से भयभीत होगा। आप 'आमर्दक' है, क्योंकि आप दुष्टात्माओं का नाश करेंगे।"

शिव से वर प्राप्त कर श्री भैरव ने अपने नखाग्र से ब्रह्मा के अपराधकर्ता पञ्चम सिर का विच्छेदन कर दिया। लोक मर्यादा रक्षक शिव ने ब्रह्म हत्या मुक्ति के लिए भैरव को कापालिक व्रत धारण कराया और काशी में निवास करने की आज्ञा दे दी।

बटुक भैरव

भैरव का एक नाम बटुक भी है। बटुक शब्द का अभिप्राय है–

'वट्यते वेष्टयते सर्वं जगत् प्रलयेऽनेनेति वटुकः'

अर्थात् प्रलयकाल में सम्पूर्ण जगत को आवेष्टित करने के कारण अथवा सर्वव्यापी होने से भैरव 'बटुक' कहलाये।

'बटून् ब्रह्मचारिणः कार्यमुपदिशतीति बटुको गुरुरूपः'

अर्थात् ब्रह्मचारियों को उपदेश देने वाले गुरु रूप होने से भैरव 'बटुक' कहे गये।

'अनेकार्थग्विलास' में कहा गया है –

"वटुः वर्णी बटुः विष्णुः"

बटुक का एक अर्थ विष्णु भी होता है, जो 'वामनावतार' की ओर संकेत है।

इस प्रकार स्पष्ट है, कि सर्वव्यापी, गुरु रूप एवं विष्णु रूप इन तीनों के सम्मिलित स्वरूप होने से भैरव का 'बटुक' स्वरूप पूर्ण फलप्रद एवं विजयप्रद है।

भैरव साधना के विषय में लोगों में अनेक प्रकार के भ्रम हैं, लेकिन भैरव साधना सरल एवं प्रत्येक गृहस्थ व्यक्ति के लिए आवश्यक है, यह साधना निडर होकर की जा सकती है, इसमें किसी प्रकार का कोई भय या गलतफहमी

नहीं है। यह अत्यन्त फलदायक साधना है।

यह साधना सकाम्य साधना है, अतः साधक जिस कामना की पूर्ति के लिए यह साधना करता है, वह कामना पूर्ण होती ही है—

- इस साधना को सम्पन्न करने से साधक के अन्दर तेजस्विता उत्पन्न होती है, जिसके कारण यदि उसके शत्रु हैं, तो वे उसके सामने आते ही कान्तिहीन हो जाते हैं और शक्तिहीन होकर साधक के सम्मुख खड़े नहीं रह पाते हैं।
- यदि वह चुनाव लड़ रहा है या मुकदमा कई वर्षों से चल रहा है, तो वह उसमें पूर्ण रूप से विजय प्राप्त करता है।

बटुक भैरव की साधना सकाम्य साधना होती है, अतः साधक जिस कामना की पूर्ति हेतु, वह चाहे चुनाव से सम्बन्धित हो, मुकदमे में विजय प्राप्त करने से सम्बन्धित हो अथवा विरोधियों को शांत करना हो, जीवन के किसी भी पक्ष में कोई भी समस्या आ रही हो, उसके निराकरण का सहज उपाय यही साधना है।

- उसके विरोधी उसके सम्मुख शांत हो जाते हैं, विपक्षी प्रभावहीन होकर उसके सम्मुख हार स्वीकार कर लेते हैं। यदि उसके जीवन में अनेक प्रकार की समस्याएं आ रही हों और उनका समाधान नहीं मिल रहा हो, तो इस साधना को सम्पन्न करने से समाधान प्राप्त होता है।

साधक साधना सम्पन्न कर पूर्ण पौरुषवान होकर समस्त समस्याओं को अपने साधनात्मक पुरुषार्थ से हल कर लेता है।

साधना विधि

- इस साधना में आवश्यक सामग्री है — **"बटुक भैरव यंत्र"** तथा **"काली हकीक माला"**।
- यह एकदिवसीय रात्रिकालीन साधना है।
- यह साधना 29.5.96 या किसी भी **मंगलवार** को सम्पन्न करें।
- साधक स्नान करके उत्तर दिशा की ओर मुंह करके बैठें।
- पीले वस्त्र धारण करें।
- बाजोट पर पीला वस्त्र बिछाकर यंत्र को स्थापित करें।
- यंत्र के सामने तेल का दीपक लगायें तथा सुगंधित धूप जलायें।
- भैरव पूजन प्रारम्भ करें।
- सर्वप्रथम बटुक भैरव ध्यान करें —

कर कलित कपालः कुण्डली दण्डपाणि
स्तरुणतिमिरवर्णो व्यालयज्ञोपवीती।
ऋतुसमयपर्या विघ्न-विच्छित्ति हेतु;
जयति बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्।।

"जीवन जीने के लिए है" जो यह निश्चय कर लेता है, वह सुख हो या दुःख सहजता से जी लेता है; क्योंकि दुःख का निराकरण सामान्य प्रयास से सुलभ हो, तो कौन इस प्रयास को नहीं करना चाहेगा?

- भैरव ध्यान के पश्चात काली हकीक माला को अपने बायें हाथ में लेकर दाहिने हाथ से उस पर अक्षत चढ़ाते हुए निम्न मंत्रोच्चारण करें—

महामाले महामाये! सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
चतुर्वर्गस्त्वपि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव।।
अविघ्नं कुरु माले! त्वं गृहणामि दक्षिणे करे।
जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये।।

- तत्पश्चात उसी हकीक माला से निम्न मंत्र का 51 माला मंत्र जप करें —

।। ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं।।

- भोग अर्पित करें, पर जो भी भोग अर्पण करें, उसे वहीं पर बैठकर स्वयं ग्रहण करें।

वस्तुतः बटुक भैरव प्रयोग अत्यन्त सरल और सौम्य है तथा कलियुग में शीघ्र सफलतादायक भी है।

साधना सामग्री न्यौछावर— 260/-

मैं शत्रुओं पर महाकाल की तरह
वज्र बनकर गिरूंगा,
क्योंकि मैं महाकाल साधना सम्पन्न कर रहा हूं
— *विश्वामित्र*

एक तीक्ष्ण, अचूक, शत्रुओं को
यमराज की दाढ़ों में कुचलने
से भी ज्यादा दुर्धर्ष . . .

महाकाल साधना

प्रत्येक वस्तु की सीमा काल से बंधी होती है, किन्तु काल को सीमाओं में नहीं बांधा जा सकता, वह असीमित होता है और जो असीमित है, वही अनन्त है, वही सृष्टि का आदि और सृष्टिकर्ता है, जिसके साक्ष्य में सृष्टि उत्पन्न और समाप्त होती है। काल की गति में अनन्त शक्तियां उत्पन्न होती हैं और अन्ततः उसी काल में विलीन हो जाती हैं। समस्त देवी-देवता काल से बंधे हुए हैं। काल से जहां समस्त देवी-देवता प्रतिबंधित हैं, समस्त गति उसके अनुसार है, उस काल के देव महाकाल हैं, जिनकी साधना सम्पन्न कर साधक काल की गति को समझने में समर्थ हो सकता है।

यदि कोई साधक महाकाल की साधना सम्पन्न कर लेता है, तो वह स्वयं में ही महाकाल को बांधने की शक्ति अर्जित कर लेता है। वह काल की गति अपने अनुकूल गतिशील करना चाहता है, क्योंकि भौतिक रूप हो या आध्यात्मिक, व्यक्ति को अपना लक्ष्य प्राप्त करने के लिए शत्रुओं का सामना करना ही पड़ता है।

आध्यात्मिकता या साधनात्मक ऊंचाई या श्रेष्ठता को प्राप्त करने के लिए उसे समस्त विकार, पाप आदि शत्रुओं का क्षय करना ही पड़ता है, जिसके क्षय होने पर ही वह श्रेष्ठता प्राप्त कर सकता है।

भौतिक जीवन में उच्चता व श्रेष्ठता प्राप्त करना साधक के जीवन की अद्वितीयता होती है, क्योंकि पग-पग पर वह बाधाओं और अड़चनों का सामना करता है और उनका समाधान भी ढूंढ़ता है।

महाकाल साधना ऐसी ही साधना है, जो साधक को उसके लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सहयोगी है, क्योंकि यह साधना सम्पन्न कर साधक अपने समस्त शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में समर्थ हो जाता है, वह अपने शत्रुओं को परास्त कर सकने की सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है, चाहे शत्रु उस पर कितना ही हावी हो।

महाकाल साधना सम्पन्न कर व्यक्ति में सामर्थ्य उत्पन्न हो जाता है, कि वह अपने शत्रुओं को परास्त कर सके, यह साधना सम्पन्न कर वह अपने शत्रुओं के समक्ष ऐसी स्थिति उत्पन्न कर देता है, कि उसके शत्रुओं, उसके विरोधियों की स्थिति अत्यन्त दयनीय बन जाती है, उनमें सामर्थ्य नहीं होती, कि वे साधक के विरुद्ध कुछ करने का साहस कर सकें। शत्रु साधक के समक्ष अत्यन्त दयनीय स्थिति में रहने लगते हैं और वे जितना भी साधक के अनिष्ट के बारे में सोचते हैं, उनका स्वयं का ही उतना अनिष्ट हो जाता है।

व्यक्ति यदि सर्वोच्चता पर पहुंचना चाहता है, तो उसे अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ता है, उसे अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए

जो प्रत्येक स्त्री या पुरुष सम्पन्न कर सकता है
क्या आप चूक रहे हैं इस साधना से . . .
फिर तो आप पूरा का पूरा जीवन चूक रहे हैं
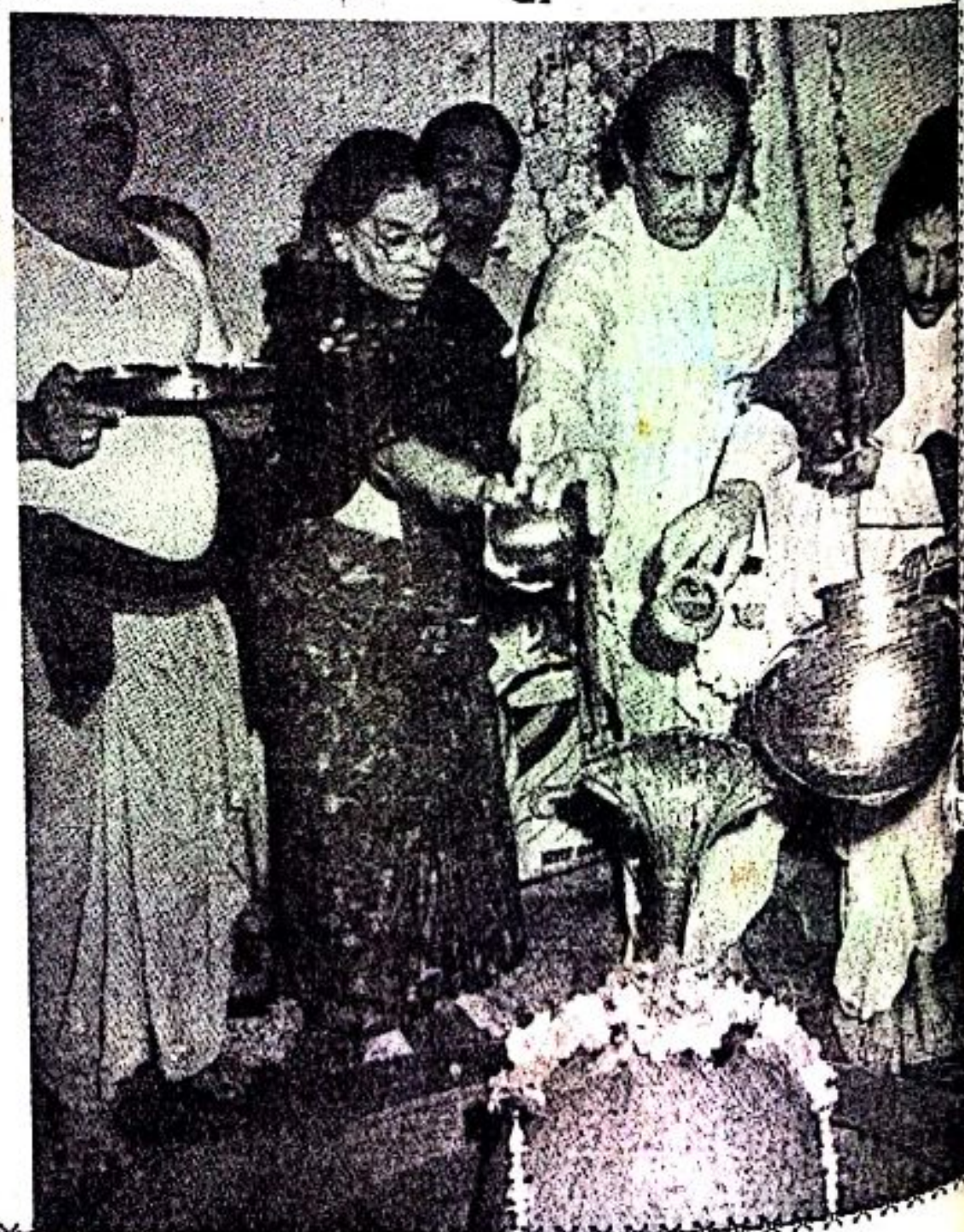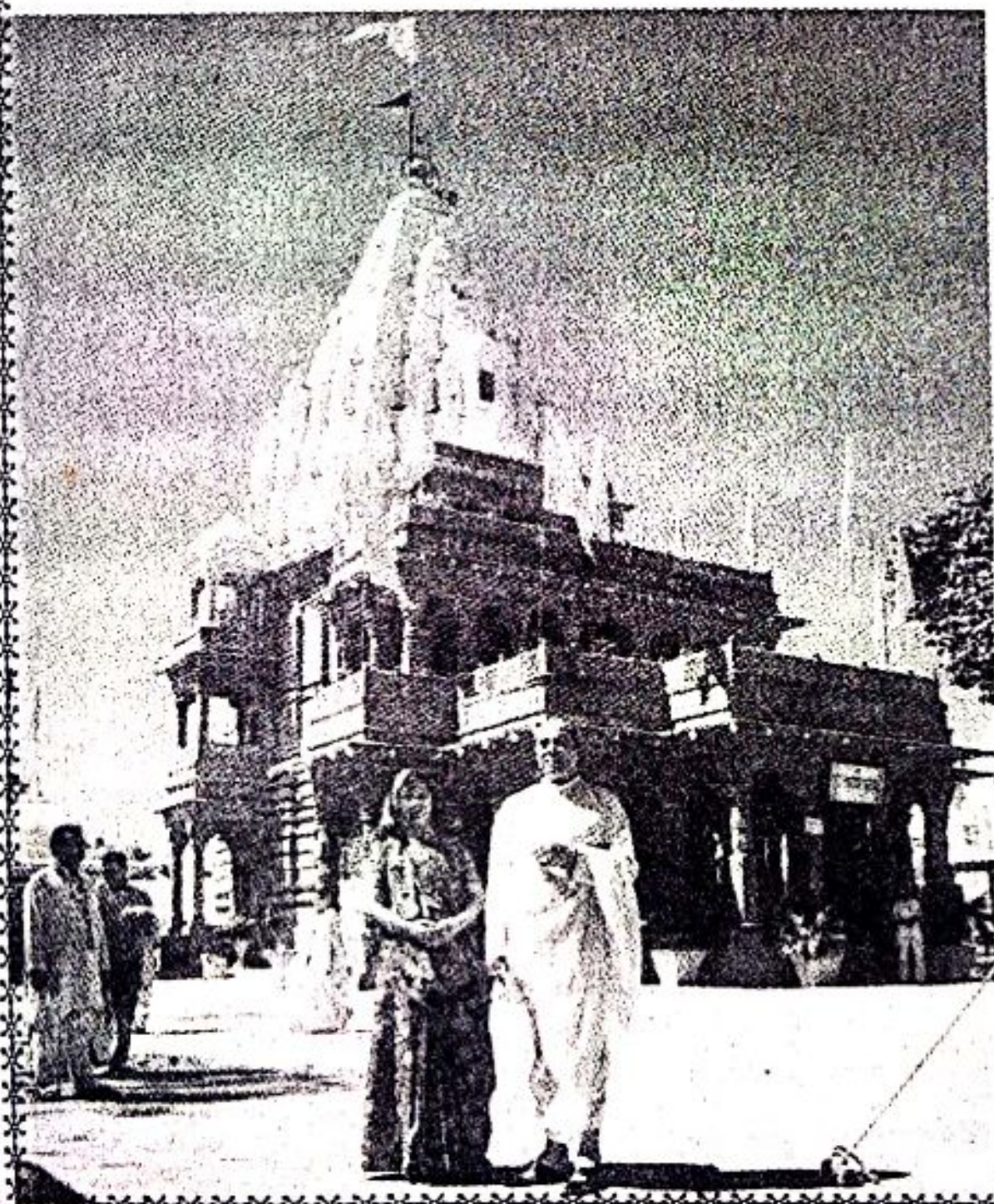
अपने शत्रुओं को परास्त करना पड़ता है और वह यह सब कुछ कर सकता है इस 'महाकाल साधना' को सम्पन्न कर।

स्त्री और पुरुष दोनों इस साधना को सम्पन्न कर सकते हैं, क्योंकि यह साधना दोनों के लिए समान रूप से फलप्रद है।

महाकाल स्वयं में काल के स्वामी हैं, जो ब्रह्म हैं, जो स्वयं में तो स्थिर हैं, परन्तु वे सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को गतिशील करते हैं, संचालित करते हैं। काल जो निर्मुक्त, निर्बाध गति से युक्त है, उसे केवल महाकाल की साधना के द्वारा ही बांधा जा सकता है।

वर्तमान समय में स्त्री को भी समाज में अनेक शत्रुओं का सामना करना पड़ता है, उसे भी शत्रुओं से उतना ही जूझना पड़ता है, विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है, जितना कि पुरुषों को करना पड़ता है।

यह साधना सम्पन्न कर स्त्री या पुरुष अपने शत्रु को उस स्थिति में पहुंचा देते हैं, जहां उनकी स्थिति मृत्यु से भी भयंकर हो जाती है, वे इस योग्य नहीं रह जाते, कि वे साधक का कुछ भी अनिष्ट कर सकें; वास्तव में उनकी स्थिति यमराज के दाढ़ों में कुचले जाने से भी ज्यादा दयनीय हो जाती है।

स्वयं विश्वामित्र ने अपने शत्रुओं को समाप्त करने के लिए महाकाल की साधना सम्पन्न की थी।

यह साधना सम्पन्न कर व्यक्ति अपने जीवन को निर्विघ्न बना सकते हैं

साधना विधान

- इस साधना में आवश्यक सामग्री '**महाकाल यंत्र**' और '**महाकाल माला**' है।
- यह 11 दिनों में सम्पन्न होने वाली साधना है।
- यह साधना कभी भी किसी भी सोमवार से प्रारम्भ कर सकते हैं।
- साधक स्वच्छ श्वेत वस्त्र धारण करें।
- लकड़ी के बाजोट पर शुद्ध श्वेत वस्त्र बिछाएं तथा उस पर ताम्र पात्र में यंत्र स्थापित करें।
- यंत्र का सफेद चंदन, अक्षत तथा पुष्प से पूजन करें।
- घी का दीपक निरन्तर जलता रहना चाहिए।
- साधक यंत्र के सामने किसी कागज पर अपने शत्रु का नाम लिख कर प्रार्थना करें, कि '**महाकाल मेरे शत्रु का नाश करें।**'
- साधक यंत्र के सामने प्रतिदिन निम्न मंत्र का 11 माला मंत्र जप करें–

मंत्र

।। ॐ क्रीं हूं ह्रीं हूं महाकालाय फट्।।

- मंत्र जप समाप्त कर उसी स्थान पर सोयें।

यदि कोई साधक महाकाल की साधना सम्पन्न कर लेता है, तो वह स्वयं में ही काल की गति अपने अनुकूल करने की क्षमता प्राप्त कर लेता है . . . और जिसने काल पर विजय प्राप्त कर ली, उसके लिए असम्भव जैसा कोई शब्द नहीं होता

- प्रयोग के अगले दिन यंत्र व माला किसी नदी या तालाब में प्रवाहित कर दें।

यदि सम्भव हो, साधना वाले दिन अन्न ग्रहण न करें, सिर्फ फलाहार ही लें। साधक को यह साधना पवित्रता और शुद्धता के साथ सम्पन्न करनी चाहिए।

न्यौछावर – 300/-

जीवन में कभी शत्रु आप पर प्रभावी हो ही नहीं सकता यदि आपने सम्पन्न कर रखी हो

प्रायः संयोग हमारे जीवन में उसी महाकाल की इच्छा स्वरूप एक नौका बनकर आ जाते हैं और काल की उफनती, बिखरती, वेगवती धारा के आघात से बचा कर अपने में समेटते हुए किसी सुरक्षित किनारे तक पहुंचा देते हैं। ऐसा ही संयोग मेरे जीवन में तब आया, जब मैं लम्बी बीमारी से उठने के बाद स्वास्थ्य लाभ करने एक सुदूर पर्वतीय क्षेत्र में गया। मेरे डॉक्टरों ने मुझसे कहा था, कि यथासंभव किसी पर्वतीय ग्रामीण क्षेत्र में ही जाइयेगा, क्योंकि पर्वतीय नगर अर्थात् हिल स्टेशन तो महानगरों के समान ही प्रदूषित हो चुके हैं और यही बात मेरे लिये सुखद संयोग बन गई।

कुमाऊं की पहाड़ियों में मुझे भुवाली से भीमगढ़ जाने वाले मार्ग पर एक उचित स्थान मिल गया और मैं उस सुरम्य घाटी में एक सहायक के साथ रहने लग गया। दुर्बलता के कारण अधिक घूमने-फिरने में असमर्थ था, फिर भी शरीर को गतिशील बनाए रखने की दृष्टि से मैं अपने आवास से थोड़ी दूर बने एक प्राचीन एवं जर्जर हो चुके शिव मंदिर तक जाकर वहां कुछ देर विश्राम कर वापस आ जाता था। एक प्रकार से मैं निर्जन वातावरण में ही था, क्योंकि स्थानीय निवासियों के घर काफी दूरी पर एवं कुछ ऊंचाई पर कुमाऊं की ग्रामीण परम्परा के ही अनुसार छिटके हुए बने थे। शेष भागों में सीढ़ीदार खेत थे और ऐसे ही एक खेत के बीच मैं रह रहा था। मेरा

सहायक जरूरी कामों से अधिकतर बाहर ही रहता था और इसी एकान्त से बचने के लिये मैंने धीरे-धीरे उसी शिव मंदिर में ही अधिक बैठना प्रारम्भ कर दिया। पता नहीं क्यों, वहां बैठ कर मुझे एक अजीब सी तृप्ति मिलती थी और घंटों-घंटों बैठने के बाद भी सामान्य जीवन की सुध नहीं आती थी।

अचानक एक दिन मेरे इस एकान्तवास में विघ्न पड़ गया, जब मैंने वहां जाने पर देखा, कि एक अत्यन्त वीभत्स व्यक्ति वहां पर अपना आसन जमा कर कुछ तांत्रिक क्रियाएं कर रहा है। तांत्रिकों से मुझे सदैव से एक प्रकार की घृणा रही है और उसे देखते ही मुझे जुगुप्सा हो आई।

नाटा-ठिगना, खूब भरे बदन का वह तांत्रिक अपनी घोर ताम्रवर्णीय काया के मध्य से बड़ी-बड़ी सफेद आंखों को किसी सर्चलाइट जैसा ही घुमा रहा था। उसके सिर पर एक भी बाल नहीं था, जिससे मस्तक का भाग कुछ अधिक चकाचौंध प्रस्तुत कर रहा था। इस खल्वाट चेहरे पर बेतरतीब बढ़ी घनी काली दाढ़ी एवं मुच्छिका गुच्छ उसे साक्षात् किसी यमदूत की ही छवि प्रदान कर रहे थे।

मैं बिना एक शब्द बोले वापस जाने ही लगा था, कि उसने मुझे आवाज देकर रोका और एक पत्थर की ओर संकेत कर बैठने को कहा तथा पुनः अपनी साधना में संलग्न हो गया। उसके अनुरोध पर मैं एक ओर बैठ कर उसकी वेशभूषा को निहारने लग गया। गहरे लाल वस्त्र, मोटी सी रुद्राक्ष की माला, हाथ में लिपटी एक मूंगे की माला, एक चिमटा, एक कम्बल की पोटली, एक कमण्डल और उससे झांकती देसी शराब की बोतल— सभी कुछ किसी सामान्य तांत्रिक की भावभंगिमाओं की तरह ही प्रतीत हो रहा था। उसे तो जैसे जगत का कोई ध्यान ही नहीं था और मुझे बैठने के लिये संकेत करके वह आंखें बंद कर कहीं खो ही गया था। मुझे सारा वातावरण विचित्र लग रहा था।

सहसा मुझे ध्यान आया, कि कहीं इसने मुझे किसी वशीकरण के माध्यम से यहीं आबद्ध तो नहीं कर दिया है अथवा इसका कोई घातक लक्ष्य तो नहीं है। यों भी शारीरिक दुर्बलता के कारण मैं मानसिक रूप से अत्यन्त दुर्बल हो गया था, अतः आशंकाओं में शीघ्र घिर जाना स्वाभाविक ही था। मैंने घबरा कर उठने का उपक्रम किया ही था, कि वह शुद्ध अंग्रेजी भाषा में बोल उठा— "आपको भ्रमित होने की आवश्यकता नहीं है, वैसे भी मैं आपको कोई नुकसान नहीं पहुंचाने जा रहा।"

सुदूर ग्रामीण क्षेत्र में इतनी शुद्ध एवं स्पष्ट अंग्रेजी भाषा को सुनकर मैं चौंक पड़ा और हैरत से उसका मुख देखता रह गया।

वह उसी प्रकार आंखें बंद किए कुछ देर बैठा रहा और उसके बाद आंखें खोल कर अपने कमण्डल जैसे पात्र से मांस की कुछ बोटियों को निकाल कर उन्हें शून्य में फेंक शराब की बोतल को जमीन पर लुढ़काने लगा। मैं अपने घोर सात्विक संस्कारों के कारण यह दृश्य देख कर घृणा से भर गया और मुझे उबकाई आने लगी। अब मेरा वहां रुके रहना असम्भव हो गया था, अतः मैं उठ ही पड़ा। मेरे उठते ही वह भी मेरे साथ चल पड़ा। मैं अत्यधिक घृणा के कारण उससे बात करने में अपने आपको असमर्थ पा रहा था, कि उसी ने मुझसे पूछ लिया, कि मैं चुप क्यों हूं?

उत्तर में मेरे अन्दर का क्रोध फूट पड़ा और मैंने तांत्रिकों के लिये मन में जो घृणा पाल रखी थी, उसे उसके सामने बिना किसी भय के कह डाला। कमजोरी के कारण मैं इस उत्तेजना को सम्भाल नहीं पाया और समीप की एक चट्टान पर बैठते हुए मैंने अपना अंतिम अस्त्र उसकी ओर फेंका— "इस हिंसा की क्या आवश्यकता?"

मेरा संकेत मांस की बोटियों की ओर था।

उत्तर में वह शान्त निश्चल भाव से मुझे देखता रहा और फिर पूछ बैठा— "औषधि निर्माण के लिये वैज्ञानिक सैकड़ों जानवरों को मार डालते हैं, उसकी क्या आवश्यकता?"

मैं कोई उपयुक्त उत्तर सोच ही रहा था, कि उसने फिर कहा— "आप भी तो अपने लीवर (यकृत) का इलाज करा रहे हैं, क्या आप जानते हैं, कि आप जिस दवा को खाते हैं, उसे घोड़े के बच्चे को मार कर उसके लीवर इक्स्ट्रैक्ट (निचोड़) से बनाया जाता है। आप तो जीव हिंसा के विरोधी लगते हैं, फिर परोक्षतः इस प्रकार की हिंसा को क्यों प्रश्रय दे रहे हैं?"

वह ये बातें अत्यन्त आत्मविश्वास से शुद्ध अंग्रेजी में करता जा रहा था। मैं ग्लानि से भर गया और कह न सका, कि मैं तो अपने प्राण बचाने के लिये ऐसी औषधि ले रहा हूं अथवा यह, कि वैज्ञानिक अपने शोध में जिन सैकड़ों जीवों के प्राण ले लेते हैं, उसका परिणाम बाद में अनेक व्यक्तियों की जीवनरक्षा के रूप में सामने आता है... सचमुच कितनी क्रूरता है, कि व्यक्ति मानवता की रक्षा के नाम पर इतनी हिंसा करता है।

मेरी चुप्पी को देख उसने बातचीत का सूत्र स्वयं ही संभाल लिया और कहने लगा— "जब तक आप किसी बात की तह तक न पहुंच जाएं, तब तक आपको उसकी आलोचना

करने का भी कोई अधिकार नहीं है। आप की दृष्टि में मेरा जो काम हिंसापूर्ण लग रहा है, मैं ही जानता हूं, कि व्यापक रूप से उसकी क्या सार्थकता है?''

अत्यन्त ओज के साथ धारा प्रवाह बोलते हुए उसके मस्तक पर लगा हुआ सिंदूर पसीने में भीग कर और भी चमकने लगा था तथा उसकी विद्वतापूर्ण बातों के समक्ष अब मुझे उसकी कुरूपता भी अशोभनीय नहीं लग रही थी। यह तो मुझे समझ में आ ही गया था, कि मेरे समक्ष खड़ा व्यक्ति उच्च शिक्षित तो है ही और इसका जो बाह्य स्वरूप है, वह तो एकमात्र आवरण है।

मैंने संकोचपूर्वक उसे अपने आवास तक चलने का निमन्त्रण दिया, क्योंकि मैं उससे बात करने का इच्छुक हो गया था और दुर्बलता के कारण अधिक देर तक बैठने में असमर्थ था। उसने मेरा प्रस्ताव सहर्ष स्वीकार कर लिया और मेरे आवास पर आने के बाद वह जिस प्रकार से कुर्सी पर बैठकर शालीनता से चाय पी रहा था, उससे लगता था, कि वह कोई उच्च पदस्थ अधिकारी रह चुका है। उसके व्यवहार में उसी प्रकार का रोब-दाब और गरिमा झलक रही थी।

मेरा अनुमान सही था। वह मूलतः आंध्र प्रदेश एवं उड़ीसा के सीमावर्ती क्षेत्र का निवासी था तथा ज्ञान की लालसा में अपने पद को ठुकरा चुका था।

कुछ तो अपने एकान्तवास से मुक्ति पाने के लिये एवं कुछ उसके विरोधाभासी किन्तु दिलचस्प व्यक्तित्व से प्रभावित होकर मैंने कुछ दिन उसे अपने ही समीप रहने का आग्रह किया, किन्तु बहती हुई नदी के समान योगियों को बांध ही कौन सका है?

उसने विनम्रता से मेरा प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया और कहा, कि वह रहेगा तो उसी प्राचीन शिव मंदिर में ही, किन्तु जब तक रहेगा, तब तक मिलता अवश्य रहेगा।

वस्तुतः मुझे उससे यह जानने में रुचि थी, कि उसने विद्वान होते हुए भी इस प्रकार का मार्ग क्यों चुना? यदि उसकी सांसारिक रुचियां नहीं थीं, तो वह किसी भी धार्मिक संस्था से जुड़ सकता था, जैसे कि अधिकांश लोग सेवानिवृत्त हो जाने के बाद किसी धार्मिक संस्था से जुड़ जाते हैं और भजन-पूजन करके जीवन के शेष दिन व्यतीत करते हैं।

उत्तर में उसने जो कुछ कहा, उससे मेरे मस्तिष्क के कपाट भी खुल गए — ''अध्यात्म का अर्थ किसी लीक पर चलना नहीं होता अपितु सन्नद्ध होकर ज्ञान की प्राप्ति करना होता है।'' उसकी यह बात सुनकर मुझे उसमें श्रद्धा भी उत्पन्न हो गई, क्योंकि उसने स्वेच्छा से ऐसा कठिन जीवन केवल ज्ञान की खोज के लिये ही ग्रहण किया था अन्यथा वह अविवाहित होने के कारण सभी पारिवारिक दायित्व से मुक्त ही था और बड़ी सहजता से गंगा के सुरम्य तट पर बने किसी आलीशान आश्रम में सुख-सुविधाओं के साथ रह भी सकता था।

उसका जीवन जिस प्रकार अपने उद्देश्य के लिये समर्पित था, उसे समझ में आने के बाद मुझे अपने पर ही क्षोभ होता था, कि मैंने उससे प्रारम्भ में कितनी उपेक्षा से बात की थी। यह रहस्य मुझे उससे ही ज्ञात हो सका, कि यथार्थ साधक तो वही है, जो केवल 'सत्' अथवा 'रजस' गुणों को ही अपने अन्दर समाहित नहीं करता अपितु तमस गुण की भी साधना करता है और 'तम' को अपने अन्दर समाहित कर उसे समाज के लिये कल्याणकारी बना देता है।

वह 'तम' को एक 'गुण' के रूप में धारण कर साधना-उपासना करने वाला एक अत्यन्त उच्चकोटि का साधक था, जो इस प्रकार से प्रयास कर रहा था, कि विश्व की अनेक अशुभ प्रवृत्तियां उसके अन्दर ही समाहित हो जाएं तथा फलस्वरूप जगत में 'सत' एवं 'रज' गुण की ही प्रधानता शेष रह जाए। वह तो साक्षात शिवस्वरूप ही था, जो विष को अपने कंठ में पचाने का स्तुत्य प्रयास कर रहा था।

अपने अल्प प्रवास में उसने मुझसे यह स्वीकार किया, कि अब तो तथाकथित वाममार्गी साधक तो केवल पंचमकारों का भोग करने के लिये ही ऐसा वेश धारण कर लेते हैं, किन्तु वास्तविक वाममार्गी साधक तो केवल इन्हें अशुभ के प्रतीक के रूप में 'धारण' मात्र ही करता है। उसके लिये ये क्रियाएं केवल 'तम' को प्रदान की जाने वाली भोज्य सामग्रियां मात्र ही होती हैं। वह स्वयं इनसे सर्वथा अलिप्त रहता है।

मैंने भी अनुभव किया, कि यद्यपि उसके पास मांस-मदिरा की पता नहीं कहां से सदैव प्रचुरता ही रहती थी, किन्तु वह अपने व्यक्तिगत जीवन में 'कॉफी' का प्रेमी होने के अतिरिक्त किसी भी नशीले पदार्थ या मांस-मछली को स्वयं कभी ग्रहण करता ही नहीं था। मैंने उससे उसकी साधना, साधना पद्धति इत्यादि के विषय में जानने का बहुत प्रयास किया, किन्तु उसने केवल इतना ही स्वीकार किया, कि वह एक भैरव साधक है।

मैंने ऐसे भी भैरव साधक देखे हैं, जो कदाचित् पूर्व जन्म की साधनाओं के बल पर अथवा किसी अन्य संस्कार के फलस्वरूप भैरव साधना में यद्यपि सफलता पा तो गए हैं, किन्तु

अत्यन्त ओछेपन पर उतर कर उसका प्रयोग इस प्रकार करते हैं, जैसे वे स्वामी हों और भैरव उनके अनुचर। इन साधकों का हश्र भी मैंने देखा है, किन्तु यह साधक जो मुझे अपने प्रवास में मिला, वह भगवान श्री भैरव की तामसिक रूप में साधना करते हुए भी कितना सौम्य था।

कालान्तर में जब मैं पूज्य गुरुदेव से दीक्षित हुआ, तब मैंने एक अवसर पर उनको अपने इस संस्मरण के विषय में बताया। पूज्यपाद गुरुदेव ने स्वीकार किया, कि यद्यपि भैरव साधना की एक पद्धति 'तामसिक' भी है, जो कि समस्त विघ्न-बाधाओं को इतनी प्रचण्डता से समाप्त कर देती है, कि उसके समक्ष तो संसार का कोई भी वेग ठहर ही नहीं सकता, किन्तु दुर्भावनावश इसका प्रयोग किए जाने के कारण इसका रहस्य गुरुजनों ने लुप्त ही कर दिया था। यों भी अब साधकों के अन्दर शायद वह शारीरिक एवं मानसिक क्षमता ही नहीं रह गई है, जिससे वे तमोगुण को 'धारण' कर सकें।

भैरव साधक को साक्षात शिव मानने का कारण है, कि अपने आराध्य देव की ही भांति विष को पचाने की सामर्थ्य रखता है, न कि गांजा, भांग, सुलफा, शराब और मांस के टुकड़ों को।

मेरे अत्यन्त अनुनय-विनय के पश्चात मुझे पूज्यपाद गुरुदेव ने यह साधना विधि तो बता दी, किन्तु मैं जानता हूं, कि उन्होंने कई भेद अभी गुप्त ही रखा है। सम्भवतः कभी हम साधकों में इतनी पात्रता आएगी, जिससे प्रसन्न होकर वे इस प्रकार के अनेक गुप्त रहस्यों को हमारे सामने उद्‌घटित करेंगे, क्योंकि उनकी प्रसन्नता तो केवल इसी बात में निहित है। बस वे प्रतीक्षा करते रहते हैं, कि कब उनके शिष्यों में पात्रता आ जाए और वे उसे भर दें।

यहां प्रस्तुत भगवान भैरव की साधना विधि, जो कि तामसिक पद्धति पर आधारित है, मूलतः उन्हें सिद्ध करने की नहीं अपितु शत्रुनाश की ही अधिक प्रवृत्तियों को अपने में समाहित किए है।

साधना विधि

किसी भी अमावस्या की रात्रि में सम्पन्न की जाने वाली इस साधना की साधना विधि अत्यन्त सरल है, जबकि इसके मध्य होने वाली अनुभूतियां अत्यधिक रोमाञ्चकारी। 20.2.97 या किसी भी शनिवार की रात्रि में साधक को चाहिए, कि वह काले वस्त्र धारण कर काले रंग के ऊनी आसन पर दक्षिण मुख होकर बैठे तथा अपने समक्ष काजल अथवा काली स्याही से निम्न **क्रोध भैरव यंत्र** भूमि पर ही अंकित कर लें—

क्रोध भैरव यंत्र
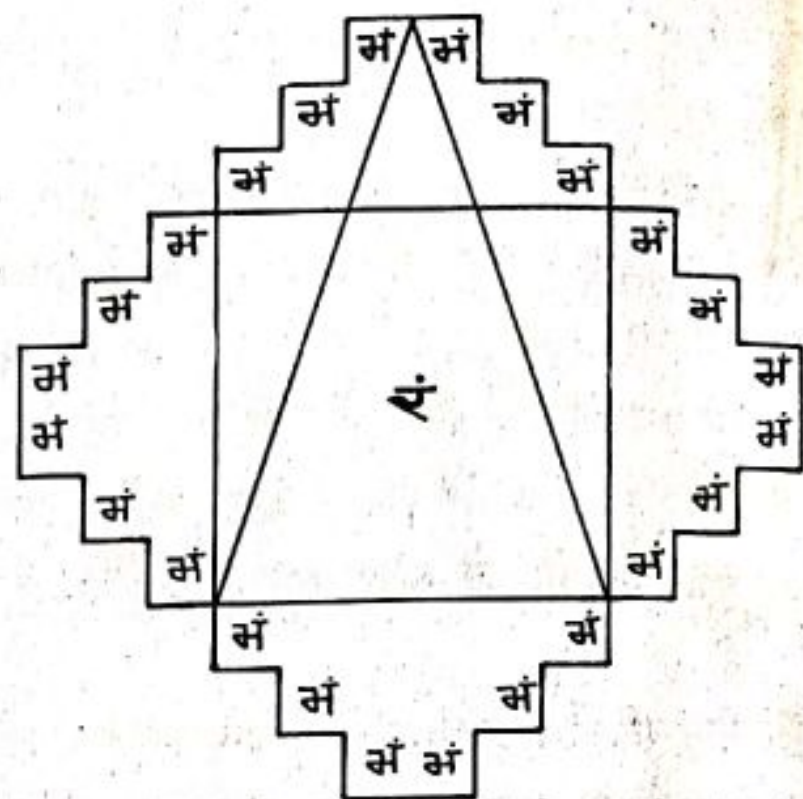
साधक इस यंत्र का निर्माण अत्यन्त एकाग्रचित्त हो कर करें तथा जहां-जहां '**भं**' बीज अंकित है, वहां-वहां एक-एक '**ज्वालाग्र**' स्थापित कर मध्य में '**रं**' बीज मंत्र के ऊपर '**भैरव गुटिका**' स्थापित कर निम्न मंत्र का '**मूंगे की माला**' से चौबीस माला मंत्र जप सम्पन्न करें —

।। ॐ हुं ह्रीं रं ज्वाल करालायै क्रोधश्च काल भैरवाय नमः।।

मंत्र जप के समय अत्यन्त धैर्य की आवश्यकता है, क्योंकि इस तीव्र विस्फोटनकारी मंत्र का जप अत्यन्त दुष्कर है। मंत्र जप समाप्त होने के पश्चात् कुछ देर तक अपने आसन पर आंख मूंद कर बैठे रहें और अपने शत्रु को काल्पनिक रूप से समक्ष मानकर उग्र स्वरूप धारण करें।

शनैः-शनैः स्वतः ही चित्त शांत हो जाने पर उठकर समस्त सामग्री उसी समय घर से काफी दूर फेंक दें तथा जमीन पर बने यंत्र को धो-पोंछ कर साफ कर लें तथा स्वयं भी स्नान कर लें।

यदि कोई अज्ञात शत्रु हो, तो समस्त साधना सामग्रियों के साथ कुछ काली मिर्च के दाने भी रखकर 'मेरे सभी ज्ञात-अज्ञात शत्रुओं की गति-मति स्तम्भित हो' — कह कर उसे फेंक दें।

केवल शत्रुनाश हेतु ही नहीं, अपितु साधना की कुछ विशिष्ट ऊंचाइयों को प्राप्त करने के लिये भी भगवान श्री भैरव का अत्यन्त उग्र स्वरूप में स्मरण करना ही पड़ता है।

भगवान श्री भैरव तामसिक देव ही नहीं अपितु तामसिक शक्तियों के अधिष्ठाता भी हैं, यही भावना इस साधना का मर्म है। **न्यौछावर — 300/-**

09-05-97

महाकाल प्रयोग

भीष्म ने कहा ---
मृत्यु मेरी इच्छा से आयेगी...

यह सम्भव हो सका

'महाकाल प्रयोग' एक दुर्लभ तीक्ष्ण और यमराज को पछाड़ कर उसके सीने पर पांव रखने वाला दुर्धर्ष प्रयोग . . . एक ऐसा प्रयोग, जो गोपनीय तो था ही पर उसे प्राप्त करना भी असम्भव था, पर पत्रिका की टीम ने इस विधि को, इस प्रयोग को भी ढूंढ निकाला, जिससे मृत्यु व्यक्ति के पास तक न फटक सके . . . यहां तक, कि मृत्यु व्यक्ति के सामने हाथ बांधे खड़ी रहे और जब व्यक्ति चाहे, तभी मृत्यु उसे आगोश में लेने की हिम्मत कर सके . . . प्रत्येक साधक के लिए आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य साधना . . . सांस लेने से भी ज्यादा जरूरी साधना . . .

एक विचारशील व्यक्तित्व होने के कारण मेरे लिए महाभारत ग्रंथ के प्रत्येक पात्र का जीवन-चरित्र विचारणीय रहा है, किन्तु उसके प्रमुख पात्र के रूप में भीष्म का नाम मेरे मानस में सदैव उल्लेखनीय रहा है।

अत: जब भी कहीं भीष्म के विषय में चर्चा होती या उनसे सम्बन्धित कोई भी वर्णन होता, तो मैं उत्सुक जिज्ञासु एवं श्रोता की भांति उसमें हिस्सा अवश्य लेता।

मेरे मानस पटल पर सदैव एक बात भीष्म से सम्बन्धित उमड़ती रहती, कि एक राजघराने के युवराज ने कैसे इतनी दृढ़ता से कहा, कि **'मृत्यु मेरी चेरी है, मृत्यु मुझे तभी स्पर्श कर सकेगी जब मेरी इच्छा होगी?'**

क्या यह तथ्य आश्चर्यजनक नहीं, कि एक अत्यन्त भोगी व विलासी राजा, जिसमें मोह, लोभ सदा बना रहा उसका पुत्र इतना वीतरागी कैसे बना, वह राजपरिवार में रहते हुए भी एक योगी की भांति किस प्रकार से रहा?

साधारणत: यह प्रश्न तो उठता ही नहीं है, यदि कभी इस विषय पर चर्चा भी होती है, तो इसका कोई तटस्थ उत्तर नहीं मिलता और फिर यह प्रश्न सिर्फ प्रश्न ही बन कर रह जाता मेरे मानस में।

भीष्म का व्यक्तित्व सिर्फ एक राजनीतिक सलाहकार के रूप में स्पष्ट होता है, उनके व्यक्तिगत जीवन के विषय में ज्ञात करना अत्यन्त दुरुह कार्य बन गया।

एक ओर तो साहित्य की कमी, तो दूसरी ओर ऐसा साहित्य जिसमें साहित्यकार ने वास्तविकता में कल्पना का मिश्रण इतना अधिक कर दिया, कि साहित्य का यथार्थता से

कोई सम्बन्ध नहीं दिखाई पड़ता। कोई भी विचारक या मेरी प्रकृति के अनुकूल व्यक्ति मुझे मिलता, तो एक बार मैं भीष्म पर चर्चा अवश्य करता और यूं ही मेरे समक्ष भीष्म का व्यक्तित्व उजागर होता रहा पर कभी उस वस्तुस्थिति का मुझे ज्ञान नहीं मिल सका, जो मैं प्राप्त करना चाहता था।

भीष्म के विषय में मुझे यह अवश्य ज्ञात हो गया, कि भीष्म कभी साधारण व्यक्ति बन कर नहीं रहे, बाल्यावस्था से ही उनमें एक गाम्भीर्यता रही। उनमें काल को जानने की अद्‌भुत क्षमता थी, उन्होंने कभी प्रकृति के नियमों का उल्लंघन नहीं किया। पर इसके अतिरिक्त उनके विषय में अन्य किसी प्रकार का ज्ञान प्राप्त नहीं हो सका।

एक दिन मेरे एक मित्र की ओर से मुझे निमन्त्रण मिला, कि शीघ्र आ जाओ एक महत्वपूर्ण वार्ता होने वाली है, जिसमें सम्भव है तुम्हारी जिज्ञासा शान्त हो जाय।

मैं शीघ्रता से उसके निवास स्थल पर पहुंचा, वहां देखा, कि मित्र और उनके एक परिचित उपस्थित हैं, यह देख कर मेरे मन में थोड़ा आक्रोश भी आया, कि मेरे मित्र ने यह कैसा हास्य किया है। उसके परिचित शायद मेरी मनोदशा समझ गए थे, उन्होंने कहा — 'परेशान मत होइये, आपको आपके मित्र ने व्यर्थ में नहीं बुलाया है, इसने मुझे आपके विषय में बताया था, तो मैंने ही आपको बुलाने के लिए कह दिया था। आपके मित्र से ज्ञात हुआ, कि आप किसी विषय पर अत्यन्त जिज्ञासु और शोधरत हैं, उसके विषय में ही जानने के लिए आपको बुला लिया, शायद मैं आपकी कुछ सहायता कर सकूं।'

मुझे तनिक भी प्रसन्नता नहीं हुई, पर मित्र के व्यवहार से प्रतीत हो रहा था, कि वे एक सम्मानीय व्यक्ति हैं उसके लिए।

अत: मेरा भी कर्त्तव्य था, कि मैं उनका सम्मान करूं।

उनसे मुझे जो कुछ ज्ञात था और मेरी जो जिज्ञासा थी, उसे पूर्ण रूप से बता दिया, तो उन्होंने मुझसे पूछा — क्या कभी तुमने भीष्म के बाल्यावस्था पर ध्यान दिया है।

मैंने कहा — हां, उन्होंने परशुराम से शिक्षा ली थी और वे अपने काल के सर्वश्रेष्ठ योद्धाओं में से थे।

इस पर उन्होंने स्पष्ट किया — उनके जन्म से बाल्यावस्था तक की एक कथा जन सामान्य में प्रचलित है, कि उनकी मां उन्हें अपने साथ ले गई थी और उनकी शिक्षा पूर्ण होने के उपरान्त उन्हें वापस उनके पिता को सौंप दिया था। इस अवस्था में उनकी मात्र अस्त्र-शस्त्र से सम्बन्धित शिक्षा और राजनीतिक शिक्षा ही नहीं हुई, अपितु उनको तंत्र का भी विशेष ज्ञान दिया गया अत: उनका अधिक समय योगियों के मध्य व्यतीत हुआ। इस कारण ही वे वैभव व विलास युक्त जीवन

**मरना विशेषता नहीं है,
अपितु मृत्यु से जूंझ कर
उसे परे धकेल देना साहस है, वीरता है,
मंत्रात्मकता है,
तभी आप मृत्युञ्जय बन सकेंगे
और यह असम्भव है ही नहीं,
मृत्यु तो आपकी दासी है, गुलाम है . . . इस
प्रयोग को करने के बाद . . .
क्योंकि मृत्युञ्जय साधक के सामने मृत्यु
आकर खड़ी
हो ही नहीं सकती।**

उसके बाद मेरे मित्र के वे परिचित वहां से चले गए। बाद में मुझे अपने मित्र से ज्ञात हुआ, कि उसके परिचित तंत्र क्षेत्र के अच्छे ज्ञाता भी हैं। उनसे परिचय हो जाने के उपरान्त मैंने उनसे इस विषय में जानना चाहा, कि क्या वह साधना विधि अब प्राप्त हो सकती है, तो उन्होंने वह साधना विधि भी स्पष्ट की, जो भीष्म ने सम्पन्न की थी तथा जो अभी तक सिर्फ उच्चकोटि के ऋषियों तथा

जीते हुए भी वीतरागी रहे। परशुराम स्वयं तंत्र के क्षेत्र के अद्वितीय ज्ञाता थे, वे अनेक ऐसी साधनाओं में निष्णात थे, जो उस समय की दुर्लभ साधनाओं में से थीं।

थोड़ी देर मौन रहने के बाद उन्होंने आगे कहना शुरू किया — **भीष्म ने परशुराम तथा अनेक बड़े तांत्रिकों से बहुत कुछ सीखा था, किन्तु एक बात जिसका बोध विरले को ही होगा, कि उन्होंने काल को स्तम्भित कर देने का ज्ञान 'भगवान कृष्ण' से प्राप्त किया था, जिसके बल पर वे बोल सके — "मृत्यु मेरी इच्छा से आयेगी"।**

उन्होंने काल को वश में करने के लिए 'महाकाल साधना' को सर्वथा नये विधान से सम्पन्न किया था। इसी कारण, तो काल को अपने अनुसार चलाने की सामर्थ्य रखते थे।"

इस प्रकार परशुराम और श्रीकृष्ण द्वारा प्राप्त शस्त्र तथा तंत्र ज्ञान ने भीष्म को विश्व का अद्वितीय व्यक्तित्व तथा काल को अपनी मुट्ठी में रखने वाला साधक बना दिया। 'महाकाल' जिसके परिणाम स्वरूप ही उन्हें काल का ज्ञान हो सका, काल उनके वश में रहा, लेकिन उन्होंने प्रकृति के कार्यों में कभी भी हस्तक्षेप नहीं किया। प्रकृति जिस प्रकार से अपना कार्य कर रही थी, वे दृष्टा मात्र बन कर देख रहे थे।

उनके इस उत्तर से मैं आश्चर्य चकित रह गया, क्योंकि मुझे उनके योगी व ऋषिवत् रहने की बात तो ज्ञात थी, पर तंत्र के क्षेत्र में भी वे अग्रणी थे, यह बात मेरे लिए अलग सी थी।

तंत्र वेत्ताओं के मध्य ही थी।

उन्होंने बताया — महाकाल साधना सम्पन्न करने के उपरान्त व्यक्ति न सिर्फ अकाल मृत्यु से बचता है अपितु अपने समय के श्रेष्ठतम तथा सौभाग्यशाली व्यक्तित्वों में से एक व्यक्ति बनता है।

इसके परिणामस्वरूप उसे अपने जीवन के सभी विरोधात्मक परिस्थितियों में भी विजय प्राप्त होती है। उसे यश, सम्मान, प्रतिष्ठा उसके विरोधी भी प्रदान करते ही हैं।

वर्तमान समय में यह साधना सम्पन्न करने के उपरान्त साधक जहां विरोधात्मक परिस्थितियों में रह कर भी सर्वत्र विजयी होता है, वहीं जहां उसे सफलता मिलने की उम्मीद न हो वहां यदि साधक यह साधना सम्पन्न कर लेता है, तो उसे

**आपके दोनों हाथों में लड्डू है,
आप महाकाल प्रयोग भी करे
और गुरुदेव कभी
मिल जाय, तो उनसे
'इच्छा मृत्यु दीक्षा' भी
प्राप्त कर ले . .
जो दुर्लभ है, गोपनीय है
और जिन्दगी का
वरदान है . . .**

सफलता अवश्य मिलती है। इस साधना के फलस्वरूप वृद्धता रूपी शत्रु भी साधक पर प्रभावी नहीं हो पायेगा।

पूज्य गुरुदेव से मैंने यह सारा घटनाक्रम बताने के बाद उससे 'महाकाल तंत्र' की साधना विधि बताने का आग्रह किया, तो उन्होंने मुझे पूर्ण रूप से वह सरल विधि समझाई जो वास्तव में अद्वितीय है, अप्रतिम है। वही साधना विधि पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत है, जिसे सम्पन्न कर साधक मृत्यु, वृद्धता तथा बाधाओं और परेशानियों को समाप्त करने में समर्थ हो सकेंगे।

साधना विधान

➠ इस साधना हेतु आवश्यक सामग्री है — **'महाकाल यंत्र', 'मृत्युञ्जय गुटिका'** तथा **'हकीक माला'**।

➠ यह साधना **9.5.97 परशुराम जंयती** के अवसर पर या **किसी भी सोमवार** के दिन सम्पन्न करें।

➠ साधक सफेद वस्त्र धारण करें तथा माथे पर त्रिपुण्ड लगाकर यह साधना सम्पन्न करें।

➠ लकड़ी के बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछाकर उस पर रक्त चन्दन से अष्टदल कमल बना कर 'महाकाल यंत्र' स्थापित करें।

➠ यंत्र का पूजन अष्टगंध, पुष्प, अक्षत, धूप व दीप से करें।

➠ मृत्युञ्जय गुटिका को पुष्प आसन बनाकर स्थापित करें तथा उसका भी पूजन करें।

➠ महाकाल का ध्यान करें —

देवाधिदेवं करालं प्रसन्नं,
कल्पोज्ज्वलांगं सदाभावगम्यं,
विश्वात्मरूपं नमः संहरन्तं,
प्रणम्यं सदैव महाकाल चिन्त्यम्।।

➠ 'हकीक माला' के सुमेरू पर चंदन या कुंकुम लगा कर पूजन करें, फिर उसी माला से निम्न मंत्र की 101 माला मंत्र जप करें —

मंत्र

।।ॐ ह्लौं ह्लौं हुं हुं महाकालाय फट्।।

OM HLAUM HLAUM HUM HUM MAHAKALAY PHAT

➠ मंत्र जप समाप्त होने के बाद यंत्र तथा माला को अगले दिन नदी में प्रवाहित कर दें तथा नित्य 51 बार उपरोक्त मंत्र का 21 दिन तक जप करें।

➠ गुटिका को लाल अथवा काले धागे में डाल कर गले में धारण करें।

इक्कीस दिन पश्चात् 'मृत्युञ्जय गुटिका' को शिव मन्दिर में चढ़ा दें।

न्यौछावर —240/- ✱

फार्म नं0 4 (नियम - 8 देखिए)

1.	प्रकाशन स्थान	:	दिल्ली
2.	प्रकाशन अवधि	:	मासिक
3-4.	मुद्रक, प्रकाशक	:	श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली
5.	सम्पादक का नाम	:	श्री नन्द किशोर श्रीमाली
	क्या भारत का नागरिक है? — हां।		
	पूरा पता	:	डॉ0 श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज0), फोन : 32209 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली - 34, फोन : 7182248
6.	उन व्यक्तियों के नाम और पते, जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों — श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली, श्री अरविन्द श्रीमाली, डॉ0 नारायण दत्त श्रीमाली।		

मैं कैलाश चन्द्र श्रीमाली एतद् द्वारा घोषित करता हूं, कि मेरे अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार दिये गये विवरण सत्य हैं।

दिनांक : 31.03.97 — कैलाश चन्द्र श्रीमाली (प्रकाशक)

चण्डोग्र शूलपाणि

गुरु जब पहली बार एहसास कर लेता है, कि उसका शिष्य उसके प्रति पूर्ण रूप से समर्पित है, पूर्ण तेजस्विता युक्त है एवं सहज विपत्तियों के आगे घुटने न टेक उनका मुस्कुरा कर सामना करता है, तब ही वह उसे उग्र साधनाओं के मार्ग पर अग्रसर करने हेतु संकल्पबद्ध होता है, क्योंकि उसे विश्वास हो जाता है, कि जिस घड़े को वह तैयार कर रहा है, वह पक चुका है, कच्चा नहीं रहा, वह अब टूटेगा नहीं, बिखरेगा नहीं, अपितु अपने अन्दर शक्ति तत्त्व को आत्मसात करने में पूर्णतः सक्षम हो चुका है।

अब तक की साधनाएं सौम्य थीं, क्योंकि शिष्य को तैयार किया जा रहा था, एक आधार बनाया जा रहा था, जिस पर शक्ति का एक पुञ्ज टिक सके, क्योंकि सामान्य एवं कमजोर शरीर में शक्ति का प्रादुर्भाव सम्भव नहीं।

इसलिए पहले कुछ सौम्य साधनाएं सम्पन्न करा कर पात्र तैयार किया जाता है और फिर उग्र साधनाओं द्वारा उसमें शक्ति, तीव्र शक्ति उड़ेल दी जाती है . . . ऐसी शक्ति जिसके आत्मसात् होते ही साधक का व्यक्तित्व बदल जाता है, उसके आसपास अदृश्य शक्ति का एक वर्तुल घूमता रहता है और जो भी उसके सम्पर्क में आता है, स्वतः ही उसके आकर्षण पाश में बंध जाता है, शत्रु उसके सामने आते ही समर्पण मुद्रा में आ जाते हैं और इस प्रकार वह चर-अचर समस्त वस्तुओं पर सहज प्रभुत्व जमा लेता है।

उग्र साधनाओं की इसी लम्बी कतार में चण्डोग्र शूलपाणि साधना सभी साधनाओं में विशिष्ट है, क्योंकि स्वयं गुरु दत्तात्रेय ने एक स्थान पर कहा है, कि 'उग्र साधनाओं में चण्डोग्र शूलपाणि साधना पारसमणि के समान है। जो मनुष्य इसको प्राप्त कर लेता है, वह सहज ही धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष का अधिकारी हो कर इन्द्र द्वारा पूजनीय हो जाता है।'

चण्डोग्र शूलपाणि आदि देव महादेव का ही स्वरूप है और एक समय पर जब देवता दानवों के आक्रमण से विक्षिप्त हो गए थे, तब इन्होंने ही समस्त दानवों का विनाश कर पुनः देवताओं को अपने-अपने पद पर आरूढ़ किया था।

> यदि आपके समक्ष आपका लक्ष्य स्पष्ट है, यदि आपकी एकाग्रता बनी हुई है, तो फिर आपको कोई भय सता ही नहीं सकता, आपको असफलता मिल ही नहीं सकती, आपके समक्ष देवताओं को उपस्थित होना ही पड़ेगा और आपके अनुकूल बनना ही पड़ेगा।

यह तो एक बाह्य घटना है, जबकि इसका सूक्ष्म विवेचन कुछ और ही है। हर मनुष्य में दो प्रकार के विचार – सद्‌विचार एवं कुविचार होते हैं। कुविचार रूपी दानव हमेशा सद्‌विचार रूपी देवताओं को प्रताड़ित करते रहते हैं और उन्हें समाप्त करने की चेष्टा करते रहते हैं। अतः सभी रूप में शूलपाणि मानव के सभी दानवीय प्रवृत्तियों का विध्वंस कर उसमें देवत्व की स्थापना करते हैं, जिससे वह आगे चल कर अद्वितीय युग पुरुष बन सके।

चण्डोग्र शूलपाणि उग्र देव होते हुए भी देखने में अत्यधिक मनोहर हैं, विशुद्ध स्फटिक के समान उज्ज्वल उनका वर्ण है, उनके सिर पर मुकुट है, उनकी चार भुजाएं हैं, उनके दाहिने हाथों में शूल एवं नर कपाल एवं बायें हाथों में पाश एवं अंकुश हैं, हरदम सुरा पान के आनन्द में वे मग्न रहते हैं।

'शूल' का तात्विक अर्थ है, कि वे साधक की सभी परेशानियों, कठिनाइयों, रोगों एवं शत्रुओं को बेध देते हैं और उसे उन पर विजय दिलाते हैं। अतः जो व्यक्ति यह साधना सम्पन्न कर लेता है, वह स्वतः ही निरोग, शत्रुहीन एवं परेशानियों से मुक्त हो कर हर प्रकार की इच्छित सफलता प्राप्त करता ही है।

'नर कपाल' का अर्थ है मस्तिष्क और उसमें व्याप्त दिव्य चेतना एवं प्रज्ञा। आज्ञा चक्र एवं सहस्त्रार भी यहीं अवस्थित हैं, अतः ऐसे व्यक्ति की कुण्डलिनी शक्ति स्वयं जाग्रत हो आज्ञा चक्र की ओर निरन्तर अग्रसर होती रहती है। वह पूर्णतः चैतन्य अवस्था प्राप्त कर प्रज्ञावान हो जाता है तथा विद्वता एवं ज्ञान उसके अन्दर, उसके रोम-रोम में समाहित हो जाते हैं। यदि वह किसी से शास्त्रार्थ करता है, तो प्रतिद्वन्द्वी अपने आप ही हकलाने लग जाता है और पूर्ण समर्पण मुद्रा में प्रस्तुत हो जाता है। ऐसे साधक का समाज में पूर्ण सम्मान होता है और यहां तक कि विद्वान समाज भी उसके आगे नतमस्तक रहता है। भूत-भविष्य की घटनाएं भी ऐसे साधक के आगे नृत्य करने लग जाती हैं और उसे वाक् सिद्धि प्राप्त हो जाती है अर्थात् वह जो कुछ भी कहता है, वह आने वाले समय में होता ही है।

'पाश' का अर्थ है यमपाश अर्थात् शूलपाणि ऐसे साधक पर प्रसन्न हो कर उसे यमपाश से मुक्त कर देते हैं, आकस्मिक अकाल मृत्यु उसे नहीं व्यापती और न ही जीवन में उसे दुर्घटना, शस्त्र या किसी अभिचार का भय रहता है। वह शतायु हो कर नाना भोग भोगता है एवं अंत में बड़ी ही शांति के साथ ब्रह्म में लीन हो कर मोक्ष प्राप्त करता है।

'अंकुश' का अर्थ है इन्द्रियां, जो कि चञ्चल कहलाती हैं, उन पर पूर्ण नियन्त्रण। यहां नियन्त्रण का अर्थ दमन कदापि नहीं है अर्थात् यदि उनका उपयोग करने की आवश्यकता हुई, तो उनका उपयोग भी किया, परन्तु उनका स्वामी बन कर, न कि उनका दास बन कर। तभी तो शूलपाणि साधना का सिद्ध साधक गृहस्थ में रहता हुआ, विभिन्न भोगों को भोगता हुआ भी उनमें अलिप्त रहता है एवं कीचड़ में भी कमलवत रह पाता है।

नेमिनाथ के बार-बार इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने की चेष्टा में असफल रहने पर स्वयं कृष्ण ने उन्हें यह साधना सम्पन्न करवाई थी, जिससे कि वे अनन्त ऊंचाइयों को छू सकें और तीर्थङ्कर के रूप में युग पुरुष बन सके।

निश्चय ही यह साधना अत्यधिक तीव्र एवं शीघ्र प्रभाव देने वाली तथा इसके द्वारा सर्वार्थ सिद्धि होती है, हर प्रकार की न्यूनता नष्ट होती है।

यह साधना 25.7.97 को की जा सकती है, वैसे किसी भी रविवार को इस साधना को सम्पन्न किया जा सकता है। साधक को पूर्ण मानसिक दृढ़ता एवं तेजस्विता के साथ साधना के लिए गुरु से मानसिक अनुमति ले कर ही बैठना चाहिए। **यह रात्रिकालीन साधना है** एवं नदी तट, पर्वत की अनुपस्थिति में किसी भी एकांत कमरे में भी भली प्रकार से सम्पन्न की जा सकती है।

सर्वप्रथम साधक को स्नान कर, शुद्ध वस्त्र धारण कर गुरु पूजन के बाद एक बाजोट पर **'चण्डोग्र शूलपाणि यंत्र'** की स्थापना करनी चाहिए। यंत्र के वाम भाग के पास ही **'चण्डोग्र मुद्रिका'** स्थापित करनी चाहिए। फिर उनके समक्ष निम्न ध्यान करें –

शुद्ध स्फटिक संकाशं, चतुर्बाहुं किरीटिनम्।
शूलं कपालं दक्षे तु, वामे तु पाशमंकुशम्।।
सुरा-पान-रसाविष्टं, साधकाभीष्ट दायकम्।
ध्याये च्चण्डोग्र शूलपाणिं, सर्वार्थ सिद्धि प्रदम्।।

यंत्र एवं मुद्रिका का पुष्प, सिन्दूर, धूप, दीप, नैवेद्य से पंचोपचार पूजन कर निम्न कर न्यास एवं अंग न्यास करें –

ॐ ह्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः।
ॐ ह्रीं	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा।
ॐ ह्रूं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्।
ॐ ह्रैं	अनामिकाभ्यां हुं	कवचाय हुं।
ॐ ह्रौं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र त्रयाय वौषट्।
ॐ ह्रः	करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्।

फिर '**चण्डोग्र माला**' से एक माला गुरु मंत्र का जप कर उसी माला से निम्न मंत्र का 51 माला मंत्र जप करें –

मंत्र

।।ॐ ह्रां ह्रीं चण्डोग्राय शिवाय ॐ फट्।।

OM HRAM HREEM CHANDOGRAYA SHIVAYA PHAT

यह छोटा सा दिखने वाला मंत्र अत्यधिक तेजस्वी एवं ब्रह्माण्ड की समस्त ऊष्मा अपने अन्दर समेटे हुए है। अतः साधक को यदि तीव्र ज्वर एवं शरीर टूटने का एहसास हो, तो वह घबराये नहीं, साधना में संलग्न रहे।

यह साधना सफल होते ही व्यक्ति अपने अन्दर प्रचण्ड शक्ति का अनुभव करता है, अधिकारी भी उसकी हर बात को सिर-आंखों पर रखते हैं। वह तीव्र सम्मोहन से युक्त हो सभी प्रकार के ऐश्वर्य एवं सुख को सहज ही प्राप्त कर लेता है और समाज में उसकी पूर्ण प्रतिष्ठा होती है। साधना पूरी होने के बाद यंत्र,मुद्रिका तथा माला को नदी में प्रवाहित करें।

चण्डोग्र शूलपाणि एक ऐसी तीव्र साधना है, जिसे गुरु केवल हिम्मतवान, निडर एवं तेजस्वी शिष्यों को ही देते हैं, जिनसे उनको बहुत आशा होती है, जिन पर उन्हें गर्व होता है और यह विश्वास होता है, कि वे इस प्रचण्ड शक्ति को पचा सकेंगे, आत्मसात कर सकेंगे।

पूज्य गुरुदेव की कृपा से यह साधना रूपी हीरक खण्ड प्राप्त हो सका, शायद उनकी नजर में हम सब उस भावभूमि पर खड़े हो चुके हैं, जहां से उग्र साधनाओं का प्रारम्भ होता है . . . अब तो मात्र आगे बढ़ कर चण्डोग्र शूलपाणि को अपने अन्दर लीन करना मात्र ही शेष है।

न्यौछावर – 270/–

राई, नमक तथा रुद्राक्ष से निम्न मंत्र की 108 आहुतियां देने से शत्रु बाधा दूर होती ही है –

मंत्र ॐ ह्रौं जूं ॐ

OM HOUM JOOM OM

दक्षिणाभिमुख हो कर लाल वस्त्र धारण कर रात्रि के प्रथम प्रहर में ये आहुतियां दें। यह प्रयोग किसी भी शनिवार को सम्पन्न कर सकते हैं।

न्यौछावर (108 मधुरूपेण रुद्राक्ष) – 300/–

यदि हमें अवसर मिलता

– यह वाक्य अक्सर लोगों के द्वारा सुनने को मिल जाता है।

वे कहते हैं –

यदि हमें अवसर मिला होता, तो आज हम यह कर लेते, आज हम वह बन जाते, आज हमारी यह स्थिति नहीं होती। तुम क्या जानो, मुझमें कितनी योग्यता है, कितनी क्षमता है, लेकिन दुर्भाग्य से हमें अवसर ही नहीं प्राप्त हो पाया।

यथार्थ में देखा जाय, तो यह कहना उचित और न्यायसंगत नहीं है। इन वाक्यों के द्वारा हम केवल अपनी अकर्मण्यता को छिपाने का प्रयास ही करते हैं, अपनी कायरता को छिपाने के लिए ढाल के रूप में ही इन शब्दों का प्रयोग करते हैं। अवसर तो सदैव से हमारे जीवन में आते ही रहते हैं, लेकिन हम उन्हें पहिचान नहीं पाते, उनका उपयोग नहीं कर पाते और बाद में पश्चाताप करते रहते हैं, अपना दोष दूसरों पर मढ़ते रहते हैं।

इसका मूल कारण यही है, कि हम अपने ऋषियों की, अपने पूर्वजों की गौरवशाली परम्पराओं को भूल कर अंधी भौतिकता की दौड़ में उलझे रहे, वासनात्मक जगत में लिप्त रहे। हमने कभी अपनी प्राचीन विद्याओं को जानने और जीवन में उतारने का प्रयत्न ही नहीं किया। फलतः हम उस पौरुष से अनभिज्ञ रहे, जिसके द्वारा विश्वामित्र ने लक्ष्मी को अपने घर में कैद कर लिया था, एक नई सृष्टि का निर्माण प्रारम्भ कर दिया था, जिसके बल पर शंकराचार्य ने एक गरीब ब्राह्मणी के घर स्वर्ण वर्षा करा दी थी।

इन शब्दों को कहना हमारी लिजलिजी मानसिकता का ही प्रतीक है।

सम्पूर्ण विश्व को इस मानसिकता से मुक्त करने का ही एक छोटा सा प्रयास यह पत्रिका अपने पन्नों के माध्यम से सम्पन्न कर रही है, जिससे कि हम स्वशक्ति से युक्त हो सकें, हम स्वयं अपने भाग्य का निर्माण कर सकें और अपने महान ऋषियों के गौरवशाली पथ का अनुसरण कर सम्पूर्णता, श्रेष्ठता व अद्वितीयता को प्राप्त कर सकें और पूरी दुनिया को दिखा सकें, कि हमारे पूर्वज कितने श्रेष्ठ, कितने बड़े वैज्ञानिक हैं और उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त कितने उच्चकोटि के हैं।

मौत तो प्रतिक्षण सड़कों पर दौड़ती है, परन्तु आप या आपके परिवार का कोई सदस्य अथवा पुत्र-पुत्री अकाल मृत्यु को प्राप्त नहीं हो सकता है

महामृत्युञ्जय विधान

महामृत्युञ्जय-विधान मंत्र शास्त्र में क्रान्तिकारी मंत्र तथा आश्चर्यजनक फलदायक प्रयोग है। बीमारियों, शिशुरोगों तथा बालघात जैसे रोगों से निराकरण पाने व पूर्ण आयु प्राप्त करने के लिए यह श्रेष्ठतम अनुष्ठान है।

भारत में ही नहीं, विदेशों में भी 'महामृत्युञ्जय' की चर्चा रही है। प्रत्येक बालक, रोगी या अकाल मृत्यु से भयभीत व्यक्ति को महामृत्युञ्जय पूजन अवश्य कर लेना चाहिए।

साधकों के लाभार्थ यह गोपनीय विधान आगे के पन्नों पर प्रस्तुत है —

महामृत्युञ्जय विधान या अनुष्ठान अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण और श्रेष्ठतम कहा गया है। इस अनुष्ठान में अकाल मृत्यु को समाप्त करने का श्रेष्ठ भाव है और जिस व्यक्ति के जीवन में अकाल मृत्य या बालघात योग हो, उसके लिए महामृत्युञ्जय विधान सर्वश्रेष्ठ है।

महामृत्युञ्जय मंत्र अपने आप में अत्यन्त ही श्रेष्ठ और प्रभावयुक्त है तथा उच्च स्तर के साधकों ने भी इस बात को स्वीकार किया है, कि यह मंत्र अपने आप में महत्त्वपूर्ण और काल पर विजय प्राप्त करने में सक्षम है।

इस अनुष्ठान से सम्बन्धित विधि प्रस्तुत है, जिससे कि पाठक इससे लाभ उठा सकें —

अनुष्ठान में कुछ तथ्यों का ध्यान रखना आवश्यक है। अनुष्ठान एक ऐसी साधना प्रक्रिया है, जो कठिन कार्यों को सरल बनाने के साथ-साथ विशेष शक्ति का उपार्जन करती है। अनुष्ठान तीन प्रकार के होते हैं —

लघु अनुष्ठान, जो चौबीस हजार मंत्र का होता है और इसके बाद 240 आहुतियों का पुरश्चरण किया जाता है।

मध्यम अनुष्ठान सवा लाख मंत्र जप का होता है, जिसमें 1250 आहुतियां दी जाती हैं।

महापुरश्चरण या महानुष्ठान चौबीस लाख मंत्र जप का होता है और इसके दसवें हिस्से की आहुतियां दी जाती हैं।

लघु अनुष्ठान को नौ दिन में 27 माला प्रतिदिन के हिसाब से, मध्यम अनुष्ठान 40 दिन में 33 माला प्रतिदिन के हिसाब से तथा महानुष्ठान एक वर्ष में 66 माला प्रतिदिन के हिसाब से जप करके सम्पन्न किया जाता है।

साधना काल में निम्न तथ्यों का ध्यान रखना चाहिए —

1. अनुष्ठान शुभ दिन और शुभ मुहूर्त्त देखकर करना चाहिए।
2. इस अनुष्ठान को प्रारम्भ करते समय सामने भगवान शंकर का चित्र स्थापित करना चाहिए और साथ ही साथ शक्ति की भावना भी रखनी चाहिए।
3. जहां जप करें, वहां का वातावरण सात्विक हो तथा नित्य पूर्व दिशा की ओर मुंह करके साधना या मंत्र जप प्रारम्भ करना चाहिए।
4. जप करते समय लगातार घी का दीपक जलते रहना चाहिए।
5. इसमें रुद्राक्ष की माला का प्रयोग करना चाहिए तथा ऊन का आसन बिछाना चाहिए।
6. पूरे साधना काल में ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए।
7. साधना काल में चेहरे के या सिर के बाल नहीं कटाने चाहिए।
8. यथाशक्ति एक समय भोजन करना चाहिए।
9. अनुष्ठान करने से पूर्व मंत्र को संस्कारित करके

ही पुरश्चरण करना चाहिए।

10. नित्य निश्चित संख्या में मंत्र जप करना चाहिए, कभी कम, कभी अधिक करना ठीक नहीं है।

11. शास्त्रों के अनुसार भय से छुटकारा पाने के लिए इस मंत्र का 1,100 जप, रोगों से छुटकारा पाने के लिए 11,000 मंत्र जप तथा पुत्र प्राप्ति, उन्नति एवं अकाल मृत्यु से छुटकारा पाने के लिए 1,00,000 मंत्र जप का विधान है।

धर्म शास्त्रों में मंत्र शक्ति से रोग निवारण एवं मृत्यु भय दूर करने तथा अकाल मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की जितनी साधनाएं उपलब्ध हैं, उनमें महामृत्युञ्जय साधना का स्थान सर्वोच्च है। हजारों-लाखों साधकों ने इस साधना से फल प्राप्त किया है। कोई भी साधक पूर्ण श्रद्धा और विश्वास से इस साधना को करता है, तो निश्चय ही वह सफलता प्राप्त करता है।

इसका सामान्य प्रचलित मंत्र निम्नलिखित है, परन्तु साधक के लिए बीज युक्त मंत्र का जप करना ही अधिक श्रेयष्कर होता है —

मंत्र

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

(ऋ. 7-59-12, यजुर्वेद 3-60)

अर्थात् 'हम तीन नेत्रों वाले ईश्वर की उपासना करते हैं, मैं सुगन्धियुक्त और पुष्टि प्रदान करने वाले 'उर्वारुक' की तरह मृत्यु के बन्धन से मुक्त हो जाऊं।

साधना विधान

साधक को शुभ मुहूर्त में प्रातः उठकर स्नान आदि से निवृत्त होने के उपरान्त अपने सामने लकड़ी के बाजोट पर 'शिव यंत्र' को स्थापित कर गुरु-स्मरण, गणेश-स्मरण, शंकर-पूजन आदि सम्पन्न करने के बाद निम्न प्रकार से संकल्प करना चाहिए —
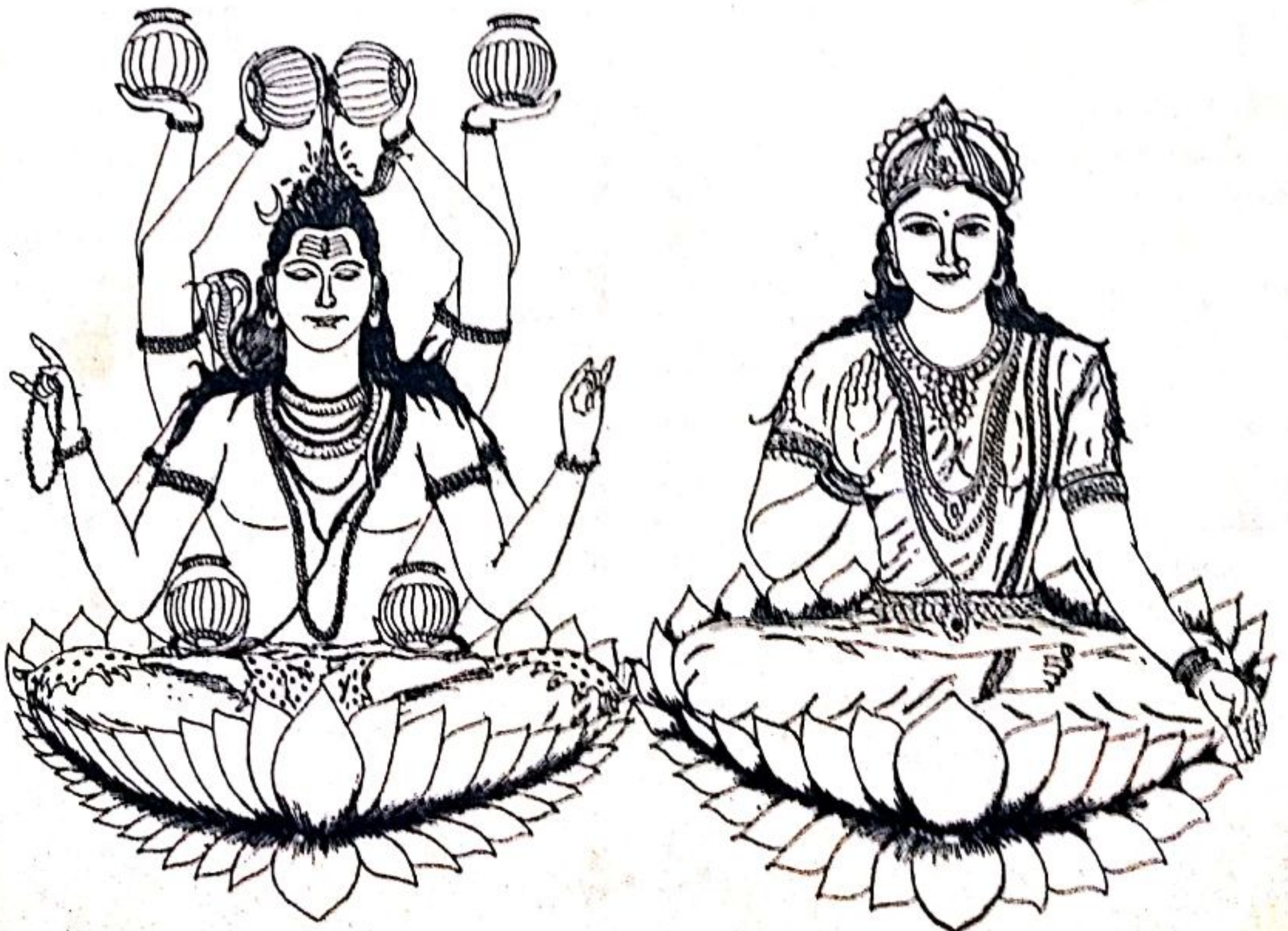
संकल्प

ॐ मम आत्मनः श्रुति स्मृतिपुराणोक्त फलप्राप्त्यर्थं अमुक यजमानस्य वा शरीरेऽमुकपीडा

निराशद्वारा सद्यः आरोग्यप्राप्त्यर्थ श्रीमहामृत्युञ्जय देवता प्रीतये अमुकसंख्या परिमितं श्री महामृत्युञ्जयमंत्रजपमहं करिष्ये।

विनियोग

हाथ में जल लेकर इस प्रकार पाठ करें —

ॐ अस्य श्रीमहामृत्युञ्जयमन्त्रस्य वामदेव कहोलवशिष्ठ ऋषयः पंक्तिगायत्र्युष्णिगनुष्टप् छन्दांसि सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रो देवता, ह्रीं शक्तिः, श्रीं बीजं, महामृत्युञ्जयप्रीतये ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

उच्चारण के बाद हाथ में लिया जल भूमि पर छोड़ दें।

ऋष्यादिन्यास

निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए क्रमशः सिर, मुख, हृदय, लिंग और चरणों का स्पर्श करते हुए न्यास करें —

वामदेवकहोलवशिष्ठऋषिभ्यो नमः मूर्ध्नि।
पंक्तिगायत्र्युष्टुप्छन्दोभ्यो नमः मुखे।
सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्र देवतायै नमः हृदि।
ह्रीं शक्तये नमः लिंगे।
श्रींबीजाय नमः पादयोः।

करन्यास

ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा अंगुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्त्तये मां जीवय बद्ध तर्ज्जनीभ्यां नमः।

ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम् ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा मध्यमाभ्यां नमः।

अमोघ सदाशिव कवच

विश्व में कई ऐसे मंत्र, यंत्र स्तोत्र एवं कवच हैं, जो गोपनीय तथा दुर्लभ हैं। **'अमोघ सदाशिव कवच'** भी ऐसा ही दुर्लभ कवच है, जो कलियुग में तुरन्त फलदायक है। वे साधक भाग्यशाली कहलाते हैं, जिनके पास ऐसा कवच है और वह तो निश्चय ही 'शिववत्' है जो नित्य इस कवच का पाठ करता है। प्रस्तुत है एक दुर्लभ गोपनीय कवच अमोघ सदाशिव कवच ....

भगवान शंकर देवताओं में सर्वश्रेष्ठ मृत्यु और परेशानियों, बाधाओं तथा कष्टों का निवारण करने वाले हैं। अमोघ कवच के बारे में यह प्रचलित है, कि गुरु अपनी मृत्यु के समय केवल मात्र अपने प्रिय उत्ताधिकारी शिष्य को ही यह शिव कवच बताते थे, क्योंकि यह कवच समस्त प्रकार की बाधाओं को पूर्णतः दूर करने में सहायक है।

सबसे बड़ी बात यह है, कि यह कवच स्वयं ही मंत्र सिद्ध है और इस कवच को सिद्ध करने की जरूरत नहीं है। जिसके घर में एक बार इस कवच का पाठ हो जाता है, उसके घर में भूत-प्रेत, बीमारी और मृत्यु भय आदि की सम्भावनाएं नहीं रहतीं।

कवच का तात्पर्य रक्षा है, इसे पढ़ने से या इसके जप से मनुष्य विपत्ति से छूट जाता है और वह समस्त संकटों से मुक्त होकर अभय प्राप्त कर लेता है।

यद्यपि संस्कृत साहित्य में सैंकड़ों कवच प्रचलित हैं परन्तु अमोघ सदा शिव कवच कठिन ही नहीं अपितु दुर्लभ भी है। मुझे यह कवच भगवान **'स्वरूप स्वामी बोधत्रय जी'** से प्राप्त हुआ था। उनके अनुसार यह पवित्र कवच सभी प्रकार के पापों को दूर करने वाला और सभी विपत्तियों से पीछा छुड़ाने वाला है। यह पूर्व जीवन के तथा इस जीवन के पापों से मुक्त करता है, इसके प्रभाव से अकाल मृत्यु नहीं होती और घर में किसी प्रकार की बीमारी और कष्ट नहीं व्याप्त होता।

मैंने स्वयं इस कवच का कई जगह प्रयोग किया है, और देखा है, कि इसका प्रभाव तुरन्त और अचूक होता है। व्यापारी तथा नौकरीपेशा गृहस्थ एवं योगी सभी के लिए यह समान रूप से उपयोगी है। मेरे एक शिष्य प्रकाश भाई ने तो इस कवच के पन्ने छपवाकर साल भर तक वितरित किये थे, क्योंकि उनके एक मात्र पुत्र को कैंसर हो गया था और सभी डाक्टर्स ने पूरी तरह से हाथ झटक दिया था, तब मैंने उसको निरन्तर इस कवच का पाठ करने को कहा था। जब डॉक्टर्स ने कहा था, कि यह बालक ज्यादा से ज्यादा 24 घंटे मुश्किल से

निकाल सकता है, तब उन सज्जन ने बालक की खाट के पास बैठकर निरन्तर इस कवच का पाठ प्रारम्भ कर दिया था और दूसरे दिन से ही बालक स्वस्थ होने लगा था।

आज वही बालक धनबाद में व्यापार करता है। वह कैंसर जैसे भयानक रोग से मुक्त हो गया है, यह इस कवच की कृपा और प्रभाव नहीं तो और क्या है?

अमोघ सदाशिव कवच के बारे में जानकारी —

यह सहस्राक्षर मंत्र है, जो संसार भर के मंत्र साहित्य में अपनी तुलना नहीं रखता, परस्पर शब्दों का संयोजन इस प्रकार से है, कि इससे एक विशेष प्रभाव बनता है, जिससे यह तुरन्त ही अचूक लाभ देने में समर्थ हो पाता है।

साधक को या गृहस्थ को नित्य प्रातः इसका पाठ करना चाहिये। यदि पूजा स्थान में शंकर का चित्र हो, तो ज्यादा उचित है। शुद्ध स्थान में नियम पूर्वक आसन लगाकर साधक को पूर्ण श्रद्धा के साथ इस कवच का पाठ करना चाहिए। इसकी भाषा ऐसी ओजस्वी, गौरवशाली, भावपूर्ण,

ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिव वन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रीं ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः

ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः साममन्त्रेभ्यो कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास

ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकम् ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा हृदयाय नमः।

ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवय शिरसे स्वाहा।

ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिंपुष्टिवर्धनम् ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा शिखायै वषट्।

ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रीं कवचाय हुं।

ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुदाय त्रिलोचनाय ऋग्यजुस्साममन्त्राय नेत्रत्रयाय वौषट्।

→ उत्कृष्ट एवं चमत्कारी है, कि आप पढ़ते-पढ़ते तल्लीन हो जायेंगे, इसके प्रवाह में आप बहते चले जायेंगे, इसका प्रभाव जादू के समान होता है।

ऋषि — इस मंत्र के ऋषि योगीश्वर ऋषभ हैं।

छन्द — इसका छन्द अनुष्टुप है।

देवता — इस मंत्र का देवता स्वयं सदाशिव रुद्र हैं।

बीज — इस मंत्र का बीज 'ह्रां' हैं, बीज उसे कहते हैं, जिससे स्त्रोत का उदय होता है।

शक्ति — इसकी शक्ति 'ह्रीं' है। शक्ति वह कही जाती है, जो साधक को निर्दिष्ट ध्येय तक पहुंचाने के लिए साधक के अन्दर बल का संचार करती है।

कीलक — इसका कीलक 'ह्रूं' है, कीलक वह है जो इस शक्ति को निर्दिष्ट ध्येय तक पहुंचने में सुदृढ़ रखता है।

प्रयोजन — इस मंत्र का प्रयोजन सदाशिव को प्रसन्न करना है।

दिग्बन्ध — इसका दिग्बन्ध 'ॐ भूर्भुवः स्वः' है। दिग्बन्ध का तात्पर्य चारों दिशाओं को बांधना होता है, जिससे कि शरीर सुरक्षित रहे, और मंत्र जप में शरीर पर कोई विपरीत प्रभाव न पड़े।

सहस्राक्षर अमोघ कवच

ॐ नमो भगवते सदाशिवाय सकलतत्वात्मकाय सर्वमन्त्रस्वरूपाय सर्वयन्त्राधिष्ठिताय सर्वतन्त्र स्वरूपाय सर्वतत्वविदूराय ब्रह्मारूद्रावतारिणे नीलकण्ठय पार्वती मनोहरप्रियाय सोमसूर्याग्निलोचनाय भस्माद्धू लितविग्रहाय महामणिमुकुटधारणाय माणिक्यभूषणाय सृष्टिस्थिति प्रलयकालरौद्रावताराय दक्षाध्वरध्वंसकाय महाकलभेदनाय मूलाधारैकतिलकाय तत्त्वातीताय गङ्गाधराय सर्वदेवाधिदेवाय षडाश्रयाय वेदान्तसाराय त्रिवर्गसाधनायानेक कोटि ब्रह्माण्डनायकायानन्तवासुकि तक्षक-कोंटकशंखकुलिकपद्म महापदमेत्यष्टनागकुलभूषणाय प्रणवस्वरूपाय चिदाकाशायाका शदिवस्वरूपाय ग्रहनक्षत्रमालिने सकलाय कलंकर हिताय सकललोकैककर्त्रै सकललोकैंकसाक्षिणी सकलनिमगुह्याय सकलवेदान्तपारगाय सकललोकैंकवरप्रदाय सकललोकैंकशंकराय शशांकशेखराय शाश्वतनिजवासाय निराभासाय निरामयाय निर्मलाय निर्लोभाय निर्मोहाय निर्मदाय निश्चिन्ताय निरंकाराय निराकुलाय निष्कलंकाय निर्गुणाय निष्कामाय निरूपप्लावाय निरवद्याय निरन्तराय निष्कारणाय निरातकाय निष्प्रपंचाय निःसंगाय निर्द्वन्द्वाय निराधाराय निरोगाय निष्क्रोधाय निर्गमाय निष्पापाय निर्भयाय निर्विकल्पाय निर्भेदाय निष्क्रियाय निस्तुलाय निःसंशयाय निरंजनाय निरूपमपिभवाय नित्यशुद्धबुद्धपरिपूर्ण सच्चिदानन्दाद्वयाय परमशान्त स्वरूपाय तेजोरूपाय तेजोमयाय जय जय रुद्र महारौद्र भद्रावतार महाभैरव कालभैरव कल्पन्तभैरव कपालमालाधर खट्वांगखड्ग चर्मपाशंकुशडमरूकर त्रिशूलचापबाण गदा शक्ति भिन्दपालतोम मुसलमुद्गर पाशपरिघभुशुण्डीशतघ्नो चक्राद्यायुध भीषण कर सहस्रमुख दंष्ट्राकरालवदन विकटाट्टहासविस्फारित ब्रह्माण्ड मण्डल नागेन्द्रकुण्डल नागेन्द्रहार नागेन्द्रवलय नागेन्द्रचर्मधर मृत्युञ्जय त्र्यम्बक त्रिपुरान्तक विश्व रूप विरुपाक्ष विश्वेश्वर वृषभवाहन विश्वतोमुख सर्वतो रक्ष रक्ष मां ज्वल ज्वल महामृत्युभयं नाशय नाशय चोर भयमुत्सादयोत्पादय विष सर्प भयं शमय शमय चौरान्मारय मारय मम शत्रुनुच्चाटयोच्चाटय त्रिशूलेन विदारय विदारय कुठरेण भिन्धि भिन्धि खंगेन छिन्धि छिन्धि खट्वांगेन विपोथय विपोथय मुसलेन निष्पेषय निष्पेषय बाणैः सन्ताडय सन्ताडय रक्षांसि भीषय भीषयाशेषभूतानि विद्रावय विद्रावय कूष्माण्डवेताल मारीच ब्रह्मराक्षस गणान् संत्रासय संत्रासय मामभयं कुरु कुरु वित्रस्त मामा श्वासयाश्वासय नरकभयान्मा मुद्धरोद्धर सञ्जीसय सञ्जीवय क्षुतृभ्यां मामाप्याययाप्यायय दुःखतुरं मामानन्दयानन्दय शिवकवचेन मामाच्छादयाच्छादय मृत्युञ्जय त्र्यंबक सदशिव नमस्ते नमस्ते।

वस्तुतः इस कवच की जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है। यदि आप पर किसी भी प्रकार का संकट आया हो या आप अत्यधिक मानसिक परेशानी में हो, स्वयं केवल एक बार इसका पाठ करके देखिये, आप अनुभव करने लगेंगे, कि वास्तव में ही यह कवच सर्वश्रेष्ठ, और शिव के कवचों में अजेय है।

ॐ ह्रीं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय फट्।

पद न्यास

त्र्यम्बकं शिरसि। यजा महे भ्रुवौ। सुगन्धिनेत्रयोः। पुष्टिवर्धनं मुखे। उर्वारुकं गण्डयोः इव हृदये। बन्धनात् जठरे। मृत्यो लिंगे। मुक्षीय ऊर्वौ। मा जान्वोः। अमृतात् पादयोः।

ध्यान

फिर हाथ जोड़ कर भगवान शंकर का ध्यान करें —

हस्ताम्भोजयुगस्थकुम्भयुगला दुद्धत्य तोयं शिरः,
सिञ्चन्तं करयोर्युगेन दधतं स्वांके सकुम्भौ करौ।
अक्षस्रङ्गमृगहस्तमम्बुगतं मूर्द्धस्थचन्द्रस्रवत;
पीयूषार्द्रतनुं भजे सगिरिजंत्र्यम्बकं च मृत्युञ्जयम्।।

(सती खं. 38-24)

अर्थात् 'मृत्युञ्जय के आठ हाथ दृष्टिगोचर हो रहे हैं। ऊपर के दो हाथों से दो कलश उठाये हुए हैं और नीचे वाले दो हाथों से वे सिर पर जल डाल रहे हैं। सबसे नीचे वाले दो हाथों में भी वे दो कलश लिए हुए हैं जिन्हें अपने गोद में रखा हुआ है। सातवें हाथ में रुद्राक्ष और आठवें में मृग धारण कर रखा है, उनका आसन कमल का है, उनके सिर पर स्थित चन्द्रमा निरन्तर अमृत वर्षा कर रहा है, जिससे शरीर भीग गया है, वे त्रिनेत्र युक्त हैं और उन्होंने मृत्यु पर विजय प्राप्त कर ली है, उनके बांयीं ओर भगवती गिरिजा विराजमान हैं।

जप

ध्यान के बाद महामृत्युञ्जय का जप करना चाहिए। मंत्र का स्वरूप इस तरह है —

।।ॐ ह्रौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं ॐ ह्रौं ॐ।।

Om Houm Om Joom Sah Om Bhoorbhuvah Swah
Trayambkam Yajamahe Sugandhim
Pustivardhanam Urvarukmiv
Bandhananmrituyormukshiya Mamritat Swah
Bhuvah Bhuh Om Sah Joom Om Houm Om

यह सम्पुट युक्त मंत्र है। इसका अनुष्ठान सवा लाख मंत्र जप का माना जाता है । जप का दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन और ब्राह्मण भोजन आदि करना चाहिए। जप **रुद्राक्ष की माला** से करना चाहिए।

यह रोग-निवारण तथा अकाल मृत्यु निवारण का अचूक विधान माना जाता है तथा हजारों साधकों का अनुभूत है। कोई भी व्यक्ति श्रद्धापूर्वक इसे अपनाकर अभीष्ट लाभ प्राप्त कर सकता है।

लघु मृत्युञ्जय मंत्र

।। ॐ जूं सः (नाम जिसके लिए अनुष्ठान किया जा रहा हो) *पालय पालय सः जूं ॐ।।*

Om Joom Sah (name) Palay Palay Sah Joom Om

इसका पूर्ण अनुष्ठान 11 लाख मंत्र जप का है, जिसका दशांश हवन करना चाहिए। शास्त्र में इसे सर्वरोग निवारक कहा गया है —

मृत्युञ्जय! महारुद्र! त्राहि मां शरणागतम्।
जन्ममृत्युजरारोगैः पीड़ितं कर्मबन्धनात्।।

मंत्र जप

यदि कोई साधक केवल मंत्र जप करना चाहे, उसके लिए लघु मृत्युञ्जय मंत्र इस प्रकार है —

।। ॐ जूं सः सः जूं ॐ।।

Om Joom Sah Sah Joom Om

लघुत्तम मंत्र

महामृत्युञ्जय का लघुत्तम मंत्र इस प्रकार है —

।। ॐ जूं सः।।

Om Joom Sah

बलिदान मंत्र

अनुष्ठान पूर्ण होने पर निम्न मंत्र से भगवान् मृत्युञ्जय को 'जायफल' समर्पित करना चाहिए —

।। ॐ ह्रौं ह्रीं जूं सः नमः शिवाय प्रसन्न पारिजाताय स्वाहा।।

अनुष्ठान पूर्ण होने के पश्चात् शिव यंत्र तथा माला को नदी में प्रवाहित अवश्य करें।

वस्तुतः महामृत्युञ्जय विधान मृत्यु पर विजय प्राप्त करने का अद्भुत उपाय है, जो साधक स्वयं न कर सकें, उनको चाहिये, कि किसी योग्य ब्राह्मण से यह अनुष्ठान सम्पन्न करावें। यों भी आज के इस घात-प्रतिघात भरे युग में प्रत्येक व्यक्ति को अग्रिम रक्षार्थ 'महामृत्युञ्जय पूजन' सम्पन्न कर ही लेना चाहिए।

यह लेख सन् 1981 के में प्रकाशित किया गया था, जिसमें बहुसंख्यक साधकों को सफलता भी प्राप्त हुई थी। उसी लेख का पुनर्प्रकाशन किया जा रहा है, जिसकी साधना सामग्री आप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं। आप केवल दो पत्रिका सदस्य बनायें (जो आपके परिवार के सदस्य न हों) और संलग्न पोस्टकार्ड भर कर हमें भेज दें।

हम 423/- (दो पत्रिका सदस्यता शुल्क 195/- + 195/- = 390/- + डाक व्यय 33/- = 423/-) की वी०पी०पी० से मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त 'शिव यंत्र' तथा 'रुद्राक्ष माला' भेज देंगे और आपके दोनों परिचितों को नियमित पूरे वर्ष पर्यन्त पत्रिका भेजते रहेंगे।

22.11.97

बहुत संभाल कर कदम उठाते हैं आप अपने घर को सुचारू
रूप में गतिशिल करने के लिए
फिर भी अनायास हो जाता है – कलह और मतभेद,
जायदाद का बटवारा और अनेक तरह की धमकियां,
– ये ऐसे कारण हैं,
जो आपके मानसिक सुख-चैन को छीन लेते हैं
इन समस्याओं का समाधान है–

कंकाल

भैरव की रम्य स्थली श्मशान! जगह-जगह चितायें जल रही थीं। चड़ड़-चड़ड़ की ध्वनि के साथ मृत मानवों के चर्म, मांस-मज्जा जल कर वातावरण को एक विचित्र गंध से भर रहे थे। चारों ओर व्याप्त भय जनक शब्द कठोर हृदय मानव को भी दहला देने में समर्थ थे। भारी पंखों से वृक्षों पर फड़फड़ाते गिद्ध मांस के टुकड़ों की प्रतीक्षा में थे और चिता से उठती धूम्र की अंतिम लपट शून्य में विलीन होती हुई मानों कह रही थी – बस! इस मृतक का जो शेष रह गया है, उसे लेकर मैं ऊपर आकाश तत्त्व में मिलाने जा रही हूं . . . किसी के लिए वीभत्स, तो किसी के लिए अपूर्व शान्तिदायक दृश्य।

मन्द चलती वायु एक क्षण के लिए रुकी, ज्यों प्रकृति की ही श्वास थम गई हो। अचानक एक ओर से आंधी का प्रचण्ड झोंका उड़ता चला आया। आकाशीय विद्युत के प्रकाश में अनेक हिंस्र पशुओं का उपद्रव शुरु हो गया। पास ही एक वृक्ष जड़ से उखड़ कर गिर पड़ा। कोलाहल मच गया, सैकड़ों पक्षियों के साथ-साथ अनेक भटकती आत्माओं की प्रिय स्थली वह वृक्ष, जिसकी उभरी जड़ों पर बैठ मैं नित्य जाह्नवी का सौन्दर्य निहारा करता था, शव के समान धराशायी पड़ा था।

बीज मंत्र का जप निरन्तर जारी था, एक क्षण के लिये भी मैंने आत्मसंयम नहीं खोया था। अविचलित भाव से मैं साधना के अंतिम चरण की

पूर्णाहुति में लीन था। एक ही भावना, एक ही लगन थी कि किसी भी कीमत पर **'कंकाल भैरव'** को सामने उपस्थित करना ही है। चाहे प्रकृति कितनी भी परीक्षा ले, भले ही यह देह समाप्त हो जाय, परन्तु यदि अब प्रत्यक्षीकरण नहीं हुआ, तो मेरा साधक होना ही व्यर्थ है, बेमानी है। अपने गुरु का इतना बड़ा अपमान असह्य है मेरे लिये, कितनी प्रार्थना के बाद उन्होंने मुझे अनुमति प्रदान की थी इस तीक्ष्ण साधना के लिए।

मन्द चलती वायु एक क्षण के लिए रुकी, ज्यों प्रकृति की ही श्वास थम गई हो। अचानक एक ओर से आंधी का प्रचण्ड झोंका उड़ता चला आया। आकाशीय विद्युत के प्रकाश में अनेक हिंस्र पशुओं का उपद्रव शुरु हो गया। पास ही एक वृक्ष जड़ से उखड़ कर गिर पड़ा। कोलाहल मच गया, सैकड़ों पक्षियों के साथ-साथ अनेक भटकती आत्माओं की प्रिय स्थली वह वृक्ष, जिसकी उभरी जड़ों पर बैठ मैं नित्य जाह्नवी का सौन्दर्य निहारा करता था, शव के समान धराशायी पड़ा था।

वर्षों से मुझे वे इसका अद्वितीय साधक बनाने की प्रक्रिया कर रहे थे। उन्होंने परम दुर्लभ 'कंकाल भैरव दीक्षा' प्रदान कर मेरे एक-एक अणु को चैतन्य करने, उसे शक्तिमान बनाने की क्रिया की है। भला असफल या अपूर्ण कैसे हो सकती है मेरे सर्वसमर्थ गुरु द्वारा दी गयी अनुपम दीक्षा और उनके द्वारा बताया गया यह अद्भुत प्रयोग।

अब तो पूर्ण क्षमता के साथ कंकाल भैरव जैसे प्रचण्ड पुरुष को अपने वशीभूत करना ही है, साक्षात् अपनी देह में उतार कर ही गुरु चरणों को स्पर्श करूंगा। विजय की आकांक्षा से विद्युत सी दौड़ गई मेरे सुदृढ़ शरीर में और विशिष्ट रक्षा मंत्र का उच्चारण कर सरसों के दाने आंधी की दिशा में उछाल दिये . . .

वातावरण साफ होता चला गया। पृथ्वी का कम्पन, आकाश की गड़गड़ाहट और पवन का वेग स्वतः ही शान्त हो गये थे। तीव्र मंत्रों के घोष और आग्नेय नेत्रों से निःसृत लपटों के सामने हवन कुण्ड की अग्नि भी मंद पड़ गयी थी। आह्वान मंत्रों

के साथ प्रत्येक आहुति देते हुए इष्ट दर्शन की मेरी आतुरता बढ़ती जा रही थी –

अभीरु भैरवानाथे भूतयो योगिनी पतिः।
शूलपणि खड्गपाणि कंकाली धूमलोचनः।।
त्रिनेत्रो बहुनेत्रश्च तथा पिंगललोचनः।
कंकाल कालशमनः कलाकाष्ठानुः कविः।।
रक्ततः पानपः सिद्धः सिद्धिः सिद्धसेवितः।
श्मशनवासी मांसाशी श्वर्पराशी स्मरान्तकः।।

भोर के पहले एक अपूर्व प्रकाश श्मशान में फैल गया। चारों ओर से अपूर्व सुगन्ध आने लगी। अचानक एक बलिष्ठ कृष्णवर्णीय श्वान प्रकट हुआ और भोग का लड्डू उठा कर तीव्र गति से भाग गया। मुझे स्मरण था, कि उच्चकोटि के इष्ट अपने साक्षात् दर्शन से पूर्व अपने किसी गण को भेजा करते हैं और श्वान तो भैरव का वाहन ही है . . . मैं बिना विचलित हुए यज्ञ कार्य में तल्लीन रहा।

अन्तिम आहुति . . . सारा वातावरण एकदम से कोलाहल पूर्ण हो उठा, सैकड़ों प्रकार की चीखें, हलचल और भगदड़, ज्यों कोई दैवी विपदा आ पड़ी हो। दूर बहती जाह्नवी में छटपटाहट कुछ और तीव्र हो गयी थी, पता नहीं वायु के वेग से अथवा उछल कर अघटित हो रही एक विलक्षण घटना का साक्षीभूत बनने के लिये . . .

. . . और तभी एक भीमकाय तेजपुञ्ज पुरुषाकृति साकार हो उठी, ऐसा लग रहा था मानो स्वयं काल ही पुरुष रूप धारण कर साकार हो गया हो। उसके आगमन के साथ ही उस निर्जन श्मशान में प्रचण्ड वेग से पवन प्रवाहित होने लगे, निकट अवस्थित शिलाखण्ड थर्राने लगे, देखते ही देखते सूर्य के समान तेजस्वी कंकाल भैरव के तेजस् ताप से सारा वातावरण झुलसने सा लगा, तीव्र ताप से आकुल मैं अभ्यर्थना के लिए झुका ही था, कि वह भीषण प्रचण्ड स्वरूप एक अत्यन्त शीतल सौम्य स्वरूप में परिवर्तित हो उठा, जिसका हाथ अभय मुद्रा में उठा हुआ था . . . कुछ ही क्षणों में वह दिव्य तेजपुञ्ज शून्य में विलीन हो गया।

मेरा अन्तर अपूर्व आनन्द से उद्भासित हो उठा। मेरी एकनिष्ठ उग्र साधना पूर्ण सफल हुई थी। मन ही मन मैं गुरुदेव के चरणों में बार-बार प्रणिपात कर उठा, जिनकी असीम अनुकम्पा के फलस्वरूप मैं भैरव के जाज्वल्यमान स्वरूप का प्रत्यक्ष दर्शन कर सका, उनका आशीर्वाद प्राप्त कर सका। मेरा रोम-रोम हर्षित हो रहा था, मेरे शरीर का एक-एक कण मानो कह रहा हो, कि आज मैंने एक अप्रतिम साधना प्रत्यक्ष कर स्वयं तो एक सिद्धि प्राप्त की ही है, एक दुर्लभ शक्ति को हस्तगत किया ही है, साथ ही आज मैंने अपने गुरु के गौरव को भी प्रवर्धित किया है।

भैरव साधना ही क्यों?

आज के युग में, जबकि बाधाएं पग-पग पर हों, व्यभिचार की प्रवृत्तियां सिर चढ़ कर बोलने लगी हों, तब भैरव साधना का प्रभाव स्वतः ही सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो गया है।

जिस प्रकार एक पवित्र स्थान के चारों ओर कांटों की बाड़ लगाई जाती है, कि उसे कोई अपवित्र न कर दे, उसी प्रकार अपने जीवन के श्रेष्ठ चिन्तन को, अपने पारिवारिक जीवन को सुरक्षित रखने के लिये इस प्रकार की तीक्ष्ण साधना की बाड़ अवश्य लगानी चाहिये, जिससे कि वह अपवित्र न हो सके।

घर में पितृ दोष हो, अनायास कलह होते रहते हों, कोई विशेष कारण न होने पर भी मतभेद हों, जायदाद के बंटवारे की स्थितियां बनती हों, हत्या आदि की धमकी मिल रही हो, मानसिक सुख-सन्तोष चला गया हो, भय और तनाव व्याप्त रहता हो या जीवन में किसी भी प्रकार की समस्या या बाधा आ गई हो, यदि व्यक्ति 'कंकाल भैरव' साधना सम्पन्न कर लेता है, तो उसी क्षण से उसे समाधान मिलना प्रारम्भ हो जाता है।

उच्चकोटि की साधनाओं में सिद्धियों का प्रश्न हो अथवा गृहस्थ जीवन की पूर्णता, भैरव साधना सम्पन्न किये बिना व्यक्ति न तो सामान्य जीवन में भय-बाधा रहित हो सकता है और न ही महाविद्या साधना सम्पन्न कर सकता है, क्योंकि प्रत्येक महाविद्या के एक विशिष्ट भैरव होते हैं, जिनको सिद्ध करने के पश्चात् ही साधक उच्चकोटि की महाविद्या

सारा वातावरण एकदम से कोलाहल पूर्ण हो उठा, सैकड़ों प्रकार की चीखें, हलचल और भगदड़, ज्यों कोई दैवी विपदा आ पड़ी हो। दूर बहती जाह्नवी में छटपटाहट कुछ और तीव्र हो गयी थी।

साधना में प्रवेश का अधिकारी समझा जाता है।

विशेष रूप से जो साधक तंत्र के क्षेत्र में जाना चाहते हैं, तीव्रता से बढ़ना चाहते हैं, समाजोपयोगी और प्रखर बनना चाहते हैं, उन्हें कंकाल भैरव साधना को अपने जीवन में उतारना ही पड़ेगा, अर्थात् शिवत्व से युक्त, क्रोध युक्त बनना ही पड़ेगा।

इस साधना के प्रथम दिवस से ही साधक को अपने आसपास एक ऐसी विलक्षण अनुभूति होने लगती है, जिससे वह कहीं भी बिना भय के आ जा सकता है तथा आत्मविश्वास से भरा रहने लगता है।

जो साधक मानसिक दौर्बल्य से पीड़ित हों या जिन्हें शत्रु भय अथवा अकारण भय बना रहता हो, उन्हें गुरु से अनुमति प्राप्त कर इस साधना को अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए।

'**कंकाल भैरव**' का स्वरूप मूलतः अत्यन्त उग्र और तीक्ष्ण है, पर विशेष साधनाओं के सहारे वे सौम्य रूप में भी सिद्ध किये जा सकते हैं। भगवान शिव के ही अंश होने के कारण वे शिव स्वरूप में अर्थात् शान्त स्वरूप में वरदायक भी हैं, भय के विनाशक हैं, सुरक्षा प्रदान करने वाले हैं और साथ ही साथ पूर्ण रूप से अमृतमय होते हुए साधक के बल-वीर्य का वर्धन करने वाले, उसकी पाप राशि को समाप्त करने वाले भी हैं।

कंकाल भैरव साधना का प्रस्तुत विधान अत्यन्त सौम्य व किसी भी तामसिक क्रिया-कलाप से सर्वथा शून्य है। इसके द्वारा गृहस्थ व्यक्ति भी उन सभी वरदानों को प्राप्त कर सकता है, जिसके लिए श्मशान के उग्र वातावरण में साधनाएं सम्पन्न करनी पड़ती हैं।

साधना विधान

कंकाल भैरव साधना के लिए यह अनिवार्य है, कि साधक '**कंकाल भैरव दीक्षा**' प्राप्त कर ले, क्योंकि इसके अभाव में उसके अंदर वह साहस और बल आ ही नहीं सकता, कि वह भैरव के प्रचण्ड, अत्यन्त तेजस्वी स्वरूप का दर्शन कर सके, उन्हें आत्मसात् कर सके। साथ ही कमजोर दिल वाले, वृद्ध या अशक्त व्यक्तियों को गुरुदेव की अनुमति प्राप्त करके ही इस तीक्ष्ण साधना में प्रवृत्त होना चाहिए। किसी भी कृष्ण पक्ष के रविवार की रात्रि में ग्यारह बजे के बाद या 22.11.97 को यह साधना आरम्भ की जा सकती है।

साधक स्नान कर काले वस्त्र धारण कर दक्षिण दिशा की ओर मुख करके ऊनी आसन पर बैठें। तेल का अखण्ड दीपक लगा लें। अपने सामने ताम्रपत्र में '**कंकाल भैरव यंत्र**' की स्थापना करें, जिसमें भैरव के समस्त 108 स्वरूपों को आबद्ध किया जाता है तथा आवरण पूजा, बलि आदि की आवश्यकता भी नहीं होती।

सर्वप्रथम गुरु पूजन व गुरु मंत्र का एक माला जप करें तथा साधना सफलता के लिए गुरुदेव से प्रार्थना करें। तदुपरान्त कंकाल भैरव के पूर्ण सात्विक स्वरूप का स्मरण कर, उनके आह्वान की प्रार्थना कर, लाल पुष्प तथा सिन्दूर यंत्र पर चढ़ाते हुए निम्नांकित ध्यान का उच्चारण करें —

ध्यान

उद्यद्-भास्कर - सन्निभं त्रिनयनं रक्तांग - राग स्रजम स्मेरास्य वरदं कपालभमयं शूलं दधानं करैः।
नील - ग्रीवमुदार भूषण - शतं शीतांशु - चूडोज्ज्वल् बन्धूकारुण - वाससं भय - हरं देवं सदा भावये।।

अब विशिष्ट '**कंकाल भैरव माला**' से मंत्र जप आरम्भ करें —

मंत्र

ॐ ऐं क्लां क्लीं क्लूं ह्रां ह्रीं ह्रूं सः वं ॐ

OM KLAM KLEEM KLOOM HRAM HREEM HROOM SAH VAM OM

नित्य 11 माला मंत्र जप करने के उपरान्त सामने चढ़े हुए गुड़ के नैवेद्य को किसी कुत्ते को खिला दें। यह क्रम 21 दिनों तक जारी रखें।

मंत्र जप के दौरान यदि विचित्र ध्वनियां या चीत्कार इत्यादि सुनाई पड़े, तो भी अविचलित बने रह कर साधना करते रहें, क्योंकि जब साधक धीरे-धीरे कंकाल भैरव की धूमिल छवि देखते हुए क्रमशः भयमुक्त होने लगता है, तभी वे अपना सम्पूर्ण स्वरूप प्रकट करते हैं, अतः साधक को अपने मन में कोई शंका नहीं लानी चाहिए। प्रतिदिन मंत्र जप के समापन पर अपने इष्ट के दाहिने हाथ में जप समर्पण अवश्य कर दें।

अन्तिम दिन इष्ट के सौम्य स्वरूप का दर्शन प्राप्त हों, तो उन्हें श्रद्धापूर्वक प्रणाम करें और उनसे विनयपूर्वक प्रार्थना करें, कि वे जीवन भर सहायक व रक्षक बने रहें। अगले दिन यंत्र व माला को नदी में विसर्जित कर दें। **न्यौछावर —(प्रयोग पैकेट) - 300/-**

13.4.98

महाकाल प्रयोग

शीघ्र, उग्र, तीव्र यदि श्मशान साधना को कुछ शब्दों में परिभाषित करें, तो वह यही है . . . क्योंकि श्मशान साधना आम साधकों के बस की बात है ही नहीं, वह तो एक तलवार की धार पर चलने के समान है, सिंह के अयाल पर झूलने के समान है, विषधर नाग का चुम्बन लेने के समान है, तभी तो इसे शीघ्र, उग्र, तीव्र की संज्ञा से विभूषित किया गया है।

शीघ्र अर्थात् शीघ्रातिशीघ्र प्रभाव, अन्य साधनाएं जहां वर्षों के कठिन परिश्रम के बाद ही फलीभूत होती हैं, वहीं श्मशान साधना हाथों–हाथ अपना प्रभाव दिखला देती है। उग्र का अर्थ है – पूर्ण शक्ति तत्त्व से पूरित, इतनी कि साधक यदि थोड़ा सा भी प्रमाद, काम, भय आदि से प्रभावित हो, तो उसका स्वयं का ही नाश सम्भव है . . . और तीव्र अर्थात् इसके द्वारा साधक त्वरित गति से जहां पूर्ण सांसारिक सफलता प्राप्त करता है, वहीं दूसरी ओर आध्यात्मिकता की सीढ़ियां चढ़ता हुआ पूर्ण शिवत्व को प्राप्त कर लेता है।

– पर श्मशान ही क्यों? साधना के लिए क्या अन्य कोई उपयुक्त जगह नहीं मिली? यह भयावह स्थल ही क्यों?

इसका उत्तर है, कि हर साधना के लिए एकान्त अति अनिवार्य है और श्मशान से अधिक निःस्तब्धता और किस जगह प्राप्त हो सकती है। साधना में मोह, क्रोध, काम सब वर्जित है और जो व्यक्ति श्मशान में कुछ पल भी रह कर जीवन की नश्वरता को देख लेता है, क्या उसे श्मशान में बैठ कर ये विकार व्याप्त हो सकते हैं? कदापि नहीं। यही कारण है, कि कुछ विशेष साधनाओं को श्मशान में ही सिद्ध किया जाता है।

व्यक्ति जब जन्म लेता है, तो स्वतः ही वह घृणा, जुगुप्सा, काम, भय आदि अष्ट पाशों में जकड़ा हुआ इस धरा पर आता है और जब श्मशान की अग्नि उसे निगल लेती है, तभी वह इन बंधनों से मुक्त हो पाता है। परन्तु मनुष्य यदि दृढ़ संकल्प युक्त हो, तो वह जीते–जी भी इन पाशों को तोड़ सकता है, लेकिन यह भी सत्य है, कि अष्टपाशों से मुक्ति चाहे व्यक्ति मृत हो अथवा जीवित, श्मशान में ही पा सकता है।

जब गुरु साधक को श्मशान साधना में अग्रसर करता है, तो पहले बाह्य रूप से उसे प्रशिक्षित करता है, बाह्य रूप से उसे श्मशान साधना कराता हुआ आगे बढ़ाता है। धीरे–धीरे जब साधक परिपक्व हो जाता है, तो उसे इस बात का दिव्य बोध होता है, कि उसका अपना शरीर ही महाश्मशान है, जिसमें नित्य चिताग्नि धधक रही है और वह फिर उसी में शिव की भांति आनन्दमग्न हो जाता है और अघोरी कहलाता है।

परन्तु यह तो बाद की भावभूमि है, पहले तो व्यक्ति को बाह्य साधनाएं भी सम्पन्न करनी पड़ती हैं, जिसके द्वारा वह अष्टपाशों से मुक्त हो सके, जिससे कि वह पूर्ण वैभव, सम्पदा, मान, सम्मान, ख्याति प्राप्त कर सके, जिससे कि वह अपने गुरु का अत्यन्त प्रिय हो कर सिद्धाश्रम जा सके।

श्मशान साधनाओं में कुछ साधनाएं प्रचलित हैं – श्मशान काली, श्मशान तारा, छिन्नमस्ता, रूद्र भैरव इत्यादि। परन्तु इन सभी साधनाओं में यदि कोई सिरमौर है, तो वह है 'महाकाल साधना'। शास्त्रों में तो इस साधना को सिद्धाश्रम के लिए अनिवार्य ही बताया गया है और इसे सर्वोपरि भी माना गया है, क्योंकि महाकाल तो वह धुरी है, जिस पर समस्त ब्रह्माण्ड गतिशील है। महाकाल में ही यह समस्त चराचर विश्व व्याप्त है . . . और सबसे मुख्य बात यह है, कि महाकाल शिव का वह स्वरूप है, जो कि स्वयं शिव से सहस्त्र गुणा ज्यादा तेजस्विता युक्त है।

'ब्रह्म यामल' में तो एक जगह कहा गया है, कि

यदि साधक गुरु द्वारा प्रदान दिव्य शक्तिपात दीक्षाओं (राज्याभिषेक, शिष्याभिषेक, शाम्भवी आदि) को अक्षुण्ण बनाये रखना चाहता है, तो उसके लिए महाकाल साधना अनिवार्य है।

'रुद्र यामल' में स्पष्ट है, कि साधक इस साधना में गुरु आज्ञा एवं उनका दिव्य आशीर्वाद प्राप्त करके ही प्रवृत्त हो। आज्ञा मानसिक रूप से भी प्राप्त की जा सकती है . . . पर यह है अति आवश्यक, क्योंकि महाकाल अति उग्र देव हैं और साक्षात् महाकाल को उपस्थित करना एक प्रकार से मृत्यु का आलिंगन करना है।

तभी तो दया से अभिभूत महाकाल कभी भी साधना के दौरान साधक के सामने उपस्थित नहीं होते . . . फिर भी साधक को स्पष्टतः अनुभव हो जाता है, कि कोई आया है और उसे आवाज भी सुनाई देती है। तब महाकाल आशीर्वाद स्वरूप मृत्यु देते हैं . . . मृत्यु देते हैं साधक की दरिद्रता को, उसकी वासनाओं को, उसके रोगों को, उसके अष्टपाशों को, उसके जीवन की असफलता को . . .

और चूंकि महाकाल स्वयं कालस्वरूप हैं एवं उस पर आरूढ़ हैं, अतः ऐसा साधक स्वतः ही त्रिकालदर्शी हो जाता है, कई-कई जन्मों पूर्व एवं आने वाले कई जन्मों की स्थिति उसके सामने स्पष्ट हो जाती है। वह जिसको भी देखता है, उसका भूत, वर्तमान एवं भविष्य भी उसे साफ-साफ दिखाई देने लगता है।

ऐसा साधक शतायु प्राप्त करता है, उसके जन्मकालीन ग्रह दोष स्वतः ही नष्ट हो जाते हैं, शत्रु उसके समक्ष आते ही वीर्यहीन हो जाते हैं एवं अधिकारी गण, मंत्रियों आदि के लिए भी उसकी आज्ञा शिरोधार्य होती है।

'महाकाल साधना' सम्पन्न व्यक्ति स्वयं एक शक्तिपुंज में परिवर्तित हो जाता है, उसका सारा शरीर एक दिव्य आभा से प्रदीप्त हो उठता है एवं उसके सारे कुण्डलिनी चक्र एक-एक करके जाग्रत होने लग जाते हैं। ऐसे व्यक्तियों के एक हाथ में भोग होता है, तो दूसरे हाथ में मोक्ष। वह जो भी सोचता है, वह स्वतः ही हो जाता है, यहां तक कि दूसरे व्यक्तियों के जीवन में होने वाली घटनाओं को भी वह अपने प्रयास से परिवर्तित कर सकता है।

बहुत वर्षों से मेरे मन में महाकाल साधना को सम्पन्न करने की इच्छा थी। आखिरकार जब मैंने गुरुदेव से इस विषय में आग्रह किया, तो वे कुछ क्षण तो मौन रहे, फिर मुस्कुरा कर आज्ञा दे दी। साधना के लिए मैंने उज्जैन के श्मशान को चुना। पूज्य गुरुदेव ने मुझे सभी आवश्यक निर्देश दे कर स्पष्टतः आदेश दिया था, कि साधना में किसी भी प्रकार की शिथिलता नहीं होनी चाहिए।

यह 51 दिनों की साधना थी और नित्य मुझे चिता के आगे बैठ कर मंत्र की 101 मालाएं करनी थीं। चिता में ही दशांश होम भी करना था। रात्रि के बारह बजे जब मैं श्मशान पहुंचा, तो वहां कोई भी नहीं था . . . तीन चिताएं थोड़ी-थोड़ी दूरी पर जल रही थीं . . . एक अजीब सा भभका मेरे नथुनों में प्रवेश कर था और उस रहस्यमयी वातावरण में चलती हुई ठंडी पवन मेरे सारे शरीर में सिहरन सी पैदा कर रही थी . . . एकान्त में श्मशान और भी भयावह हो उठा था . . .

मैंने अपने आपको संभाला और बीच वाली चिता के पास जा कर रक्षा मंत्र पढते हुए एक चक्र बनाया

रक्ष रक्ष महाकाल! भूत पिशाच राक्षस ब्रह्मराक्षसान् स्तम्भय स्तम्भय ॐ फट्

जैसे ही मैं चक्र के मध्य बैठा, तो एक तेज हवा का झोंका मुझे छू कर निकल गया, एक क्षण के लिए तो मेरी कपकपी छूट गई, परन्तु तुरन्त संयत हो मैंने पहले चिता का पूजन किया, फिर गुरु एवं गणपति को आसन प्रदान कर, संकल्प लिया और गुरु-ध्यान कर चिता को ही महाकाल स्वरूप समझ मंत्र जप में प्रवृत्त हुआ। उस दिन मैं प्रातः 5 बजे साधना से निवृत्त हुआ था।

इस प्रकार मेरी साधना निर्विघ्न रूप से चलती रही . . . परन्तु 21 वें दिन . . . मैंने जप शुरु ही किया था, कि एक फणधर नाग कहीं से सरसराता हुआ मेरे पास आ कर बैठ गया . . . मेरा चेहरा पीला पड गया और मुंह से मंत्र रुक-रुक कर निकलने लगा। मैं निश्चय ही वहां

से भाग जाता, परन्तु गुरुदेव ने स्पष्ट आदेश दिया था, कि मंत्र जप पूर्ण हुए बिना किसी भी हालत में उठना नहीं है . . . उस शीत में भी मेरा चेहरा पसीने से तरबतर हो गया और मेरा सारा शरीर भय से थरथरा उठा . . . मृत्यु साक्षात् मेरे सामने ताण्डव करती प्रतीत हो रही थी . . . पर तभी गुरुदेव का बिम्ब मेरे मानस पटल पर उभरा और उन्होंने मुझे निर्भय हो कर साधना करने की आज्ञा दी।

जब मैंने दुबारा अपना सिर घुमाया, तो मेरी आंखें आश्चर्य से फटी रह गईं . . . सर्प जा चुका था। मैंने राहत की सांस ली और मंत्र जप पूरा किया। इसी तरह रोज मुझे किसी न किसी जंगली जीव के दर्शन होते . . . कभी जंगली सूअर, कभी बिच्छुओं का झुण्ड, तो कभी क्रोधित भैंसा . . . पर गुरु कृपा से मैं हर बाधा को एक-एक कर लांघने में सफल हो गया।

45 वें दिन की रात्रि को तो मानों पूरा श्मशान ही जाग्रत हो गया था। विभिन्न प्रकार के भूत, प्रेत, पिशाच एवं राक्षस मेरे सुरक्षा चक्र के इर्द-गिर्द घूम कर मुझ तक पहुंचने की चेष्टा करते रहे . . . उनकी वीभत्स हंसी एवं पैशाचिक किलकारी मेरे रोम-रोम को दहला रही थी। उस काली रात को जिस प्रकार से वे मांस की बोटियां चबा कर रसक पात्र से मानव रक्त पी रहे थे, उसे देख कर तो निडर से निडर व्यक्ति भी दहल उठता . . . न जाने वह रात्रि मैं कैसे झेल सका . . .

51 वां दिन . . . मेरा अनुष्ठान चरमोत्कर्ष पर पहुंच चुका था . . . गुरुदेव के अनुसार आज ही महाकाल की उपस्थिति का एहसास होना था . . . मैं पूर्ण मनोवेग से चिता में मंत्र से आहुतियां दे रहा था . . . अचानक वायु में तीव्रता प्रविष्ट होने लगी . . . कुछ ही मिनटों में वह आंधी का रूप ले चुकी थी . . . आसमान किसी घायल सिंह की भांति गर्जन कर रहा था . . . तभी मुझ से दस फीट दूर बिजली गिरी और दूसरे ही क्षण वहां कई फीट गहरा गड्ढा बन चुका था . . . मेरे मुंह से स्वतः ही भय मिश्रित चीख निकल पड़ी . . .

तीव्र गर्जना एवं आंधी के बीच मेरे आसपास रह-रह कर बिजली गिर रही थी और दुर्भाग्य यह, कि हर बार बिजली गिरने की शृंखला मेरे निकट होती जा रही थी . . . मेरा चेहरा फक् पड़ गया था, मानों रक्त की प्रत्येक बूंद मेरे शरीर से निचुड़ गई हो . . . आहुति पकड़े मेरा हाथ किसी पीपल के पत्ते की भांति कांप रहा था . . और मेरी आंखें किसी शिकारी से बचने के लिए भागते हुए भयभीत हिरण की भांति अपने आपमें याचना लिए हुए

थीं . . . इस बार बिजली मुझसे मात्र पांच फीट की दूरी पर गिरी था और उससे उत्पन्न हुए कुछ अंगारे मेरे बदन पर भी आ गिरे . . .

गुरुदेव! स्वतः ही मेरे मुंह से यह शब्द उच्चरित हुआ और भय के कारण मैंने आंखें मूंद लीं . . . सहसा मुझे लगा, कि कोई मुझे सांत्वना दे रहा है और मेरे मानस में अपने आप ही एक दृढ संकल्प उठा, कि जान जाती है तो जाये, परन्तु अब निर्भय हो कर अनुष्ठान पूर्ण करना ही है . . .

मैंने मन को कठोर कर पुनः चिता में आहुतियां देनी प्रारम्भ की। मेरे आसपास बिजली अब भी गिर रही थी, परन्तु यह आश्चर्य ही था, कि मुझे कोई क्षति नहीं पहुंच रही थी। अभी कुछ आहुतियां देनी बाकी ही थीं, कि मुझे भीषण हास्य के साथ ध्वनि सुनाई दी – "मूर्ख! पातकी!"

मैं चौंक गया और एक अज्ञात भय की सिहरन से मेरा पूरा वजूद ही हिल गया . . . पुनः वही आवाज गूंजी – "तुझे पता नहीं, कि तू क्या कर रहा है . . . क्योंकि यदि मैं तेरे समक्ष उपस्थित हो जाऊंगा, तो तू एक क्षण भी

जीवित नहीं रह पायेगा . . . मुझे देख कर कोई भी जीवित नहीं रहता . . . मुझसे साक्षात्कार केवल मृत्यु के समय ही सम्भव है . . . "

इतनी तकलीफें उठाने पर भी यदि मेरे हाथ खाली ही रहे, तो इससे बड़ा दुर्भाग्य शायद ही कोई और हो . . . मैंने तुरन्त ही निर्णय लिया – "मुझे अपने जीवन की आकांक्षा नहीं . . . आप कृपा करके आइये, मैं तो आपके दर्शनों के लिए अति व्यग्र हूं।"

मात्र ग्यारह आहुतियां बाकी थीं, ध्वनि ने मुझे फिर समझाने की चेष्टा की – "सुनो! तुम व्यर्थ अपना जीवन क्यों गंवाना चाहते हो, हठ छोड़ दो।"

मैंने उत्तर दिया – "मुझे अपने जीवन से रत्ती भर भी लगाव नहीं है, मैं तो बेताबी से आपका इंतजार कर रहा हूं।"

. . . और यह कहते हुए मैंने चिताग्नि में पूर्णाहुति सम्पन्न की।

हुं ऽ ऽ ऽ . . . एक तीव्र कर्ण भेदी विस्फोट सा हुआ, कुछ क्षण तो मैं स्तब्ध सा बैठा रहा . . . यही महाकाल के आने का संकेत है शायद . . . और दूसरे ही क्षण मुझे फिर वही ध्वनि सुनाई दी . . .

"वत्स! मैं तुमसे अत्यधिक प्रसन्न हूं . . . पर यह निश्चित है, कि मैं तुम्हारे सामने नहीं आऊंगा, क्योंकि मेरे प्रत्यक्ष होते ही स्वतः तुम्हारे प्राण पखेरू उड़ जायेंगे . . . मुझे देख कर कोई भी जीवित नहीं रहता, अतः मैं तुम्हारे पीछे रह कर हर क्षण तुम्हारी सहायता हेतु तत्पर रहूंगा . . . "

और उस दिन के बाद से आज तक मुझे जीवन में कभी भी किसी भी प्रकार की कमी नहीं हुई . . . मान, सम्मान, धन, यश, वैभव, सभी कुछ स्वतः ही प्राप्त होता गया, शत्रु आश्चर्यजनक रूप से समर्पण मुद्रा में आ गए और पहले वर्णित सभी उपलब्धियां भी अनायास ही प्राप्त हो गईं। हर समय मुझे एहसास बना रहता है, कि कोई मेरे साथ–साथ ही है, या जैसे कोई मेरे पीछे–पीछे चल रहा हो . . .

. . . और इसी साधना के उपरान्त मुझे सूक्ष्म रूप से गुरुदेव के साथ सिद्धाश्रम जाने का भी सौभाग्य प्राप्त हो सका।

यह साधना अत्यधिक लम्बी व श्रमसाध्य है और सामान्य गृहस्थ के लिए सम्भव ही नहीं है, कि वह श्मशान वास कर इसे सम्पन्न करे। फिर भी शास्त्रों में वर्णित है, कि यदि साधक गुरु से 'तीव्र महाकाल शक्तिपात दीक्षा' प्राप्त कर लेता है, तो उसे श्मशान एवं चिता की आवश्यकता नहीं पड़ती, क्योंकि शक्तिपात द्वारा गुरु साधक के ही शरीर में महाश्मशान स्थापित कर शक्ति रूपी चिता को प्रज्ज्वलित कर देते हैं, ऐसे साधक को फिर इतना अधिक जप भी नहीं करना पड़ता, उसे तो नित्य मात्र ग्यारह माला ग्यारह दिन तक जप करनी पड़ती है, उसके बाद घृत से दशांश हवन . . . और साधक को निश्चय ही महाकाल की उपस्थिति का एहसास होता ही है।

यह साधना कलियुग में वरदान स्वरूप है और जो व्यक्ति दृढ़ संकल्प शक्ति युक्त हों, पौरुषवान हों एवं जो गुरु में पूर्ण आस्था रखते हों, उन्हें ही यह साधना सम्पन्न करनी चाहिए। जो व्यक्ति पूर्ण वैभव, मान, सम्मान, स्वास्थ्य, बाधाओं व शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर गुरु के अति प्रिय बनना चाहते हैं एवं सिद्धाश्रम जाने के आकांक्षी हैं, उन्हें तो हर हालत में यह साधना सम्पन्न करनी ही चाहिए।

किसी भी सोमवार या 13.4.98 से यह साधना प्रारम्भ करें।

रात को 9 बजे के बाद स्नान कर, स्वच्छ धोती धारण कर, गुरु पूजन सम्पन्न करना चाहिए और अपने पूजा कक्ष में बाजोट बिछा कर उस पर एक थाली में **'महाकाल यंत्र'** स्थापित कर धूप, दीप, पुष्प, सिन्दूर एवं नैवेद्य से उसका पंचोपचार पूजन करना चाहिए।

इसके बाद महाकाल का ध्यान करें –

स्रष्टारोऽपि प्रजानां प्रबलभवभयाद
यं नमस्यन्ति देवा।।
यावत् ते सम्प्रविष्टोऽप्यवहितमनसां
ध्यानमुक्तात्मनां चैव नूनं।।
लोकानामादिदेवः स जयतु
भगवाञ्छ्रीमहाकालनामा।
बिभ्राणः सोमलेखा महिवलययुतं
व्यक्तलिंगं कपालम्।।

ध्यान के उपरान्त **'महाकाल माला'** से निम्न मंत्र का 11 माला मंत्र जप 11 दिन तक नित्य करें –

मंत्र

।। ॐ नमो भगवते महाकालाय सिद्धये ऐं ह्रीं क्लीं ब्लूं ॐ फट्।।

OM NAMO BHAGWATE MAHAKALAY SIDDHYE AYEIM HREEM KLEEM BLOOM OM PHAT

यदि साधना के दौरान भयावह दृश्य उत्पन्न हों, तो डरें नहीं, गुरु स्मरण कर साधना में लगे रहें।

साधना समाप्त होने पर यंत्र तथा माला को किसी श्मशान अथवा शिव मंदिर में रख आयें या नदी में विसर्जित कर दें।

न्यौछावर – 260/-

11.11.98

धन धान्य, ऐश्वर्य, सुख सौरभ प्रदायक काल भैरव साधना

जीवन में अभाव भी शत्रुवत् ही होते हैं, जो स्तम्भित कर देते हैं व्यक्ति के जीवन की सहज गति और प्रायः उसकी मति भी . . .

. . . आश्चर्य है! ऐसे 'शत्रुओं' को समाप्त करने के लिए साधक क्यों नहीं सहायता लेते भगवान श्री भैरव की, जो अपने स्वरूप में प्रबल शत्रुहंता ही स्वीकृत किए गए हैं।

प्रस्तुत है काल भैरव अष्टमी के पर्व पर भगवान भैरव की साधना से सम्बन्धित एक नवीन आयाम —

प्रत्येक साधना एवं साधना पद्धति की अपनी एक पृथक विशिष्टता होती है और उस विशिष्टता के साथ वह साधना स्वयं में सम्पूर्ण भी होती है, यह साधना जगत का एक महत्वपूर्ण तथ्य है। आज इस बात को उल्लिखित करना इस कारण से आवश्यक हो गया है, क्योंकि न केवल साधना के मार्ग में प्रविष्ट हुए साधकों के मन में वरन् इस मार्ग पर कई-कई वर्ष तक चल चुके साधकों के मन में यह धारणा घर बन गई है, कि विशिष्ट साधनाएं केवल विशिष्ट लक्ष्यों की पूर्ति तक ही सीमित होती हैं।

इस विचार-विमर्श के क्रम में यदि भगवती बगलामुखी शत्रु संहार की देवी (या साधना) हैं, लक्ष्मी केवल धन-सम्पत्ति देने की एक हेतु हैं, दुर्गा दुष्टों का संहार करने का एक उपाय भर हैं तो इसी प्रकार से अन्य देवी-देवताओं अथवा साधनाओं के भी निश्चित अर्थ सुस्थापित हो चुके हैं।

यह सत्य है, कि विशिष्ट साधनाएं विशिष्ट उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक होती हैं किन्तु है अन्ततोगत्वा एक अर्द्धसत्य ही और अर्द्धसत्य सदैव किसी झूठ से भी अधिक भ्रमित करने वाला होता है।

साधनाओं अथवा देवी-देवताओं को उनके विशिष्ट स्वरूप से कुछ अलग हटकर एक सम्पूर्ण दृष्टि से देखने की शैली या तो विकसित नहीं हुई अथवा साधकों के पास जीवन की व्यस्तता में इतना अवकाश नहीं रहा, कि वे इस विषय पर चिंतन कर सकें क्योंकि इस तीव्र युग में साधक का ध्यान साधना से भी अधिक इस बात पर केंद्रित रहता है, कि कैसे उसके जीवन की किसी समस्या विशेष का समाधान शीघ्रातिशीघ्र हो सके।

यद्यपि ऐसा करने में कोई दोष नहीं है। प्रत्येक साधक से यह अपेक्षा नहीं की जाती है, कि वह पहले किसी साधना अथवा देवी-देवता के स्वरूप का तात्विक विवेचन कर ले तब साधना में प्रवृत्त हो **किन्तु एक सम्पूर्ण दृष्टि की अपेक्षा तो की ही जा सकती है और इसका सर्वाधिक लाभ भी अन्ततोगत्वा किसी साधक को ही तो मिलता है।**

साधना एक व्यवसायिक विषय वस्तु नहीं होती है कि मुंह मांगा दाम देकर अपनी मनोवांछित वस्तु को प्राप्त कर लिया जाए। किसी भी साधना को पहले अपने रोम-रोम में समाहित करना होता है तभी उस साधना से सम्बन्धित मंत्र जप को सम्पन्न करने का कोई अर्थ होता है और यह क्रिया किसी अन्य युक्ति से नहीं वरन् सम्भव होती है तो केवल ज्ञान के माध्यम से, तात्विक विवेचन के माध्यम से।

पत्रिका में कोई साधना विधि प्रस्तुत करने से पूर्व उसकी संक्षिप्त व्याख्या करने के पीछे यही मंतव्य होता है।

जैसा कि प्रारम्भ में कहा, कि प्रत्येक साधना यद्यपि स्वयं में किसी एक विषय तक ही केंद्रित प्रतीत होती है किन्तु वही साधना स्वयं में एक सम्पूर्ण साधना भी होती है, इसका भी अर्थ केवल इतना ही है, कि साधना कोई भी क्यों न हो, यदि साधक की अन्तर्भावना उसमें रच-पच जाती है तो न केवल उसके तात्कालिक उद्देश्यों की

पूर्ति सम्भव होती है वरन् वह उसी साधना के माध्यम से विशिष्ट आध्यात्मिक अनुभूतियों एवं चैतन्यता को प्राप्त करने में भी सक्षम होने लग जाता है।

यह कदापि महत्वपूर्ण नहीं है कि किस साधक के इष्ट कौन है, क्योंकि कोई भी देवी या देव न तो छोटे होते हैं न बड़े। न कोई देवी (या देवता) न्यून होते हैं और न कोई उच्च, यदि साधक के पास एक सम्पूर्ण दृष्टि हो। अंतर तो केवल साधक के लक्ष्यों से पड़ता है, जिस प्रकार से आज भैरव को केवल एक भीषण देव मानने से उनकी छविजनमानस में प्रायः एक विकृत देव के रूप में स्थिर हो गई है, किन्तु भगवान भैरव का परिचय इस रूप में प्रस्तुत होना एक प्रकार की अपूर्णता ही है।

यह सत्य है, कि जीवन की भीषणताओं को समाप्त करने में भगवान भैरव की साधना के समकक्ष कोई साधना नहीं प्रतीत होती, शत्रुहंता स्वरूप में उनकी सिद्धि प्राप्त करना वास्तव में जीवन का सौभाग्य ही होता है, श्मशान साधनाओं एवं उग्र साधनाओं में पूर्णता उनकी प्रसन्नता के बिना मिलना कठिन ही नहीं असम्भव भी होता है किन्तु इसके पश्चात् भी मानों भगवान भैरव का चित्र पूर्ण नहीं होता है।

भैरव साधना का एक गोपनीय पक्ष यह भी है, कि जहां वे एक उग्र देव हैं वहीं अन्तर्मन से पूर्ण शांत व चैतन्य देव भी हैं जिनकी यथेष्ट रूप में उचित साधना विधि से उपासना करने पर यह सम्भव ही नहीं है कि उनके साधक के जीवन में किसी प्रकार का भौतिक अभाव रह जाए।

इसी तथ्य का और अधिक गूढ़ विवेचन यह है, कि जहां जीवन में सुख-समृद्धि का आगमन किसी तेजस्वी साधना के माध्यम से सम्भव होता है वहां, वह अन्य साधनाओं की अपेक्षा कहीं अधिक स्थायी, आभायुक्त एवं जीवन में निश्चित रूप से सुखद परिवर्तनकारी होती है।

भगवान श्री भैरव की व्याख्या केवल 'बिभेति शत्रून् इति भैरवः' (अर्थात् जो शत्रुओं को भयभीत करने वाले है वे भैरव है) ही नहीं वरन् 'बिभर्ति जगदिति भैरवः' (अर्थात् जो समस्त जगत का भरण पोषण करने वाले हैं, वे भैरव हैं) भी है। यह बात और है, कि उनकी जनसमान्य में छवि एक भीषण देव के रूप में ही सुस्थापित हुई।

जब समाज किसी तेजस्विता को सहन नहीं कर पाता है तो यही क्रिया होती है। जब विवेचन का क्रम स्तम्भित हो जाता है तो एक प्रकार का भोंडापन उपज आता ही है और इन सभी बातों के मूल में जो त्रुटि होती है, वह अपना ध्यान केवल लक्ष्य की पूर्ति तक केंद्रित रखने के कारण ही होती है।

इसके उपरांत भी इस सत्य से तो कोई इन्कार नहीं कर सकता, कि जीवन में भौतिक लक्ष्यों की प्राप्ति करना, भौतिक बाधाओं को दूर करना जीवन का प्रथम एवं अत्यावश्यक सोपान होता है जिसके अभाव में चित्त स्थिर हो ही नहीं सकता।

साधक का चित्त जहां विभिन्न भौतिक बाधाओं की समाप्ति से सुस्थिर हो सके वहीं उसके जीवन में एक तेजस्विता का भी समावेश हो सके, इन्हीं दोनों उद्देश्यों को ध्यान में रखकर आगामी **11.11.98** को घटित होने वाली '**काल भैरव अष्टमी**' के अवसर पर एक विशिष्ट साधना प्रस्तुत की जा रही है।

प्रत्येक साधना का होता है एक गुह्य सूत्र या **key point**, जिसके अभाव में निष्फल हो जाता है समस्त मंत्र जप या कोई भी साधना।
– और यही बात पूर्णतया सत्य है भगवान भैरव के किसी भी स्वरूप से सम्बन्धित साधना में भी।

Scanned by CamScanner

न कोई देव (या देवी) छोटे होते हैं, न कोई उच्च। आवश्यकता होती है, तो केवल एक सम्पूर्ण दृष्टि की – और यही बात कही जा सकती है भगवान भैरव के प्रति प्रचलित मान्यताओं के प्रति भी . . .

भगवान शिव की ही भांति भगवान भैरव का स्वरूप भी अत्यंत शीघ्रता से प्रसन्न होने वाला माना गया है। आवश्यकता है तो केवल इस बात की, कि साधक को भैरव साधना में आने वाले विशिष्ट चरणों का विशेष रूप से ज्ञान हो।

प्रत्येक साधना का एक गुह्य सूत्र होता है या यूं कह सकते है कि **key point** होता है जिसके अभाव में भले ही कितने ही लाख मंत्र जप क्यों न सम्पन्न कर लिए जाएं, सफलता पूर्णरूपेण नहीं मिल पाती है। यह **key point** प्रत्येक साधना की अन्तर्भावना के साथ परिवर्तित होने वाला तत्व होता है अर्थात् यह आवश्यक नहीं, कि जो बात एक साधना के विषय में सत्य हो वही प्रत्येक साधना के लिए अंतिम रूप से सत्य हो तथा इसका निर्धारण किसी तर्क के आधीन न होकर भाव के ही आधीन होता है।

काल भैरव का स्वरूप भी किसी तर्क का आधीन होकर भाव के आधीन आने वाला विषय होता है। साधक सामान्यतः काल भैरव संज्ञा से किसी भीषण आकृति की कल्पना कर लेते हैं और यदि तत्सम्बन्धित साधना में प्रवृत्त होते भी हैं, तो एक भयमिश्रित जुगुप्सा के साथ। उनका ऐसा भाव रखना ही साधक के लिए सर्वाधिक न्यून हो जाता है।

वस्तुतः ***काल भैरव का अर्थ है, जो काल चक्र में पड़े हुए जीव (साधक) को अपनी चैतन्यता से मुक्त कर श्रेयस्कर मार्ग की ओर प्रवर्तित कर दें और निश्चय ही ऐसे देव का पूजन, साधना अत्यन्त आह्लाद के साथ सम्पन्न की जानी चाहिए।***

यूं इन पंक्तियों में भले ही कितना कुछ क्यों न वर्णित कर दिया जाए, कि काल भैरव की साधना से जीवन में क्या-क्या लाभ होते हैं, वह तब तक फलप्रद हो ही नहीं सकेगा जब तक साधक काल भैरव के प्रति एक सश्रद्धाभाव को अपने मन में स्थान नहीं देगा, उनसे सम्बन्धित साधना विधि को प्रयोग में पूर्ण एकाग्रता से नहीं लाएगा।

आगे की पंक्तियों में उपरोक्त दिवस की चैतन्यता के अनुरूप साधना विधि प्रस्तुत की जा रही है जो किसी भी भैरव साधक अथवा गृहस्थ साधक द्वारा अवश्यमेव प्रयोग में लाने योग्य है। इस विधि की विशिष्टता है, कि जहां एक ओर से यह दुर्बलता, हीनता आदि की स्थितियों को समाप्त करने की साधना है वहीं दूसरी ओर से पूर्ण भौतिक समृद्धिदायक साधना भी है। इसे सम्पन्न करने के इच्छुक साधक को चाहिए, कि वह समय रहते '**भैरव यंत्र**' व '**भैरव माला**' को प्राप्त कर दिनांक **11.11.98** की (या किसी भी रविवार की) रात्रि में दस बजे के आसपास काले वस्त्र पहन साधना में प्रवृत्त हो। दक्षिण दिशा की ओर मुख कर बैठना आवश्यक है। यंत्र व माला का सामान्य पूजन कर एक तेल का बड़ा सा दीपक जलाएं और उसकी निम्न मंत्र से अभ्यर्थना करें –

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं सर्वज्ञाय प्रचण्ड पराक्रमाय बटुकाय इमं दीपं ग्रहाण सर्वकार्याणि साधय साधय, दुष्टान नाशय नाशय, त्रासय त्रासय सर्वतो मम रक्षां कुरु कुरु हुं फट् स्वाहा।

इसके पश्चात् अक्षत, कुंकुम, पुष्प व जल हाथ में लेकर दीपक का समक्ष छोड़ निम्न मंत्र उच्चरित करें –

गृहाण दीपं देवेश, बटुकेश महाप्रभो,
ममाभीष्टं कुरु क्षिप्रमापद्भ्यो समुद्धर।

फिर निम्न मंत्रोच्चारण के साथ दीपक को प्रणाम करें –

भो बटुक! मम् सम्मुखोभव, मम कार्यं करु करु इच्छितं देहि-देहि मम सर्व विध्नान् नाशय नाशय स्वाहा।

अपने मन की इच्छाओं व उनमें आ रही बाधाओं का उच्चारण कर (अथवा मन ही मन उनका स्मरण कर) साथ ही भगवान भैरव से उनकी पूर्ति की प्रार्थना कर भैरव माला से निम्न मंत्र की २१ माला मंत्र जप को सम्पन्न करें। यदि सम्भव हो तो यह मंत्र जप दीपक की लौ पर ध्यान केंद्रित करते हुए ही करें–

मंत्र

॥ ॐ ह्रीं काल भैरवाय ह्रीं नमः ॥

Om Hreem Kaal Bheiravaay Hreem Namah

मंत्र जप के पश्चात् पुनः दीपक के सम्मुख निम्न मंत्र का उच्चारण करें –

श्री भैरव नमस्तुभ्यं सत्वरं कार्यसाधक उत्सर्जयामि ते दीपं त्रायस्व भवसागरात् मंत्राणाक्षर हीनेन पुण्येण विकलेनवा पूजितोऽसि मयादेव! तत्क्षमस्व मम प्रभो

ध्यान रखें, कि दीपक को बुझाना नहीं है अपितु वह जब तक जले उसे जलने देता है। दूसरे दिन सभी साधना सामग्रियों को नदी में विसर्जित कर दें। जीविकोपार्जन के क्षेत्र में आ रही बाधाओं को समाप्त करने के लिए यह एक अनुभव सिद्ध साधना है।

साधना सामग्री पैकेट – 210/-

सर्व आपद उद्धारक बटुक भैरव साधना

इस साधना को मुख्यत: साधकजन निम्न प्रयोजनों के लिए सम्पन्न करते हैं –

– मुकदमें में सफलता के लिए

– समाज में पूर्ण पौरुषता एवं निर्भीकता से जीने हेतु

– किसी प्रकार की राज्य बाधा, जैसे प्रमोशन अथवा ट्रांसफर में आ रही बाधाओं से निवृत्ति हेतु

– किसी तंत्र बाधा को समाप्त करने हेतु

इस साधना को **13.7.99** अथवा किसी भी माह की अमावस्या को प्रारम्भ करना चाहिए। यह रात्रिकालीन साधना है जिसे रात्रि १०:०० बजे के बाद ही सम्पन्न करना चाहिए। पीली अथवा सफेद धोती धारण कर ऊपर से रक्षा हेतु गुरुमंत्र वाला पीताम्बर ओढ़ लें। किसी पात्र में काले तिल के आसन पर '**बटुक भैरव यंत्र**' को स्थापित करें। तेल का अखण्ड दीप साधना काल में जलते रहना चाहिए।

अपने दाहिनी ओर जल से भरा कलश स्थापित करें, उसमें पंच पल्लवों (आम अथवा अशोक आदि किसी वृक्ष के पत्ते) को स्थापित करें। पहले गुरु पूजन करके गुरु मंत्र जप लें। इसके बाद दोनों हाथ जोड़कर भगवान बटुक भैरव का ध्यान करें –

ध्यान

फणिवर फणिनाथो देव देवाधिनाथ:
क्षितिपति वरनाथो वीर वेतालनाथ:।
निधिपति निधिनाथो योगिनी योगनाथो,
जयति बटुकनाथ: सिद्धिन: साधकानाम्।

विनियोग

इसके बाद दाएं हाथ में जल लेकर विनियोग करें –

ॐ अस्य श्री आपदुद्धाराय बटुक भैरव मंत्रस्य बृहदारण्यक ऋषि:, त्रिष्टुप छन्द:, श्री बटुक भैरवो देवता, ह्रीं बीजं, स्वाहा शक्ति:, भैरव: कीलकं मम धर्मार्थकाममोक्षार्थं श्री बटुकभैरव प्रीत्यर्थं च जपे विनियोग:।

ऋष्यादिन्यास

निम्न मंत्र बोलते हुए निर्दिष्ट अंगों का स्पर्श करें –

बृहदारण्यक ऋषये नम: (सिर)
त्रिष्टुप् छन्दसे नम: (मुख)
श्री बटुक भैरव देवतायै नम: (हृदय)
ह्रीं बीजाय नम: (गुह्य प्रदेश)
स्वाहा शक्तये नम: (दोनो पैर)
भैरव कीलकाय नम: (नाभि)
विनियोगाय नम: (पूरा शरीर)

यंत्र का पंचोपचार से संक्षिप्त पूजन करें तथा नित्य गुड़ का भोग लगावें। इसके बाद निम्न मंत्र का '**काली हकीक माला**' से ११ दिन तक जप करें–

॥ ॐ ह्रीं आपद उद्धारणाय सिद्धये महाबलाय भैरवाय ॐ नम: ॥

Om Hreem Aapad Uddhaarannaay Siddhaye Mahaabalaay Bheiravaay Om Namah

इसके बाद जप को निम्न मंत्र बोलते हुए श्री बटुक भैरव को समर्पित करें –

अनेन मंत्र जपाख्येन कर्मणा।
श्री बटुक भैरव: प्रीयताम् नमम॥

नित्य गुड़ का जो भोग लगाया जाता है, उसे किसी कुत्ते के आगे डाल कर वापस चले आवें। साधना समाप्ति पर यंत्र व माला को जल में विसर्जित करें।

साधना सामग्री पैकेट – 330/-

शक्तिं उद्भवं भय नाशनं

शक्ति के उदभव से भय का नाश होता है।

कालाष्टमी : 26.5.2000
बटुक भैरव जयंती : 11.6.2000

तीव्र प्रभाव युक्त भैरव साधनाएं

कलियुग में भैरव साधना जल्दी से सिद्ध होने वाली है। '**तंत्रालोक**' में भैरव शब्द की उत्पत्ति '**भैभीमादिभि: अवतीति भैरव**' अर्थात भीषण साधनों से भी रक्षा करने वाले भैरव हैं। '**शिव महापुराण**' में बताया गया है कि भैरव भगवान शिव के अवतार हैं –

भैरवः पूर्णरूपो हि शंकरः परात्मनः।
मूढ़ास्ते वै न जानन्ति मोहिता शिव मायया॥

अगले दो माह में भैरव साधनाओं के लिये विशेष उपयुक्त हैं, इनमें भी कालाष्टमी (**26.5.2000**) और बटुक भैरव जयंती (**11.6.2000**) किसी भी प्रकार की भैरव साधनाओं के लिये श्रेष्ठतम दिवस हैं। आगे छः साधनाएं प्रस्तुत की जा रही हैं, जिन्हें वर्ष भर में कभी भी सम्पन्न कर सकते हैं, परन्तु इन दिवसों पर प्रारम्भ करना विशेष अनुकूल है।

आपद उद्धारक बटुक भैरव साधना

'**शक्ति संगम तंत्र**' के 'काली खण्ड' में भैरव की उत्पत्ति के बारे में बताया गया है कि 'आपद' नामक राक्षस कठोर तपस्या कर अजेय बन गया था, जिसके कारण सभी देवता त्रस्त हो गये और वे सभी एकत्र होकर इस आपत्ति से बचने के बारे में उपाय सोचने लगे। अकस्मात उन सभी की देह से एक-एक तेजोधारा निकली और उसका युग्म रूप पंचवर्षीय बटुक के रूप में प्रादुर्भाव हुआ। इस बटुक ने 'आपद' नाम के राक्षस को मारकर देवताओं को संकट मुक्त किया, इसी कारण इन्हें आपदुद्धारक बटुक भैरव कहा गया है।

इस वर्ष **11.6.2000** को बटुक जयंती(ज्येष्ठ शुक्ल दशमी, रविवार) है, जो कि बटुक भैरव का सिद्ध दिवस है।

साधना के लाभ

१. जीवन में समस्त प्रकार के उपद्रव, अड़चन और बाधाओं का इस साधना से समापन होता है।

२. जीवन के नित्य के कष्टों और परेशानियों को दूर करने के लिये भी यह साधना अनुकूल सिद्ध मानी गई है।

३. मानसिक तनावों और घर के लड़ाई-झगड़े, गृह क्लेश आदि को निर्मूल करने के लिये यह साधना उपयुक्त है।

४. आने वाली किसी बाधा या विपत्ति को पहले से ही हटा देने के लिये यह साधना एक श्रेष्ठ उपाय है।

५. राज्य से आने वाली हर प्रकार की बाधाओं या मुकदमें में विजय प्राप्त करने के लिये यह श्रेष्ठतम साधना है।

६. इस साधना से साधक की सम्पत्ति को चोर-लुटेरों से भय नहीं रह जाता, चोर उस ओर नजर भी नहीं करते।

साधना विधान

इस साधना को **11.6.2000** या **किसी भी दशमी** को प्रारम्भ करें। अपने सामने काले तिल की ढेरी पर '**बटुक भैरव यंत्र**' को स्थापित करें। धूप, दीप जलाकर यंत्र का सिन्दूर से पूजन करें। दोनों हाथ जोड़कर बटुक भैरव का ध्यान करें –

भक्त्या नमामि बटुकं तरुणं त्रिनेत्रं,
काम प्रदान वर कपाल त्रिशूल दण्डान्।
भक्तार्ति नाश करणे दधतं करेषु,
तं कोस्तुभा भरण भूषित दिव्य देहम्॥

फिर अपने दायें हाथ में अक्षत के कुछ दानें लेकर अपनी समस्या, बाधा, कष्ट, अड़चन आदि को स्पष्ट रूप से बोल कर उसके निवारण की प्रार्थना करें। फिर अक्षत को अपने सिर पर से घुमाकर आसन के चारों ओर बिखेर दें। इसके पश्चात **'बटुक भैरव माला'** से निम्न मंत्र का एक सप्ताह तक नित्य रात्रि ११ माला जप करें –

बटुक भैरव मंत्र

॥ ॐ ह्रीं बटुकाय आपद उद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं ॐ स्वाहा ॥

Om Hreem Battukaay Aapad Uddhaarannaay Kuru Kuru Battukaay Hreem Om Swaahaa

साधना समाप्ति के बाद यंत्र व माला को जल में विसर्जित कर दें। शीघ्र ही अनुकूलता प्राप्त होती है।

साधना सामग्री पैकेट – 170/-

उन्मत्त भैरव साधना

कश्मीर में अमरनाथ के दर्शन करने के बाद साधक उन्मत्त भैरव के भी दर्शन करते हैं, यह प्रसिद्ध भैरव पीठ में से एक पीठ है, शंकराचार्य ने स्वयं इस पीठ की स्थापना कर इस मूर्ति का प्राण संजीवन किया था। अमरनाथ मन्दिर के दक्षिण में लगभग आधा किलोमीटर आगे उन्मत्त भैरव की पीठ है। इस पीठ से सम्बन्धित सैकड़ों-हजारों चमत्कारिक कथाएं भारत में विख्यात हैं। कहते हैं कि यदि साधक श्रद्धा के साथ नंगे पांव इस पीठ तक पैदल जाकर उन्मत्त भैरव को भोग लगाता है, तो उसकी मनोकामना पूर्ण होती है। इस भैरव मन्दिर के पीछे के भाग में गर्म पानी का सोता है, इस पानी में नहाने से किसी भी प्रकार की डाइबिटिज या श्वांस की बीमारी एवं और भी प्रकार के रोग दूर हो जाते हैं। उन्मत्त भैरव का स्वरूप ही रोग हर्ता और कल्याणकारी होता है।

साधना के लाभ

१. इस साधना को करने से दीर्घ काल से ठीक न हो रही बीमारियों पर भी नियंत्रण प्राप्त होता है, तथा शीघ्र ही रोग का निवारण होता है।

२. श्रेष्ठ सन्तान की प्राप्ति के लिये भी इस साधना को बहुत से व्यक्तियों द्वारा सफलता पूर्वक आजमाया गया है।

साधना विधान

इस साधना को **किसी भी सोमवार की रात्रि से प्रारम्भ** करना चाहिये। साधक सफेद धोती पहन कर तेल का एक दीपक प्रज्ज्वलित कर ले। दीपक के सामने किसी ताम्र पात्र में **'उन्मत्त भैरव यंत्र'** (तावीज) को स्थापित करें। तावीज के सामने अक्षत की एक ढेरी बनाकर उसपर **'शुभ्र स्फटिक मणि'** स्थापित करें। दोनों हाथ जोड़कर भैरव ध्यान सम्पन्न करें –

आद्यो भैरव भीषणो निगदितः श्री कालराजः क्रमाद्,
श्री संहारक भैरवोऽप्यथ रु रुश्चोन्मत्तको भैरवः।
क्रोधश्चण्ड उन्मत्त भैरव वरः श्री भूत नाथस्ततो,
ह्यष्टौ भैरव मूर्तयः प्रतिदिनं दद्युः सदा मंगलम्॥

फिर दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि – "मैं अमुक नाम, अमुक गोत्र का साधक अपने (अथवा परिवार के किसी सदस्य के लिये) लिये उन्मत्त भैरव की साधना में प्रयुक्त हो रहा हूं, शिव के अवतार भगवान भैरव मेरे रोगों का शमन करें (अथवा श्रेष्ठ सन्तान प्राप्ति का वरदान दें)" ऐसा बोलकर जल को भूमि पर छोड़ दें और तावीज व मणि पर काजल एवं सिन्दूर से तिलक करें। फिर **'सफेद हकीक माला'** से दो सप्ताह तक निम्न मंत्र का नित्य ५ माला जप करें –

उन्मत्त भैरव मंत्र

॥ ॐ उं उन्मत्ताय भ्रं भ्रं भैरवाय नमः ॥

Om Un Unmattaay Bhram Bhram Bheiravaay Namah

दो सप्ताह बाद माला व मणि को जल में विसर्जित कर दें तथा तावीज को सफेद धागे में पिरोकर रोगी के गले (यदि रोग मुक्ति के लिये प्रयोग किया गया हो) या मां (यदि सन्तान प्राप्ति के लिये प्रयोग किया गया हो) के गले में धारण करा दें। एक माह धारण करने के बाद जल में विसर्जित करें।

साधना सामग्री पैकेट – 390/-

काल भैरव साधना

भैरव का नाम भले ही डरावना और तीक्ष्ण लगता हो, परन्तु अपने साधक के लिये तो भैरव अत्यन्त सौम्य और रक्षा करने वाले देव हैं। जिस प्रकार हमारे बॉडी गार्ड लम्बे डील डौल वाले भयानक और बन्दूक या शस्त्र साथ में रखकर चलने वाले होते हैं, पर उससे हमें भय नहीं लगता। ठीक उसी प्रकार उनकी वजह से भैरव भी हमारे जीवन के बॉडी गार्ड की तरह हैं, वे हमें किसी प्रकार से तकलीफ नहीं देते अपितु हमारी रक्षा करते हैं और हमारे लिये अनुकूल स्थितियां पैदा करते

भैरव साधना सम्पन्न करते समय साधक को एक कटोरी में घी और गुड़ मिलाकर नैवेद्य अवश्य अर्पित करना चाहिये। इससे भैरव प्रसन्न होते हैं।

साधना काल में यदि ताजी रोटी में घी को चुपड़ कर कुत्ते (भैरव वाहन) को खिलाया जाये, तो भैरव प्रसन्न होते हैं।

हैं। यह साधना सरल और सौम्य साधना है, जिसे पुरुष या स्त्री कोई भी बिना किसी अड़चन के सम्पन्न कर सकता है। मध्य प्रदेश के उज्जैन शहर में आज भी काल भैरव एक मन्दिर है, जिसे 'चमत्कारों का मन्दिर' कहा जाता है। तंत्र अनुभूतियों के सैकड़ों सत्य घटनाएं इससे जुड़ी हुई हैं।

साधना के लाभ

१. तांत्रिक ग्रंथों में इसे शत्रु स्तम्भन की श्रेष्ठ साधना के रूप में एकमत से स्वीकार किया गया है।

२. यदि शत्रुओं के कारण अपने प्राणों को संकट हो अथवा परिवार के सदस्यों या बाल-बच्चों को शत्रुओं से भय हो, तो यह साधना एक प्रकार से आत्म रक्षा कवच प्रदान करती है। शत्रु की बुद्धि स्वतः ही भ्रष्ट हो जाती है और वह परेशान करने की सोचना ही बन्द कर देता है।

३. यदि आप ऐसी जगह कार्य करते हैं, जहां हर क्षण मृत्यु का खतरा बना रहता हो, एक्सीडेण्ट, दुर्घटना, आगजनी, गोली-बन्दूक, शस्त्र से या किसी भी प्रकार की **अकाल मृत्यु का भय** हो, तो '**काल भैरव साधना**' अत्यन्त उपयुक्त सिद्ध होती है। वस्तुतः यह काल को टालने की साधना है।

४. स्त्रियां इस साधना को अपने बच्चों एवं सुहाग की दीर्घायु एवं प्राणरक्षा के लिये भी सम्पन्न कर सकती हैं।

साधना विधान

कालाष्टमी की रात्रि कालचक्र को अपने अधीन करने की रात्रि है, काली और काल भैरव दोनों की संयुक्त सिद्धि रात्रि है। इस साधना को '**कालाष्टमी**' (26.5.2000) या **किसी भी अष्टमी** को रात्रि में प्रारम्भ करना चाहिये। साधक लाल (अथवा पीली) धोती धारण कर लें। स्त्रियां लाल साड़ी धारण कर सकती हैं। इसके बाद लाल रंग के आसन पर बैठ कर दक्षिण दिशा की ओर मुख कर लें। अपने सामने एक थाली में कुंकुम या सिन्दूर से '**ॐ भं भैरवाय नमः**' लिख दें। फिर थाली के मध्य '**काल भैरव यंत्र**' और '**महामृत्युंजय गुटिका**' को स्थापित कर दें। लोहे की कुछ कीलें अपने पास पहले से ही मंगा कर रख लें। यदि आपके परिवार में सात सदस्य हैं, तो उन सबकी रक्षा के लिये सात कीलें पर्याप्त होंगी।

प्रत्येक कील को मौली के टुकड़े से बांध दें। बांधते समय भी '**ॐ भं भैरवाय नमः**' का जप करें। फिर इन कीलों को अपने परिवार के जिन सदस्यों की रक्षा कामना आपको करनी है, उनमें से प्रत्येक का नाम एक-एक कर बोलें और साथ ही एक एक कील यंत्र पर चढ़ाते जाएं। यह अपने लिये आत्म रक्षा बंध या कवच प्राप्त करने का प्रयोग है। फिर भैरव के निम्न स्तोत्र मंत्र का मात्र का १०८ बार उच्चारण करें –

यं यं यं यक्ष रूपं दश दिशि विदितं भूमि कम्पायमानं।
सं सं सं संहार मूर्तिं शिर मुकुट जटा शेखरं चन्द्र बिम्बम्।
दं दं दं दीर्घ कायं विकृत नख मुखं ऊर्ध्वरोयं करालं।
पं पं पं पाप नाशं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम्॥

दायें हाथ की मुट्ठी में काली सरसों लेकर निम्न मंत्र का ११ बार उच्चारण करें –

ॐ काल भैरव, श्मशान भैरव, काल रूप काल भैरव! मेरो बैरी तेरो आहार रे। काढ़ि करेजा चखन करो कट कट। ॐ काल भैरव, बटुक भैरव, भूत भैरव, महा भैरव, महा भय विनाशनं देवता। सर्व सिद्धिर्भवेत्।

फिर अपने सर पर से सरसों को तीन बार घुमाकर सरसों के दानों को एक कागज में लपेट कर रख दें। इसके बाद निम्न मंत्र का एक घण्टे तक जप करें –

काल भैरव मंत्र

॥ ॐ भैरवाय वं वं वं ह्रां क्ष्रों नमः ॥

Om Bheiravaay Vam Vam Vam Hraam Kshrom Namah

यह केवल एक दिन का प्रयोग है। जप के बाद साधक आसन से उठ जाये, और भैरव के सामने जो भोग रखा हो, उसे तथा यंत्र पर जो कीलें चढ़ाई हैं, उन्हें और सरसों के दानों को यंत्र व गुटिका के साथ लेकर किसी चौराहे पर रख आएं।

साधना सामग्री पैकेट – 360/-

भैरव प्रत्यक्ष दर्शन साधना

१. इस साधना से भैरव शीघ्र प्रसन्न होते हैं, और साधक को मनोवांछित वरदान देने में समर्थ होते हैं।

२. भैरव के प्रत्यक्ष दर्शन के लिये यों तो अन्य कई और साधनात्मक विधान भी हैं, परन्तु इस साधना का प्रयोग भैरव के दर्शन और प्रत्यक्षीकरण के लिये किया जाता है।

३. साधक को पूरे जीवन भर के लिये भैरव सिद्ध हो जाते हैं और निरन्तर हर प्रकार के खतरों से उसकी रक्षा करते हैं तथा जब भी साधक को आवश्यकता पड़े तब भैरव सहायता को उपस्थित होते हैं।

साधना विधान

इस साधना के लिये काले वस्त्रों को धारण करना चाहिये तथा काले आसन का ही प्रयोग करना चाहिये। साधना काल में ब्रह्मचर्य पालन भी अनिवार्य है। इस साधना को **22.6.2000** अथवा **कृष्ण पक्ष की पंचमी** से प्रारम्भ किया जा सकता है। यह रात्रि कालीन साधना है। संन्यासियों के मध्य इस साधना को केवल नदी तट, श्मशान अथवा शिवालय में ही करने का विधान है, परन्तु गृहस्थ साधकों के लिये इस साधना को घर रात्रि के समय किसी एकान्त कक्ष में बिना किसी संशय के सम्पन्न किया जा सकता है।

अपने सामने सिन्दूर की एक ढेरी पर '**भैरव यंत्र**' को स्थापित करें। फिर गीली मिट्टी से एक छोटी सी मानवाकार मूर्ति बनाएं और उसे सिन्दूर से रंग कर यंत्र के ऊपर स्थापित कर दें। संक्षिप्त गुरु पूजन कर लें। फिर बाएं हाथ में अक्षत के कुछ दानें लेकर आत्म रक्षा मंत्र का सस्वर उच्चारण करते हुए अक्षत को चारों दिशाओं में बिखेर दें–

आत्म रक्षा मंत्र

ॐ हां हीं हूं नमः पूर्वे। ॐ हां हीं हूं हौं नमः आग्नेये। ॐ हीं श्रीं नमः दक्षिणे। ॐ ग्लूं ब्लूं नमः नैऋत्ये। ॐ प्रूं प्रूं सं सः नमः पश्चिमे। ॐ भ्रां भ्रां नमः वायव्ये। ॐ भ्रां व्रं भ्रं फट् नमः ऐशान्ये। ॐ ग्लों ब्लूं नमः ऊर्ध्वे। ॐ घ्रां घ्रं घ्रः नमः अधोदेशे।

इसके बाद काजल से अपने मस्तक पर तिलक करें और यंत्र तथा मानवाकृति पर तिलक करें। अपने ललाट पर, यंत्र तथा मानवाकृति पर सिन्दूर से बिन्दी लगाएं। फिर '**काली हकीक माला**' से मंत्र जप प्रारम्भ करें। इस साधना में प्रयुक्त मंत्र अत्यंत तीक्ष्ण और शक्तिशाली है, अतः केवल दृढ़ चित्त और साहसी व्यक्तियों को ही इस साधना को करना चाहिये। स्त्रियां, वृद्ध, या बालक इस साधना को न करें। यह रात्रिकालीन साधना है और इसमें एक लाख मंत्र जप का अनुष्ठान करना होता है। इस हेतु नित्य कितना मंत्र जप करना है, यह अपनी सुविधानुसार निर्धारित कर लें। चाहें तो चालीस दिन तक नित्य २५ माला भी जप कर सकते हैं।

भैरव प्रत्यक्षीकरण मंत्र

ॐ हां हीं हूं हः। क्षां क्षीं क्षूं क्षः। खां खीं खूं खः। घ्रां घ्रीं घ्रूं घ्रः। भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रः। भ्रों भ्रों भ्रों भ्रों क्लों क्लों क्लों क्लों। श्रों श्रों श्रों श्रों ज्रों ज्रों ज्रों ज्रों। हुं हुं हुं हुं हुं हुं हुं हुं फट् सर्वं तो रक्ष रक्ष रक्ष रक्ष भैरव नाथ नाथ हुं फट्।

साधना काल में जप करते समय भैरव की धुंधली आकृति अनुभव हो सकती है। जिस भी दिन किसी प्रकार की अनुभूति हो, उसके दूसरे दिन भैरव की उस मूर्ति (मिट्टी की मानवाकृति) को नीले रंग का वस्त्र अर्पित करें, उस तेल में सिन्दूर मिलाकर तिलक लगावें। नैवेद्य के साथ आटे और गुड़ का बना हुआ पुआ, तेल से चुपड़ी हुई आटे की रोटी, गुड़, मीठे पकोड़े, उड़द की दाल के बने पकोड़े थाली में सजाकर धूप बत्ती जलाकर अर्पित करें। फिर मंत्र जप प्रारम्भ करें।

यदि उस दिन भैरव के दर्शन न हों, तो दूसरे दिन भी ऐसी ही करें। यदि दूसरे दिन भी दर्शन न हों, तो तीसरे दिन भी करें, तीसरी रात्रि में अवश्य ही भैरव के दर्शन हो जाते हैं। फिर जब भैरव वरदान मांगने को कहें, तब साधक अत्यन्त विनम्र भाव से अपनी कामना प्रकट कर दें। इस साधना के बाद कोई भी शत्रु, तांत्रिक या कोई भी व्यक्ति फिर साधक पर हावी नहीं हो पाता है। साथ ही साधक को कई प्रकार की शक्तियां भी प्राप्त हो जाती हैं।

साधना समाप्ति के बाद यंत्र व माला को किसी निर्जन स्थान में रख आयें।

साधना सामग्री पैकेट – 410/-

विकराल भैरव साधना

वर्तमान समय ग्रहों की दृष्टि से पर्याप्त चिन्ताजनक है। पिछले कई वर्षों से ज्योतिषियों में वर्ष २००० के मई माह में पड़ने वाले षडग्रही योग, जुलाई में तीन ग्रहण आदि कुयोगों को लेकर विश्व युद्ध छिड़ने, घातक शस्त्रों के दुरुपयोग तथा इन ग्रहों की वजह से भीषण प्राकृतिक प्रकोपों में भयंकर जन-धन की हानि की आशंका व्यक्त की जा रही है। यह आशंका निर्मूल भी नहीं है, क्योंकि विश्व भर में इसी तरह का वातावरण बहुत पहले से ही बनने लगा है। व्यक्तिगत रूप से भी ऐसे कुयोगों की चपेट में ६० प्रतिशत से अधिक लोगों के आने की आशंका होने से पूज्य गुरुदेव ऐसे अनेक उपाय शिविरों और पत्रिका के माध्यम से प्रस्तुत कर रहे हैं, जिनसे ऐसे दुर्योगों के दुष्प्रभावों को यदि पूरी तरह रोका जाना सम्भव न भी हो, तो उसके दुष्परिणाम यथासम्भव कम से कम किये जा सकें। ऐसा ही एक प्रयोग भगवति छिन्नमस्ता और छिन्नमस्ता के भैरव से सम्बन्धित विकराल भैरव की साधना है।

साधना के लाभ

१. यह साधना केवल ग्रह बाधा से ही नहीं किसी भी प्रकार के तांत्रिक, मांत्रिक, दुष्प्रभावों, भूत-प्रेत बाधा अथवा

डिप्रेशन (जीवन में हताशा) या किसी भी प्रकार की असफलता जन्य निराशा को दूर करने के लिये राम बाण है।

२. यदि आपका कोई प्रियजन किसी कारण आपकी बात नहीं मान रहा है, किसी अन्य के प्रभाव में आ गया है, उसे अपनी बात मनवाने के लिये भी इस साधना का अचूक प्रयोग किया जा सकता है।

साधना विधान

यह उग्र साधना है। अतएव गुरु दीक्षा लेकर ही इस साधना में प्रवृत्त होना चाहिये। **7.4.2000** से **13.5.2000** के बीच **किसी भी शुक्रवार, रविवार या मंगलवार** की रात्रि में यह साधना प्रारम्भ करना ज्यादा अच्छा है। इसके अतिरिक्त इस साधना को **किसी अमावस्या की रात्रि** में भी प्रारम्भ किया जा सकता है। काले वस्त्र धारण कर, काले आसन पर दक्षिण दिशा की ओर मुख कर बैठ जाएं, अपने सामने '**भैरव गुटिका**' और '**तांत्रोक्त नारियल**' रख लें। जिस व्यक्ति की तंत्र बाधा, शत्रु बाधा या अन्य बाधा से मुक्ति चाहते हों, उसका नाम का उच्चारण कर दाएं हाथ की मुट्ठी में सरसों के दानें बंद कर लें। फिर निम्न मंत्र बोलते हुए सरसों को चारों ओर फेंक दें–

ॐ आं ह्रीं ह्रीं ह्रीं सर्व बाधा नाशय नाशय मारय मारय उच्चाटय उच्चाटय, मोहय मोहय, वशं कुरु कुरु सर्वार्थ कस्य सिद्धि रूपं त्वं विकराल! काल भक्षणं महादेव स्वरूपं त्वं, सर्व सिद्धिभवेत्! ॐ विकराल भैरव, महाकाल भैरव, काल भैरव, महाभैरव, महाभय, सर्व तंत्र बाधा विनाशनं देवता। सर्वसिद्धिभवेत्।

फिर '**काली हकीक माला**' से निम्न मंत्र की १४ माला नित्य ८ दिन तक जप करें –

विकराल भैरव मंत्र

॥ ॐ भ्रं भ्रं हुं हुं विकराल भैरवाय भ्रं भ्रं हुं हुं फट् ॥

Om Bhram Bhram Hum Hum Vikaraal Bheiravaay Bhram Bhram Hum Hum Phat

साधना समाप्ति के बाद समस्त सामग्री को जल में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट – 330/-

स्वर्णाकर्षण भैरव

'**रुद्रयामल तंत्र**' में उल्लेख है कि प्रत्येक महाविद्या से सम्बन्धित परस्पर एक-एक भैरव भी हैं। भगवती कमला महाविद्या से सम्बन्धित भैरव को '**नारायण भैरव**' के नाम से जाना जाता है। जिस प्रकार भगवती कमला महालक्ष्मी का ही स्वरूप हैं, ठीक उसी प्रकार नारायण भैरव भी दारिद्र्य निवारण, धन प्रदाता, और सुख सौभाग्य वृद्धि आदि गुणों से युक्त हैं। इन्हीं गुणों के कारण इन्हें स्वर्णाकर्षण भैरव भी कहा जाता है, जिनकी साधना अधिक तीव्र और ज्यादा अचूक है।

साधना के लाभ

१. इस साधना से साधक को अकस्मात स्वर्ण की प्राप्ति नहीं होने लग जाती परन्तु आकस्मिक धन प्राप्ति, आय वृद्धि के साधनों में वृद्धि आदि के सुयोग जरूर बनने लगते हैं।

२. यदि आपका कोई धन रुका हुआ है या फंसा हुआ है अथवा कोई आपसे धन उधार ले गया है और वापस करने नाम नहीं ले रहा है, या आनाकानी कर रहा है। इन सभी स्थितियों के लिये स्वर्णाकर्षण भैरव मंत्र अनुकूल है।

४. यदि व्यक्ति ऋण के दल-दल में फंस गया हो, तो उसे ऋण मुक्ति मिलती है, उसकी दरिद्रता दूर होती है।

साधना विधान

रात्रि में स्नान कर पीली धोती धारण कर लें तथा उत्तर दिशा की ओर मुख कर बैठ जाएं। सुगन्धित धूप व अगरबत्ती जला लें। संक्षिप्त गुरु पूजन कर अपने सामने '**स्वर्णाकर्षण भैरव यंत्र**' रख लें। उस पर कुंकुम से एक त्रिकोण बनाएं और उसके तीन कोनों में '**३ कमला बीज**' रखें।

फिर दोनों हाथ जोड़कर भैरव का ध्यान करें –

ॐ करकलित कपालः कुण्डली दण्डपाणिम्,
तरुण तिमिर नीलो व्याल यज्ञोपवीती।
ऋतु समय सपर्य्या विघ्न विच्छेद हेतु,
जयति भैरवनाथ सिद्धिदः साधकानाम् ॥

इसके बाद '**कमलगट्टे की माला**' से निम्न मंत्र का १६ दिन तक नित्य ३ माला मंत्र जप करें –

स्वर्णाकर्षण भैरव मंत्र

॥ ॐ ऐं क्लीं क्लीं क्लूं ह्रां ह्रीं ह्रूं सः वं आपद उद्धारणाय अजामल बद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षण भैरवाय मम दारिद्र्य विद्वेषणाय ॐ ह्रीं महाभैरवाय नमः ॥

Om Ayeim Kleem Kleem Kloom Hraam Hreem Hram Sah Vam Aapad Uddhaarannaay Ajaamal Baddhaay Lokeshwaraay Swarnnaakarshannaay Bheiravaay Mam Daaridrya Vidveshannaay Om Hreem Mahaa-Bheiravaay Namah

जब साधना समाप्त हो जाए, तब यंत्र व माला को जल में विसर्जित कर दें तथा कमला बीजों को एक पीले कपड़े में बांध कर किसी मन्दिर में चढ़ा दें।

साधना सामग्री पैकेट – 480/-

श्रावण साधना चतुर्थ सोमवार 9 अगस्त 2004

रसेश्वर साधना

तनाव तथा क्लेश निवृति व जीवन में रस प्राप्ति हेतु

भगवान शिव का ही एक नाम रसेश्वर भी है भारतीय शास्त्रों में 'रस' की धारणा पारद से ही गई है। पारद के लिए कहा गया है -

रसनात्सर्वधात्नां रस इत्यभिधीयते
जरारुग्मृत्युनाशाय रम्यते वा रसो मतः।

अर्थात् जो समस्त धातुओं को अपने में समाहित कर लेता है और **जो बुढ़ापे, रोग व मृत्यु की समाप्ति के लिए ग्रहण किया जाता है, वही रस की संज्ञा से विभूषित है।**

पारद को भगवान शिव का वीर्य कहा गया है, और इसी रस के कारण भगवान शिव नित्य आनन्द में मग्न रहते हैं, इसी **रस मग्न होने की क्रिया से उन्हें रसेश्वर भी कहा गया है रस का अर्थ है आनन्द, मस्ती, प्रफुल्लता, जोश, तरंग।** भगवान शिव को यदि देखा जाए, तो उनकी सवारी नन्दी बैल और पार्वती जी की सवारी शेर - दोनों ही परस्पर बैरी। भगवान शिव के गले में नाग और शिव के पुत्र कार्तिकेय की सवारी मोर - दोनों परस्पर बैरी। सांप और शिव पुत्र गणेश का वाहन चूहा भी परस्पर बैरी हैं। अब शेर बैल पर झपटे, कि सांप चूहे पर झपटे या मोर सांप पर झपटे, पर भगवान शिव किसी भी प्रकार की चिंता से मुक्त अपने ही रस में मग्न हैं। यही आनन्द की स्थिति प्राप्त करना ही जीवन में रस घोलना है। और भगवान रसेश्वर की साधना से यह संभव है।

इस प्रयोग को सम्पन्न करने के बाद व्यक्ति अपने आप में प्रसन्नचित्त हो जाता है, उसके तनाव, चिंता, व्याधि सभी गायब हो जाते हैं, उसके अंदर एक नवीन तंरग और मस्ती का संचार हो जाता है। छोटी-छोटी बातों पर क्रोध आना, तनाव में आ जाना सब दूर हो जाता है। यदि घर में किसी भी प्रकार का क्लेश हो, लड़ाई झगड़ा हो, तो वह सब समाप्त हो जाता है। व्यक्ति स्वयं तो प्रसन्न रहता ही है, उसके सम्पर्क में आने वाले लोग भी उससे खुश रहते हैं, क्योंकि उसके जीवन में रस समाविष्ट हो जाता है इस प्रयोग द्वारा।

इस साधना में **'नर्मदेश्वर शिवलिंग'**, **'रसेश्वरी पारद गुटिका'** तथा **'पंचमुखी रुद्राक्ष'** की आवश्यकता होती है। इसमें माला की आवश्यकता नहीं होती है। पहले संक्षिप्त गुरु पूजन व गणेश स्मरण कर लें। हाथ में जल लेकर मन में संकल्प करें कि **''मैं (नाम बोलें) जीवन में समस्त तनाव, क्लेश, अशान्ति, द्वन्द्व की निवृत्ति एवं जीवन में पूर्ण आनन्द तथा रस प्राप्ति के लिए रसेश्वर साधना संपन्न कर रहा हूं।''**

सामने **'नर्मदेश्वर शिवलिंग'** को किसी पात्र में स्थापित करें। शिवलिंग के बाईं ओर अक्षत की ढेरी पर **'रसेश्वरी पारद गुटिका'** को स्थापित करें।

दोनों हाथ में **'पंचमुखी रुद्राक्ष'** लेकर भगवान शिव का निम्न ध्यान मंत्र बोलते हुए रुद्राक्ष को यंत्र पर अर्पित करें।

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसम्,
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीति हस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृतिं वसानम,
विश्वाद्यं विश्वन्द्यं निखिलभयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

निम्न मंत्र बोलते हुए शिवलिंग पर बिल्व पत्र चढ़ाएं।

ॐ भवाय नमः। ॐ मृडाय नमः। ॐ रुद्राय नमः। ॐ कालान्तकाय नमः। ॐ नागेन्द्रहाराय नमः। ॐ कालकरणाय नमः। ॐ लास्यप्रियाय नमः। ॐ शिवाय नमः। ॐ रसेश्वराय नमः।

प्रत्येक मंत्र बोलते हुए शिवलिंग पर अक्षत चढ़ाएं -

ॐ शर्वाय नमः। ॐ भवाय नमः। ॐ महेशाय नमः। ॐ उग्राय नमः। ॐ भीमाय नमः। ॐ ईशानाय नमः। ॐ महादेवाय नमः। ॐ भद्राय नमः। ॐ रसेश्वराय नमः।

एक-एक मंत्र बोलते हुए शिवलिंग पर कुंकुम चढ़ावें -

ॐ अघोराय नमः। ॐ शर्वाय नमः। ॐ विरुपाय नमः। ॐ विश्वरूपिणे नमः। ॐ त्र्यम्बकाय नमः। ॐ कपर्दिने नमः। ॐ भैरवाय नमः। ॐ शूलपाणये नमः। ॐ ईशानाय नमः। ॐ महाकालाय नमः। ॐ रसेश्वराय नमः।

फिर निम्न मंत्र को आधे घण्टे तक बिना माला जपें -

॥ ॐ ऐं ह्रीं रसेश्वराय महाबलाय महादेवाय नमः॥

प्रयोग समाप्ति पर शिवलिंग को पूजा स्थान में रख दें व अन्य सामग्री को शिव मंदिर में अर्पित करें।

साधना सामग्री - 270/-

यदि काल भैरव आपके साथ हैं तो संसार में कौन आपको हानि पहुंचा सकता हैं?

जहां है भैरव वहां है शिव और शक्ति

भैरव अपने तीव्र रूप में साधक को हर प्रकार से अभय तो प्रदान करते ही हैं उसके साथ, प्रदान करते हैं अटूट बल, पराक्रम और तेज।

भैरव के स्वरूप से डरिये मत आप कीजिये

महाकाल भैरव साधना

भैरव की रम्य स्थली श्मशान! जगह-जगह चितायें जल रही थीं चड़ड़-चड़ड़ की ध्वनि के साथ मृत मानवों के चर्म, मांस-मज्जा जल कर वातावरण को एक विचित्र गंध से भर रहे थे। चारों ओर व्याप्त भय जनक शब्द कठोर हृदय मानव को भी दहला देने में समर्थ थे। भारी पंखों से वृक्षों पर फड़फड़ाते गिद्ध मांस के टुकड़ों की प्रतीक्षा में थे और चिता से उठती धूम्र की अंतिम लपट शून्य में विलीन होती हुई मानों कह रही थी – बस! इस मृतक का जो शेष रह गया है, उसे लेकर मैं ऊपर आकाश तत्व में मिलाने जा रही हूं ... किसी के लिए वीभत्स, तो किसी के लिए अपूर्व शान्तिदायक दृश्य।

मंद चलती वायु एक क्षण के लिए रुकी, ज्यों प्रकृति की ही श्वास थम गई हो। अचानक एक ओर से आंधी का प्रचण्ड झोंका उड़ता चला गया। पास ही एक वृक्ष जड़ से उखड़ कर गिर पड़ा। कोलाहल मच गया, सैकड़ों पक्षियों के साथ-साथ अनेक भटकती आत्माओं की प्रिय स्थली वह वृक्ष, जिसकी उभरी जड़ों पर बैठ मैं नित्य जाह्नवी का सौन्दर्य निहारा करता था, शव के समान धराशायी पड़ा था।

बीज मंत्र का जप निरन्तर जारी था, एक क्षण के लिए भी मैंने आत्मसंयम नहीं खोया था। अविचलित भाव से मैं साधना के अंतिम चरण की पूर्णाहुति में लीन था। एक ही भावना, एक ही लगन थी कि किसी भी कीमत पर 'कंकाल भैरव' को सामने उपस्थित करना ही है। चाहे प्रकृति कितनी भी परीक्षा ले, भले ही यह देह समाप्त हो जाय, परन्तु यदि अब प्रत्यक्षीकरण नहीं हुआ, तो मेरा साधक होना ही व्यर्थ है, बेमानी है। अपने गुरु का इतना बड़ा अपमान असह्य है मेरे लिये, कितनी प्रार्थना के बाद उन्होंने मुझे अनुमति प्रदान की थी इस तीक्ष्ण साधना के लिए।

वर्षों से मुझे वे इसका अद्वितीय साधक बनने की प्रक्रिया कर रहे थे। उन्होंने परम दुर्लभ 'कंकाल भैरव दीक्षा' प्रदान कर मेरे एक-एक अणु को चैतन्य करने, उसे शक्तिमान बनाने की क्रिया की है। भला असफल या अपूर्ण कैसे हो सकती है मेरे सर्वसमर्थ गुरु द्वारा दी गयी अनुपम दीक्षा और उनके द्वारा बतायी गई यह अद्भुत साधना।

अब तो पूर्ण क्षमता के साथ कंकाल भैरव जैसे प्रचण्ड

पुरुषको अपने वशीभूत करना ही है, साक्षात् अपनी देह में उतार कर ही गुरु चरणों को स्पर्श करूंगा। विजय की आकांक्षा से विद्युत सी दौड़ गई मेरे सुदृढ़ शरीर में और विशिष्ट रक्षा मंत्र का उच्चारण कर सरसों के दानें आंधी की दिक्षा में उछाल दिये ...

वातावरण साफ होता चला गया। पृथ्वी का कम्पन, आकाश की गड़गड़ाहट और पवन का वेग स्वतः ही शांत हो गये थे। तीव्र मंत्रों के घोष और अग्नेय नेत्रों से निःसृत लपटों के सामने हवन कुण्ड की अग्नि भी मंद पड़ गयी थी। आह्वान मंत्रों के साथ प्रत्येक आहुति देते हुए इष्ट दर्शन की मेरी आतुरता बढ़ती जा रही थी -

अभीरु भैरवानाथे भूतयो योगिनी पतिः।
शूलपणि खड्गपाणि कंकाली ध्रूमलोचनः॥
त्रिनेत्रो बहुनेत्रश्च ''तथा पिंगललोचनः।
कंकाल कालशमनः कलाकाष्ठाननः कविः॥
रक्ततः पानपः सिद्धः सिद्धिः सिद्धसेवितः।
श्मशनवासी मांसाशी श्वर्पराशी स्मरान्तकः॥

भोर के पहले एक अपूर्व प्रकाश श्मशान में फैल गया। चारों ओर से अपूर्व सुगन्ध आने लगी। अचानक एक बलिष्ठ कृष्णवर्णीय श्वान प्रकट हुआ और भोग का लड्डू उठा कर तीव्र गति से भाग गया। मुझे स्मरण था, कि उच्चकोटि के इष्ट अपने साक्षात् दर्शन से पूर्व अपने किसी गण को भेजा करते हैं और श्वान तो भैरव का वाहन ही है ... मैं विचलित हुए बिना यज्ञ कार्य में तल्लीन रहा।

अंतिम आहुति ... सारा वातावरण एकदम से कोलाहल पूर्ण हो उठा, सैकड़ों प्रकार की चीखें, हलचल और भगदड़, ज्यों कोई दैवी विपदा आ पड़ी हो। दूर बहती जाह्नवी में छटपटाहट कुछ और तीव्र हो गयी थी, पता नहीं वायु के वेग में अथवा उछल कर अघटित हो रही एक विलक्षण घटना का साक्षीभूत बनने के लिये ...

... और तभी एक भीमकाय तेजपुञ्ज पुरुषाकृति साकार हो उठी, ऐसा लग रहा था मानो स्वयं काल ही पुरुष रूप धारण कर साकार हो गया हो। उसके आगमन के साथ ही उस निर्जन श्मशान में प्रचण्ड वेग से पवन प्रवाहित होने लगी, निकट अवस्थित शिलाखण्ड थर्राने लगे, देखते ही देखते सूर्य के समान तेजस्वी कंकाल भैरव के तेजस् ताप से सारा वातावरण झुलसने सा लगा, तीव्र ताप से आकुल मैं अभ्यर्थना के लिए झुका ही था, कि वह भीषण प्रचण्ड स्वरूप एक अत्यन्त शीतल सौम्य स्वरूप में परिवर्तित हो उठा, जिसका हाथ अभय मुद्रा में उठा हुआ था ... कुछ ही क्षणों में वह दिव्य तेजपुञ्ज शून्य में विलीन हो गया।

मेरा अंतर अपूर्व आनन्द से उद्भासित हो उठा। मेरी एकनिष्ठ उग्र साधना पूर्ण सफल हुई थी। मन ही मन में गुरुदेव के चरणों में बार-बार प्राणिपात कर उठा, जिनकी असीम अनुकम्पा के फलस्वरूप मैं भैरव के जाज्वल्यमान स्वरूप का प्रत्यक्ष दर्शन कर सका, उनका आशीर्वाद प्राप्त कर सका। मेरा रोम-रोम हर्षित हो रहा था, मेरे शरीर का एक-एक कण मानो कह रहा हो, कि आज मैंने एक अप्रतिम साधना प्रत्यक्ष कर स्वयं तो एक सिद्धि प्राप्त की ही, एक दुर्लभ शक्ति को हस्तगत किया ही है, साथ ही आज मैंने अपने गुरु के गौरव को भी प्रवर्धित किया है।

यह महाकाल की तीव्रतम साधना जब मैंने गुरु कृपा से सम्पन्न की तो ऐसा अनुभव हुआ जैसे मैंने तंत्र के क्षेत्र में एक विशेष सफलता प्राप्त कर ली है. मुझे ऐसा प्रत्यक्ष आभास होने लगा कि मेरे भीतर अपार शक्ति का समावेश हो गया है और अब कोई भी मुझे किसी प्रकार की हानि नहीं पहुंचा सकता। मेरे चेहरे पर एक तीव्र भाव व्याप्त हो गया और हर क्षण मुझे ऐसा लगता कि रक्षाकारक भैरव देव सदा मेरे साथ हैं. ऐसी महान साधना मंत्र जप प्रत्येक साधक के लिए अपने जीवन में सफलता हेतु अनिवार्य है।

महाकाल भैरव प्रयोग

किसी भी शुभ कार्य हेतु भैरव स्थापना अवश्य की जाती है, क्योंकि भैरव रक्षा कारक देव हैं, जहां भैरव की स्थापना पूजा होती है, वहां कार्य में कोई आपत्ति, बाधा नहीं आ सकती, शत्रुओं पर वज्र की तरह प्रहार किया जा सकता है। जो अपने दम पर जिये दुनियां उसी की कहलाती है, जो अपने जीवन में जोखिम उठा कर कार्य हाथ में लेता है, भाग्य उसी का साथ देता है, और वही अपने जीवन में सफल होता है, आप जी रहे हैं ओर मोहल्ले के बाहर आपको कोई पहिचानता ही नहीं है, फिर ऐसा जीवन किस काम का, नये-नये कार्य करने का, नये जोखिम उठाने का उत्साह हर समय होना चाहिए तभी सड़े गले जीवन से नये जीवन का निर्माण किया जा सकता है।

यहां यह बात ध्यान देने योग्य है कि जो व्यक्ति आगे बढ़ने का प्रयास करते हैं, उनके ही मार्ग में रुकावटें आती हैं, शत्रु उत्पन्न होते हैं, जो अपने जीवन को एक निश्चित गति पर

कोल्हू के बैल की तरह चलने देते हैं, उसके शत्रु कैसे होंगे? जो जीवन से भाग कर छुप जाता है, वहां साधना का नाटक करता है, उसके भी शत्रु कैसे होंगे इसलिए शत्रु तो जीवन का अंग है, इनसे घबरा कर पैर पीछे हटा लिये तो उन्नति नहीं हो सकती।

इतिहास उठा कर देखें तो हमें यह स्पष्ट मालूम पड़ेगा कि हमने केवल उन्हीं की पूजा की है, जो अपने शत्रुओं से लड़े हैं और जिन्होंने शत्रुओं पर विजय प्राप्त की है, चाहे वह राम हों अथवा श्री कृष्ण, हनुमान हो अथवा महाकाली, इनमें से प्रत्येक का जीवन आख्यान राक्षस विजय से जुड़ा है, अतः आवश्यकता है, कि अपने आपको प्रबल बनाया जाय, शत्रु बाधा का वीरता से सामना किया जाय, और शत्रुओं पर विजय प्राप्त की जाय, संघर्ष कर जीवन में कुछ प्राप्त करने का आनन्द ही अनोखा होता है।

काल भैरव

शिव के अंश, शिव स्वरूप, शक्ति सम्पन्न, शक्ति स्वरूप महाकाली सेवक के रूप में भैरव की मान्यता विख्यात है, भैरव जन-जन के देव हैं, जो साधक विशेष मंत्रों को नहीं जानता, पूजा का विशेष विधान नहीं जानता, वह भी भैरव की पूजा कर सकता है, और ऐसे एक दो नहीं हजारों-लाखों उदाहरण हैं जहां सामान्य साधक को भैरव कृपा में विशेष सफलता मिली है।

रक्षात्मक देव

भैरव की मान्यता मूल रूप से रक्षात्मक देव के रूप में ही है, बड़े से बड़े यज्ञ में पहले भैरव स्थापना की जाती है, जिससे कि भैरव अपने शक्ति से दसों दिशाओं को आबद्ध कर देते हैं फिर सम्पूर्ण कार्य में कोई विघ्न उपस्थित नहीं हो सकता है, भूत, प्रेत, पिशाच, तांत्रिक प्रयोग कैसा भी प्रबल प्रहार किया जाए तो जहां भैरव उपस्थित हैं, वहां से यह प्रहार उलटे लौट आते हैं और इस प्रकार के गलत तांत्रिक प्रयोग करने वालों का ही नाश कर देते हैं।

भैरव पूजा का विधान अत्यन्त सरल हैं, और यहां पाठकों हेतु काल भैरव के कुछ सरल प्रयोग स्पष्ट किये जा रहे हैं जिनमें सरलता से ही इनकी सिद्धि और उपयोगिता है।

काल भैरव साधना कब करें?

आप काल भैरवाष्टमी, कृष्ण पक्ष की अष्टमी, अमावस्या को या किसी भी रविवार के दिन इस साधना को प्रारम्भ कर सकते हैं।

भैरव साधना के स्वरूप को मूल रूप से तांत्रिक स्वरूप दे दिया गया है, जो कि गलत है,-यह तो एक सात्विक जीवन की आवश्यक साधना है, आप अपनी ओर से किसी का बुरा नहीं चाहते हैं, लेकिन क्या आप पर कोई प्रहार करेगा तो उसका जवाब नहीं देंगे? क्या आपको व्यर्थ के मुकदमों की बाधाओं का सामना करना पड़ेगा, तो मुकदमे नहीं लड़ेंगे? क्या आपके विरुद्ध तांत्रिक प्रयोग होंगे और घर में तांत्रिक प्रयोगों के कारण जरा, पीड़ा, बीमारी मृत्यु, शोक, रोग, दुःख रहेगा तो इसे दूर करने का उपाय नहीं करेंगे?

जीवन को श्रेष्ठ रूप से जीने के लिए इन सब बाधाओं को हटाना आवश्यक है, और इसके लिए सरल, अचूक से अचूक प्रयोग काल भैरव प्रयोग ही है, जो आपके हाथ में शक्ति को, उत्साह का वह वज्र थमा सकते हैं, जिसके बलबूते पर आप अपना जीवन अपनी इच्छानुसार जी सकते हैं, अपने व्यक्तित्व को पराक्रमी बना सकते हैं, अपनी श्रेष्ठता स्थापित कर सकते हैं।

मूल रूप से चार बाधाएं व्यक्ति के जीवन को दीमक की तरह खा जाती हैं, ये हैं -

1. शत्रु बाधा, 2. रोग, बीमारी, 3. मुकदमेबाजी, 4. तांत्रिक बाधा, भय आदि हैं।

इनमें से कोई भी एक बाधा रहने पर व्यक्ति अपना जीवन सही ढंग से नहीं जी सकता, इसके चक्र में उलझता हुआ अपनी शक्ति क्षीण करता रहता है, इन्हीं चार बाधाओं के निवारण हेतु किया जाने वाले विशेष साबर प्रयोग पाठकों के लिए प्रस्तुत किये जा रहे हैं, इन महत्वपूर्ण प्रयोगों को निष्ठा से सम्पन्न कर तत्काल प्रभाव का लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

इनमें से प्रत्येक प्रयोग के लिए अलग-अलग मंत्र विधान हैं, कुछ विशेष सामग्री हैं, साधक जिस बाधा विशेष का निवारण करना चाहता है, उससे सम्बन्धित साधना कृष्ण अष्टमी, अमावस्या को विशेष रूप से सम्पन्न करें, अन्य प्रयोग वह किसी भी रविवार को सम्पन्न कर सकता है, प्रति रविवार भैरव साबर मंत्र प्रयोग सम्पन्न करने से ही उसे जीवन में भैरव रक्षा का पूर्ण वर निश्चित रूप से प्राप्त हो जाता है।

१. शत्रु बाधा निवारण प्रयोग

साधना वाले दिन प्रातः साधक स्नान कर लाल वस्त्र धारण करें। सिन्दूर का तिलक लगाएं, अपने सामने एक मिट्टी की ढेरी बनाकर उस पर पानी से धो लें, फिर उसके ऊपर सिन्दूर से तिलक करें और उस पर **'काल भैरव गुटिका'**

स्थापित करें, ढेरी के चारों और **'पांच आक्रान्त चक्र'** तिल की ढेरियां बना कर रखें, प्रत्येक चक्र पर सिन्दूर लगाएं, अब अपने पूजा स्थान में दीप और गुग्गुल का धूप तथा अगरबत्ती इत्यादि जला दें, अपने हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि मैं अपनी अमुक शत्रु बाधा के निवारण हेतु काल भैरव प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूं।

अब एक पात्र में सरसों, काले तिल मिलाएं, उसमें थोड़ा तेल डालें, थोड़ा सिन्दूर डालकर उसे मिला दें, इस मिश्रण को निम्न भैरव मंत्र का जप करते हुए **'काल भैरव गुटिका'** के समक्ष अर्पित करते रहें -

मंत्र

विभूति भूति नाशाय, दुष्ट क्षय कारकं,
महाभैरव नमः।
सर्व दुष्ट विनाशनं सेवकं सर्वसिद्धिं कुरु।
ॐ काल भैरो, भूत भैरो।
महाभैरव महा भय विनाशनं देवता।
सर्व सिद्धि भवेत्।
ॐ काल भैरव, श्मशान भैरव, काल रूप
काल भैरव!
मेरो वैरी तेरी आहार रे।
काढ़ि करेजा चखन करो कट कट।
ॐ काल भैरो, बटुक भेरो, भूत भैरो!
महा भैरव महा भय विनाशनं देवता।
सर्व सिद्धि भवेत।

इस प्रकार 51 बार इस मंत्र का जप कर पूजा में रखें, धूप और दीप से भैरव की आरती सम्पन्न करें, अब भैरव गुटिका को छोड़ कर बाकी सब सामग्री काले कपड़े में बांध कर जमीन में गाड़ दें और उस पर भारी पत्थर रख दें।

आगे दो रविवार तक भैरव गुटिका के समक्ष इस मंत्र का जप करते रहें।

यह प्रयोग इतना प्रबल है, कि प्रबल से प्रबल शत्रु भी तीस दिन के भीतर शांत हो जाता है, उसकी शक्ति क्षीण हो जाती है, इसमें कोई संदेह नहीं।

साधना सामग्री - 200/-

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

२. काल भैरव रोग नाशक प्रयोग

यह प्रयोग प्रातः काल में सम्पन्न किया जाता है, इसमें यदि स्वयं की बीमारी नाश हेतु प्रयोग करना है, तो अपने नाम का संकल्प लें, और यदि दूसरे के नाम से प्रयोग करना है, तो उसके नाम से संकल्प लें।

पुराणों में विवेचन

एक बार ब्रह्मा तथा विष्णु में इस बात को लेकर विवाद हो गया कि विश्व का कारण तथा परम तत्व कौन है? दोनों अपने को विश्व का नियन्ता तथा परम तत्व कहने लगे। जब विवाद अधिक बढ़ गया तो इसका निर्णय महर्षियों को सौंप दिया गया। महर्षियों द्वारा शास्त्रों का चिंतन-मनन, विचार-विमर्श करके यह निर्णय दिया गया कि, 'वास्तव में परम तत्व कोई अव्यक्त सत्ता है। विष्णु एवं ब्रह्मा उसी विभूति से बने हैं तथा उसी के अंश विद्यमान हैं।'

भगवान विष्णु ने तो इस बात को स्वीकार कर लिया, परन्तु ब्रह्माजी को यह मान्य न हो सका। वे महर्षियों के निर्णय की अवज्ञा करके अब भी अपने को सर्वोपरि तथा सृष्टि नियन्ता घोषित कर रहे थे। परम तत्व की अवज्ञा बहुत बड़ा अपमान था। यह भगवान शंकर को भला कब स्वीकार्य था। तब उन्होंने तत्काल भैरव रूप-धारण करके ब्रह्मा का गर्व चूर कर दिया।

संकल्प

ॐ अस्य श्री बटुक भैरव स्त्रोतस्य सप्त ऋषि मातृका छन्दः श्री बटुकः भैरव देवता, ममेप्सित सिद्धयर्थ जपे विनियोगः।

अपने सामने एक पात्र में **'काल भैरव महायंत्र'** स्थापित कर उस पर सिन्दूर चढ़ाएं तथा एक दीपक जलाएं जिसमें चार बत्तियां हों, तथा दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठे, भैरव यंत्र के सामने पुष्प, लड्डू, सिन्दूर, लौंग तथा पुष्प माला, काला डोर रखें तथा मंत्र जप प्रारम्भ करें, मंत्र जप के पहले जल से भरे हुए पात्र का मुंह लाल कपड़े से बांध दें।

अब एक पात्र में तिल लें उसमें सात सुपारी रखें तथा निम्न मंत्र का जप करते हुए यह तिल दक्षिण दिशा की ओर फेंकते रहें -

मंत्र

ॐ काल भैरो, बटुक भैरो, भूत भैरो महाभय

विनाशनं देवता सर्व सिद्धिर्भवेत्। शोक दुःख क्षयकरं निरंजनं, निराकारं नारायणं, भक्ति-पूर्ण त्वं महेश। सर्व-काम-सिद्धिर्भवेत्। काल भैरव, भूषण वाहनं काल हन्ता रूपं च, भैरवी गुनी। महात्मनः योगिनां महादेव स्वरूपं। सर्व सिद्धयेत्। ॐ काल भैरो, बटुक भैरो, भूत भैरो। महा भैरव महा भय विनाशनं देवता। सर्व सिद्धिर्भवेत्।

इस प्रकार 108 बार मंत्र जप के पश्चात् सातों सुपारी सभी दिशाओं में फेंक दें, भैरव यंत्र को पूजा में प्रयोग लाए काले डारे को रोगी की भुजा पर बांध दें अथवा गले में पहना दें, पूजा का पवित्र जल भी पिलाएं, पुराने से पुराने रोग इस प्रयोग से दूर होते देखे गये हैं।

साधना सामग्री - 300/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

३. मुकदमे में शीघ्र विजय का प्रयोग

इस साधना को साधक सायंकाल में सम्पन्न करें, पूजा स्थान में पूर्ण रूप से शांति होनी चाहिए तथा जिस विशेष कार्य के सम्बन्ध में प्रयोग करना है, वह कार्य एक कागज पर सिन्दूर से लिख लें।

अब अपने सामने '**काल भैरव महाशंख**' स्थापित करें, शंख के चारों ओर सिन्दूर से घेरा बना दें, सामने एक '**नागचक्र**' स्थापित करें, भैरव शंख के दोनों ओर तीन, तीन तेल दीपक जला दें।

इसके पहले वाले प्रयोग के अनुसार संकल्प कर जल छोड़ें तथा वह कागज जिसमें कार्य लिखा है भैरव शंख के नीचे रख दें, वीर मुद्रा में बैठ कर मुट्ठी ऊपर कर मंत्र जप प्रारम्भ करें-

मंत्र

ॐ अरं ह्रीं ह्रीं ह्रीं (अमुक) मारय, मारय, उच्चाटय उच्चाटय, मोहय मोहय, वशं कुरु कुरु। सर्वार्धकस्य सिद्धि रूपं त्वं महाकाल! काल भक्षणं महा देव स्वरूप त्वं। सर्व सिद्धयेत! ॐ काल भैरो, बटुक भैरो, भूत भैरो! महा भैरव महा भय विनाशनं देवता सर्व सिद्धिर्भवेत्।

51 बार मंत्र जप करने के पश्चात् इस महा भैरव शंख को काले कपड़े में बांध कर बैग, ब्रीफकेस में रख दें और किसी भी मुकदमें के लिए जाते समय बैग अपने पास रखें, प्रबल से प्रबल विरोधी भी वशीभूत हो कर संधि करने के इच्छुक हो जाता है, मुकदमें में विजय प्राप्त होती है, मंत्र जप नियमित रूप से अवश्य सम्पन्न करना है।
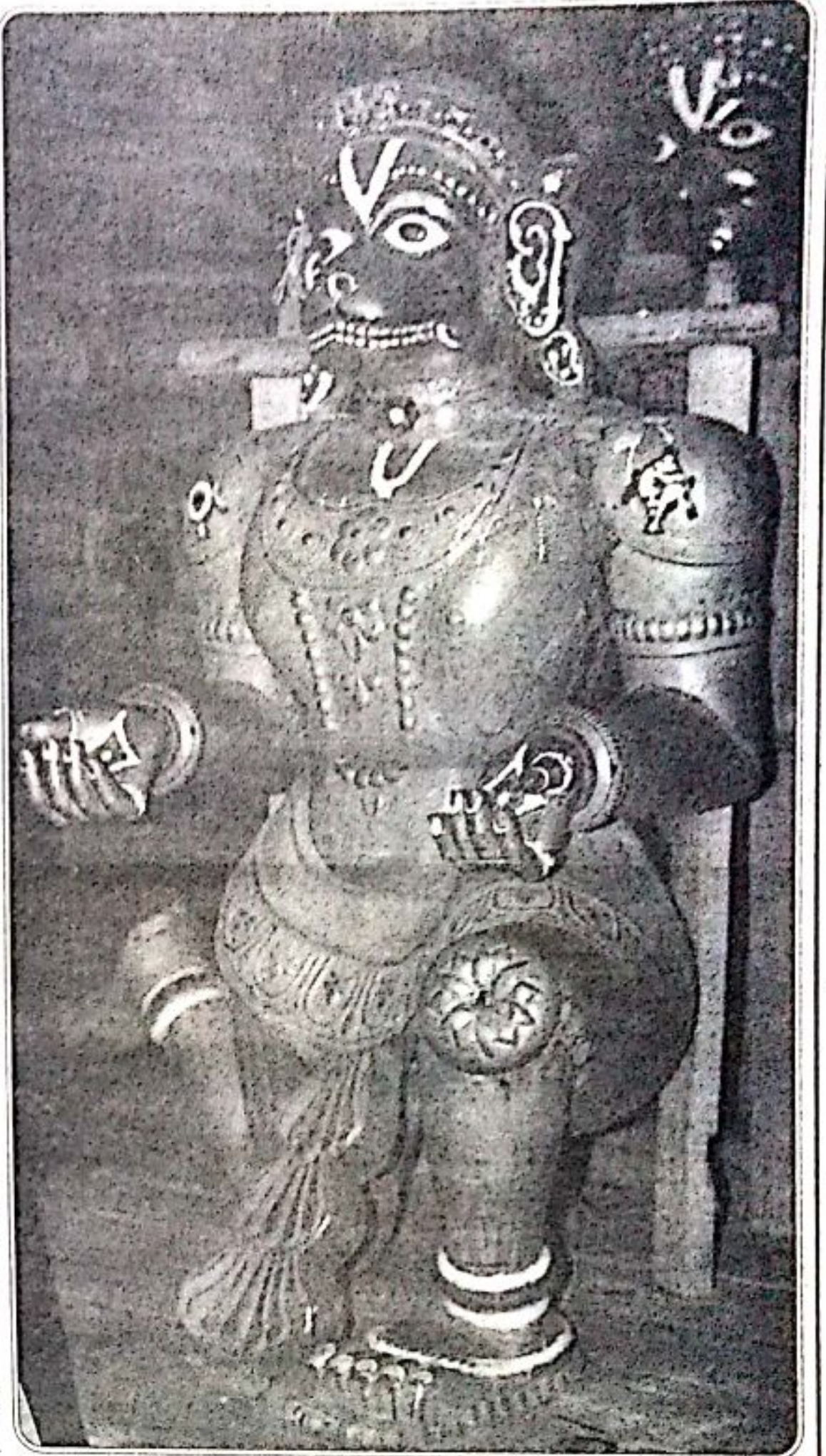
भैरव से सम्बन्धित उपरोक्त तीनों प्रयोगों की प्रामाणिकता साधक स्वयं प्रयोग सम्पन्न कर हीं जान सकते हैं कि इन प्रयोगों में कितना अधिक प्रभाव है, काल भैरव प्रसन्न होने पर साधक को हर प्रकार का वरदान प्रदान कर देते हैं, उसकी रक्षा करते हैं और अपनी शरण में पूर्ण अभय प्रदान करते हैं, साधक की शक्ति में वृद्धि हो कर स्वयं भैरव समान श्रेष्ठ हो जाता है। ये साधनाएं सम्पन्न कर जब तक पूर्ण सफलता न मिले आगे आने वाले सात रविवार तक मंत्र अनुष्ठान अवश्य ही सम्पन्न करते रहना चाहिए।

साधना सामग्री - 210/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

शिवस्वरूप भैरव आपके साथ

जो हैं बटुक, उन्मत्त और महाकाल स्वरूप में

तो काहे का डर इस जगत में

और बल, साहस, वीरता, अभय, पराक्रम, अमृत्यु, स्वास्थ्य को अपने साथ ले लीजिए

☆ ☆

भैरव देव के सम्बन्ध में इतना अधिक साधना साहित्य लिखा है, कि सामान्य साधक यह निश्चित नहीं कर सकता कि उसे किस प्रकार साधना करनी चाहिए, भैरव देव का मूल स्वरूप क्या है, और उनकी शक्तियां कितनी प्रबल है, और भैरव की साधना कर किस प्रकार शक्ति प्राप्त करनी चाहिए?

किसी भी शुभ कार्य में, चाहे वह यज्ञ हो, विवाह हो, वास्तु-स्थापना साधना हो, गृह प्रवेश हो अथवा अन्य कोई मांगलिक कार्य हो, भैरव की स्थापना एवं पूजा अवश्य ही की जाती है, क्योंकि भैरव ऐसे समर्थ रक्षक देव हैं, जो कि सब प्रकार के विघ्नों को, बाधाओं को रोक सकते हैं, और कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण हो जाता है, छोटे-छोटे गांवों में भैरव का स्थान, जिसे 'भैरव चबूतरा' कहा जाता है, देखा जा सकता है। अशिक्षित व्यक्ति भी अपने पूर्वजों से प्राप्त मान्यता-धारणा के आधार पर भैरव-पूजा अवश्य करता है, इसके पीछे सिद्ध ठोस आधार है, तभी यह भैरव पूजा परम्परा चली आ रही है, हिन्दू विवाह में विवाह के पश्चात् **'जात्रा'** का विधान है, और सर्वप्रथम 'भैरव यात्रा' ही सम्पन्न की जाती है, भैरव के विभिन्न स्वरूप हैं, और अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग स्वरूपों की पूजा सम्पन्न की जाती है।

भैरव व्याख्या

भैरव, शिव के अंश है और उनका स्वरूप चार भुजा, खड्ग, नरमुण्ड, खप्पर और त्रिशूल धारण किये हुए गले में शिव के समान मुण्ड माला, रुद्राक्ष माला, सर्पों की माला, शरीर पर भस्म, व्याघ्रचर्म धारण किये हुए, मस्तक पर सिन्दूर का त्रिपुण्ड, ऐसा ही प्रबल स्वरूप है, जो कि दुष्ट व्यक्तियों को पीड़ा देने वाला, और अपने भक्तों साधकों के हर प्रकार के संकट दूर कर, उन्हें अपने आश्रय में अभय प्रदान कर, बल, तेज, यश, सौभाग्य, प्रदान करने में पूर्ण समर्थ देव हैं, भैरव-शिव समान ऐसे देव हैं, जो कि साधक किसी भी रीति से उनकी पूजा-साधना करे - प्रसन्न होकर अपने भक्त को पूर्णता प्रदान करते हैं, भैरव सभी प्रकार की योगिनियों, भूत-प्रेत, पिशाच के अधिपति है, भैरव के विभिन्न चरित्रों, विभिन्न पूजा विधानों, स्वरूपों के सम्बन्ध में शिवपुराण, लिंग पुराण इत्यादि में विस्तृत रूप से दिया गया है, भैरव का सुप्रसिद्ध मन्दिर एवं सिद्ध पीठ महातीर्थ काशी में स्थित महाकाल भैरव मन्दिर है।

उच्चकोटि के तांत्रिक ग्रंथों में बताया गया है, कि चाहे किसी भी देवी या देवता की साधना की जाय सर्वप्रथम गणपति और काल भैरव की पूजा आवश्यक है। जिस प्रकार से गणपति

समस्त विघ्नों का नाश करने वाले हैं, ठीक उसी प्रकार से भैरव समस्त प्रकार के शत्रुओं का नाश करने में पूर्ण रूप से सहायक है।

कलियुग में बगलामुखी, छिन्नमस्ता या अन्य महादेवियों की साधनाएं तो कठिन प्रतीत होने लगी है, यद्यपि ये साधनाएं शत्रु संहार के लिए पूर्ण रूप से समर्थ और बलशाली है, परन्तु '**भैरव साधना**' कलियुग में तुरन्त फलदायक और शीघ्र सफलता देने में सहायक है। अन्य साधनाओं में तो साधक को फल जल्दी या विलम्ब से प्राप्त हो सकता है, परन्तु इस साधना का फल तो हाथों हाथ मिलता है, इसीलिए कलियुग में गणपति, चण्डी और भैरव की साधना तुरन्त फल रूप से महत्वपूर्ण मानी गई है।

प्राचीन समय से शास्त्रों में यह प्रमाण बना रहा है, कि किसी प्रकार का यज्ञ कार्य हो तो, यज्ञ की रक्षा के लिए भैरव की स्थापना और पूजा सर्वप्रथम आवश्यक है, किसी भी प्रकार की पूजा हो उसमें सबसे पहले गणपति की स्थापना की जाती है, तो साथ ही साथ भैरव की उपस्थिति और भैरव की साधना भी जरूरी मानी गई है क्योंकि ऐसा करने से दसों दिशाएं आबद्ध हो जाती है, और उस साधना में साधक को किसी भी प्रकार का भय व्याप्त नहीं होता और न किसी प्रकार का उपद्रव या बाधाएं आती है, ऐसा करने पर साधक को निश्चय ही पूर्ण सफलता प्राप्त हो जाती है।

इसके अलावा भैरव की स्वयं साधना भी अत्यन्त महत्वपूर्ण और आवश्यक मानी गई है, आज का जीवन जरूरत से ज्यादा जटिल और दुर्बोध बन गया है, पग-पग पर कठिनाइयां और बाधाएं आने लगी है, अकारण ही शत्रु पैदा होने लगे है, और उनका प्रयत्न यही रहता है कि येन-केन प्रकारेण लोगों को तकलीफ दी जाय या उन्हें परेशान किया जाय, इससे जीवन में जरूरत से ज्यादा तनाव बना रहता है।

इसीलिए आज के युग में अन्य सभी साधनाओं की अपेक्षा भैरव की साधना को ज्यादा महत्व दिया जाने लगा है।

दुःख की अंधियारी काली रात इतनी अधिक लम्बी भी न हो, कि सुख के सूर्योदय की आशा ही खत्म हो जाय, दुःख जीवन के अंग हो सकते हैं – लेकिन सुखों का सूर्य भी जीवन में जगमगाना ही चाहिए।

- सद्गुरुदेव

'**देव्योपनिषद्**' में भैरव साधना क्यों की जानी चाहिए, इसके बारे में विस्तार से विवरण है, उनका सारा मूल तथ्य निम्न प्रकार से है -

1. जीवन के समस्त प्रकार के उपद्रवों को समाप्त करने के लिए।
2. जीवन की बाधाएं और परेशानियों को दूर करने के लिए।
3. जीवन के नित्य कष्टों और मानसिक तनावों को समाप्त करने के लिए।
4. शरीर स्थित रोगों को निश्चित रूप से दूर करने के लिए।
5. आने वाली बाधाओं और विपत्तियों को पहले से ही हटाने के लिए।
6. जीवन के और समाज के शत्रुओं को समाप्त करने और उनसे बचाव के लिए।
7. शत्रुओं की बुद्धि भ्रष्ट करने के लिए और शत्रुओं को परेशानी में डालने के लिए।
8. जीवन में समस्त प्रकार के ऋण और कर्जो की समाप्ति के लिए।
9. राज्य से आने वाली बाधाओं या अकारण भय से मुक्ति के लिए।
10. जेल से छूटने के लिए मुकदमों में शत्रुओं को पूर्ण रूप से परास्त करने के लिए।
11. चोर भय, दुष्ट भय, और वृद्धावस्था से बचने के लिए।
12. समस्त प्रकार के उपद्रवों से रक्षा के लिए।

इसके अलावा हमारी अकाल मृत्यु न हो या किसी प्रकार का एक्सीडेन्ट न हो अथवा हमारे बालकों की अल्प आयु में मृत्यु न हो, आदि के लिए भी 'भैरव साधना' अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी गई है। इसीलिए तो शास्त्रों में कहा गया है कि जो चतुर और बुद्धिमान व्यक्ति होते है, वे अपने जीवन में भैरव साधना अवश्य ही करते हैं। जो वास्तव में ही जीवन में बिना बाधाओं के निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर होना चाहते हैं, वे भैरव साधना अवश्य करते हैं। जो अपने जीवन में यह चाहते हैं कि किसी भी प्रकार से राज्य की कोई बाधा या परेशानी न आवे वे निश्चय ही भैरव साधना सम्पन्न करते हैं। जिन्हें अपने बच्चे प्रिय है, जो अपने जीवन में रोग नहीं चाहते, जो अपने पास बुढ़ापा फटकने नहीं देना चाहते, वे अवश्य ही भैरव साधना सम्पन्न करते हैं।

उच्च कोटि के योगी, संन्यासी तो भैरव साधना करते ही है,

जो श्रेष्ठ बिजनेस मेन या व्यापारी है, वे भी अपने पण्डितों से भैरव साधना सम्पन्न करवाते हैं। जो राजनीति में रूचि रखते है, और अपने शत्रुओं पर विजय पाना चाहते हैं, वे भी अपने विश्वस्त तांत्रिकों से भैरव साधना सम्पन्न करवाते हैं। मेरा यह अनुभव रहा है कि जीवन में सफलता और पूर्णता पाने के लिए भैरव साधना अत्यन्त आवश्यक है और महत्वपूर्ण है।

भैरव के विभिन्न स्वरूपों की साधना अलग-अलग प्रकार से सम्पन्न की जाती है, प्रत्येक साधना का विशेष उद्देश्य, विशेष विधान और विशेष फल होता है, इस लेख में भैरव के तीनों स्वरूपों का वर्णन दिया जा रहा है। **दरिद्रता, रोग नाश, राज्य बाधा निवारण, संतान प्राप्ति, शत्रु स्तम्भन, परिवार रक्षा, अकारण मृत्यु निवारण के लिए श्रेष्ठ साधनाएं हैं।**

आपद उद्धारक बटुक भैरव साधना

'**शक्ति संगम तंत्र**' के '**काली खण्ड**' में भैरव की उत्पत्ति के बारे में बताया गया है कि '**आपद**' नामक राक्षस कठोर तपस्या कर अजेय बन गया था, जिसके कारण सभी देवता त्रस्त हो गये और वे सभी एकत्र होकर इस आपत्ति से बचने के बारे में उपाय सोचने लगे। अकस्मात उन सभी की देह से एक-एक तेजोधरा निकली और उसका युग्म रूप पंचवर्षीय बटुक के रूप में प्रादुर्भाव हुआ। इस बटुक ने '**आपद**' नाम के राक्षस को मारकर देवताओं को संकट मुक्त किया, इसी कारण इन्हें आपदुद्धारक बटुक भैरव कहा गया है।

साधना के लाभ

1. जीवन के समस्त प्रकार के उपद्रव, अड़चन और बाधाओं का इस साधना से समापन होता है।
2. जीवन के नित्य के कष्टों और परेशानियों को दूर करने के लिए भी यह साधना अनुकूल सिद्ध मानी गई है।
3. मानसिक तनावों और घर के लड़ाई-झगड़े, गृह क्लेश आदि को निर्मूल करने के लिए यह साधना उपयुक्त है।
4. आने वाली किसी बाधा या विपत्ति को पहले से ही हटा देने के लिए यह साधना एक श्रेष्ठ उपाय है।
5. राज्य से आने वाली हर प्रकार की बाधाओं या मुकदमें में विजय प्राप्त करने के लिए यह श्रेष्ठ साधना है।
6. इस साधना से साधक की सम्पत्ति को चोर-लुटेरों से भय नहीं रह जाता, चोर उस ओर नजर भी नहीं करते।

साधना विधान

इस साधना को **किसी भी षष्ठी अथवा बुधवार** को प्रारम्भ करें। अपने सामने काले तिल की ढेरी पर '**बटुक भैरव यंत्र**' को स्थापित करें। धूप, दीप जलाकर यंत्र का सिन्दूर से पूजन करें। दोनों हाथ जोड़कर बटुक भैरव का ध्यान करें -

भक्त्या नमामि बटुकं तरुणं त्रिनेत्रं,
काम प्रदान वर कपाल त्रिशूल दण्डान्।
भक्तार्ति नाश करणे दधतं करेषु,
तं कोस्तुभा भरण भूषित दिव्य देहम्॥

फिर अपने दायें हाथ में अक्षत के कुछ दानें लेकर अपनी

समस्या, बाधा, कष्ट, अड़चन आदि को स्पष्ट रूप से बोल कर उसके निवारण की प्रार्थना करें। फिर अक्षत को अपने सिर पर से घुमाकर आसन के चारों ओर बिखेर दें। इसके पश्चात् '**बटुक भैरव माला**' से निम्न मंत्र का एक सप्ताह तक नित्य रात्रि 11 माला जप करें -

बटुक भैरव मंत्र

॥ॐ ह्रीं बटुकाय आपद उद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्री ॐ स्वाहा॥

साधना समाप्ति के बाद यंत्र व माला को जल में विसर्जित कर दें। शीघ्र ही अनुकूलता प्राप्त होती है।

साधना सामग्री पैकेट - 270/-

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

उन्मत्त भैरव साधना

कश्मीर में अमरनाथ के दर्शन करने के बाद साधक उन्मत्त भैरव के भी दर्शन करते हैं, यह प्रसिद्ध भैरव पीठ में से एक पीठ है, शंकराचार्य ने स्वयं इस पीठ की स्थापना कर इस मूर्ति का प्राण संजीवन किया था। अमरनाथ मन्दिर के दक्षिण में लगभग आधा किलोमीटर आगे उन्मत्त भैरव की पीठ है। इस पीठ से सम्बन्धित सैकड़ों-हजारों चमत्कारिक कथाएं भारत में विख्यात हैं। कहते हैं कि यदि साधक श्रद्धा के साथ नंगे पांव इस पीठ तक पैदल जाकर उन्मत्त भैरव को भोग लगाता है, तो उसकी मनोकामना पूर्ण होती है। इस भैरव मन्दिर के पीछे के भाग में गर्म पानी का स्रोत है, इस पानी में नहाने से रोग दूर हो जाते है। उन्मत्त भैरव का स्वरूप ही रोग हर्ता और कल्याणकारी होता है।

साधना के लाभ

1. इस साधना को करने से दीर्घकाल से ठीक न हो रही बीमारियों पर भी नियंत्रण प्राप्त होता है, तथा शीघ्र ही रोग का निवारण होता है।
2. श्रेष्ठ संतान की प्राप्ति के लिए भी इस साधना को बहुत से व्यक्तियों द्वारा सफलता पूर्वक आजमाया गया है।

साधना विधान

इस साधना को **अमावस्या अथवा किसी भी सोमवार की रात्रि से** प्रारम्भ करना चाहिये। साधक सफेद धोती पहन कर तेल का एक दीपक प्रज्ज्वलित कर ले। दीपक के सामने किसी ताम्र पात्र में '**उन्मत्त भैरव यंत्र**' (ताबीज) को स्थापित करें। ताबीज के सामने अक्षत की एक ढेरी बनाकर उसपर '**शुभ्र स्फटिक मणि**' स्थापित करें। दोनों हाथ जोड़कर भैरव ध्यान सम्पन्न करें-

आद्यो भैरव भीषणो निगदितः श्रीकालराजः क्रमाद,
श्री संहारक भैरवोऽप्यथ रु रुश्चोन्मत्तको भैरवः।
क्रोधश्चण्ड उन्मत्त भैरव वरः श्री भूत नाथस्तनो,
ह्यष्टौ भैरव मूर्तयः प्रतिदिनं दद्युः सदा मंगलम्॥

फिर दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि - "**मैं अमुक नाम, अमुक गोत्र का साधक अपने लिये उन्मत्त भैरव की साधना में प्रयुक्त हो रहा हूं, शिव के अवतार भगवान शिव मेरे रोगों का शमन करें। (अथवा श्रेष्ठ सन्तान प्राप्ति का वरदान दें)**" ऐसा बोलकर जल को भूमि पर छोड़ दें और ताबीज व मणि पर काजल एवं सिन्दूर से तिलक करें। फिर '**सफेद हकीक माला**' से दो सप्ताह तक निम्न मंत्र का नित्य 5 माला जप करें -

उन्मत्त भैरव मंत्र

॥ॐ उं उन्मत्ताय भ्रं भ्रं भैरवाय नमः॥

दो सप्ताह बाद माला व मणि को जल में विसर्जित कर दें तथा ताबीज को सफेद धागे में पिरोकर रोगी के गले (यदि रोग मुक्ति के लिये प्रयोग किया गया हो) या मां (यदि संतान प्राप्ति के लिए प्रयोग किया गया हो) के गले में धारण करा दें।

भैरव स्तौत्र

यं यं यं यक्षरूपं दश दिशि
विदितं भूमिकम्पायमानं।
सं सं संहारमूर्ति शिरं मुकुट
जटाशेखरं चन्द्रबिम्बम्॥

दं दं दं दीर्घकायं विकृत नख
मुखं ऊर्ध्वरोमं करालं।
पं पं पं पापनाशं प्रणमत
सततं भैरवं क्षेत्रपालम्॥

पूर्ण आदि दशों दिशाओं में व्याप्त होकर भूमि को कंपायमान करने वाले, यक्ष-स्वरूप, संहारकारक, अपने शिर पर मुकुट पहने हुए, जटाधारी, चन्द्रमा के समान मुख मण्डल वाले, विशाल काय, विकृत नख और मुख वाले, बड़े-बड़े रोम होने से भयावह तथा समस्त पापों का नाश करने वाले क्षेत्रपाल भैरव को सतत् प्रणाम करता हूं।

एक माह धारण करने के बाद जल में विसर्जित करें।

साधना सामग्री पैकेट - 390/-

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

काल भैरव साधना

भैरव का नाम भले ही डरावना और तीक्ष्ण लगता हो, परन्तु आपने साधक के लिए तो भैरव अत्यन्त सौम्य और रक्षा करने वाले देव है। जिस प्रकार हमारे बॉडी गार्ड लम्बे डील डौल वाले भयानक और बन्दूक या शस्त्र साथ में रखकर चलने वाले होते हैं, पर उससे हमें भय नहीं लगता। ठीक उसी प्रकार उनकी वजह से भैरव भी हमारे जीवन के बॉडी गार्ड की तरह हैं, वे हमें किसी प्रकार से तकलीफ नहीं देते अपितु हमारी रक्षा करते हैं और हमारे लिये अनुकूल स्थितियां पैदा करते है। यह साधना सरल और सौम्य साधना है, जिसे पुरुष या स्त्री कोई भी बिना किसी अड़चन के सम्पन्न कर सकता है। मध्य प्रदेश के उज्जैन शहर में आज भी काल भैरव का मन्दिर है, जिसे '**चमत्कारों का मन्दिर**' कहा जाता है। तंत्र अनुभूतियों की सैकड़ों सत्य घटनाएं इससे जुड़ी हुई हैं।

साधना के लाभ

1. तांत्रिक ग्रंथों में इसे शत्रु स्तम्भन की श्रेष्ठ साधना के रूप में एकमत से स्वीकार किया गया है।
2. यदि शत्रुओं के कारण अपने प्राणों को संकट हो अथवा परिवार के सदस्यों या बाल-बच्चों को शत्रुओं से भय हो, तो यह साधना एक प्रकार से आत्म रक्षा कवच प्रदान करती है। शत्रु की बुद्धि स्वतः ही भ्रष्ट हो जाती है और वह परेशान करने की सोचना ही बन्द कर देता है।
3. यदि आप ऐसी जगह कार्य करते हैं, जहां हर क्षण मृत्यु का खतरा बना रहता हो, एक्सीडेण्ट, दुर्घटना, आगजनी, गोली-बन्दूक, शस्त्र से या किसी भी प्रकार की अकाल मृत्यु का भय हो, तो 'काल भैरव साधना' अत्यन्त उपयुक्त सिद्ध होती है। वस्तुतः यह काल को टालने की साधना है।
4. स्त्रियां इस साधना को अपने बच्चों एवं सुहाग की दीर्घायु एवं प्राणरक्षा के लिये भी सम्पन्न कर सकती हैं।

साधना विधान

कालाष्टमी की रात्रि कालचक्र को अपने अधीन करने की रात्रि है, काली और काल भैरव दोनों की संयुक्त सिद्धि रात्रि है। **इस साधना को 23 दिसम्बर 2005 'कालाष्टमी' या किसी भी अष्टमी की रात्रि को प्रारम्भ करना चाहिये।** साधक लाल (अथवा पीली) धोती धारण कर लें। स्त्रियां लाल साड़ी धारण कर सकती हैं। इसके बाद लाल रंग के आसन पर बैठ कर दक्षिण दिशा की ओर मुख कर लें। अपने सामने एक थाली में कुंकुम या सिन्दूर से '**ॐ भं भैरवाय नमः**' लिख दें। फिर थाली के मध्य '**काल भैरव यंत्र**' और '**महामृत्युंजय गुटिका**' को स्थापित कर दें। लोहे की कुछ कीलें अपने पास पहले से ही मंगा कर रख लें। यदि आपके परिवार में सात सदस्य हैं, तो उन सबकी रक्षा के लिये सात कीलें पर्याप्त होगी।

प्रत्येक कील को मौली के टुकड़े से बांध दें। बांधते समय भी '**ॐ भं भैरवाय नमः**' का जप करें। फिर उन कीलों को अपने परिवार के जिन सदस्यों की रक्षा की कामना आपको करनी है, उनमें से प्रत्येक का नाम एक-एक कर बोलें और साथ ही एक एक कील यंत्र पर चढ़ाते जाएं। यह अपने लिये आत्म रक्षा बंध या कवच प्राप्त करने का प्रयोग है। फिर भैरव के निम्न स्तोत्र मंत्र का मात्र 108 बार उच्चारण करें -

यं यं यं यक्ष रूपं दश दिशि विदितं भूमि कम्पायमानं।
सं सं सं संहारमूर्ति शिर मुकुट जटाशेखरं चन्द्र बिम्बम्।
दं दं दं दीर्घ कायं विकृत नख मुखं ऊर्ध्वरोमं करालं।
पं पं पं पाप नाशं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम्॥

दायें हाथ की मुट्ठी में काली सरसों लेकर निम्न मंत्र का 11 बार उच्चारण करें -

ॐ काल भैरव, श्मशान भैरव, काल रूप काल भैरव! मेरी बैरी तेरो आहार रे। काढ़ि करेजा चखन करो कट कट। ॐ काल भैरव, बटुक भैरव, भूत भैरव, महा भैरव, महा भय विनाशनं देवता। सर्व सिद्धिर्भवत्।

फिर अपने सिर पर से सरसों को तीन बार घुमाकर सरसों के दानों को एक कागज में लपेट कर रख दें। इसके बाद निम्न मंत्र का एक घण्टे तक जप करें -

काल भैरव मंत्र

॥ॐ भैरवाय वं वं वं ह्रां क्ष्रों नमः॥

यह केवल एक दिन का प्रयोग है। जप के बाद साधक आसन से उठ जाये, और भैरव के सामने जो भोग रखा है उसे तथा सरसों के दानों, यंत्र व गुटिका को साथ लेकर किसी चौराहे पर रख आएं। लोहे की कीलें किसी निर्जन स्थान पर फेंक दें, यह शत्रु बाधा निवारण का विशिष्ट प्रयोग है।

साधना सामग्री पैकेट - 360/-

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★
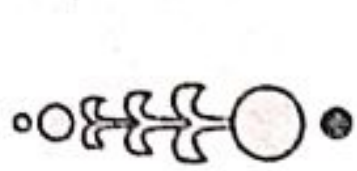
भैरव ही भय का विनाश करते है
तंत्र साधनाओं का आधार है
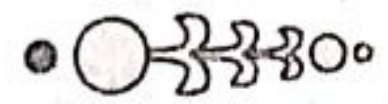
जिसे सम्पन्न करने से अन्य साधनाएं सरल रूप में सिद्ध हो जाती हैं। भैरव साधना से जीवन की आपत्तियां, बाधाएं नष्ट होने लगती है। इसीलिए भैरव को आपत्ति उद्धारक देव कहा गया है।

श्री भैरव देव, भगवान शिव के अंश से उद्भूत होने के कारण उन्हीं के समान सरल व सौम्य हैं और शीघ्र ही प्रसन्न होकर रक्षा करते हैं। 'भैरव की साधना' जीवन में जहां एक ओर दरिद्रता का नाश, अभावों की पूर्ति करती है, वहीं जीवन की व्याधियां कष्ट, पीड़ा और शत्रुओं से रक्षा भी करती है...

किसी भी प्रकार के यज्ञ में, साधना में, गृह प्रवेश में, भूमि पूजन में भैरव की पूजा अवश्य ही की जाती है। जब तक 'भैरव पूजन' नहीं हो जाता, तब तक मूल यज्ञ भी प्रारम्भ नहीं होता, क्योंकि भैरव रक्षा कारक देव हैं, और विश्व के संहारकर्त्ता शिव के स्वरूप तथा महाशक्ति काली के सेवक हैं, इसीलिए इन्हें 'काल भैरव' का नाम दिया गया है।

किसी भी गांव में चले जाइये, वहां कोई मंदिर अथवा पूजन स्थान हो या नहीं, लेकिन भैरव का मन्दिर अवश्य ही होगा। जन-जन के देवता के रूप में भैरव की ख्याति है, उनसे करोड़ों-करोड़ों लोगों की आस्था जुड़ी है, और यह आस्था तभी बन सकती है, जब प्रत्यक्ष प्रमाण प्राप्त होते रहे हों, और लोगों के कार्य सिद्ध होते रहे हों।

उच्चकोटि के तांत्रिक ग्रंथों में बताया गया है, कि चाहे किसी भी देवी या देवता की साधना की जाय, सर्वप्रथम गणपति और काल भैरव की पूजा आवश्यक है। जिस प्रकार से गणपति समस्त विघ्नों का नाश करने वाले हैं, ठीक उसी प्रकार से भैरव समस्त प्रकार के शत्रुओं का नाश करने में पूर्ण रूप से सहायक हैं।

कलियुग में बगलामुखी, छिन्नमस्ता या अन्य महादेवियों की साधनाएं तो कठिन प्रतीत होने लगी हैं। यद्यपि ये साधनाएं शत्रु-संहार के लिए पूर्ण रूप से समर्थ और बलशाली हैं, परन्तु **'भैरव-साधना'** कलियुग में तुरन्त फलदायक और शीघ्र सफलता देने में सहायक है।

अन्य साधनाओं में तो साधक को फल जल्दी या विलम्ब से प्राप्त हो सकता है, परन्तु इस साधना का फल तो हाथों हाथ मिलता है, इसीलिए कलियुग में गणपति, चण्डी और भैरव की साधना तुरन्त फल रूप से महत्वपूर्ण मानी गई है।

प्राचीन समय से शास्त्रों में यह प्रमाण बना रहा है, कि किसी प्रकार का यज्ञ-कार्य हो तो, यज्ञ की रक्षा के लिए भैरव की स्थापना और पूजा सर्वप्रथम आवश्यक है। किसी भी प्रकार की पूजा हो, उसमें सबसे पहले गणपति की स्थापना की जाती है, तो साथ ही साथ भैरव की उपस्थिति और भैरव की साधना भी जरूरी मानी गई है क्योंकि ऐसा करने से दसों दिशाएं आबद्ध हो जाती हैं, और उस साधना में साधक को किसी भी प्रकार का भय व्याप्त नहीं होता और न ही किसी प्रकार का उपद्रव या बाधाएं आती हैं। ऐसा करने पर साधक

को निश्चय ही पूर्ण सफलता प्राप्त हो जाती है।

इसके अलावा भैरव की स्वयं साधना भी अत्यन्त महत्वपूर्ण और आवश्यक मानी गई है, आज का जीवन जरूरत से ज्यादा जटिल और दुर्बोध बन गया है, पग-पग पर कठिनाइयां और बाधाएं आने लगी हैं, अकारण ही शत्रु पैदा होने लगे हैं, और उनका प्रयत्न यही रहता है कि येन-केन प्रकारेण लोगों को तकलीफ दी जाये या उन्हें परेशान किया जाय, इससे जीवन में जरूरत से ज्यादा तनाव बना रहता है।

जीवन में सैकड़ों प्रकार की साधनाएं हैं, और प्रत्येक साधना अपने-आप में महत्वपूर्ण और सारगर्भित है। साधक अपनी रुचि के अनुसार साधना का चयन करता है और उसमें सफलता प्राप्त करता है। श्रद्धा के बल पर ही वह अपने उद्देश्य में और अपनी साधना में सफल हो सकता है।

हमारा जीवन संघर्षमय जीवन है, जिसमें पग-पग पर विपत्तियों और बाधाओं का बोलबाला है, यदि हम शांतिपूर्वक जीवन बिताना भी चाहें, तब भी चारों तरफ का वातावरण ऐसा नहीं करने देता।

जीवन में सफलता के लिए यह आवश्यक है कि हम मानसिक रूप से स्वस्थ हों, और किसी प्रकार की टेन्शन या तनाव हमारे मानस में नहीं हों, साथ ही साथ हम इस प्रकार की समस्याओं से दूर रहकर सही प्रकार से चिन्तन कर सकें।

इसीलिए आज के युग में अन्य सभी साधनाओं की अपेक्षा भैरव की साधना को ज्यादा महत्व दिया जाने लगा है।

'देव्योपनिषद्' में **'भैरव साधना क्यों की जानी चाहिए'**, इसके बारे में विस्तार से विवरण है, उनका सारा मूल तथ्य निम्न प्रकार से है -

1. जीवन के समस्त प्रकार के उपद्रवों को समाप्त करने के लिए।
2. जीवन की बाधाएं और परेशानियों को दूर करने के लिए।
3. जीवन के नित्य नये कष्टों और मानसिक तनावों को समाप्त करने के लिए।
4. शरीर-स्थित रोगों को निश्चित रूप से दूर करने के लिए।
5. आने वाली बाधाओं और विपत्तियों को पहले से ही हटाने के लिए।
6. जीवन के और समाज के शत्रुओं को समाप्त करने और उनसे बचाव के लिए।
7. शत्रुओं की बुद्धि भ्रष्ट करने के लिए और शत्रुओं को परेशानी में डालने के लिए।
8. जीवन में समस्त प्रकार के ऋण और कर्जों की समाप्ति के लिए।
9. राज्य से आने वाली बाधाओं या अकारण भय से मुक्ति के लिए।
10. जेल से छूटने के लिए, मुकदमों में शत्रुओं को पूर्ण रूप से परास्त करने के लिए।
11. चोर-भय, दुष्ट-भय, और वृद्धावस्था से बचने के लिए।

इसके अलावा हमारी अकाल मृत्यु न हो या किसी प्रकार का एक्सीडेन्ट न हो अथवा हमारे बालकों की अल्प आयु में मृत्यु न हो, आदि के लिए भी **'काल भैरव साधना'** अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी गई है।

उच्च कोटि के योगी, संन्यासी तो भैरव साधना करते ही हैं, जो श्रेष्ठ बिजनेसमैन या व्यापारी हैं, वे भी अपने पण्डितों से

'काल भैरव साधना' सम्पन्न करवाते हैं। जो राजनीति में रूचि रखते हैं, और अपने शत्रुओं पर विजय पाना चाहते हैं, वे भी अपने विश्वस्त तांत्रिकों से काल भैरव साधना सम्पन्न करवाते हैं।

मेरा यह अनुभव रहा है कि जीवन में सफलता और पूर्णता पाने के लिए काल भैरव साधना अत्यन्त आवश्यक है और महत्वपूर्ण है।

इस साधना को कोई भी साधक कर सकता है। इसमें किसी प्रकार की कोई कठिनाई भी उसको देखनी नहीं पड़ती, यह एक प्रकार से सौम्य साधना है, और किसी भी वर्ण का गृहस्थ या संन्यासी इस साधना को सम्पन्न कर सकता है।

साथ ही साथ, इस साधना की यह विशेषता है, कि इसमें कम से कम उपकरणों की जरूरत पड़ती है, और किसी प्रकार की कोई जटिल विधि नहीं है।

इस साधना को पुरुष या स्त्री कोई भी सम्पन्न कर सकते हैं, इस साधना के द्वारा पति से यदि मतभेद हों तो दूर किए जा सकते हैं, और पति की दीर्घायु के लिए भी यही साधना सफलतादायक है।

नीचे मैं साधना से सम्बन्धित तथ्य स्पष्ट कर रहा हूं।

समय

इस साधना को किसी भी महीने से प्रारम्भ किया जा सकता है, परन्तु यह साधना शुक्ल पक्ष के पहले मंगलवार को ही प्रारम्भ कीं जा सकती है। यह साधना किस दिन समाप्त होती है, यह महत्पूर्ण नहीं है, परन्तु शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार से इस साधना को प्रारम्भ करना जरूरी है।

पूजन-सामग्री

साधना प्रारम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित सामग्री पहले से ही मंगवाकर रख लेनी चाहिए - एक किलो चावल, एक मीटर लाल वस्त्र, लकड़ी का तख्ता, थोड़ा सा गंधक, तांबे का एक लोटा और एक नारियल।

साधक इस प्रयोग को अपने घर में या अन्य किसी स्थान पर भी कर सकता है। सर्वप्रथम साधक अपने कमरे में एक लकड़ी का तख्ता जो एक फुट लम्बा और एक फुट चौड़ा हो रखकर उस पर लाल वस्त्र बिछाए तथा उस लाल वस्त्र के चारों कोनों पर चावल की चार ढेरियां तथा एक बीच में ढेरी बना देनी चाहिए।

बीच की ढेरी पर तेल का दीपक रख देना चाहिए, इसमें किसी भी प्रकार के तेल का प्रयोग किया जा सकता है, दीपक के सामने गंधक के पांच टुकड़े लाल वस्त्र पर रखे जाते हैं। दीपक के पीछे तांबे का लोटा भर कर रख दें और उस पर नारियल रख दें।

गंधक के टुकड़ों के पास मंत्र सिद्ध संजीवन क्रिया से युक्त **भैरव यंत्र** स्थापित कर दें। यह यंत्र ताम्र-पात्र पर अंकित होता है, और विशेष संजीवन मुहूर्त में ही इस यंत्र का निर्माण किया जाता है, इसके बाद विशेष मंत्रों से इसे मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठायुक्त किया जाता है, जिससे कि यह यंत्र पूर्ण सफलतादायक हो जाता है।

इसके बाद शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार को प्रातःकाल यह कार्य सम्पन्न करने हेतु साधक स्नान करके आसन पर बैठ जाए, साधक का मुंह दक्षिण दिशा की तरफ होना चाहिए और उसके सामने लकड़ी का तख्ता बिछा होना चाहिए, साधक को सूती या ऊनी आसन का प्रयोग करना चाहिए, पर यह आसन लाल रंग का होना आवश्यक है, अथवा आसन को पहले से रंगवाकर तैयार कर लेना चाहिए।

यदि स्त्री साधक हो तो वह ऋतु धर्म से निवृत्त होने के बाद ही इस साधना को प्रारम्भ करे, इस बात का ध्यान रखे कि साधना-काल में वह रजस्वला न हो, यदि ऐसा हो जाता है, तो वह साधना सम्पन्न नहीं मानी जानी चाहिए।

साधक धोती पहन कर आसन पर बैठे और ऊपर किसी भी प्रकार का वस्त्र न पहने। वह चाहे तो दूसरी धोती ओढ़ सकता है, या ऊनी कम्बल ओढ़ सकता है।

मंगलवार के दिन प्रातः काल 7 से 9 बजे के बीच इस साधना को प्रारम्भ किया जा सकता हैं यह साधना मात्र 7 दिन की है, और नित्य भैरव मंत्र की 51 मालाएं फेरनी आवश्यक हैं। इसमें **मूंगे की माला** का ही प्रयोग किया जाना चाहिए, इसके अलावा अन्य किसी प्रकार की माला का प्रयोग वर्जित है।

साधना विधान

साधक सर्वप्रथम अपने दोनों हाथों को धोकर दाहिने हाथ में जल लेकर तीन बार आचमन करे, अर्थात् उस जल को पीकर अन्तर को शुद्ध करे, इसके बाद दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प करे -

ॐ ह्रीं बटुकाय श्रीं आपत्ति उद्धारणाय भैरव देवता प्रीतये मम अमुकं **(जो काम सिद्ध करना चाहते हो उसके बारे में बालें)** ***कार्य सिद्धयर्थः भैरव प्रयोग महं करिष्ये।***

ऐसा कहकर जल छोड़ दें उसके बाद विनियोग करें अर्थात् हाथ में जल लेकर निम्न पंक्ति पढ़ें -

ॐ अस्य श्री आपत्ति उद्धारक भैरव मंत्रस्य, बृहदारण्य ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्री भैरव देवताः, ह्रीं बीजम् श्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम्, श्री आपत्ति उद्धारक भैरव प्रीतये जपे विनियोगः।

ऐसा कह कर के हाथ में लिया हुआ जल छोड़ दें।

इसके बाद यंत्र के सामने हाथ जोड़कर निम्नलिखित ध्यान करें -

ध्यान

त्रिनेत्रं रक्त वर्ण वरदाभयहस्तकम्।
सव्ये त्रिशूलमभयं कपालं वरमेव च॥
रक्त वस्त्र परिधानं रक्तमाल्यानुलेपनम्।
नीलग्रीवं च सौम्यं च सर्वाभरण भूषितम्॥

इसके बाद दीपक लगाकर भैरव यंत्र के सामने हाथ में जल लेकर अपनी समस्या या आपत्ति का उल्लेख करें, कि साधना समाप्त होते-होते मेरा 'अमुक' **(जो काम सिद्ध करना चाहते हो उसके बारे में बालें)** कार्य सिद्ध एवं सम्पन्न हो जाए।

इसके बाद भैरव यंत्र के सामने दूध का थोड़ा-सा प्रसाद भोग लगाएं और लाल रंग के कुछ पुष्प समर्पित करें।

॥ॐ ह्रीं भैरवाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु भैरवाय ह्रीं॥

जब 51 मालाएं पूरी हो जाएं तब आसन से उठें और भैरव यंत्र का जो भोग लगाया हुआ है, वह भोग कुत्ते को खिला दें क्योंकि भैरव का वाहन श्वान ही होता है।

इसके बाद पुनः स्नान कर अपने नित्य कार्य में लगें।

यह साधना सात दिन की है, इन सात दिनों में साधक जमीन पर सोए। चारपाई का प्रयोग न करें, स्त्री-संग वर्जित है, दिन में एक समय भोजन करें और मांस-मदिरा आदि का सेवन न करें। यदि साधक धूम्रपान करता हो तो उसे चाहिए कि वह साधना-काल में धूम्रपान न करे।

इस प्रकार 7 दिन पूरे हो जाएं, तो आठवें दिन जब पुनः मंगलवार आए, तब इस मंत्र की एक माला फेरें और भैरव से प्रार्थना करें कि उसने साधना सम्पन्न की है अतः जल्दी से जल्दी उसका कार्य सम्पन्न हो।

इसके बाद किसी एक बालक को अपने घर में भोजन कराएं और उसके बाद ही स्वयं भोजन करें।

यह साधना सम्पन्न करने पर निश्चय ही साधक की कामना पूरी होती है, और जिस उद्देश्य के लिए उसने साधना प्रारम्भ
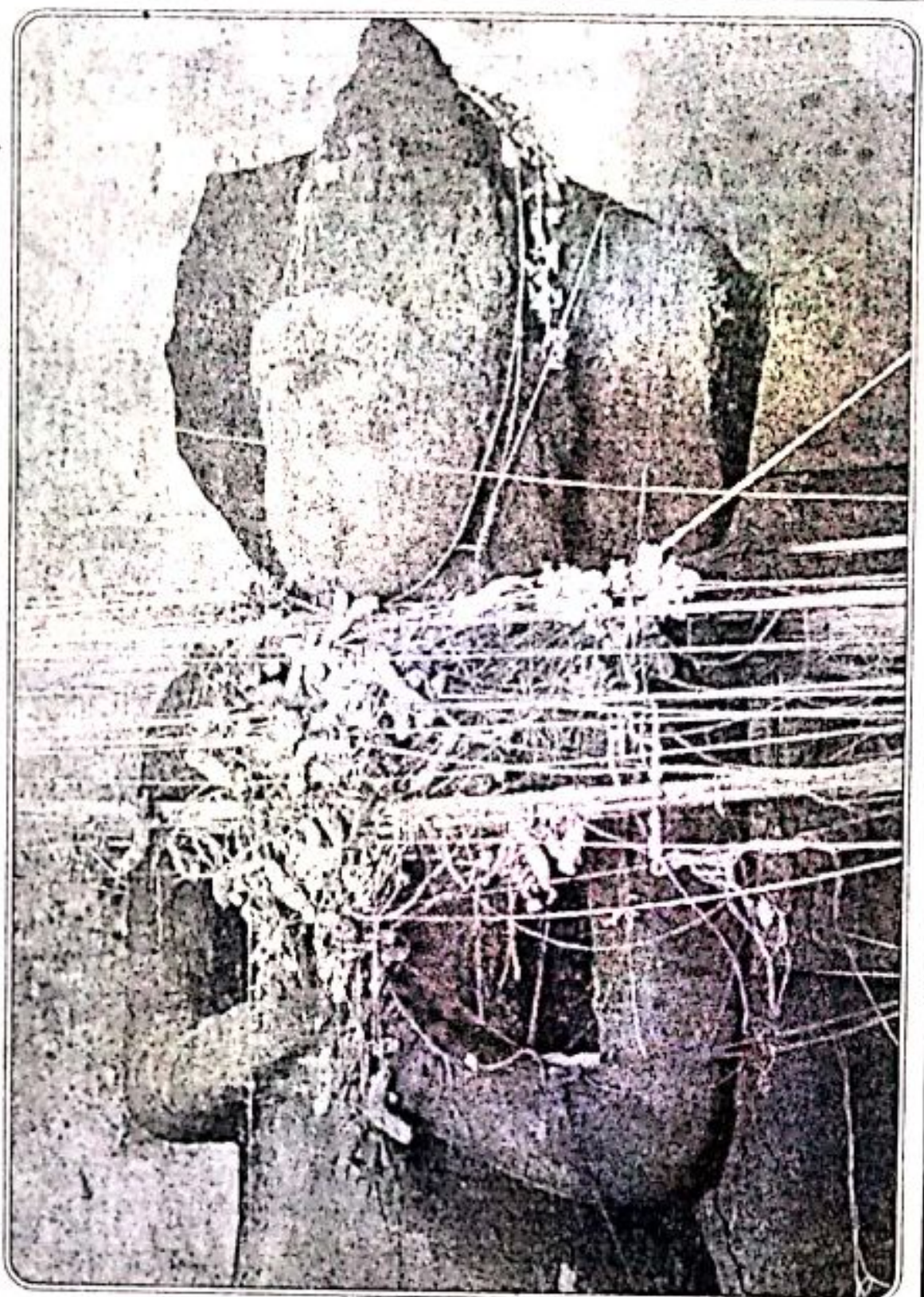
की है, उसमें सफलता मिलती ही है।

साधना-समाप्ति के बाद साधक लकड़ी के तख्ते पर बिछे हुए चावल, नारियल, लोटा एवं वह कपड़ा किसी गरीब ब्राह्मण को दान कर दें। गंधक दक्षिण दिशा में जाकर गड्ढा खोदकर उसमें दबा दें। लकड़ी के तख्ते का प्रयोग बाद में घर के कार्यों में किया जा सकता है, दीपक को भी दक्षिण दिशा की तरफ जाकर रख देना चाहिए।

इस साधना से साधक को पूर्ण सफलता एवं सिद्धि प्राप्त होती है, जिस भैरव यंत्र के सामने साधना की थी, उस यंत्र को अपने घर में किसी पवित्र स्थान पर रख आयें या नदी में विसर्जित कर दें।

वस्तुतः कलियुग में यह साधना गोपनीय, महत्वपूर्ण, श्रेष्ठ, शीघ्र एवं निश्चित रूप से सफलतादायक है।

साधना सामग्री - 450/-

यह तो भैरव की मूल साधना है जिसे प्रत्येक साधक को अवश्य सम्पन्न करनी चाहिये। इसके अलावा समय-समय पर भैरव के लघु प्रयोग-साबर प्रयोग भी अवश्य सम्पन्न करने चाहिए। जिससे उसी समय अनुकूलता प्राप्त हो जाए।

शिव ही महाकाल हैं, जो काल को पराजित कर सकते हैं
काल अर्थात् रोग, दुर्घटना, आकस्मिक घात
इससे बचने और पूर्ण मुक्ति का एक ही उपाय है

शिव आराधना

महामृत्युञ्जय विधान; मंत्र शास्त्र में क्रान्तिकारी मंत्र तथा आश्चर्यजनक फलदायक प्रयोग है। बीमारियों, शिशुरोगों तथा बालघात जैसे रोगों से निराकरण पाने व पूर्ण आयु प्राप्त करने के लिए यह श्रेष्ठतम अनुष्ठान है।

भारत में ही नहीं, विदेशों में भी 'महामृत्युञ्जय' की चर्चा रही है। प्रत्येक बालक, रोगी या अकाल मृत्यु से भयभीत व्यक्ति को महामृत्युञ्जय पूजन अवश्य कर लेना चाहिए।

साधकों के लाभार्थ यह गोपनीय विधान आगे के पन्नों पर प्रस्तुत है –

महामृत्युञ्जय विधान या अनुष्ठान अत्यन्त ही महत्वपूर्ण और श्रेष्ठतम कहा गया है। इस अनुष्ठान में अकाल मृत्यु को समाप्त करने का श्रेष्ठ भाव है, और जिस व्यक्ति के जीवन में अकाल मृत्यु या बालघात योग हो, उसके लिए तो महामृत्युञ्जय विधान सर्वश्रेष्ठ है।

महामृत्युञ्जय मंत्र अपने आप में अत्यन्त ही श्रेष्ठ और प्रभावयुक्त है तथा उच्च स्तर के साधकों ने भी इस बात को स्वीकार किया है, कि यह मंत्र अपने आप में महत्वपूर्ण और काल पर विजय प्राप्त करने में सक्षम है।

इस अनुष्ठान से सम्बन्धित विधि प्रस्तुत है, जिससे कि पाठक इससे लाभ उठा सकें।

अनुष्ठान में कुछ तथ्यों का ध्यान रखना आवश्यक है। अनुष्ठान एक ऐसी साधना प्रक्रिया है, जो कठिन कार्यों को सरल बनाने के साथ-साथ विशेष शक्ति का उपार्जन करती है। अनुष्ठान तीन प्रकार के होते हैं –

लघु अनुष्ठान, जो चौबीस हजार मंत्र का होता है और इसके बाद 240 आहुतियों का पुरश्चरण किया जाता है।

मध्यम अनुष्ठान सवा लाख मंत्र जप का होता है, जिसमें 1250 आहुतियां दी जाती हैं।

महापुरश्चरण या महानुष्ठान चौबीस लाख मंत्र जप का होता है और इसके सौंवे हिस्से की आहुतियां दी जाती हैं।

लघु अनुष्ठान को नौ दिन में 27 माला प्रतिदिन के हिसाब से, मध्यम अनुष्ठान 40 दिन में 33 माला प्रतिदिन के हिसाब से तथा महानुष्ठान एक वर्ष में 66 माला प्रतिदिन के हिसाब से जप करके सम्पन्न किया जाता है।

साधना काल में निम्न तथ्यों का ध्यान रखना चाहिए –

1. अनुष्ठान शुभ दिन और शुभ मुहूर्त्त देखकर करना चाहिए।
2. इस अनुष्ठान को प्रारम्भ करते समय सामने भगवान शंकर का चित्र स्थापित करना चाहिए और साथ ही साथ, शक्ति भावना भी रखनी चाहिए।
3. जहां जप करें, वहां का वातावरण सात्विक हो तथा नित्य पूर्व दिशा की ओर मुंह करके साधना या मंत्र जप प्रारम्भ करना चाहिए।
4. जप करते समय लगातार घी का दीपक जलते रहना चाहिए।
5. इसमें रुद्राक्ष की माला का प्रयोग करना चाहिए तथा ऊन का आसन बिछाना चाहिए।
6. पूरे साधना काल में ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए।
7. साधना काल में चेहरे के या सिर के बाल नहीं कटाने चाहिए।
8. यथाशक्ति एक समय भोजन करना चाहिए।
9. अनुष्ठान करने से पूर्व मंत्र को संस्कारित करके ही पुरश्चरण करना चाहिए।
10. नित्य निश्चित संख्या में मंत्र जप करना आवश्यक है, कभी कम, कभी अधिक करना ठीक नहीं है।

11. शास्त्रों के अनुसार भय से छुटकारा पाने के लिए इस मंत्र का 1100 जप, रोगों से छुटकारा पाने के लिए 11,000 मंत्र जप, तथा पुत्र प्राप्ति, उन्नति एवं अकाल मृत्यु से छुटकारा पाने के लिए 1,00,000 मंत्र जप का विधान है।

धर्म शास्त्रों में मंत्र शक्ति से रोग निवारण एवं मृत्यु-भय दूर करने तथा अकाल मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की जितनी साधनाएं उपलब्ध हैं, उनमें महामृत्युञ्जय साधना का स्थान सर्वोच्च है। हजारों-लाखों साधकों ने इस साधना से फल प्राप्त किया है। कोई भी साधक पूर्ण श्रद्धा और विश्वास से इस साधना को करता है, तो निश्चय ही वह सफलता प्राप्त करता है।

इसका सामान्य प्रचलित मंत्र निम्नलिखित है, परन्तु साधक के लिए बीज युक्त मंत्र का जप करना ही अधिक श्रेयष्कर होता है - मंत्र

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

(ऋ. 7-59-12, यजुर्वेद 3-60)

अर्थात् हम तीनों नेत्रों वाले ईश्वर की उपासना करते हैं, मैं सुगन्धियुक्त और पुष्टि प्रदान करने वाले 'उर्वारुक' की तरह मृत्यु के बन्धन से मुक्त हो जाऊं।

साधना-विधान

साधक को शुभ मुहूर्त में प्रातः उठकर स्नान आदि से निवृत्त होने के उपरान्त अपने सामने लकड़ी के बाजोट पर मंत्रसिद्ध प्राण प्रतिष्ठित **'महामृत्युंजय यंत्र'** को स्थापित कर गुरु-स्मरण, गणेश स्मरण, शंकर-पूजन आदि सम्पन्न करने के बाद निम्न प्रकार के संकल्प करने चाहिए -

संकल्प

ॐ मम आत्मनः श्रुति स्मृतिपुराणोक्त फलप्राप्त्यर्थं अमुक यजमानस्य (जिसके लिये अनुष्ठान कर रहे है, उसका नाम) *वा शरीरेऽमुकपीड़ा निराशद्वारा सद्यः आरोग्यप्राप्त्यर्थं श्रीमहामृत्युञ्जय देवता प्रीत्यर्थे अमुकसंख्या परिमितं श्री महामृत्युञ्जयमंत्रजपमहं करिष्ये।*

विनियोग

हाथ में जल लेकर इस प्रकार पाठ करें -

ॐ अस्य श्रीमहामृत्युञ्जयमन्त्रस्य वामदेव कहोलवशिष्ठ ऋषयः पंक्तिगायत्र्युष्णिगनुष्टप् छन्दांसि सदाशिवमहामृत्युञ्ज्यरुद्रो देवता, ह्रीं शक्तिः, श्रीं बीजं, महामृत्युञ्जयप्रीतये ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

उच्चारण के बाद हाथ में लिया जल भूमि पर छोड़ दें।

ऋष्यादिन्यास

निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए क्रमशः सिर, सुख, हृदय, लिंग और चरणों का स्पर्श करते हुए न्यास करें -

वामदेव कहोलवशिष्ठऋषिभ्यो नमः मूर्ध्नि।
पंक्तिगायत्र्युष्टुष्छन्दोभ्यो नमः मुखे।
सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्र देवतायै नमः हृदि।
ह्रीं शक्तये नमः लिंगे।
श्रीं बीजाय नमः पादयोः।

करन्यास -(मंत्र बोलते हुए सम्बन्धित अंग को स्पर्श करें।)

ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा अंगुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्त्तये मां जीवय बद्ध तर्ज्जनीभ्यां नमः।

ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम् ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रीं ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः साममन्त्रेभ्यो कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास

ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकम् ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा हृदयाय नमः।

ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवय शिरसे स्वाहा।

ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिंपुष्टिवर्धनम् ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा शिखायै वषट्।

ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रीं कवचाय हुं।

ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुस्साममन्त्राय नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय फट्।

पद न्यास

त्र्यम्बकं शिरसि। यजा महे भ्रुवौ। सुगन्धिंनेत्रयोः। पुष्टिवर्धनं मुखे। उर्वारुकं गण्डयोः इव हृदये। बन्धनात् जठरे। मृत्यो र्लिंगे। मुक्षीय ऊर्वौ। मा जान्वोः। अमृतात् पादयोः।

ध्यान

फिर हाथ जोड़कर भगवान शंकर का ध्यान करें -

हस्ताम्भोजयुगस्थकुम्भयुगला दुद्धृत्य तोयं शिरः,
सिञ्चन्तं करयोर्युगेन दधतं स्वांके संकुम्भौ करौ।
अक्षस्रङ्गमृगहस्तमम्बुगतं मूर्द्धस्थचन्द्रस्रवत्,
पीयूषार्दतनुं भजे सगिरिजंत्र्यम्बकं च मृत्युञ्जयम्॥

(सती सं. 38-24)

अर्थात् मृत्युञ्जय के आठ हाथ दृष्टिगोचर हो रहे हैं। ऊपर के दो हाथों से दो कलश उठाये हुए हैं और नीचे वाले दो हाथों से वे सिर पर जल डाल रहे हैं। सबसे नीचे वाले दो हाथों में भी वे दो कलश लिए हुए हैं, जिन्हें गोद में रखा हुआ है। सातवें हाथ में रुद्राक्ष और आठवें हाथ में मृग धारण कर रखा है, उनका आसन कमल का है, उसके सिर पर स्थित चन्द्रमा निरन्तर अमृत वर्षा कर रहा है, जिससे शरीर भीग गया है, वे त्रिनेत्र युक्त हैं, और उन्होंने मृत्यु पर विजय प्राप्त कर ली है, उनके बांयीं ओर भगवती गिरिजा विराजमान हैं।

जप - ध्यान के बाद महामृत्युञ्जय का जप करना चाहिए। मंत्र का स्वरूप इस तरह है -

॥ॐ ह्रौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं ॐ ह्रौं ॐ॥

यह सम्पुट युक्त मंत्र है। इसका अनुष्ठान सवा लाख मंत्र जप का माना जाता है। जप का दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन, और ब्राह्मण भोजन आदि कराना चाहिए। जप रुद्राक्ष की माला से करना चाहिए।

यह रोग-निवारण तथा अकाल मृत्यु निवारण का अचूक विधान माना जाता है तथा हजारों साधकों का अनुभूत है। कोई भी व्यक्ति श्रद्धापूर्वक इसे अपनाकर अभीष्ट लाभ प्राप्त कर सकता है।

लघु मृत्युञ्जय मंत्र

॥ॐ जूं सः (नाम जिसके लिए अनुष्ठान किया जा रहा हो) पालय पालय सः जूं ॐ॥

इसका पूर्ण अनुष्ठान 11 लाख मंत्र जप का है, जिसका दशांश हवन करना चाहिए। शास्त्र में इसे सर्वरोग निवारक कहा गया है -

मृत्युञ्जयो महारुद्रा त्राहि मां शरणगतम्।
जन्ममृत्युजरारोगैः पीड़ितं कर्मबन्धनात्॥

मंत्र-जप

यदि कोई साधक केवल मंत्र जप करना चाहे, उसके लिए लघु मृत्युञ्जय मंत्र इस प्रकार है -

॥ॐ जूं सः सः जूं ॐ॥

लघुतम मंत्र

महामृत्युञ्जय का लघुतम मंत्र इस प्रकार है -

॥ॐ जूं सः॥

बलिदान मंत्र

अनुष्ठान पूर्ण होने पर निम्न मंत्र से भगवान् मृत्युञ्जय को 'जायफल' समर्पित करना चाहिए -

॥ॐ ह्रौं ह्रीं जूं सः नमः शिवाय प्रसन्न पारिजाताय स्वाहा॥

अनुष्ठान पूर्ण होने के पश्चात् महामृत्युंजय यंत्र तथा रुद्राक्ष माला को नदी में प्रवाहित अवश्य करें।

वस्तुतः महामृत्युञ्जय विधान मृत्यु पर विजय प्राप्त करने का अद्भुत उपाय है। जो साधक स्वयं न कर सकें, उनको चाहिये, कि किसी योग्य ब्राह्मण से यह अनुष्ठान सम्पन्न करावें। यों भी आज के इस घात-प्रतिघात भरे युग में प्रत्येक व्यक्ति को अग्रिम रक्षार्थ **'महामृत्युञ्जय पूजन'** समपन्न कर ही लेना चाहिए।

भय आशंका चिन्ता ही तो मृत्यु है
मृत्यु तो काल की सीमा है
काल को जीतने वाले देव महाकाल ही है
अपने जीवन को इच्छानुकूल बनाइये

महाकाल प्रयोग

महाकाल स्वयं में काल के स्वामी है, जो ब्रह्म हैं, जो स्वयं में तो स्थिर हैं, परन्तु वे सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को गतिशील करते हैं, संचालित करते हैं। काल जो निर्मुक्त, निर्बाध गति से युक्त है, उसे केवल महाकाल की साधना के द्वारा ही बांधा जा सकता है।

स्रष्टारोऽपि प्रजानां प्रबलभवभयाद् यं नमस्यन्ति देवा
यश्चित्ते सम्प्रविष्टोऽप्यवहितमनसां ध्यानमुक्तात्मनां च।
लोकानामादिदेवः स जयतु भगवाञ्छ्रीमहाकालनामा
बिभ्राणाः सोमलेखामहिवलययुतं व्यक्तलिङ्गं कपालम्॥

प्रजा की सृष्टि करने वाले प्रजापति देव भी प्रबल संसार भय से मुक्त होने के लिये जिन्हें नमस्कार करते हैं, जो शुद्ध चित्तवाले ध्यानपरायण भक्तों के हृदय में सुख पूर्वक विराजमान होते हैं, और चन्द्रमा की काल सर्पों की कङ्कण तथा व्यक्त चिन्ह वाले कपाल को धारण करते हैं, सम्पूर्ण लोकों के आदिदेव भगवान् महाकाल मेरी रक्षा करें।

'काल' शब्द अपने आप में गहरा अर्थ लिये हुए है। एक ओर जहां काल का अर्थ समय है, वहीं दूसरी ओर काल का अर्थ मृत्यु है। ये दोनों ही स्थितियां मनुष्य के हाथ में नहीं रहती। न तो वह समय को अपने अनुसार अनुकूल कर सकता है और न ही मृत्यु पर विजय प्राप्त कर सकता है। जो व्यक्ति समय को अपने अनुकूल नहीं कर सकता वह सदैव जीवन में पराजित होता है और परिस्थितियों के अनुसार जीवन को ढोता रहता है। इसी प्रकार, जो मनुष्य काल अर्थात् मृत्यु के भय से सदैव आशंकित रहता है, उसका जीवन भी चिन्ता, सन्देह, रोग, दुविधा से युक्त रहता है और वह क्षण काल के जबड़े में ही रहता है।

प्रश्न उठता है, कि काल अर्थात् समय, और काल अर्थात् मृत्यु पर विजय प्राप्त करने के लिये मनुष्य क्या करे? उसके अपने साधन तो सीमित हैं, उसकी विचार शक्ति भी सीमित है, क्योंकि प्रत्येक वस्तु की सीमा काल में बंधी होती है, किन्तु काल को सीमाओं में नहीं बांधा जा सकता, वह असीमित होता है और जो असीमित है, वही अनन्त है, वही सृष्टि का आदि और सृष्टिकर्त्ता है, जिसके साक्ष्य में सृष्टि उत्पन्न और समाप्त होती है। काल की गति में अनन्त शक्तियां उत्पन्न होती हैं और अन्ततः उसी काल में विलीन हो जाती हैं। समस्त

देवी-देवता काल से बंधे हुए हैं। काल से जहां समस्त देवी-देवता प्रतिबंधित हैं, समस्त गति उसके अनुसार है, उस काल के देव महाकाल हैं, जिनकी साधना सम्पन्न कर साधक काल की गति को समझने में समर्थ हो सकता है।

महाकाल साधना सम्पन्न करने के उपरान्त व्यक्ति न सिर्फ अकाल मृत्यु से बचता है अपितु अपने समय के श्रेष्ठतम तथा सौभाग्यशाली व्यक्तियों में से एक व्यक्ति बनता है। इसके परिणामस्वरूप उसे अपने जीवन के सभी विरोधात्मक परिस्थितियों में विजय प्राप्त होती है। उसे यश, सम्मान, प्रतिष्ठा उसके विरोधी भी प्रदान करते ही हैं।

महाकाल साधना सम्पन्न कर व्यक्ति में सामर्थ्य उत्पन्न हो जाता है, कि वह अपने शत्रुओं को परास्त कर सके। यह साधना सम्पन्न कर वह अपने शत्रुओं के समक्ष ऐसी स्थिति उत्पन्न कर देता है, कि उसके शत्रुओं, उसके विरोधियों की स्थिति अत्यन्त दयनीय बन जाती है, उनमें सामर्थ्य नहीं होता, कि वे साधक के विरुद्ध कुछ करने का साहस कर सकें। शत्रु साधक के समक्ष अत्यन्त दयनीय स्थिति में रहने लगते हैं और वे जितना भी साधक के अनिष्ट के बारे में सोचते हैं, उनका स्वयं का ही उतना अनिष्ट हो जाता है।

साधना विधान

इस साधना हेतु आवश्यक सामग्री है - **'महाकाल यंत्र'**, **'मृत्युञ्जय गुटिका'** तथा **'हकीक माला'**।

यह साधना शिवकल्प में अर्थात **21 फरवरी 2008 से 21 मार्च 2008, होली** तक किसी भी सोमवार के दिन अवश्य सम्पन्न करें।

साधक सफेद वस्त्र धारण करें तथा माथे पर त्रिपुण्ड लगाकर यह साधना सम्पन्न करें।

लकड़ी के बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछाकर उस पर रक्त चन्दन से अष्टदल कमल बना कर **'महाकाल यंत्र'** स्थापित करें।

यंत्र का पूजन अष्टगंध, पुष्प, अक्षत, धूप व दीप से करें।

'मृत्युञ्जय गुटिका' को पुष्प आसन बनाकर स्थापित करें तथा उसका भी पूजन करें।

महाकाल का ध्यान करें -

देवाधिदेवं करालं प्रसन्नं,
कल्पोज्ज्वलांगं सदाभावगम्यं,
प्रणम्यं सदैव महाकाल चिन्त्यम्॥

'हकीक माला' के सुमेरू पर चंदन या कुंकुम लगा कर पूजन करें, फिर उसी माला से निम्न मंत्र की 11 माला मंत्र जप करें।

मंत्र

॥ ॐ ह्रौं ह्रौं हुं हुं महाकालाय फट्॥

तीन सोमवार तक यह साधना सम्पन्न करें और उसके पश्चात् नित्य 51 बार इस मंत्र का जप करना है।

अनुष्ठान की पूर्णता के पश्चात् यंत्र को नदी या सरोवर के जल में प्रवाहित कर दें तथा मृत्युन्जय गुटिका को काले धागे में बांधकर गले में पहन लें। जब भी यह मंत्र जप करें, इसी **'महाकाल सिद्धि हकीक माला'** से करें।

वास्तव में इस साधना से देह में एक तेजस्विता और परिवर्तन आने लगता है, बाधाएं सामान्य प्रतीत होने लगती हैं तथा संकल्प शक्ति दृढ़ हो जाने के कारण जिस कार्य का संकल्प लेते हैं, वह कार्य अवश्य ही पूर्ण होता है और निश्चित रूप से शत्रु बाधा समाप्त होती है।

साधना सामग्री - 360/-

जीवन, शिव और शक्ति का मिलन है
सदाशिव अर्धनारीश्वर स्वरूप में सरसत स्वरूप हैं
जीवन में पूर्ण सरसा, आनन्द हेतु

शिव त्र्यम्बक अनुष्ठान

भगवान सदाशिव का पूजन गृहस्थ लोग अर्द्धनारीश्वर स्वरूप में, इसीलिये करते हैं क्योंकि यह उनका सर्वोत्तम गृहस्थ स्वरूप है, जहां वे एक ही स्वरूप में, अर्द्धभाग में पुरुष स्वरूप और अर्द्धभाग में नारी स्वरूप हैं। इसी स्वरूप के लिये उन्हें त्र्यम्बक कहा जाता है अर्थात् वे शिव, जो सदैव अम्बा रूपी शक्ति के साथ संयुक्त हैं और सृष्टि का निरन्तर संचालन करते रहते हैं।

सृष्टि और जीवन का पूरा स्वरूप दो भागों में विभक्त किया जा सकता है। प्रथम स्वरूप पुरुष स्वरूप और दूसरा स्वरूप स्त्री स्वरूप है, जिसे सामान्य भाषा में नर तथा मादा स्वरूप कहा जाता है। इन्हीं दो तत्वों के मिलन से जीवन की रचना होती है। जहां भी एक पक्ष अधूरा रहता है वहां निर्माण नहीं हो सकता, इसीलिये स्त्री और पुरुष को एक दूसरे का पूरक कहा गया है। जीवन का आधार धर्म, धर्म का आधार काम, काम का आधार स्त्री-पुरुष का मिलन ही है।

भगवान शिव के स्वरूप शिवलिंग में भी लिंग और योनि का मिलन है, जो कि सृष्टि के पूरे स्वरूप को दर्शाता है। पुरुष स्वरूप में, जहां मानव-व्यवहार में शौर्य, बल, क्रोध, तेज, साहस इत्यादि गुण हैं, वहीं स्त्री स्वरूप में कोमलता, सरसता, निर्मलता, सौन्दर्य इत्यादि तत्व हैं। भगवान शिव को ही सृष्टि का प्रथम पुरुष माना गया है, जिन्होंने अपने साथ हर समय शक्ति को संयुक्त रखा। शिव के बिना शक्ति अधूरी है और शक्ति के बिना शिव अधूरे हैं, और जहां शिव शक्ति का मिलन है, वहां जीवन है। जिस प्रकार वृक्ष में तना पुरुष स्वरूप है, पत्ते और उसमें स्थित जल तत्व स्त्री स्वरूप है, उसी प्रकार मनुष्य में ऊपर दिये गये गुण पुरुष और स्त्री स्वरूप को स्पष्ट करते हैं।

शिव और शक्ति मिल कर ही पूर्ण बनते हैं। शक्ति 'इकार' की द्योतक है, इसलिए शिव में से 'इकार' अर्थात् शक्ति हटा दी जाय तो पीछे 'शव' ही रहता है, अतः शक्ति की सायुज्यता से ही 'शव' पूर्ण रूपेण शिव कहलाते हैं, और यही इनका अर्धनारीश्वर रूप है।

शैव दर्शन के अनुसार यह रूप ब्रह्म और आत्मा का समन्वित रूप है, जो द्वैतवाद का सूचक है। इस अर्धनारीश्वर रूप में शिव का आधा दायां भाग पुरुष का, एवं आधा बांया भाग पार्वती का है। शिव वाले भाग में सिर पर जटाजूट, सर्पमाला, सर्पयज्ञोपवीत सर्पकुण्डल, बाघाम्बर, त्रिशूल आदि हैं जबकि पार्वती वाले भाग में सिर पर मुकुट, कुण्डल, सुन्दर वस्त्र, रम्य आभूषण, केयूर-मेखला, कंकण आदि हैं, इस प्रकार का रूप ही रम्य तथा शिव शक्ति का समन्वित स्वरूप है।

इसीलिये त्र्यम्बक साधना प्रत्येक गृहस्थ एवं युवक-युवती को करनी चाहिए, जिससे उनके जीवन में पूर्ण सरसता और दृढ़ता आ सके। कन्याओं द्वारा त्र्यम्बक साधना करने से उन्हें श्रेष्ठ वर की प्राप्ति होती है, वहीं युवकों को भी मनोवांछित, अनुकूल कन्या की प्राप्ति होती है। गृहस्थ व्यक्तियों द्वारा इस साधना को सम्पन्न करने से उन्हें अपने जीवन में निरन्तर उमंग, आनन्द, जोश, बल, बुद्धि प्राप्त होते रहते हैं, जिससे

जीवन भार नहीं लग कर एक आनन्द यात्रा लगती है, जिसमें पति-पत्नी समान रूप से शिव पार्वती की तरह सहयोगी हैं।

शिव त्र्यम्बक अनुष्ठान

भगवान शिव का एक नाम त्र्यम्बक है, उनके इस स्वरूप की साधना करने से साधक अपने जीवन में पापों से तो मुक्त होता ही है,साथ ही साथ रक्षा, श्री, कीर्ति, कान्ति हेतु इसे श्रेष्ठतम प्रयोग माना जाता है। राज्योन्नति अर्थात् राज्यलक्ष्मी एवं यश प्राप्ति का भी यही श्रेष्ठतम उपाय है।

यह साधना साधक किसी भी सोमवार को प्रातः प्रारम्भ कर सकता है, लेकिन शिव साधना के कुछ विशेष नियम हैं, जिनकी पालना आवश्यक है। उन्हें साधक ध्यान से पढ़ें और भगवान शिव का कोई भी प्रयोग करते समय इन बातों को ध्यान में रखें -

- ✧ शिव पूजा स्नान करके ही सम्पन्न की जाती है, शिव पूजन से पहले गणपति पूजन अनिवार्य है।
- ✧ शिव पूजन में साधक उत्तर की ओर मुह करें और अपने सामने ही शिवलिंग इत्यादि यंत्र, मूर्ति स्थापित करें, इसके अलावा अन्य सभी दिशाएं वर्जित हैं।
- ✧ साधक गले में रूद्राक्ष माला पहनें और अपने सिर पर त्रिपुण्ड अवश्य लगावें।
- ✧ बिल्व-पत्र शुद्ध एवं ताजे, परन्तु कटे-फटे न हों। पुष्प सुगन्धित हों, बिना सुगन्ध के पुष्प का प्रयोग न करें।
- ✧ गणेश जी को तुलसीदल और मां पार्वती को दूर्वा नहीं चढ़ावें।
- ✧ पत्र, पुष्प, फल आदि का मुंह नीचे करके नहीं चढ़ावें, बिल्वपत्र डंठल तोड़ कर उल्टे करके चढ़ावें। भगवान शंकर को कमल, गुलाब, कनेर, सफेद आक (मदार) तथा धतूरा सबसे अधिक प्रिय है।
- ✧ शिव की परिक्रमा आधी की जाती है, भूल कर भी शिव की पूरी परिक्रमा न करें।
- ✧ शिवलिंग पर चढ़ाया हुआ प्रसाद ग्रहण नहीं करना चाहिए, अपितु उनके सामने चढ़ाया हुआ फल, प्रसाद जो भी हो वही ग्रहण करें, अतः साधक शिवलिंग पर केवल दुग्ध धारा, बिल्वपत्र के अतिरिक्त कोई भी पदार्थ न चढ़ावें अपितु शिवलिंग के सामने रखें।
- ✧ त्र्यम्बक साधना में साधक स्वयं ही बैठें और यदि सम्भव हो तो अपनी पत्नी को पूजा में साथ बिठाएं।
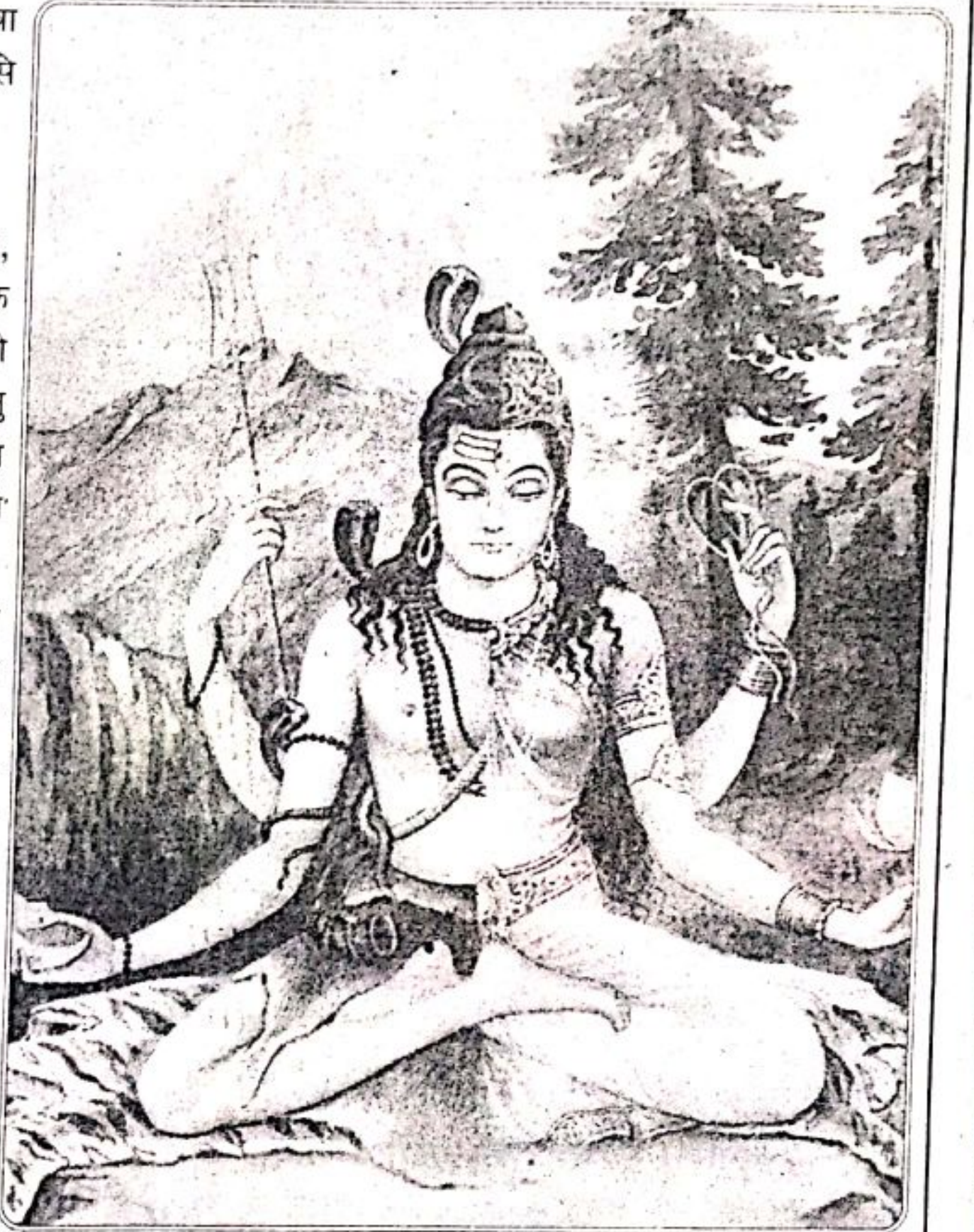
इस साधना में 3 वस्तुएं - 1. **त्र्यम्बक शिव सिद्धि महायंत्र,** 2. **शिवलिंग (पारदेश्वर अथवा नर्मदेश्वर),** 3. **रूद्र शक्ति बीज** आवश्यक है। इसके अतिरिक्त मंत्र जप केवल रूद्राक्ष माला से ही सम्पन्न करें।

सर्वप्रथम श्वेत वस्त्र बिछा कर मध्य में एक तांबे का पात्र रखें और उसमें गणपति मूर्ति स्थापित कर उसका पूजन करें, तत्पश्चात् इसे अपने बांये हाथ की तरफ एक कोने में रख दें और आगे दीपक जला दें। इसके बाद एक कलश लेकर उस पर नारियल स्थापित करें तथा कलश पूजन सम्पन्न करें। इस कलश को अपने दाहिनी ओर स्थापित करें। अब दो पात्र लें।

सबसे आगे एक पात्र में **शिवलिंग** (यदि आपके पास पहले से **पारदेश्वर अथवा नर्मदेश्वर शिवलिंग** है तो आप उसे ही स्थापित कर पूजन कर सकते हैं) स्थापित करें, दूसरे पात्र में **'शिवत्र्यम्बक यंत्र'** को चावल की ढेरी पर स्थापित करें।

शिवलिंग का पूजन तो आधार पूजन है। साधक शिवलिंग की पूजा दुग्ध मिश्रित जलधारा प्रवाहित करते हुए बिल्वपत्र चढ़ाएं और 108 बार **'ॐ नमः शिवाय'** का पाठ करें। जल को, पूजन के पश्चात् परिवार के सभी सदस्य नेत्रों, मस्तक तथा कंठ के स्पर्श करावें।

इसके पश्चात् साधक हाथ में जल लेकर विनियोग सम्पन्न करें।

विनियोग

ॐ अस्य त्र्यम्बकमंत्रस्य वशिष्ठ ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः त्र्यम्बकपार्वती देवता, त्र्यं बीजम्, वं शक्तिः, कं कीलकम्, सर्वेष्टसिद्धर्थे जपे विनियोगः।

अब दूसरे पात्र में स्थापित **शिव त्र्यम्बक यंत्र** का पूजन प्रारम्भ करें। ऊपर जो दिये गये नियम हैं, उन्हीं के अनुसार पुष्प, फल इत्यादि से पूजन करें। इस शक्ति पूजन में चार चक्र का पूजन है। ये चारों चक्र गोलाकार रूप में शिव त्र्यम्बक यंत्र के चारों ओर चावल की ढेरी बनाकर उस पर रूद्र बीज मंत्र पढ़ते हुए रखें।

1. ***ॐ वामाये नमः***, 2. ***ॐ ज्येष्ठाये नमः***, 3. ***ॐ रोद्राये नमः***, 4. ***ॐ काल्यै नमः***, 5. ***ॐ कलविकरिण्यै नमः***, 6. ***ॐ बलविकरिण्यै नमः***, 7. ***ॐ बलप्रमथिन्यै नमः***, 8. ***ॐ सर्वभूतदमन्यै नमः***, 9. ***ॐ मनोन्मन्यै नमः।***

शक्ति पूजन में एक-एक पुष्प पंखुड़ी तथा एक एक सुपारी, **'रूद्र बीज'** स्थापित कर रखनी है, प्रत्येक पर चन्दन का तिलक करना है।

अब साधक **'शिव त्र्यम्बक यंत्र'** की पूजा सम्पन्न करें। इस पूजा में भी चन्दन, घी, दूध, दही, शक्कर, शहद, मिश्री, पंचामृत, बिल्व पत्र पुष्प दूध के नैवेद्य से करना है। शुद्ध घी का दीपक अवश्य ही पूजन के प्रारम्भ में जला दें। अब अपने गले में धारण रूद्राक्ष माला से निम्न मूल मंत्र का पाठ प्रारम्भ करें -

शिव त्र्यम्बक मंत्र

ॐ हों जूं सः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारूकमिव बन्धानमृत्योर्मुक्षीय मामृताय सः जूं हों ॐ ॥

इस मंत्र का जप 5 माला तो करना ही है, साधना में सिद्धि के लिए पुरश्चरण में एक लाख मंत्र का विधान है, अतः साधक हर सोमवार को यह विशेष पूजन विधान सम्पन्न कर सकता है। जब एक लाख मंत्र जप हो जाये तो साधक यज्ञ सम्पन्न करे। यज्ञ में अलग-अलग इच्छाओं की पूर्ति हेतु अलग-अलग सामग्री का विधान है। मूल रूप से दस वस्तुएं- **बेल, फल, तिल, खीर, घी, दूध, दही, दूर्वा, वटवृक्ष की लकड़ी, तथा खैर की लकड़ी** घी में डुबो कर होम करना चाहिए। ब्रह्मसिद्धि तेज हेतु पलास की समिधाओं (लकड़ी) से होम, कांति एवं पुष्टि के लिए खैर की समिधाओं से होम, तिल की आहुति से पाप मुक्ति तथा अकाल मृत्यु और शत्रु पर विजय हेतु पीली सरसों से आहुति, दूर्वा के होम से समस्त व्याधियों से मुक्ति प्राप्त होती है। यहां तक लिखा गया है कि जो साधक प्रति दिन प्रातः स्नान कर सूर्य के समक्ष इस **त्र्यंबक मंत्र** का एक सौ आठ जप कर लेता है और यह कार्य प्रतिदिन सम्पन्न करता है तो वह शारीरिक एवं मानसिक रोगों से विमुक्त होकर इस मंत्र के प्रभाव से अपनी समस्त कामनाओं में सिद्धि प्राप्त करता है।

शिव साधना में एक से एक अनोखे प्रयोग हैं, क्योंकि शिव ही तो मंत्र दाता और तन्त्र रचयिता है।

शिव त्र्यम्बक यंत्र - 240/-

द्वादश ज्योतिर्लिंग

केदारनाथज्योतिर्लिंग - केदारनाथ
विश्वनाथज्योतिर्लिंग - वाराणासी
सोमनाथज्योतिर्लिंग - वैरावल (राजकोट),
महाकालेश्रवरज्योतिर्लिंग - उज्जैन, मध्यप्रदेश
ॐकारेश्वरज्योतिर्लिंग - शिवपुरी, मध्यप्रदेश
रामेश्वरम्ज्योतिर्लिंग - रामेश्वरम् (मदुरै)
मल्लिकार्जुनज्योतिर्लिंग - सैरीसेलम, आंध्रप्रदेश
त्र्यम्बकेश्वरज्योतिर्लिंग - नासिक
भीमाशंकरज्योतिर्लिंग - पुणे
नागेश्वरज्योतिर्लिंग - गुजरात
वैद्यनाथज्योतिर्लिंग (विद्यानाथ) - देवगढ़, बिहार
घृश्मेश्वरज्योतिर्लिंग - औरंगाबाद, महाराष्ट्र

जब भी जीवन में आपत्ति आये, इसे अवश्य करें
यह भैरव के शांत स्वरूप की साधना है

जीवन में आपत्ति आने का मूल कारण भय ही है। जब भय आप पर सवार हो जाता है, तो आप अपनी आपत्ति-समस्या का निराकरण नहीं कर सकते, और भैरव के बारे में जनश्रुति है 'भैरव भय हरे' अर्थात् भैरव ही एक मात्र देव हैं जो भय का नाश कर देते हैं, अपने साधक को अभय बना देते हैं, जिससे वह जीवन संग्राम में निर्भय होकर कार्य करे और सफलता प्राप्त करे।

पारलौकिक शक्ति प्राप्त करने का स्रोत देवताओं की साधना ही है, इसमें भी दुर्गा या भैरव साधना तुरन्त, तत्क्षण फल देने वाली मानी गई है। भैरव भगवान शिव के अवतार हैं, विष्णु के अंश हैं, शक्ति के आद्य हैं, अतः शाक्त, शैव कोई भी मतावलम्बी इस साधना को कर सकता है।

जीवन में सुख और दुःख आते ही रहते हैं। जहां आदमी सुख प्राप्त होने पर प्रसन्न होता है, वहीं दुःख आने पर वह घोर चिन्ता और परेशानियों से घिर जाता है, परन्तु धैर्यवान व्यक्ति ऐसे क्षणों में भी शांत चित्त होकर उस समस्या का निराकरण कर लेते हैं।

कलियुग में पग-पग पर मनुष्य को बाधाओं, परेशानियों और शत्रुओं से सामना करना पड़ता है, ऐसी स्थिति में उसके लिए मंत्र साधना ही एक ऐसा मार्ग रह जाता है, जिसके द्वारा वह शत्रुओं और समस्याओं पर पूर्ण विजय प्राप्त कर सकता है, इस प्रकार की साधनाओं में **'आपत्ति उद्धारक बटुक भैरव साधना'** अत्यन्त ही सरल, उपयोगी और अचूक फलप्रद मानी गई है, कहा जाता है कि भैरव साधना का फल हाथों-हाथ प्राप्त होता है।

भैरव को भगवान शंकर का ही अवतार माना गया है, शिव महापुराण में बताया गया है -

भैरवः पूर्णरूपो हि शंकरः परात्मनः।
मूढास्ते वै न जानन्ति मोहिता शिवमायया।

देवताओं ने भैरव की उपासना करते हुए बताया है कि काल की भांति रौद्र होने के कारण ही आप **'कालराज'** हैं, भीषण होने से आप **'भैरव'** हैं, मृत्यु भी आप से भयभीत रहती है, अतः आप काल भैरव हैं, दुष्टात्माओं का मर्दन करने में आप सक्षम हैं, इसलिए आपको **'आमर्दक'** कहा गया है, आप समर्थ हैं और शीघ्र ही प्रसन्न होने वाले हैं।

आपदा-उद्धारक बटुक भैरव

'शक्ति संगम तंत्र' के **'काली खण्ड'** में भैरव की उत्पत्ति के बारे में बताया गया है कि **'आपद'** नामक राक्षस कठोर तपस्या

दुःख की अंधियारी काली रात इतनी अधिक लम्बी भी न हो, कि सुख के सूर्योदय की आशा ही खत्म हो जाय, दुःख जीवन के अंग हो सकते हैं – लेकिन सुखों का सूर्य भी जीवन में जगमगाना ही चाहिए।

- सद्गुरुदेव

कर अजेय बन गया था, जिसके कारण सभी देवता त्रस्त हो गये, और वे सभी एकत्र होकर इस आपत्ति से बचने के बारे में उपाय सोचने लगे, अकस्मात् उन सभी के देह से एक-एक तेजोधारा निकली और उसका युग्म रूप पंचवर्षीय बटुक का प्रादुर्भाव हुआ, इस बटुक ने – **'आपद'** नामक राक्षस को मारकर देवताओं को संकट मुक्त किया, इसी कारण इन्हें **'आपदुद्धारक बटुक भैरव'** कहा गया है।

'तंत्रालोक' में भैरव शब्द की उत्पत्ति ***भैभीमादिभिः अवतीति भैरेव*** अर्थात् भीमादि भीषण साधनों से रक्षा करने वाला भैरव है, **'रुद्रयामल तंत्र'** में दस महाविद्याओं के साथ दस भैरव के रूपों का वर्णन है, और कहा गया है कि कोई भी महाविद्या तब तक सिद्ध नहीं होती जब तक उनसे सम्बन्धित भैरव की सिद्धि न कर ली जाय।

'रुद्रयामल तंत्र' के अनुसार दस महाविद्याएं और सम्बन्धित भैरव के नाम इस प्रकार हैं –

1. **कालिका**	**- महाकाल भैरव**
2. **त्रिपुर सुन्दरी**	**- ललितेश्वर भैरव**
3. **तारा**	**- अक्षभ्य भैरव**
4. **छिन्नमस्ता**	**- विकराल भैरव**
5. **भुवनेश्वरी**	**- महादेव भैरव**
6. **धूमावती**	**- काल भैरव**
7. **कमला**	**- नारायण भैरव**
8. **भैरवी**	**- बटुक भैरव**
9. **मातंगी**	**- मतंग भैरव**
10. **बगलामुखी**	**- मृत्युंजय भैरव**

भैरव से सम्बन्धित कई साधनाएं प्राचीन तांत्रिक ग्रंथों में वर्णित हैं, जैन ग्रंथों में भी भैरव के विशिष्ट प्रयोग दिये हैं। प्राचीनकाल से अब तक लगभग सभी ग्रंथों में एक स्वर से यह कहा गया है कि जब तक साधक भैरव साधनां सम्पन्न नहीं कर लेता, तब तक उसे अन्य साधनाओं में प्रवेश करने का अधिकारं ही नहीं प्राप्त होता।

'शिव पुराण' में भैरव को शिव का ही अवतार माना है तो **'विष्णु पुराण'** में बताया गया है कि विष्णु के अंश ही भैरव के रूप में विश्व विख्यात हैं, दुर्गा सप्तशती के पाठ के प्रारम्भ और अंत में भी भैरव की उपासना आवश्यक और महत्वपूर्ण मानी जाती है।

भैरव साधना के बारे में लोगों के मानस में काफी भ्रम और भय है, परन्तु यह साधना अत्यन्त ही सरल, सौम्य और सुखदायक है, इस प्रकार की साधना को कोई भी साधक कर सकता है।

भैरव साधना के बारे में कुछ मूलभूत तथ्य साधक को जान लेने चाहिये –

1. भैरव साधना सकाम्य साधना है, अतः कामना के साथ ही इस प्रकार की साधना की जानी चाहिए।
2. भैरव साधना रात्रि में ही की जानी चाहिए, दिन में साधना करने का निषेध है।
3. भैरव को सुरा का नैवेद्य अर्पित करें।
4. भैरव की पूजा में दैनिक नैवेद्य बदलता रहता है। रविवार को दूध की खीर, सोमवार को मोदक (लड्डू), मंगलवार को घी-गुड़ से बनी हुई लापसी, बुधवार को दही-चिवड़ा, गुरुवार को बेसन के लड्डू, शुक्रवार को भुने हुए चने तथा शनिवार को उड़द के बने हुए पकौड़े का नैवेद्य लगाते हैं, इसके अतिरिक्त जलेबी, सेव, तले हुए पापड़ आदि।

साधना के लिए आवश्यक

ऊपर लिखे गये नियमों के अलावा कुछ अन्य नियमों की जानकारी साधक के लिए आवश्यक है, जिनका पालन किये बिना भैरव साधना पूरी नहीं हो पाती।

1. भैरव की पूजा में अर्पित नैवेद्य प्रसाद को उसी स्थान पर पूजा के कुछ समय बाद ग्रहण करना चाहिए, इसे पूजा स्थान से बाहर नहीं ले जाया जा सकता, सम्पूर्ण प्रसाद उसी समय पूर्ण कर देना चाहिए।
2. भैरव साधना में केवल तेल के दीपक का ही प्रयोग किया जाता है, इसके अतिरिक्त गुग्गुल, धूप-अगरबत्ती जलाई जाती है।
3. इस महत्वपूर्ण साधना हेतु मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त **'बटुक भैरव यंत्र'** तथा **'चित्र'** आवश्यक है, इस ताम्र यंत्र तथा चित्र को स्थापित कर साधना क्रम प्रारम्भ करना चाहिए।

4. भैरव साधना में केवल '**काली हकीक माला**' का ही प्रयोग किया जाता है।

साधना विधान

साधक रात्रि को स्नान कर दक्षिण की तरफ मुंह कर बैठ जायं, सामने तेल का दीपक लगा लें और भैरव के चित्र, मूर्ति तथा यंत्र के सामने निम्न ध्यान करें -

बटुक भैरव ध्यान

***भक्त्या नमामि बटुकं तरुणं त्रिनेत्रं
कामप्रदान् नरकपालत्रिशूलदण्डान्।
भक्तार्तिनाशकरणे दधतं करेषु
तं कौस्तुभामरणभूषितदिव्यदेहम्॥***

फिर इस प्रकार ध्यान कर भैरव से मंत्र साधना या मंत्र जप की आज्ञा मांगें।

बटुक भैरव मंत्र

***॥ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु
बटुकाय ह्रीं ॐ स्वाहा॥***

यह इक्कीस अक्षरों का मंत्र अत्यन्त ही महत्वपूर्ण माना गया है, और केवल मात्र नित्य एक माला जपने से ही एक महीने में साधक की इच्छापूर्ति हो जाती है।

इसके अलावा भी बटुक भैरव के कई प्रयोग हैं -

1. रक्षा प्राप्ति के लिए मंत्र

किसी भी मंगलवार को रात्रि के एक प्रहर के बाद निम्न मंत्र की ग्यारह माला जप करें।

मंत्र

***॥ॐ ह्रीं भैरव भैरव भयकरहर मां रक्ष रक्ष
हुं फट् स्वाहा॥***

2. वशीकरण प्रयोग मंत्र

साधक यदि गुरुवार को प्रातःकाल या सूर्यास्त के समय नदी के किनारे या जंगल में जाकर निम्न मंत्र का दस हजार जप करें तो वह जिसको भी चाहे, वश में कर सकता है -

मंत्र

***ॐ नमो बटुक भैरवाय कामदेवाय यस्य
यस्य दृश्यो भवामि यश्च यश्च मम सुखं
तं तं मोहयतु स्वाहा॥***

3. मारण प्रयोग

मंगलवार को अर्द्धरात्रि के समय चौराहे पर जाकर उपरोक्त मंत्र का दस हजार जप करें, तथा घी, खीर, लाल चन्दन मिला कर दशांश हवन करें, तो निश्चय ही शत्रु का नाश होता है।

मंत्र

***॥ॐ नमः कालरूपाय बटुक भैरवाय
अमुकं भस्म कुरु कुरु स्वाहा॥***

4. दरिद्रता नाश प्रयोग

यह मंत्र महत्वपूर्ण और '**स्वर्णाकर्षण भैरव मंत्र**' कहा गया है, रात्रि को दक्षिण की तरफ मुंह कर तेल का दीपक लगाकर निम्न मंत्र का दस हजार जप करें तो निश्चय ही घर में दरिद्रता का नाश हो जाता है।

स्वर्णाकर्षण भैरव मंत्र

ॐ ऐं क्लीं क्लीं क्लूं ह्रां ह्रीं ह्रूं सः वं आपदुद्धरणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षण भैरवाय मम दारिद्र्य विद्वेषणाय ॐ ह्रीं महाभैरवाय नमः॥

वस्तुतः भैरव प्रयोग अत्यन्त सरल और सौम्य है तथा कलियुग में भैरव प्रयोग शीघ्र ही सफलतादायक माना गया है, कोई भी साधक भैरव प्रयोग करके अपनी कामनाओं की पूर्ति कर सकता है।

साधना सामग्री - 390/-

रसेश्वर साधना

तनाव तथा क्लेश निवृति व जीवन में रस प्राप्ति हेतु

भगवान शिव का एक नाम रसेश्वर भी है। शास्त्रों में 'रस' की अवधारणा पारद से की गई है। पारद के लिए कहा गया है -

रसनात्सर्वधातुनां रस इत्यभिधीयते
जरारुग्मृत्युनाशाय रम्यते वा रसो मतः।

अर्थात् जो समस्त धातुओं को अपने में समाहित कर लेता है और **जो बुढ़ापे, रोग व मृत्यु की समाप्ति के लिए ग्रहण किया जाता है, वही रस की संज्ञा से विभूषित है।**

पारद को भगवान शिव का वीर्य कहा गया है, और इसी रस के कारण भगवान शिव नित्य आनन्द में मग्न रहते हैं, इसी **रस मग्न होने की क्रिया से उन्हें रसेश्वर भी कहा गया है रस का अर्थ है आनन्द, मस्ती, प्रफुल्लता, जोश, तरंग।** भगवान शिव को यदि देखा जाए, तो उनकी सवारी नन्दी बैल और पार्वती जी की सवारी शेरं - दोनों ही परस्पर बैरी। भगवान शिव के गले में नाग और शिव के पुत्र कार्तिकेय की सवारी मोर - दोनों परस्पर बैरी। सांप और शिव पुत्र गणेश का वाहन चूहा भी परस्पर बैरी हैं। अब शेर बैल पर झपटे, कि सांप चूहे पर झपटे या मोर सांप पर झपटे, पर भगवान शिव किसी भी प्रकार की चिंता से मुक्त अपने ही रस में मग्न हैं। यही आनन्द की स्थिति प्राप्त करना ही जीवन में रस घोलना है और भगवान रसेश्वर की साधना से यह संभव है।

इस प्रयोग को सम्पन्न करने के बाद व्यक्ति अपने आप में प्रसन्नचित्त हो जाता है, उसके तनाव, चिंता, व्याधि सभी गायब हो जाते हैं, उसके अंदर एक नवीन तरंग और मस्ती का संचार हो जाता है। छोटी-छोटी बातों पर क्रोध आना, तनाव में आ जाना सब दूर हो जाता है। यदि घर में किसी भी प्रकार का क्लेश हो, लड़ाई झगड़ा हो, तो वह सब समाप्त हो जाता है। व्यक्ति स्वयं तो प्रसन्न रहता ही है, उसके सम्पर्क में आने वाले लोग भी उससे खुश रहते हैं, क्योंकि उसके जीवन में रस समाविष्ट हो जाता है इस प्रयोग द्वारा।

इस साधना में **'नर्मदेश्वर शिवलिंग', 'रसेश्वरी पारद गुटिका'** तथा **'पंचमुखी रुद्राक्ष'** की आवश्यकता होती है। इसमें माला की आवश्यकता नहीं होती है। पहले संक्षिप्त गुरु पूजन व गणेश स्मरण कर लें। हाथ में जल लेकर मन में संकल्प करें कि **'मैं (नाम बोलें) जीवन में समस्त तनाव, क्लेश, अशान्ति, द्वन्द्व की निवृत्ति एवं जीवन में पूर्ण आनन्द तथा रस प्राप्ति के लिए रसेश्वर साधना संपन्न कर रहा हूं।'**

सामने **'नर्मदेश्वर शिवलिंग'** को किसी पात्र में स्थापित करें। शिवलिंग के बांईं ओर अक्षत की ढेरी पर **'रसेश्वरी पारद गुटिका'** को स्थापित करें।

दोनों हाथों में **'पंचमुखी रुद्राक्ष'** लेकर भगवान शिव का निम्न ध्यान-मंत्र बोलते हुए रुद्राक्ष को यंत्र पर अर्पित करें।

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसम्,
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीति हस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतमरगणैर्व्याघ्रकृतिं वसानम्,
विश्वाद्यं विश्वन्द्यं निखिलभयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

निम्न मंत्र बोलते हुए शिवलिंग पर बिल्व पत्र चढ़ाएं।

ॐ भवाय नमः। ॐ मृडाय नमः। ॐ रुद्राय नमः। ॐ कालान्तकाय नमः। ॐ नागेन्द्रहाराय नमः। ॐ कालकरणाय नमः। ॐ लास्यप्रियाय नमः। ॐ शिवाय नमः। ॐ रसेश्वराय नमः।

प्रत्येक मंत्र बोलते हुए शिवलिंग पर अक्षत चढ़ाएं -

ॐ शर्वाय नमः। ॐ भवाय नमः। ॐ महेशाय नमः। ॐ उग्राय नमः। ॐ भीमाय नमः। ॐ ईशानाय नमः। ॐ महादेवाय नमः। ॐ भद्राय नमः। ॐ रसेश्वराय नमः।

एक-एक मंत्र बोलते हुए शिवलिंग पर कुंकुम चढ़ावें -

ॐ अघोराय नमः। ॐ शर्वाय नमः। ॐ विरुपाय नमः। ॐ विश्वरूपिणे नमः। ॐ त्र्यम्बकाय नमः। ॐ कपर्दिने नमः। ॐ भैरवाय नमः। ॐ शूलपाणये नमः। ॐ ईशानाय नमः। ॐ महाकालाय नमः। ॐ रसेश्वराय नमः।

फिर निम्न मंत्र को आधे घण्टे तक बिना माला जपें -

॥ ॐ ऐं ह्रीं रसेश्वराय महाबलाय महादेवाय नमः॥

प्रयोग समाप्ति पर शिवलिंग को पूजा स्थान में रख दें व अन्य सामग्री को शिव मंदिर में अर्पित करें। यह प्रयोग एक से अधिक बार भी कर सकते हैं।

साधना सामग्री - 270/-